Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

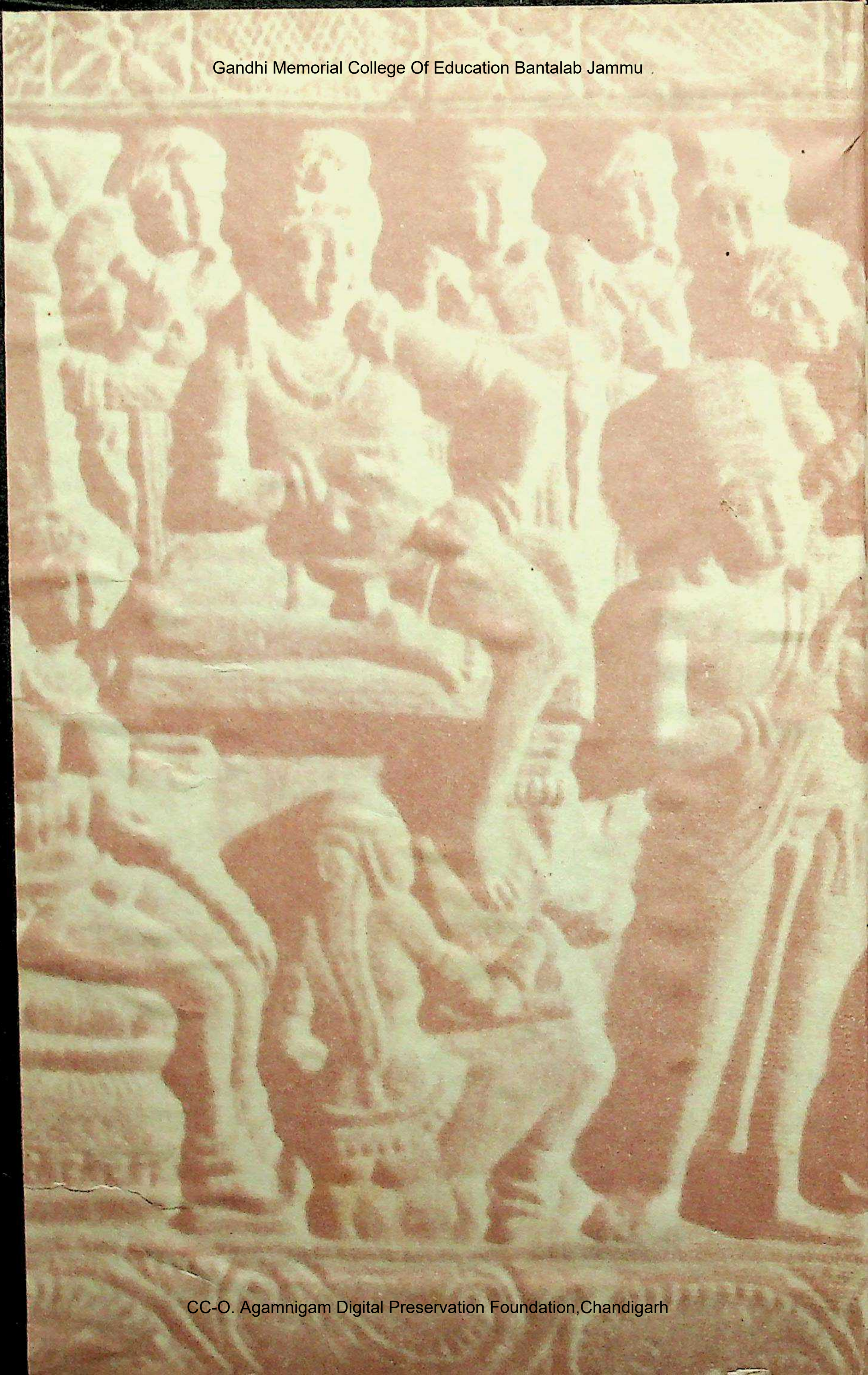

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू शुन की रचनाएँ

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4010
Dated 22-12-2023

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन-कला का संभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख।

नागार्जुनकोंडा, दूसरी सदी ईसवी

सौजन्य: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू शुन की रचनाएँ

लेखक

लू शुन

अनुवादक

कर्ण सिंह चौहान

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

साहित्य अकादेमी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Lu Xun ki Rachnayen: Hindi translation by Karan Singn Chauhan of Lu Xun's select writings in Chinese. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs. 150.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण: 1992

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फिरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001

बिक्री केन्द्र

'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700053
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600018
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बंबई 400014
109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560002

मूल्य: एक सौ पचास रुपये

ISBN 81-7201-296-9

फोटोटाईप सैटिंग: मैरिट आर्टस, नई दिल्ली 110028

प्रिंटर्स: संजय प्रिंटर्स, दिल्ली 110032

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचना-क्रम

1. लू शुन: जीवन और साहित्य 7
2. 'शस्त्रों के लिए आह्वान' की भूमिका 29
3. एक पागल की डायरी 35
4. खुंग ई ची 47
5. औषधि 54
6. आ क्यू की सच्ची कहानी 65
7. नववर्ष की बलि 123
8. अतीत के लिए पछतावा 143
9. चंद्रलोक की ओर उड़ान 166
10. अनोखी तलवार 180
11. शरत की रात 202
12. मुसाफ़िर 205
13. बुझी आग 212
14. अच्छा नरक जो खो गया 214
15. ऐसा योद्धा 216
16. वू छांग या जीवन नश्वर है 218
17. सौ पौधों वाले बगीचे से तीन ज़ायकों वाले अध्ययन तक 226
18. फन ओइ नुंग 232
19. योद्धा और मक्खियाँ 242
20. एक पिता के रूप में हमसे क्या अपेक्षा की जाती है 243
21. 'न्यायोचित व्यवहार' पर असहमति 258
22. क्रांतिकारी काल का साहित्य 267
23. नए साहित्य के बारे में कुछ विचार 275
24. अँधेरे चीन में कला की वर्तमान स्थिति 280
25. भुलाने के लिए ही लिखा गया 285
26. चीन की दो या तीन चीज़ें 296
27. पुराने रूपों को अपनाने के बारे में 304
28. नया फ़ैशन चालू करना और परंपरा से चिपके रहना 308
29. चीनी साहित्य में भूत और प्रेत 311
30. व्यंग्य पर 318
31. व्यंग्य क्या है? 321

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू शुन : जीवन और साहित्य

फंग श्वे फंग*

लू शुन का असली नाम चओ शूरन था और उसका जन्म च च्यांग प्रांत में स्थित शाओशिग में 25 सितबर, 1881 ई. को हुआ था। उनका जन्म विद्वान पदाधिकारी परिवार में हुआ था। जब लू शुन तेरह वर्ष के थे तो उनके बाबा को जेल में डाल दिया गया जो लू शुन के जन्म के समय पेइचिंग में सरकारी पद पर थे। उनका परिवार इस धक्के के बाद फिर सँभल नहीं पाया। लू शुन के पिता एक विद्वान थे, परंतु उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिली। वे हमेशा निर्धन रहे। इसी समय वे इतने गंभीर रूप से बीमार पड़े कि असहाय हो गए। तीन साल बाद उनकी इसी अवस्था में मृत्यु हो गई। इस सबके कारण लू शुन के परिवार की हालत बहुत ही खराब हो गई। उनकी माँ समर्थ महिला थीं। वे एक विद्वान की पुत्री थीं और हालाँकि उनका पालन-पोषण गाँव में हुआ था फिर भी उन्होंने पढ़ना सीख लिया था। उनकी उदारता और हिम्मत का उनके पुत्र पर गहरा असर रहा। उनका परिवार का नाम लू था और लू शुन ने अपना लेखकीय नाम उन्हीं से लिया था।

बचपन में ही लू शुन की प्रतिभा से उनके सभी संबंधी दंग रह गए। उन्होंने छः वर्ष की आयु में स्कूल में दाख़िला लिया और प्राचीन क्लासिक ग्रंथ पढ़ना शुरू कर दिया। सत्रह वर्ष की आयु तक वे शाओशिग में रहे। इस अवधि में उन्होंने केवल एक ही बार यह जगह छोड़ी जब वे थोड़े दिनों के लिए अपने एक चाचा के पास गाँव में रहने गए। इन बारह वर्षों की अवधि में लू शुन ने बहुत-सा चीनी क्लासिकी साहित्य पढ़ डाला। न केवल उनकी स्मरण शक्ति ही अद्‌भुत थी बल्कि कभी-कभी वे किसी ग्रंथ की एकदम नई व्याख्या कर देते थे और स्थापित दृष्टिकोण तथा सामंती, पितृसत्तात्मक समाज के परंपरागत नीतिशास्त्र को भी चुनौती देने का साहस रखते थे। रूढिवादी क्लासिक

* (1903-76) एक समकालीन चीनी लेखक।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रंथों और इतिहास ग्रंथों के अध्ययन के अलावा मिथक शास्त्र, ग़ैर-सरकारी इतिहास, फुटकर निबंधों और पुराकथाओं में उनकी विशेष रूचि थी।

लू शुन की लोक कलाओं में भी ग़हरी रूचि थी। नए वर्ष की तस्वीरों, कथाओं और पुराकथाओं, धार्मिक उत्सवों और ग्रामीण नाटकों के प्रति उनका बड़ा आकर्षण था। हम जानते हैं कि बचपन में चित्रकला से उन्हें प्रेम था। उन्होंने चित्रकला पुस्तकें और सचित्र पुस्तकें एकत्र कीं और उनमें तथा प्राचीन रोमांस कथाओं में ठप्पों के लिए डिज़ाइन ढूँढ़े। उन्होंने कार्टून भी बनाए।

जिस चीज़ ने लू शुन के व्यक्तित्व और उनके लेखन को अत्यधिक प्रभावित किया वह था ग्रामीण जीवन से उनका गहरा परिचय। उनके बचपन के बहुत से दोस्त साफ़दिल और ईमानदार किसानों के बच्चे थे। बड़े होने पर लू शुन इन संबंधों और दोस्तियों को अपने जीवन का सबसे ख़ूबसूरत समय मानते थे। इसमें संदेह नहीं कि श्रमिक जनता से उनके भावनात्मक लगाव में इन चीज़ों का बहुत बड़ा हाथ था।

लेकिन जिस चीज़ ने लू शुन को क्रांति के रास्ते पर अग्रसर किया वह थी विदेशी ताकतों द्वारा चीन पर कब्ज़े की घटना और चीनी सामंतवाद का दिवालियापन।

लू शुन का बचपन लगातार बढ़ते साम्राज्यवादी हमलों में ही बीता जब छिंग साम्राज्य अधिकाधिक भ्रष्ट और नपुसंक होता जा रहा था। अपने शासन को बनाए रखने की ख़ामख़्याली में उसने विदेशी शक्तियों को खुश करने के लिए उनके सामने घुटने टेक दिए और देश की स्वायत्तता और भू-भाग उन्हें सौंप दिया तथा साथ-साथ जनता के देशभक्तिपूर्ण प्रतिरोध को दबाया। चीन की स्थिति एक अर्द्ध-उपनिवेशी देश की हो गई और साम्राज्यवादियों द्वारा उसके बँटवारे का वास्तविक ख़तरा पैदा हो गया।

हालाँकि शाओशिंग बाहरी दुनिया से एक हद तक कटा था लेकिन समूचे देश के सामने उपस्थित सामाजिक संकट और ख़तरे से वह भी अछूता नहीं रहा। लू शुन के परिवार की बरबादी की घटना उस समय घटी जब विदेशियों के हमलों का ख़तरा पैदा हुआ और सामंती शासन ध्वस्त होने लगा। इसने संवेदनशील युवा लू शुन को अपने आसपास के लोगों के साथ-साथ अपने देश के भविष्य के बारे में सोचने पर मजबूर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया। अपने परिवार की ग़रीबी और पिता की बीमारी के कारण लू शुन तेरह से सत्रह वर्ष की आयु में ही चीज़ें गिरवी रखने की दुकानों और दवाइयों की दुकानों से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। वहाँ जो दुर्व्यवहार उन्होंने सहा उसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे सामंती, पितृसत्तात्मक समाज की दमनकारी प्रवृत्ति के प्रति सचेत होने लगे। उन्होंने उसकी खामियों और अंतर्विरोधों को देखा तथा उसके प्रति उनके मन में घृणा और विरोध पैदा हुए। न तो वह अपने बाबा या पिता के पदचिह्नों पर ही चलना चाहते थे, न शाओशिंग के उन्नतिशील लोगों के बच्चों की तरह व्यापारी या मजिस्ट्रेट के दफ़्तर में क्लर्क बनना चाहते थे। उन्होंने एकदम भिन्न रास्ता चुना।

और जब वे अठारह वर्ष के थे तो लू शुन नौसेना अकादमी की प्रवेश परीक्षाओं में बैठने के लिए नानचिंग गए। उनकी माँ ने किसी तरह उनके किराए का बंदोबस्त किया। उन्होंने परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन संस्था से वे संतुष्ट नहीं थे। अगले साल वे इस संस्था को छोड़ नानचिंग में ही स्थित च्यांगनान सेना अकादमी से संबद्ध रेलों और खदानों के विद्यालय में दाखिल हो गए। इस संस्था से भी वे संतुष्ट नहीं हुए। परंतु यहाँ रहकर उनका परिचय पूँजीवादी सुधार और संवैधानिक राजशाही के विचारों से हुआ और उन्होंने विदेशी लेखकों के द्वारा लिखी आधुनिक साहित्य तथा विज्ञान रचनाएँ पढ़ीं।

लू शुन चार वर्ष तक नानचिंग मे रहे। इसी दौरान संवैधानिक राजशाही की स्थापना के लिए 1898 का सुधार आंदोलन चला, यी ह थ्वान का साम्राज्यवाद-विरोधी विद्रोह हुआ, जिसके बाद 1900 ई. में आठ साम्राज्यवादी शक्तियों की भिन्न सेनाओं ने पेइचिंग पर आक्रमण किया और 1901 में चीन पर आक्रमणकारी शक्तियों ने उस समय अपमानजनक संधि थोपी जब देश का भविष्य डांवाडोल था। इन चार वर्षों में लू शुन का यह दृढ़ मत बन गया कि सारे देश को साम्राज्यवाद और छिंग साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह के लिए उठ खड़ा होना चाहिए। इसी काल में टी.एच. हक्सले की पुस्तक 'विकास और नीतिशास्त्र' का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसने उनको डार्विन के विकास के सिद्धांत को अपनाने के लिए ही प्रेरित नहीं किया बल्कि उन्होंने विज्ञान के अध्ययन और प्रसार को अपने क्रांतिकारी मार्ग के रूप में चुना।

1901 (ई. में उन्होंने रेलों और खदानों के विद्यालय से स्नातक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष उन्हें जापान में पढ़ने के लिए सरकारी छात्रवृत्ति मिल गई।

लू शुन सीधे जापान आए और वहाँ वे और अधिक पक्के देशभक्त बन गए। वहाँ चीनी छात्रों के बीच छिंग-विरोधी आंदोलन ज़ोरों पर था। जापान एक साम्राज्यवादी शक्ति बनने की भरसक तैयारी कर रहा था। चीन के हालात के प्रति लू शुन के मन में बेहद क्षोभ था। उन्होंने अपना जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया। अपने ख़ाली समय में वे यूरोपीय विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अध्ययन करते थे। जापान में ही पहले पहल उन्होंने बायरन, शैली, हाइने, पुश्किन, लर्मेंतोव, मिकिलिज और पैतोफी जैसे क्रांतिकारी कवियों को ढूँढ़ा। उनकी रचनाओं को उन्होंने जापानी या कुछ मुश्किल से जर्मनी भाषा में पढ़ा।

उन्होंने इस आशा से सुन ताइ स्थित चिकित्सा कॉलेज में दाख़िला लिया कि चिकित्सा विज्ञान से वे चीन के क्रांतिकारी आंदोलन में मददगार हो सकते हैं। लेकिन दो वर्ष भी नहीं बीते थे कि अचानक उनकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। उन्होंने रूसी-जापानी युद्ध की समाचार-फिल्म देखी जिसमें चीन के शोषित-पीड़ित लोगों की दुखद उपेक्षा दिखाई गई थी। इस घटना ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया।

उसके तुरंत बाद लू शुन ने चिकित्सा कालेज को छोड़ दिया क्योंकि उनके अनुसार—"इस फिल्म से मुझे विश्वास हो गया है कि चिकित्सा विज्ञान कोई ऐसी महत्त्वपूर्ण चीज़ नहीं है। एक कमज़ोर और पिछड़े देश के लोग, चाहे वे कितने भी शक्तिशाली और स्वस्थ क्यों न हों, इस तरह के अर्थहीन दृश्यों के उदाहरण या गवाह बनाकर ही पेश किए जाते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है कि उनमें से कुछ बीमारी से मर जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है उनकी आत्मा को बदलना। और उस समय से ही मैंने महसूस किया कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साहित्य ही सबसे कारगर साधन है। इसलिए मैंने साहित्यिक आंदोलन खड़ा करने का निर्णय लिया।" यह 1906 ई. की बात है।

हालाँकि 1906 ई. और 1907 ई. के बीच टोकियो से जो साहित्यिक पत्रिका निकालने की योजना उन्होंने बनाई थी वह प्रतिफलित नहीं हो सकी लेकिन उसी साल 'जनतांत्रिक कवियों पर' जैसे उनके निबंध तथा 1908 ई. में रूसी तथा पूर्वी और उत्तरी यूरोप के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखकों के किए अनुवाद उनके साहित्यिक जीवन की महत्त्वपूर्ण शुरुआत है। 1908 ई. में वे क्वांग फू हुई नाम की छिंग-विरोधी क्रांतिकारी पार्टी में शामिल हो गए।

इस प्रकार जापान में बिताए इन आठ सालों में लू शुन एक क्रांतिकारी जनवादी बनकर लौटे। उनका यह विश्वास दृढ़ होता गया कि देशवासियों को जगाने के लिए साहित्य ही सबसे कारगर साधन है।

लू शुन 1909 ई. में चीन लौटे। लौटकर उन्होंने च च्यांग नार्मल स्कूल और शाओशिंग माध्यमिक स्कूल में शरीर विज्ञान और रसायन शास्त्र पढ़ाए। उसके बाद 1911 ई. की क्रांति हुई, जिसका लू शुन ने तहेदिल से स्वागत किया। उन्होंने अपने छात्रों को उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शाओशिंग नार्मल स्कूल का प्राचार्य पद संभाला। 1912 में जब चीनी गणराज्य की प्रांतीय सरकार कायम हुई तो उन्हें शिक्षा मंत्रालय का सदस्य नियुक्त किया गया। लेकिन शीघ्र ही उनका मोहभंग हो गया। उन्हें वैचारिक ऊहापोह और यंत्रणा से गुज़रना पड़ा।

1911 ई. की क्रांति बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना थी। लेकिन इसने अपना ऐतिहासिक दायित्व पूरा नहीं किया। इसने केवल छिंग साम्रज्य का तख्ता उलटा लेकिन साम्राज्यवाद और सामंतवाद ज्यों-के-त्यों बने रहे। राज्यसत्ता ऐसे सेनाध्यक्ष सामंतों और विभिन्न गिरोहों के राजनेताओं के हाथ में आ गई, जिनका उपयोग साम्राज्यवादियों ने चीन पर हमला करने के लिए किया। सेनाध्यक्ष सामंतों ने अपने स्वतंत्र राज्य बना लिए। गृह-युद्ध शुरू हो गया। साम्राज्यवादी शक्तियों में अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के लिए खींचतान शुरू हो गई। इस तरह देश की अर्द्ध-सामंती, अर्द्ध-उपनिवेशी हालत और भी बिगड़ी। विचारों के क्षेत्र में एक ऐसा आंदोलन ज़ोर पकड़ने लगा जो अतीत की ओर लौट जाने का नारा दे रहा था।

लू शुन की मानसिक यंत्रणा 1918 ई. तक बनी रही जो कि 4 मई आंदोलन की पूर्वबेला का समय था। लू शुन ने पूरा समय पेइचिंग में बिताया । वे केवल दो बार अपनी माँ से मिलने शाओशिंग गए। उन्होंने वहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की बढ़ती हुई बरबादी देखी जिसका उन पर ग़हरा असर पड़ा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन वर्षों में शिक्षा मंत्रालय में काम करते हुए वे चीनी संस्कृत के अध्ययन के महत्त्वपूर्ण कार्य में लगे हुए थे। उन्होंने क्लासिकल पुस्तकों की संदर्भ सहित व्याख्या करते हुए उनका संकलन किया, ताँबे और पत्थर के शिलालेखों पर शोध किया। इसी काल में उन्होंने तीसरी शताब्दी के महान देशभक्त कवि ची कांग की रचनाओं का संपादन किया। ची कांग लोगों की भावनाओं को प्रतिबिंबित करने वाले कवि थे जिन्होंने अंतिम दम तक सामंतों और कट्टर कन्फ्यूशियन परंपराओं का विरोध किया था।

इसी काल में लू शुन ने तीसरी शताब्दी के बाद चीनी में अनूदित हुए बुद्धधर्म के भारतीय क्लासिकों का भी अध्ययन किया।

इसी बीच देश में बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे थे। यूरोपीय और अमरीकी शक्तियाँ प्रथम महायुद्ध में इस बुरी तरह फँसी हुई थीं कि उन्हें चीन पर अपना शिकंजा ढीला करना पड़ा। इससे चीन के राष्ट्रीय पूँजीवाद को विकसित होने का कुछ अवसर मिला। इसी समय 1917 ई. की अक्तूबर क्रांति ने चीन में नया क्रांतिकारी उभार पैदा किया। इसका नेतृत्व क्रांतिकारी बुद्धिजीवी कर रहे थे। यह उभार बाद में साम्राज्यवाद-विरोधी, सामंतवाद-विरोधी, संघर्ष में परिणत हुआ। 1919 ई. के चार मई आंदोलन में वह सामने आ गया।

अप्रैल 1918 ई. में लू शुन के नाम से उन्होंने देशी ज़बान में लिखी अपनी पहली कहानी 'एक पागल की डायरी' प्रकाशित कराई। यह सांस्कृतिक और जनवादी क्रांति का मार्गदर्शन करने वाली पत्रिका 'नया युवा' में छपी थी। यह पहली पत्रिका थी जिसने अक्तूबर क्रांति के विचारों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद से लोगों का परिचय कराया। इसी समय लू शुन ने सामाजिक समस्याओं के संबंध में मर्मभेदी आक्रामक लेख लिखने शुरू किए। 1923 ई. में 'शस्त्रों के लिए आह्वान' नाम से उनकी कहानियों का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें 'मेरा पुराना घर' और 'आ क्यू की सच्ची कहानी' जैसी कालजयी रचनाएँ भी शामिल थीं। इस संकलन ने उन्हें चीन में आधुनिक साहित्य के जन्मदाता के रूप में प्रतिष्ठित किया।

इस पूरे दौर में लू शुन युवा लोगों के निकट संपर्क में थे। 1920 से वे पेइचिंग विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय प्राध्यापक कॉलेज में प्राध्यापक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। उन्होंने एक दैनिक अखबार के परिशिष्ट का संपादन किया और अनेक साहित्यिक संगठनों की स्थापना में नौजवानों की मदद की। वे युवा लेखकों की पांडुलिपियों को पढ़ने में काफी समय देते थे और ध्यानपूर्वक उनमें सुधार करते थे। अनेक नौजवान उनसे मिलने आते रहते थे और बहुतों से उनका पत्र-व्यवहार था। 1925 ई. में जब वे पेइचिंग में महिला नार्मल कॉलेज में प्राध्यापक थे तो उन्होंने शिक्षा मंत्री द्वारा कॉलेज को ग़ैर-कानूनी ढंग से बंद करने के विरोध में छात्राओं के आंदोलन को पूरा समर्थन दिया। 18 मार्च, 1926 ई. को जब उत्तरी सेनाध्यक्ष सामंत छ्यी उई ने छात्रों को कत्ल किया तो लू शुन ने उनके पक्ष में लेख लिखने के अलावा उनकी व्यावहारिक मदद की। साहित्य के मोर्चे पर उन्होंने जो संघर्ष छेड़ा तथा नौजवानों को जो निर्देश और सहायता दी, इसके कारण 1924 ई. से 1926 ई. के बीच पेइचिंग में वे अत्यंत प्रिय व्यक्ति बन गए।

अगस्त 1926 ई. में जब दक्षिण चीन में क्रांति का जबरदस्त उभार आया तो प्रतिक्रियावादी सेनाध्यक्ष सामंत सरकार ने उन्हें पेइचिंग छोड़ने पर मजबूर कर दिया। इसी वर्ष उनकी कहानियों का दूसरा संकलन 'घुमक्कड़ी' नाम से प्रकाशित हुआ। 1918-1926 ई. का काल उनके रचनाकार का पहला उत्कर्ष काल था। पेइचिंग छोड़ने से पहले उन्होंने कहानियों के अलावा चार खंडों में संकलित लेख, 'जंगली घास' नाम से गद्य कविताओं का एक खंड तथा 'चीनी कथा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' लिखा। उनके द्वारा किए अनुवादों की संख्या उनकी रचनाओं से भी अधिक थी। इन अनुवादों के माध्यम से उन्होंने पाठकों को सोवियत संघ के साहित्य सिद्धांतों तथा अलेक्जेंडर की कविता 'बारह' से परिचित कराया।

अगस्त, 1926 ई. में लू शुन ने श्यामन विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर की नौकरी स्वीकार की। लेकिन उन्होंने इसी साल दिसंबर में उससे त्यागपत्र दे दिया। जनवरी, 1927 ई. में वे क्वांग छु (केंटन) गए और वहाँ सन-यात-सेन विश्वविद्यालय में चीनी भाषा और साहित्य के सहभागी विभागाध्यक्ष बन गए। उसी साल अप्रैल में जब च्यांग काई-शेक ने क्रांति के साथ गद्दारी की और कम्युनिस्टों तथा दूसरे क्रांतिकारियों को पकड़कर उनकी हत्याएँ शुरू कीं तो उनमें सन-यात-सेन विश्वविद्यालय के भी अनेक छात्र पकड़े गए और मार

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिए गए। लू शुन ने इसके विरोध में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। क्योंकि क्वांग छु में खुद उनका जीवन ख़तरे में था इसलिए उन्होंने अक्तूबर में शांघाई की राह ली जहाँ फिर वे मृत्युपर्यंत रहे। वहाँ उन्होंने प्राध्यापकी छोड़कर अपनी सारी शक्ति साहित्यिक लेखन और साहित्यिक आंदोलनों में लगा दी।

1928 ई. में उन्होंने 'द टोरेंट' नाम की पत्रिका निकाली और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन के साथ-साथ मार्क्सवादी साहित्य-सिद्धांत का अनुवाद किया। इस काम के साथ ही उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चले आंदोलनों में भाग लिया। मसलन 1928 ई. में वे पारस्परिक सहयोग समाज के सदस्य बन गए। 1930 ई. में बनी चीनी स्वतंत्रता लीग के संस्थापकों में से वे एक थे। जब शांघाई में मार्च, 1930 ई. में वामपंथी लेखक लीग की स्थापना की गई (जो क्रांतिकारी साहित्य आंदोलन में एक ऐतिहासिक घटना थी) तो लू शुन उसके भी संस्थापकों में से एक थे। वे 1936 ई. तक उसके प्रमुख नेता रहे, जब बदली स्थितियों में उसका पुनर्गठन किया गया। जनवरी, 1933 ई. में वे नागरिक अधिकारों के लिए चीनी लीग संस्था में शामिल हुए। मई में उन्होंने शांघाई स्थित जर्मन दूतावास को जाकर नाजी नृशंसताओं के विरोध में एक विरोधपत्र दिया। उन्होंने शांघाई में होने वाले साम्राज्यवाद-विरोधी, फासीवाद-विरोधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संगठित करने में सहयोग दिया जो सरकारी आतंक के कारण बहुत ही गुप्त रूप में हुआ। सितंबर में वेलैंट कोर्टूरियर और अन्य लोग इस सम्मेलन में भाग लेने आए तथा छिग लिग इसमें चीन के प्रतिनिधि थे। हालांकि लू शुन इसमें उपस्थित नहीं थे फिर भी वे सम्मानित सभापतियों में से एक थे। लेखन के अलावा ये उनकी प्रमुख राजनीतिक गतिविधियाँ थीं।

अपने जीवन के अंतिम दस वर्षों के दौरान लू शुन ने निबंधों के दस खंड लिखे। उन्होंने ऐतिहासिक विषयों पर कहानियों का एक संग्रह भी पूरा किया और पहले से भी अधिक अनुवाद किए। इनमें महत्त्वपूर्ण थे—प्लेखानोव का 'साहित्य का सिद्धांत', लूनाचार्स्की का 'कला साहित्य और आलोचना के सिद्धांत', फेदेयेव तथा याकोव्लेव के उपन्यास 'उन्नीस' और 'अक्तूबर', फर्मानोव और अन्य की कहानियों के दो संग्रह, गोर्की का 'रूसी परिकथाएँ', तथा गोगोल का 'मृत आत्माएँ'।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्होंने सेराफिमोविच के 'आइरन फ्लड', सोलोखोव के 'धीरे बहो दोन रे' तथा अवानोव के 'फार्वर्ड ट्रेन' से भी पाठकों को परिचित कराया।

इन्हीं दस वर्षों के दौरान लू शुन ने सोवियत तथा जर्मन कलाकार कीथ कौलविज के ठप्पाचित्रों से चीनी जनता को परिचित कराया। इसके साथ ही उन्होंने चीन में नई, क्रांतिकारी ठप्पाचित्र कला को प्रोत्साहन और दिशा-निर्देश दिया।

इन वर्षों में लू शुन के समय का एक तिहाई हिस्सा विभिन्न पत्रिकाओं के संपादकीय काम देखने, युवा लेखकों की पांडुलिपियाँ पढ़ने और उनमें सुधार करने तथा पत्रों का जवाब लिखने में जाता था। शायद ही कभी उन्होंने आराम किया हो। यहाँ तक कि 1936 की अपनी अंतिम बीमारी में भी वे युवा लेखकों की पांडुलिपियाँ पढ़ते रहे और उनकी भूमिकाएँ लिखते रहे तथा कोमिनतांग द्वारा मार दिए गए प्रमुख चीनी कम्युनिस्ट छू छ्यू पाइ की रचनाओं और अनुवादों के संपादन और प्रकाशन के काम में लगे रहे।

इसके अलावा इन दस वर्षों में प्रतिक्रियावादी आतंक का नंगा नाच चला जिसके द्वारा कोमिनतांग को उम्मीद थी कि वे क्रांतिकारियों को घेर कर ख़त्म कर देंगे। लू शुन इस बीच कुछ नौजवानों तथा एक-दो कम्युनिस्टों से ही गुप्त रूप मे संपर्क रख सके। उन्हें अकेलेपन की ज़िंदगी बितानी पड़ी और उनके सिर पर हमेशा गिरफ्तारी या कत्ल की तलवार लटकती रहती थी। फिर भी वे अंत तक लड़े और उन्होंने प्रगतिशील लेखकों और कलाकारों को सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया। इससे भी अधिक उन्होंने सांस्कृतिक मोर्चे को सँभाले रखा और क्रांतिकारी लेखकों को समाप्त करने के कोमिनतांग के दस-साला अभियान को नाकाम कर दिया।

लू शुन की क़लम से जो अंतिम लेख लिखे गए वह जुलाई और अगस्त 1936 में बीमारी के दौरान उन्होंने लिखे। इनमें एक खुले पत्र में उन्होंने चीन के उन त्रात्स्कीवादियों की कलई खोली है जो जापान के विरुद्ध कम्युनिस्ट पार्टी की संयुक्त मोर्चे की नीति को अवहेलना की दृष्टि से देखते थे। एक दूसरे लेख में उन्होंने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की नीति स्वीकार कर उसकी वकालत की है।

हालाँकि वे तपेदिक से पीड़ित थे फिर भी उन्होंने अंत तक विश्राम नहीं लिया। 19 अक्तूबर को शांघाई में उनकी मृत्यु हो गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू शुन के जीवन से हमने जाना कि जब उन्होंने लिखना शुरू किया उस समय वे चीन के करोड़ों शोषित-पीड़ित लोगों की मुक्ति के संघर्ष से जुड़ चुके थे।

उनकी 'एक पागल की डायरी' ने पहले-पहल ध्यान आकर्षित किया। इस कहानी में वे एक ऐसे मानवतावादी के रूप में सामने आते हैं जो सामंती व्यवस्था और उसके विचारों तथा नैतिकता को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। उस पर पाठकों की प्रतिक्रिया तत्काल और उत्साहजनक थी । उन्होंने माना कि सामंतवाद के विरुद्ध शक्तिशाली विद्रोह चीनी साहित्य में एक नई शुरुआत है। यह लू शुन की पहली यथार्थवादी रचना थी। उन्होंने उसी तरह की अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ दीं।

लू शुन ने बाद में यह बताते हुए कि 'मैंने कहानियाँ क्यों लिखीं' कहा कि ''दर्ज़नों साल पहले की तरह आज भी मैं महसूस करता हूँ कि मुझे अपनी जनता, मानवता को जगाने और उसकी बेहतरी के लिए लिखना चाहिए.... इसलिए मेरे विषय प्रायः वे लोग बने जो इस असामान्य समाज में अभागे थे। मेरा उद्देश्य था बीमारी को सामने लाना और उसकी तरफ ध्यान खींचना जिससे कि उसका इलाज किया जा सके।''

'एक पागल आदमी की डायरी', 'खुंग ई ची', 'कल', 'मेरा पुराना घर', 'आ क्यू की सच्ची कहानी' और 'नए साल की बलि' सभी इसी मानसिकता से लिखी गईं। इन कहानियों के प्रमुख पात्र—पागल, खुंग ई ची, रुन थू, आ क्यू आदि—असामान्य समाज के अभागे लोग हैं। लू शुन ने उनके दुखद भविष्य पर तीव्र प्रतिक्रिया की और उनका दमन करने वाली शक्तियों को नंगा कर उन पर आक्रमण किया। इसके साथ ही उन्होंने इन पात्रों की आकांक्षाओं, माँगों और अंतर्निहित शक्ति को भी सच्ची अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने दिखाया कि इस स्थिति से उबरने का एकमात्र रास्ता समाज को बदलने का है, क्रांति का है।

उदाहरण के लिए अपनी कालजयी कहानी 'आ क्यू की सच्ची कहानी' के बारे में लू शुन ने कहा कि वे इसमें 'जनता की मौन आत्मा' को चित्रित करना चाहते थे जो हज़ारों साल से 'चट्टान के नीचे दबी घास की तरह पैदा होती हैं, मरती हैं और लुप्त हो जाती हैं।' आ क्यू का चित्रण करते समय लू शुन आ क्यू और उन जैसे अन्य लोगों के पक्ष में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज़ उठा रहे हैं। वे आ क्यू के माध्यम से लोगों को हज़ारों साल से चले आ रहे चीनी जनता के उत्पीड़न से परिचित कराना चाहते हैं। यहाँ वे एक प्रतिभा संपन्न यथार्थवादी के रूप में सामने आते हैं। वह स्पष्ट दिखाते हैं कि आ क्यू की सबसे बड़ी कमज़ोरी है पराजित होने पर स्वयं और दूसरों को धोखा देने की उसकी आदत। वह अपने को यह सोचकर सांत्वना देता है कि उसने नैतिक जीत हासिल की है। यह पराजित मानसिकता है। इसके भी ऊपर आ क्यू न केवल अपने शत्रुओं और उत्पीड़कों को भूल जाता है, बल्कि अपने से कमज़ोर लोगों से उसका बदला लेता है और खुद एक उत्पीड़क बन जाता है। लू शुन दिखाते हैं कि यह हज़ारों वर्षों के सामंती शासन और सौ वर्षों के विदेशी साम्राज्यवादी आक्रमण का परिणाम है। हालाँकि जनता ने हमेशा दमन के विरुद्ध संघर्ष किया है लेकिन इस संघर्ष में मिली पराजयों ने उनमें पराजित मानसिकता पैदा कर दी है। इसके ऊपर से सामंती शासक वर्ग की सदियों की इस शिक्षा ने कि 'मनुष्य को अपने से श्रेष्ठों के सामने झुकना चाहिए' आ क्यू की नैतिक जीतों की पद्धति को पनपाया है। यह आ क्यू वाद उसे अपने उत्पीड़कों का विरोध करने से रोकता है। लू शुन इसी बात को अपने पाठकों के सामने स्पष्ट करना चाहते हैं।

दूसरी चीज़ जो लू शुन स्पष्ट करना चाहते हैं वह यह है कि आ क्यू और उसके उत्पीड़कों के बीच टकराव में आ क्यू समर्पण और विद्रोह के बीच झूलता है, लेकिन विद्रोह की भावना उसमें हमेशा है। सभी उत्पीड़ितों की तरह आ क्यू भी अपने को तभी मुक्त कर सकता है जब वह बाधाओं से लड़ने अर्थात् क्रांति के लिए तैयार हो। और लड़ने की शक्ति उसमें है। जब 1911 की क्रांति आती है तो आ क्यू का भाग्य उससे जुड़ जाता है। यह तथ्य कि उसे क्रांति में भाग लेने से रोका जाता है इस बात का सबूत है कि क्रांति असफल हो गई है। लेकिन आ क्यू में विद्रोह की भावना फिर भी मौजूद है, उसके लिए क्रांति का रास्ता अभी भी बचा है। यही लू शुन का निष्कर्ष है।

'आ क्यू की सच्ची कहानी' हमें 1911 ई. की उस क्रांति की झलक देती है जो इसलिए असफल हो गई क्योंकि किसानों को संगठित नहीं किया गया। सामंती वर्ग का भंडाफोड़ कर उस पर आक्रमण करने के साथ-साथ लू शुन उस पूँजीपति वर्ग की भी तीखी आलोचना करते हैं जिसने इस क्रांति का नेतृत्व किया था। इस कहानी के माध्यम से लू शुन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4 मई आंदोलन के नेताओं का ध्यान 1911 की क्रांति के ऐतिहासिक सबक की ओर खींचना चाहते हैं, रास्ता दिखाना चाहते हैं तथा समस्त जनता की माँगों को वाणी देना चाहते हैं जिसमें सबसे बड़ी संख्या किसानों की है।

'आ क्यू की सच्ची कहानी' से भी पहले लिखी गई कहानी 'मेरा पुराना घर' में भी चीन में नए जीवन की आशा की पृष्ठभूमि के रूप में जनता की माँगों को रख मुक्ति का रास्ता दिखाया गया है। उन्होंने इसके बारे में लिखा है—"मैं यह पसंद नहीं करूँगा कि उनका जीवन भी मेरी तरह ही नीरस बने और न ही मैं उन्हें रुन थू की यातना सहकर जड़ बनते ही देखना चाहूँगा जो दूसरों की तरह बेहूदा हरक़तों में अपनी सारी शक्ति ज़ाया कर दें। उन्हें ऐसे जीवन की कामना करनी चाहिए जिसका हमने कभी अनुभव नहीं किया है.... शुरू में ज़मीन पर कोई रास्ता नहीं होता लेकिन जब अनेक लोग एक ही रास्ते पर चलते हैं तो वहाँ पगडंडी बन जाती है।" ईमानदार रुन थू के चित्रण द्वारा लू शुन इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जो 'अधिक बच्चों, अकाल, करों, सैनिकों, लुटेरों, अधिकारियों और भूस्वामियों' द्वारा कंकाल की तरह चुसकर रुक्ष बन गया है। रुन थू उस समय के अधिकांश चीनी किसानों का प्रतिनिधि चरित्र है। असंगठित होते हुए भी वे ही जनवादी क्रांति की आधारभूत और मुख्य शक्ति हैं। यह कहानी उन वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों के खोखलेपन को दिखाती है तथा किसानों की जागृति और क्रांति की अनिवार्यता की भविष्यवाणी करती है।

'नए साल की बलि' नामक एक अन्य महत्त्वपूर्ण कहानी में लू शुन ने एक सामान्य मज़दूर औरत के जीवन का रेखाचित्र खींचा है। श्यांगलिन की पत्नी कुचली हुई, अपमानित और परित्यक्त है। लेकिन हम उसमें आंतरिक अच्छाई, साहस और दयालुता देखते हैं। हिम्मत के कारण सारे दुर्भाग्य और दुर्व्यवहार भी उसकी आत्मा को नहीं मार पाते, मानवता और अपनी गरिमा में उसके विश्वास को नहीं तोड़ पाते। लेकिन अंत में सामंती नैतिकता और अंधविश्वासों के कारण होने वाली मानसिक यंत्रणा से उसका विश्वास और गौरव चूर-चूर हो जाता है और वह टूट जाती है। इस औरत के हृदय में गहरे झाँककर लू शुन ने समाज का अच्छा विश्लेषण किया है। वह सामाजिक दबाव के उन घेरों को दिखाते हैं जिन्होंने मकड़ी के जाले की तरह इस औरत को घेरा हुआ है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन दबावों का सबसे बड़ा कारण है अमानवीय कन्फ्यूशियन नैतिकता, जिसका अधिकांश अंधविश्वास ही है। यह नैतिकता आदमी को चुपके-चुपके मारती है और भूस्वामी वर्ग इस शक्ति का उपयोग करता है। मनुष्य की चेतना पर पड़ने वाले ये दबाव इतने आम और जाने-पहचाने हैं और इनके द्वारा लोग चुपके-चुपके मरते हैं। अनगिनत स्त्रियाँ और नौजवान किसी के जाने बग़ैर खामोशी से ख़त्म होते रहते हैं। कोई नहीं जानता उन्हें किसने मारा है। यह स्थिति 'एक पागल की डायरी' में चित्रित से भी ज़्यादा भयानक है। इस कहानी के अंत में हमें लू शुन की ज़बरदस्त और गहरी पैठ का परिचय मिलता है जब हम देखते हैं कि दृढ़निश्चयी वह औरत अंततः नरक के अस्तित्व में ही अविश्वास प्रकट करती है और उत्पीड़कों के सामने झुकते जाने से इनकार कर अपना भविष्य अपने हाथों में लेती है।

इन कहानियों में हम लू शुन की यथार्थ के चित्रण में निर्भीकता और बुराइयों के प्रतिकार की शक्ति देखते हैं। उस समय चीन में जो हालात थे उनमें अधिकांश उत्पीड़ित लोग दुखों के प्रति एकदम संवेदनशून्य बन गए थे। लेकिन लू शुन ने उत्पीड़ितों के दिलों में उठती दर्द की क़राहों को सुना और उसे वाणी दी। बुराई को नंगा करने का उनका तरीका मनुष्य को जगा देने वाली तेज़ रोशनी के समान है। और हालाँकि वे भावनाओं में न बहकर बहुत ही संतुलित तरीके से लिखते हैं लेकिन जितना ही तटस्थ वे लगते हैं उनके पाठक को उनके लेखन में उत्पीड़ितों की पुकार उतनी ही स्पष्ट सुनाई पड़ती है—ऐसी पुकार जो जागृति और विद्रोह की अभिव्यक्ति है।

इन सभी कहानियों में लू शुन जीवन और समाज के पुराने ढर्रे को पूरी तरह अस्वीकार करते हैं। उन्हें पढ़कर लोग इस बात से सहमत होते हैं कि इन बुराइयों और लोगों के कष्टों का अंत आमूल सामाजिक क्रांति से ही हो सकता है। 'एक पागल की डायरी', 'मेरा पुराना घर', 'आ क्यू की सच्ची कहानी' तथा 'नए साल की बलि' सभी का यही संदेश है। वहीं 'औषधि' कहानी के बारे में भी सच है जो 1911 ई. के क्रांतिकारी की याद में लिखी गई है और क्रांति की असफलता के मूल कारणों पर रोशनी डालती है।

लू शुन उत्पीड़ितों के दुख-दर्दों का ही वर्णन नहीं करते बल्कि उनकी शक्ति को भी दिखाते हैं। उनकी कई कहानियाँ चीन की श्रमिक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जनता के श्रेष्ठ गुणों को सामने लाती हैं। श्यांगलिन की पत्नी और चौथे शान की पत्नी अच्छी, दयालु, साहसी औरतें हैं तथा 'एक छोटी-सी घटना' के रिक्शा चालक की अच्छाई का उपयोग राज्य के तथाकथित मामलों की असलियत का पर्दाफाश करने के लिए किया गया है। 'तलाक़' में लू शुन ने गाँव की लड़की आइ कू के साहस का वर्णन किया है जिसे शक्तिमान स्थानीय लोगों के दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। 'सराय में' कहानी में फीके वातावरण को दिखाने के लिए उन्होंने एक नाविक की लड़की आइ कू और सौंदर्य तथा खुशी की उसकी भावुक कामना का वर्णन किया है। उसकी आँखों की तरह ही उसका दिल भी 'बादल रहित रात के आकाश—वायु रहित दिन में उत्तर के बादल रहित आकाश' की तरह साफ था। 'ग्रामीण आपेरा' में लू शुन ने गहरी भावना और काव्यात्मक लहज़े में ग्रामीण लोगों की अच्छाई और उनके लड़कों की बुद्धिमत्ता व उत्साह का वर्णन किया है। उसी रूप में उन्होंने रुन थूके बचपन का भी वर्णन किया है।

लू शुन ने चीनी मिथकों और पुराकथाओं को भी विषयवस्तु बनाया है। 'स्वर्ग का सुधार' में उन्होंने प्राचीन चीनियों की अन्वेषणधर्मिता का चित्रण किया है। 'चंद्रलोक की ओर उड़ान' निजंधरी धनुर्धर ई के बारे में है। 'बाढ़ को शांत करना' और 'आक्रमण के विरुद्ध' कहानियों में प्राचीन चीन के महान नायक और संत ऊ तथा मो त्ज़ी को दिखाया गया है। 'अनोखी तलवार' में अत्याचारियों से बदला लेने के लिए दमितों को विद्रोह करने के लिए उत्साहित किया गया है।

'सराय में', 'मानवद्रोही' तथा 'अतीत के लिए अफसोस' जैसी कहानियों में उस समय के बुद्धिजीवियों के मोहभंग और संघर्षों का वर्णन किया गया है। ल्यू वइ फू, वे ल्यान शु, च्वान शाग या त्ज़ च्विन जैसे चरित्रों की विश्वसनीयता इस बात पर टिकी है कि वे समाज के सुधार में विश्वाय करते हैं या नहीं। उसमें विश्वास खोकर वे अपने प्रति भी सच्चे नहीं रहेंगे। उस स्थिति में उन्हें या तो ल्यान शु की तरह स्वयं को नष्ट करना पड़ेगा या ल्यू वइ फू की तरह समझौता करना होगा अथवा त्ज च्विन की तरह समर्पण करना जो 'अपने पिता के भयंकर गुस्से.... और बर्फ से भी सर्द दर्शकों की नज़रों' को भोगने और मर जाने के लिए घर चली जाती है। उनके विश्वास टूटने का कारण क्या है! इस बारे में लू शुन का विश्लेषण बहुत साफ है। ल्यू वइ फू और वे ल्यान शु ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1911 की क्रांति के पूर्व की घटनाओं ने प्रेरित किया था। नौजवान होने के कारण उनमें 'पागल आदमी की डायरी' के पागल का साहस है जो श्री कू के पुराने बहीखातों को रौंदता है या 'सदा जलता लैंप' के सिरफिरे जैसा साहस है जो पुराने समाज को यह कहकर ठुकराता है कि 'मैं इस सबको आग लगा दूँगा।' ये लोग 'औषधि' के युवा क्रांतिकारियों के साथी भी थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों ने 1911 ई. की क्रांति से बड़ी उम्मीदें की थीं। लेकिन जब उनका सामना उन प्रतिक्रियावादी शक्तियों से हुआ जिन्हें यह क्रांति ख़त्म नहीं कर पाई, तो उनका मोहभंग हो गया। यह इन बुद्धिजीवियों की कमज़ोरी को दर्शाता है। जो लोग 1911 के पहले इतने आशावान थे अगर वे क्रांति की विफलता से सबक लेकर सचेत होते हुए पुराने श्वान जैसे लोगों से अपना भाग्य नहीं जोड़ते, तो उन्हें निराशा ही हाथ लगनी थी। च्वान शंग और त्ज़ च्विन 4 मई आंदोलन से प्रेरणा पाने वाले दो नौजवान चरित्र हैं। वे इसलिए असफल हुए कि उन्होंने सदियों से चले आ रहे सामाजिक दबावों का विरोध करने के लिए केवल अपनी शक्ति पर भरोसा किया। इस प्रकार लू शुन ने बुद्धिजीवियों और नौजवानों के आदर्शों के बारे में निर्णय इस आधार पर किया कि उनका समस्त जनता के साथ संबंध क्या है। अतः यह कहा जा सकता है कि लू शुन के लेखन में उनका दृष्टिकोण और लक्ष्य उनकी कहानियों में साफ देखे जा सकते हैं।

यही बात उनकी गद्य कविताओं, संस्मरणों तथा विशेषकर उनके निबंधों के बारे में भी सच है। उनके संस्मरणों में सबसे प्रभावशाली हिस्सा वह है जब वे किसानों और हथकरघा मज़दूरों की खुशमिज़ाजी, बुद्धिमानी और जीवन के प्रति लगाव का और उनके द्वारा रची गयी लोक कला का सुंदर वर्णन करते हैं। 'जंगली घास' में संकलित अधिकाँश कविताओं में साम्राज्यवादियों तथा उत्तरी सेनाध्यक्ष सामंतों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान लू शुन की भावनाओं का वर्णन है। उनमें हमें एक क्रांतिकारी बुद्धिजीवी का साहस और अँधेरी शक्तियों के विरुद्ध लड़ाई में उसके अनुभव देखने को मिलते हैं। लू शुन ने निराशा को आशा से जीता और यह जीत ल्यू वइ फू के मोहभंग या वे ल्यान शु के आत्मध्वंश से एकदम भिन्न है।

लू शुन के निबंध उनकी साहित्य रचना का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस युग में वे जिए उसमें अपने विकट संघर्ष के लिए उन्हें कहानी के साथ-साथ अन्य हथियारों की तलाश करनी पड़ी जिससे कि साहित्यिक मोर्चे पर अपने संघर्ष के क्षेत्र को व्यापक बनाया जा सके।

एक लड़ाकू और एक कलाकार के दृष्टिकोण से लू शुन ने समझाया कि उन्होंने क्यों निबंध के रूप को अपनाया। उन्होंने कहा "कुछ लोगों ने मुझे संक्षिप्त आलोचनात्मक निबंध न लिखने के लिए कहा। मैं उनकी इस चिंता के लिए आभारी हूँ और मैं जानता हूँ कि कहानियाँ लिखना महत्त्वपूर्ण है। लेकिन एक समय ऐसा आया जब मुझे विशेष प्रकार से लिखना पड़ा। मैं समझता हूँ कि अगर कला के राजमहल में इस तरह के विधि-निषेध हैं तो मुझे उसमें नहीं घुसना चाहिए। लेकिन रेगिस्तान में खड़े होकर आँधियों को देखना, खुश होने पर हँस पड़ना और दु:ख पर चिल्लाना तथा गुस्से में आकर गाली बकना मुझे अच्छा लगता है। रेत और पत्थरों से मुझे खरोचें आ सकती हैं और मेरा शरीर लहूलुहान और क्षत-विक्षत हो सकता है। लेकिन समय-समय पर मैं जमे हुए खून और खरोचों को सहला तो सकता हूँ। और यह उन चीनी साहित्यकारों के पद-चिन्हों पर चलने से कम रुचिकर नहीं है जो शेक्सपियर से निकटता बनाने के नाम पर विदेशी डबलरोटी और मक्खन खाते हैं।"

लू शुन ने प्रचलित साहित्यिक रूढ़ियों को तोड़कर विचारधारात्मक संघर्ष का क्षेत्र व्यापक बनाया। उन्होंने उन निबंधों के रूप में उन 'तलवारों' तथा 'भालों' की रचना की जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। ऐसे समय में जबकि 'हवाएँ और रेत आपके चेहरे पर थपेड़े लगा रहे हों तथा भेड़िये और चीते लुक-छिपकर घूम रहे हों' उन्होंने इन हथियारों का इस्तेमाल स्वयं अपने तथा पाठकों के लिए रास्ता साफ करने के लिए किया।

अपनी पहली कहानी के प्रकाशन के कुछ ही महीनों बाद 1918 ई. में उन्होंने 'कौमार्य पर मेरे विचार' नामक निबंध लिखा। तब से लगाकर मृत्युपर्यंत तक उन्हेंने छ:-सात सौ निबंध लिखे। इन निबंधों से उन्हें खुले में साँस लेने के लिए ऐसा विशाल मैदान मिला जिसमें वे एक महत्त्वपूर्ण चिंतक और लड़ाकू के रूप में सामने आए और अपनी कलात्मक प्रतिभा का पूर्ण परिचय दे सके।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू शुन को इस बड़े मैदान की ज़रूरत इसलिए थी क्योंकि उन्हें 'पुराने बदले चुकाने थे और एक नई लीक बनानी थी।' उन्हें इतिहास और समाज के प्रत्येक पक्ष की पड़ताल करने के लिए इस क्षेत्र की ज़रूरत थी। वे मनुष्य की ज़िंदगी के हर कोने में झाँकना चाहते थे, हर मुखौटे को फाड़ना चाहते थे और दुश्मनों को खोजकर उन पर आक्रमण करना चाहते थे।

इन निबंधों की विषय-वस्तु इतनी विविध और सर्व समाहारी है कि उसमें क्रांति की बुनियादी समस्याओं से लगाकर बच्चों के खिलौनों तक सब कुछ समा गया है। उन्होंने अनगिनत लड़ाइयाँ लड़ीं और अनगिनत शत्रुओं पर हमले किए। इनमें साम्राज्यवादी, भूस्वामी, कोमिनतांग समर्थक, अतीत की वकालत करने वाले लोग, प्रतिक्रियावादी लेखक, 'क्रांति का व्यवसाय करने वाले लोग', 'वर्तमान और भविष्य के हत्यारे' तथा 'मौत के मसीहा' शामिल थे। उन्होंने इतने विविध विषयों को इसलिए उठाया क्योंकि वे चीनी जनता को नई ज़िंदगी का रास्ता दिखाना चाहते थे। वे घट रही जनवादी क्रांति और आने वाली समाजवादी क्रांति का रास्ता दिखाना चाहते थे। लू शुन ने दिखाया कि शासकों व विदेशी आक्रमणकारियों के लिए अनंत काल से चीनी इतिहास 'मानव भक्षी उत्सवों' से भरा पड़ा है। जनता की नियति यही रही है कि उत्पीड़कों ने उनका 'भक्षण' किया है। इसमें या तो ऐसा काल रहा है 'जब हम दास बनने की व्यर्थ कामना करते थे' या जिसमें 'हम कुछ समय के लिए दास बन गए थे।' इसलिए इन 'मानव भक्षियों को खत्म करना'. उनके भोजों और रसोई को 'नष्ट करके' चीनी इतिहास में अभूतपूर्व 'एक तीसरे प्रकार के काल का निर्माण' करना ज़रूरी है। इसलिए उन्होंने कहा कि ''वर्तमान समय में हमारे तीन प्रमुख उद्देश्य हैं—पहला अस्तित्व बनाए रखना, दूसरा भोजन और कपड़ा प्राप्त करना और तीसरा आगे बढ़ना। उनके बीच आने वाली हर बाधा को हटाना होगा चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक मानव-निर्मित हो या दैवी या प्राचीन विधि-विधान, गौरव-ग्रंथ, पवित्र भविष्य-दर्शी, बहुमूल्य मूर्तियाँ, परपंरागत नुस्खे और गुप्त निदान कुछ भी क्यों न हों।''और अंततः उन्होंने घोषणा की कि ''तथ्यों से मैंने सीखा है कि भविष्य निश्चय ही उभरते सर्वहारा के हाथ है।'' इसलिए वे 'सर्वहारा क्रांति के उमड़ते तूफान' का उपयोग 'अपनी देश की धरती को साफ करने' तथा 'जड़ निरर्थक और सड़े गले' को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़त्म करने के लिए करना चाहते थे। वे सोवियत संघ के समर्थक थे और आशा करते थे कि चीन में भी एक दिन समाजवादी समाज स्थपित होगा। वे चाहते थे कि शोषित-पीड़ित लोग 'मनुष्यों की तरह' रह सकें तथा पृथ्वी के तल से एकदम नई अनजानी समाज व्यवस्था पैदा हो सके 'जिससे कि करोड़ों लोग अपने भाग्य के खुद मालिक बन सकें।'

इससे स्पष्ट है कि अपनी कहानियों में लू शुन जिस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे वह उनके निबंधों में और तीखे रूप में उभरा और उनमें उसकी प्राप्ति के लिए अधिक गहरा विश्वास आया। उनकी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका, उनकी महानता, राजनीतिक विचारधारा और कला में उनके योगदान को उनकी कहानियों से अधिक उनके निबंधों में अच्छी तरह देखा जा सकता है। वे अतीत की ओर पीठ करके जनता और चीन के भविष्य को देख रहे हैं। उन्होंने अगर कभी पीछे फिर कर देखा भी तो केवल 'पीछे से वार करने वाले शत्रु पर वार करने के लिए' ही। दुनिया की कोई ताकत उन्हें समझौता करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती थी, कोई बाधा उनके रास्ते को नहीं रोक सकती थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि अपनी सड़ी-गली चीज़ों के साथ पुराना समाज और जीवन का पुराना ढर्रा अवश्य ही ख़त्म होगा और नए समाज और नए जीवन की जीत अवश्यंभावी है।

इन वर्षों में वर्ग-संघर्ष और क्रांति की समस्याएँ भी उनकी कहानियों से अधिक उनके निबंधों में अधिक सटीक और विस्तार से अभिव्यक्त हुईं। इन निबंधों में लु शुन की कलात्मक प्रतिभा को सामने आने की अधिक स्वतंत्रता मिली। एक क्रांतिकारी के रूप में जैसे-जैसे उनका मानसिक विकास होता गया वैसे-वैसे उनकी कलात्मक प्रतिभा नई ऊँचाइयाँ छूती गई। जनता के जिन दुश्मनों पर उन्होंने आक्रमण किया उनकी संख्या अनगिनत है। वे जनता के नायकों की बहुत ही जीवंत और सुंदर तस्वीर गढ़ते हैं। इनमें अतीत के उन नायकों से लगाकर जो 'चीन की रीढ़ थे', उनके अपने समय के वे युवा क्रांतिकारी नायक थे जो गोलियों की बौछारों में निडर होकर लड़े तथा साथ ही वे कम्युनिस्ट भी 'जो आज चीन की इस पीढ़ी की रक्षा के लिए ठोस काम कर रहे हैं और ज़मीन पर मज़बूती से पैर जमाकर लड़ रहे हैं तथा अपना खुन बहा रहे हैं।' इन सभी निबंधों पर एक प्रतिभासंपन्न दिमाग़

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की छाप है और सभी में एक ऐसी प्रतिभा का कमाल दिखाई पड़ता है जिसे प्रातिनिधिक की रचना करने तथा व्यंग्य लेखन में महारत हासिल है। उनकी रचना पाठकों को इसलिए प्रभावित करती है क्योंकि उसमे जनता के एक सच्चे पक्षधर की भावनाएँ हैं, जलता हुआ प्यार और घृणा है, उसका गुस्सा और अडिग अविजित शक्ति है।

एक महान निबंधकार की अपनी इस भिन्न शैली के कारण लू शुन चीन की सांस्कृतिक क्रांति में एक प्रसिद्ध विवादी और महानतम प्रतिभा के लेखक बन गए जिन्होंने अपने से पूर्व के सभी लोगों को पीछे छोड़ दिया।

लू शुन की कहानियों, निबंधों, गद्य कविताओं और संस्मरणों का यह एक सामान्य परिचय है। लेखक बनने के बाद उन्होंने एक क्रांतिकारी जनवादी से एक कम्युनिस्ट में व्यक्तित्वांतरण किया। उन्होंने वृद्ध श्वान, रुन थू, आ क्यू, श्यांगलिन की पत्नी जैसे मामूली लोगों को उनके दुर्भाग्य से छुटकारा दिलाने के लिए रास्ता तलाशा और उसके लिए लड़े। वह अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहे और क्रांति के रास्ते पर बढ़ते रहे। जैसे ही उन्होंने उस रास्ते पर कदम रखा वह चीन की भावी मुक्ति की रोशनी में नहा गएं। जनता की असीम रचनात्मक शक्ति ने लगातार उनकी प्रतिभा को नया जीवन दिया।

लू शुन के सोलह खंडों में बिखरे निबंध, तीन कहानी संग्रह, गद्य कविताएँ और संस्मरण चीनी समाज का विश्वकोश हैं जिनमें जनता का जीवन और संघर्ष तथा बीसवीं शताब्दी के शुरू से लगाकर तीसरे दशक तक के महान ऐतिहासिक काल के अनुभव भरे पड़े हैं। उनमें साम्राज्यवाद और सामंतवाद के विरुद्ध; जनता के सभी उत्पीड़कों के विरुद्ध तथा चीन की प्रगति में बाधक सभी अँधेरी भ्रष्ट शक्तियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है। उनकी रचनाओं में हमें 1911 ई. की क्रांति के समय से लगाकर 4 मई आंदोलन और फिर पहले और दूसरे क्रांतिकारी गृहयुद्ध की स्थितियों का विस्तृत और गहरा चित्रण मिलता है।

इस पूरे काल में लू शुन नए साहित्य के केंद्रीय व्यक्तित्व और प्रमुख प्रतिनिधि रहे। उन्होंने आधुनिक चीनी लेखकों को जो यथार्थवादी दृष्टिकोण और कला के सिद्धान्त दिए वे पुराने के अस्वीकार और नए के स्वीकार के लिए तथा लेखन में नए सौंदर्य प्रतिमानों की स्थापना में कारगर हथियार थे। उनका अपना लेखन और बाद के वर्षों में उनके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वारा लिखा समाजवादी यथार्थवादी साहित्य आधुनिक चीनी लेखन में एक नए युग के विकास का सूचक है।

लू शुन की शैली सबसे भिन्न उनकी विशेष अपनी होने के साथ-साथ खास चीनी भी है। वे चीनी साहित्य में नवजागरण के अग्रदूत हैं। और क्योंकि उन्होंने अपनी नवीनता को लोकप्रिय माँगों से जोड़ा इसलिए वे चीनी साहित्य की महान गौरवशाली परंपरा के समर्थक और सच्चे उत्तराधिकारी थे। लू शुन की रुचि और शैली में हम चीनी श्रमिक जनता की बुद्धिमत्ता, रुचि और शैली को साकार देख सकते हैं।

चीनी संस्कृति में उनकी जड़ें गहरी थीं। उन्होंने एक सुधारक की लगन से विदेशी साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया था। उनके लेखन पर विदेशी, विशेषकर रूसी (उसमें भी गोगोल का विशेष रूप से) प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार उन्होंने चीनी साहित्य को आधुनिक विश्व साहित्य के प्रगतिशील रुझानों से जोड़ा। लू शुन ने जिस प्रकार विदेशी साहित्य के प्रभावों को ग्रहण कर चीन की राष्ट्रीय संस्कृति का अंग बना दिया, वह ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य था। उन्होंने स्वयं अपने लेखन में उस कार्य को संपन्न किया। उदाहरण के लिए अपनी प्रारंभिक रचना 'एक पागल की डायरी' में उन्होंने लिखा, ''मैंने इसको लिखते समय सौ या उससे अधिक विदेशी कहानियों का और अपने चिकित्सा ज्ञान का सहारा लिया है।'' 1834 में रूसी लेखक गोगोल ने 'पागल की डायरी' लिखी थी। लेकिन लू शुन की कहानी में जातीय व्यवस्था और कन्फ्यूशियन नैतिकता के दुष्प्रभावों का पर्दाफाश किया गया है और उनका आक्रोश गोगोल से भी अधिक गहरे जाकर इस सब पर चोट करता है।

लू शुन ने बताया है कि लोगों को जागृत करने की इच्छा ने उन्हें कैसे परंपरागत चीनी कलारूपों में अभिव्यक्ति के सही माध्यमों की तलाश के लिए प्रेरित किया और इससे उनकी शैली कैसे प्रभावित हुई। उन्होंने कहा कि ''मैंने शब्दाडंबर से बचने की हर कोशिश की। अगर मुझे लगता कि मैंने अपना अर्थ स्पष्ट कर दिया है तो फिर मैंने सजावट को दूर ही रखा। प्राचीन चीनी रंगमंच में कोई दृश्यावली नहीं है और बच्चों को बेची जाने वाली नए साल की तस्वीरों में कुछ ही मुख्य आकृतियाँ हैं.... मुजे लगा कि मेरे उद्देश्य के लिए यह पद्धति ही सही है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो फिर मैंने अप्रासंगगिक विस्तार में न जाकर अपने संवादों को संक्षिप्ततम रखने की कोशिश की।''

लू शुन के विचारों की व्यापकता और गहराई उनकी कला में साथ-साथ दिखाई पड़ती है। उनमें चीनी समाज और संस्कृति की गहरी पड़ताल और जनता से गहरे संबंधों का प्रमाण मिलता है।

किसी घटना या लोगों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त अपनी पद्धति को लू शुन 'आँखों को चित्रित करना' कहते थे। इसका अर्थ यह है कि किसी भी चीज़ की आत्मा को संक्षिप्त और सुंदर रूप में अभिव्यक्त करना।

उन्होंने लिखा है ''मुझे याद नहीं किसने यह कहा था कि किसी व्यक्ति के चरित्र को न्यूनतम रेखाओं से चित्रित करने का सबसे अच्छा तरीका है उसकी आँखें बना देने का। यह एकदम सही है। चाहे जितनी खूबी से आप उसके सिर के बाल बनाइए पर वह अधिक उपयोगी नहीं होगा।'' इसलिए उनकी शैली का सबसे मुख्य गुण है उसकी सटीकता, गहरी पैठ तथा इसके माध्यम से वे किसी भी चीज़ को कम-से-कम शब्दों में चित्रित कर देते हैं। कुछ ही रेखाओं से वे किसी व्यक्ति के मुख्य गुणों को उद्घाटित कर देते हैं। लू शुन जिन ठोस बिंबों के द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्ति करते हैं वे भी उतने ही गहरे, व्यापक और सटीक हैं। कुछ वाक्यों में ही या कभी तो एक ही वाक्य में वे विषय के दिल में उतर जाते हैं और उसका अन्यतम अर्थ उद्घाटित कर देते हैं।

लू शुन की भाषा की इस संक्षिप्तता और मँजाव में परंपरागत चीनी कविता और गद्य के गुणों से गजब की समानता है।

लू शुन के पास विशाल शब्द-भंडार है। उन्होंने भाषा पर बहुत ध्यान दिया। उन्होंने कहा, ''मैं किसी चीज़ को लिखकर उसे कई बार पढ़ता हूँ। अगर कोई वाक्य मेरे कानों को खटका तो मैं उसे सहज बनाने के लिए कुछ शब्द जोड़ या काट देता हूँ। जब मुझे उपयुक्त बोलचाल के शब्द नहीं मिले तो मैंने इस उम्मीद से क्लासिकल का सहारा लिया कि पाठक उन्हें समझ लेंगे। मैंने स्वेच्छाचारी ढंग से ऐसे मुहावरों का कभी प्रयोग नहीं किया जिन्हें केवल मैं ही (और कभी-कभी तो मैं भी नहीं) समझ सकता। उनकी भाषा का मुख्य स्रोत था लोगों की जीवित ज़बान, उनके मुहावरे, उनकी बातचीत तथा पुरानी पुस्तकों और क्लासिकल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संदर्भों से कुछ सूक्तियाँ। कभी-कभी वे विदेशी शब्दों या वाक्यगठन का भी उपयोग करते हैं। लू शुन के लेखन ने चीनी भाषा को समृद्ध किया और उसमें संक्षिप्तता, शक्ति, विविधता तथा व्यंग्य के गुणों को विकसित किया।''

लू शुन का व्यंग्य समाज के अँधेरे पक्ष को संक्षेप में उघाड़कर सामने रख देता है। उन्होंने कहा, ''व्यंग्य की जान सच्चाई है। सच्चाई के बिना व्यंग्य हो नहीं सकता।'' और उन्होंने इन विचारों को व्यवहार में लागू किया। उनके व्यंग्य अत्यंत शक्तिशाली और मारक हैं क्योंकि उनमें यथार्थ का सच्चा प्रतिबिंब है। उनके 'भाले और तलवार' की कार्य नीति के साथ मिलकर उनके ये व्यंग्य शत्रु पर प्रहार करने की शक्ति, बुराई की शक्तियों को बेपर्द करने के साहस को और पैना और तेज़ कर देते हैं। शत्रु चाहे किसी भी वेश में क्यों न हो, वह लू शुन के भाले या सर्जनी चाकू से बच नहीं सकता। वे बड़ी ही सहजता से आदमी के दिल को खोल देते हैं। लू शुन का व्यंग्य ठंडा दिखते हुए भी भावनाओं से भरा है। वह तीखा भी है और मजबूत भी। उनकी मान्यता थी कि व्यंग्य का उद्देश्य अच्छा होना चाहिए। वे व्यंग्य के नाम पर चले उस सर्वनकारवाद का भी तीखा विरोध करते थे 'जो अपने पाठकों' को यह सिखाए कि 'दुनिया में कुछ भी अच्छा नहीं है, कोई काम करणीय नहीं है।' लू शुन के व्यंग्यों में हम चीनी किसान और लोक साहित्य के सहज हास्य और मखौल को देख सकते हैं। हम उनमें क्लासिकल चीनी साहित्य के व्यंग्यकारों के उत्तराधिकारी को पाते हैं। मात्र इस क्षेत्र में उनकी प्रतिभा इतनी बड़ी है जो चीनी साहित्य के इतिहास में उन्हें महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए काफी है। उन्होंने चीनी जनता की परिहास बुद्धि का तथा क्लासिकल और लोक साहित्य की व्यंग्य परंपरा का विकास किया।

अंत में विश्व साहित्य में एक महान लेखक के रूप में लू शुन की विशेषता है चीनी श्रमिक जनता के साथ उनका गहरा संबंध और उनके लेखन में चीनी वैशिष्ट्य की गहरी पकड़।

CC-O: Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'शस्त्रों के लिए आह्वान' की भूमिका

जब मैं युवा था तो मेरे भी बहुत से सपने थे। बाद में उनमें से अधिकांश मैं भूल गया। लेकिन मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है। यह सही है कि अतीत को याद करने से खुशी मिलती है लेकिन कभी-कभी उससे बड़ा अकेलापन भी महसूस होता है और पुराने अकेलेपन के दिनों से चिपके रहने में क्या रखा है? लेकिन मेरी मुश्किल यह है कि मैं पूरी तरह भूल नहीं सकता। ये कहानियाँ उन्हीं चीज़ों मे निकली हैं जिन्हें मैं भूल नहीं पाया।

चार वर्ष से भी अधिक समय तक मैं रोज़ाना चीज़ें गिरवी रखने वाली दुकान और दवाखानों के चक्कर लगाता रहा। मुझे ठीक से याद नहीं उस समय मेरी उम्र क्या रही होगी, लेकिन इतना याद है कि दवाखाने का काउंटर मेरी ऊँचाई के बराबर था और गिरवी वाली दुकान का मुझसे दुगना ऊँचा। मैं अपनी ऊँचाई से दुगने उस काउंटर पर जाकर कपड़े और गहने देता था और उनसे मिले पैसों से अपने पिता की दवाइयाँ ख़रीदता था, जो लंबे समय से बीमार थे। घर पर मैं और कामों में लगा रहता। हमारा डाक्टर इतना प्रसिद्ध था कि वह बड़ी अज़ीबो-ग़रीब दवाइयाँ और सहौषधियाँ लिखता था—सर्दी में खोदी गई अगरु की जड़ें, तीन साल तक कुहरे में रखा हुआ गन्ना, झींगुर के मूल जोड़े, बीज वाला अर्दीसिया....। इनमें से अधिकांश को ढूँढ़ पाना मुश्किल था। लेकिन मेरे पिता की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती ही गई, और अंततः वे मर गए।

मेरा यह विश्वास है कि जो भी इस पृथ्वी पर आएगा अपने अनुभव से यह जान लेगा कि यह समाज किस तरह का है। मेरा 'न'—में जाकर 'क'*—अकादमी में पढ़ने का विचार अपने से पलायन करने और भिन्न प्रकार के लोगों से मिलने का ही था। मेरी माँ के सामने मेरी बात मानने के सिवाय और रास्ता ही क्या था। उसने मेरी यात्रा के लिए आठ डालर उधार लिए और कहा कि मुझे जो अच्छा लगे वही मैं करूँ। वह

* 'न' अर्थात नानचिंग और 'क' अर्थात् क्वांगतान नाविक अकादमी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत रोई। लेकिन उस समय क्लासिक्स का अध्ययन और सरकारी परीक्षा देना ही योग्यता मानी जाती थी। जो लोग 'विदेशी विषय' पढ़ते थे उन्हें बुरी नज़र से देखा जाता था और माना जाता था कि वह एक भटका हुआ आदमी है जिसने अपनी आत्मा विदेशी राक्षसों को बेच दी है। इसके साथ ही माँ को मेरी विदाई का भी गहरा दुःख था। इस सबके बावजूद मैं 'न'—में गया और 'क'—अकादमी में प्रवेश लिया। वहीं मैंने शरीर विज्ञान, अंकगणित, भूगोल, इतिहास, रेखाचित्र और शारीरिक प्रशिक्षण के अस्तित्व को जाना। वहाँ शरीरविज्ञान का पाठ्यक्रम नहीं था लेकिन हमने 'मानव शरीर पर नया पाठ्यक्रम' और 'रसायनशास्त्र तथा स्वास्थ्य पर लेख' आदि के सचित्र संस्करण देखे थे। अपने पुराने डाक्टरों की बातों और बताए गए नुस्खों की जब अपने आज के ज्ञान से तुलना करता हूँ तो लगता है कि या तो वे अनभिज्ञ थे या जानबूझकर महान विज्ञ बन रहे थे। इसे सोचकर मुझे उनके हाथों फँसे बीमारों और उनके परिवारों पर दया आती है। अनूदित इतिहासों से मैंने यह भी सीखा है कि जापान के सुधार का बड़ा कारण जापान में पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान का पढ़ाया जाना है।

इसी के कारण मैंने जापान के गाँव के एक चिकित्सा कॉलेज में प्रवेश ले लिया।* मेरी यही आकांक्षा थी कि चीन लौटकर अपने पिता जैसे उन रोगियों की सेवा करूँगा जो ग़लत हाथों में पड़े दुःख भोग रहे हैं या अग़र लड़ाई शुरू हो तो मैं सेना का डाक्टर बन जाऊँगा और साथ-साथ अपने देश के लोगों को जगाने का काम भी करूँगा।

मुझे नहीं मालूम कि आजकल सूक्ष्म जीवविज्ञान पढ़ाने के लिए कौन-से बेहतर तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं, लेकिन उन दिनों हमें जीवाणुओं के लालटेन स्लाइड दिखाए जाते थे। और अगर व्याख्यान जल्दी समाप्त हो जाते तो प्रशिक्षक समय पूरा करने के लिए प्राकृतिक दृश्यों या समाचारों के स्लाइड दिखा देते थे। क्योंकि उस समय रूसी-जापानी लड़ाई चल रही थी इसलिए युद्ध के भी अनेक स्लाइड होते और मैं भी दूसरे छात्रों की तरह कमरे में उन्हें देखकर ताली बजाता और खुश होता। मुझे अपने किसी देशवासी को देखे बहुत दिन हो गए थे। एक दिन मैंने चीनियों पर एक समाचार फिल्म देखी जिसमें एक

* यहाँ संदर्भ सुन ताइ चिकित्सा कॉलेज का है जहाँ लू शुन ने 1904 से 1906 तक पढ़ाई की।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीनी बँधा खड़ा था और बाकी लोग उसे घेरकर खड़े थे। वे सभी हट्टे-कट्टे थे लेकिन पूर्णतया निर्जीव थे। टिप्पणी में बताया गया था कि बँधे हाथों वाला चीनी रूस के लिए जासूसी करता था और जापानी सेना दूसरे लोगों को सबक देने के लिए उसका सिर काटने वाली थी तथा अन्य चीनी इस दृश्य का मज़ा लूटने के लिए जमा हो गए थे।

पाठ्यक्रम समाप्त होने से पहले ही मैं टोकियो चला गया क्योंकि इस फिल्म से मुझे विश्वास हो गया था कि चिकित्साविज्ञान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं जितना मैं समझता था। एक कमज़ोर और पिछड़े देश के लोगों को इसी तरह के तमाशों का लक्ष्य बनाया जाता रहेगा, चाहे वे कितने भी मजबूत और स्वस्थ क्यों न हों। इसलिए अगर उनमें से कई बीमारी से मरते हैं तो यह कोई अफ़सोसनाक बात नहीं है। इसलिए सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है उनकी आत्मा को बदलना। उसी समय से मैंने समझा कि इस काम के लिए साहित्य सर्वाधिक कारगर हथियार है। इस कारण मैंने साहित्यिक आंदोलन खड़ा करने का निर्णय लिया। उस समय टोकियो में ऐसे बहुत से छात्र थे जो कानून, राजनीतिशास्त्र, शरीरविज्ञान, रसायन शास्त्र, पुलिस कामकाज या इंजीनियरी पढ़ रहे थे। लेकिन कोई भी साहित्य या कला नहीं पढ़ रहा था। इस विपरीत माहौल में भी सौभाग्य से मुझे कुछ सजग लोग मिल गए। हमने कुछ अन्य को एकत्रित किया और हमारा पहला कदम एक पत्रिका प्रकाशन का था जिसके शीर्षक का अर्थ था नया जन्म। क्योंकि हम सभी का झुकाव क्लासिक्स की ओर था इसलिए हमने उसे 'विटा नोवा' (नया जन्म) नाम दिया।

जब प्रकाशन का समय नज़दीक आया तो हमारे कई लेखक उससे अलग हो गए और हमारे आर्थिक साधन सीमित रह गए। अंत में हम तीन लोग ही रह गए और हमारे पास धेला भी नहीं बचा था। क्योंकि हमने अपनी योजना बुरी घड़ी में शुरू की थी इसलिए असफल होने पर हम किससे शिकायत करते। अंततः हम तीनों को भी अलग होना पड़ा और भावी सपनों की दुनिया के हमारे सारे उद्योग ठंडे पड़ गए। इस तरह 'विटा नोवा' का अंत हुआ।

बाद में मुझे इस सबकी निरर्थकता का अनुभव हुआ। उस समय तो मैं बिलकुल ही नहीं समझ पाया था लेकिन बाद में मैंने जाना कि अगर किसी आदमी की योजना को स्वीकृति मिलती है तो उससे उसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आगे बढ़ने का साहस मिलता है, अगर उसका विरोध होता है तो वह उससे संघर्ष कर सकता है। लेकिन सबसे दुःखद स्थिति तो उसकी होगी जिसने ज़िंदा लोगों के बीच आवाज़ लगाई हो और उस पर स्वीकार या विरोध में कोई भी प्रतिक्रिया न हुई हो, मानो वह अंतहीन रेगिस्तान में कहीं फँस गया हो। तभी मुझे अकेलेपन का अनुभव हुआ।

और अकेलेपन की यह भावना दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई जैसे मेरी आत्मा को किसी भयावह ज़हरीले साँप ने डस लिया हो।

लेकिन अपनी इस बेबुनियाद उदासी के बावजूद मुझे क्रोध नहीं आया। इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि मैं कोई ऐसा नायक नहीं हूँ कि मेरे आह्वान पर सब दौड़े चले आएँगे।

लेकिन फिर भी मुझे अपने अकेलेपन से मुक्ति पानी थी क्योंकि उससे मुझे बड़ी वेदना हो रही थी। इसलिए मैंने अपनी संवेदनाओं को सुलाने के अनेक प्रयास किए—अपने देशवासियों से घुलना-मिलना और अतीत में खो जाना। बाद में मुझे और अधिक अकेलापन और दुःख महसूस हुआ जिसे मैं अब याद नहीं करना चाहता। लेकिन अपनी संवेदनाओं को सुलाने के मेरे प्रयास पूरी तरह असफल नहीं गए। मुझमें जवानी का उत्साह और लगन जाती रही।

'स'—नामक छात्रावास में एक तीन कमरों का घर था जिसके पीछे थोड़ी जगह थी जिसमें एक बबूल का पेड़ था। लोग कहते थे कि उस पर एक औरत फाँसी लगाकर मर गई थी। हालाँकि वह पेड़ अब इतना बड़ा हो गया था कि उसकी शाखाओं को छूना भी मुश्किल था लेकिन कमरे अभी भी खाली थे। मैं कुछ वर्षों तक वहाँ रहकर प्राचीन शिलालेखों की नकल करता रहा। वहाँ मुझसे मिलने बहुत कम लोग आते। उन शिलालेखों में कोई राजनीतिक समस्या या मुद्दे भी नहीं उठते थे इसलिए मेरे दिन बड़े ही शांतिपूर्वक गुज़र रहे थे। यही मैं चाहता भी था। गर्मी की रातों में जब मच्छर उमड़ते तो मैं बबूल के पेड़ के नीचे बैठकर पंखा झला करता और गहरे कोहरे के बीच से नीला आकाश देखा करता जबकि मेरी गर्दन पर पेड़ से कीड़े गिरते रहते।

कभी-कभार मेरा पुराना दोस्त चिन शिनई बात करने के लिए आ जाता। अपना बड़ा-सा बस्ता जीर्ण मेज पर रखकर वह अपना लंबा चोगा उतारकर मेरे सामने बैठ जाता, जैसे कुत्ते के डर से उसका दिल अभी भी ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा होता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"इनकी नकल करने से क्या होगा?" एक रात उसने मेरे नकल किए हुए शिलालेखों को पलटते हुए इस बात पर प्रकाश डालने के लिए कहा।

"इससे कुछ नहीं होना है।"

"फिर इनकी नकल क्यों कर रहे हो?"

"इसमें भी कोई तुक नहीं है।"

"तुम कुछ लिखते क्यों नहीं?...."

मैं समझ गया। वे 'नव युवा'* निकाल रहे थे। लेकिन क्योंकि उसके पक्ष या विरोध में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, इसलिए वे अकेले महसूस कर रहे थे। फिर भी मैंने कहा,

"ऐसे लोहे के घर की कल्पना करो जिसमें कोई भी खिड़की नहीं है और जिसे नष्ट भी नहीं किया जा सकता। उसके निवासी गहरी नींद में सो रहे हैं और वे घुटन से मरने को हैं। नींद में मरकर उन्हें मौत का दर्द नहीं होगा। अब अगर तुम चिल्लाकर कुछ उखड़ी नींद वालों को जगा दो और इन कुछेक को अवश्यंभावी मौत की पीड़ा में झोंक दो तो क्या तुम समझोगे कि तुम अच्छा काम कर रहे हो?"

"लेकिन अगर उनमें से कुछ जग जाएँ तो तुम क्या नहीं सोचते कि उस लोहे के घर को तोड़ना असंभव नहीं है?"

अपनी धारणाओं के बावजूद मैं उम्मीद को झुठला नहीं सकता था क्योंकि उम्मीद ही भविष्य थी। मुझे उसके विश्वास के विरोध में कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला। इसलिए मैं अंततः लिखने के लिए तैयार हो गया जिसका परिणाम था मेरी पहली कहानी—'एक पागल की डायरी।' और एक बार शुरू करके मैं अपने दोस्तों को खुश करने के लिए समय-समय पर कहानियाँ लिखता रहा। इस तरह मैं एक दर्जन कहानियाँ लिख गया।

जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे अपने को अभिव्यक्त करने की कोई बड़ी ज़रूरत अब महसूस नहीं होती। लेकिन क्योंकि मैं अपने अतीत के अकेलेपन को भूला नहीं हूँ इसलिए मैं कभी-कभी उन संघर्षरत लोगों का

* इस पत्रिका ने सामंतवाद पर आक्रमण करके और मार्क्सवाद का प्रचार करके 4 मई के आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्साहवर्धन करता हूँ जो अकेलेपन में जी रहे हैं या जिससे कि वे निराश न हों। मैं इसकी चिंता नहीं करता कि मेरा आह्वान साहसी है या दुःखी, उबाने वाला या हास्यास्पद लेकिन क्योंकि यह शस्त्रों के लिए आह्वान है इसलिए मुझे अपने सेनानायक के आदेश का पालन करना होगा। यही कारण है कि मैं अक्सर संकेतों का सहारा लेता हूँ, जैसे कि 'औषधि' में मैंने बेटे की कब्र पर फूलमाला को पैदा कर दिया जबकि 'कल' में मैंने यह नहीं कहा कि चौथे शान की पत्नी अपने छोटे बच्चे का कभी सपना ही नहीं लेती—क्योंकि उन दिनों हमारे सेनानायक निराशावाद के विरुद्ध थे। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं सुनहरे सपने देखने वाले अपने युवा लोगों को उस मारक अकेलेपन से ग्रस्त नहीं करना चाहता जिसका मैंने अपनी युवावस्था में सामना किया था।

इसलिए यह स्पष्ट है कि मेरी कहानियाँ कला की कसौटी पर पूरी खरी नहीं उतरतीं। मैं तो अपने आपको इसी से भाग्यशाही समझता हूँ कि उन्हें अभी भी कहानियाँ माना जाता है और उन्हें एक संकलन में छापने लायक भी समझा गया। हालाँकि इस सौभाग्य से मुझे परेशानी होती है लेकिन फिर भी मुझे यह सोचकर खुशी होती है कि अभी भी दुनिया में उनके पढ़ने वाले लोग हैं।

अब क्योंकि मेरी ये कहानियाँ एक संकलन में प्रकाशित हो रही हैं, इसलिए उपर्युक्त कारणों से मैंने उन्हें 'शस्त्रों के लिए आह्वान' शीर्षक दिया है।

—●—

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पागल की डायरी

दो भाई थे। उनका नाम बताना यहाँ ज़रूरी नहीं है। दोनों ही हाई स्कूल में मेरे अच्छे दोस्त थे। परन्तु कई वर्षों तक मुलाकात न होने से संपर्क टूट गया। कुछ समय पहले सुना कि उनमें से एक बहुत बीमार है। मैं अपने पुराने घर को वापस लौट रहा था तो सोचा कि रास्ते में उन लोगों से मिलता चलूँ। लेकिन वहाँ एक ही भाई से मुलाकात हुई। उसने बताया कि छोटा भाई बीमार था।

उसने कहा, "मुझे बेहद खुशी हुई है कि तुम इतनी दूर से हमसे मिलने के लिए आए। अब छोटे भाई की तबीयत ठीक है। उसे अन्य जगह सरकारी नौकरी मिल गई है, वहीं गया है।" उसने हँसते-हँसते दो जिल्दों में अपने भाई की डायरी मुझे दिखाई और कहा कि इनको पढ़कर भाई की बीमारी को समझा जा सकता है। तुम पुराने मित्र हो इसलिए तुम्हें देने में कोई हर्ज नहीं है। मैंने डायरी ले ली और उसे पूरा पढ़ गया। समझा गया कि वह एक मनोरोग से पीड़ित था। लिखावट बहुत ही अटपटी और बेतरतीब थी और उसमें कुछ बेसिरपैर की बातें भी थीं। डायरी में तारीखें भी नहीं थीं केवल स्याही के रंग और लिखावट के फ़र्क से अनुमान लगाया जा सकता था कि वह अलग-अलग समय में लिखी गई होगी। उसके कुछ हिस्सों में एक तरतीब भी थी। चिकित्सा-विज्ञान में शोध की दृष्टि से उपयोगी हो सकने वाले एक हिस्से को मैंने नकल कर लिया। डायरी की बेतुकी बातों तक को मैंने बदला नहीं है बस कुछ नाम बदल दिए हैं जो उन देहाती लोगों के हैं जिन्हें कोई जानता-पहचानता तक नहीं। जहाँ तक शीर्षक का सवाल है वह ठीक हो जाने पर स्वयं लेखक का ही दिया हुआ है। मैंने उसे नहीं बदला।

:1:

आज की रात चाँद बहुत उजला है।

मैंने पिछले तीस वर्षों में चाँद को नहीं देखा। इसलिए आज जब उसे देखा तो मन में उमंग लहराने लगी। लगता है पिछले तीस वर्ष

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधकार में ही बिता दिए। अब मुझे चौकस रहना होगा। कुछ गड़बड़ ज़रूर है वरना चाओ परिवार का कुत्ता मुझे दो बार क्यों घूरता!

मेरा डर अकारण नहीं है।

:2:

आज की रात आसमान में चाँद का कोई नामोनिशान नहीं। यह अमंगल सूचक है। आज सुबह जब मैं सतर्कता से बाहर निकला तो चाओ साहब ने मुझे ऐसे देखा मानो मुझे देखकर डर गए हों, मानों मेरा खून करना चाहते हों। वहाँ सात-आठ दूसरे लोग भी थे जो मेरे बारे में फुसफुसाकर बात कर रहे थे जैसे डर रहे हों कि मैं उन्हें देख न लूँ। जितने लोग मिले सबका यही हाल था। उनमें जो सबसे डरावना था वह मुझे देखते ही हँसने लगा। मैं सिर से पाँव तक काँप उठा। समझ गया कि इन लोगों ने सब तैयारी कर ली है।

फिर भी मैं बिना डरे अपनी राह चलता गया। मेरे आगे चलते बच्चे भी मेरी ही चर्चा कर रहे थे। उनकी आँखों के भाव भी चाओ साहब की तरह थे और उनके चेहरे भय से ज़र्द पड़ गए थे। सोचा, मैंने इन बच्चों का क्या बिगाड़ा है जो मुझसे ऐसे पेश आ रहे हैं! मुझसे रहा नहीं गया और पूछ बैठा, "मुझे बताओ तो।" लेकिन वे सब भाग गए।

समझ में नहीं आता कि चाओ साहब मुझसे क्यों नाराज़ हैं या सड़क पर मिले दूसरे लोग मुझसे क्यों ख़फा हैं। मुझे ऐसी कोई बात नहीं याद आ रही बस यही कि बीस वर्ष पहले ऊ चिड* साहब की पुरानी बही पर मेरा पैर पड़ गया था और वे बहुत नाराज़ हो गए थे। लेकिन चाओ साहब तो उन्हें जानते तक नहीं! लेकिन हो सकता है उन्होंने किसी दूसरे से इसके बारे में सुन लिया हो और बदला लेने की ठान ली हो। वे सड़क चलते लोगों को मेरे ख़िलाफ़ भड़का रहे हों! लेकिन इन बच्चों को इस सबसे क्या मतलब! ये लोग तो उस घटना के समय पैदा भी नहीं हुए थे! फिर ये मुझे ऐसे घूरकर क्यों देख रहे थे मानो मुझसे डरे हों और मेरा खून कर देना चाहते हों! इससे मुझे बड़ी घबराहट हो रही है। अजब परेशानी है।

मैं सब जानता हूँ। इनके माँ-बाप ने इन्हें यह सब सिखाया होगा।

---

* ऊ चिड का अर्थ है 'प्राचीन'। लू शुन का संकेत यहाँ चीन में सामंती उत्पीड़न के लंबे इतिहास की ओर है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

:3:

मैं रात में सो नहीं सकता। बिना ठीक से सोचे-विचारे ये सब बातें समझ में नहीं आ सकतीं।

इन लोगों को देखो—इनमें से कई को मजिस्ट्रेट बंद करवा चुका है, कई स्थानीय भद्रजनों से थप्पड़ खा चुके हैं, कइयों की बीवियों को सरकारी अमले उठा ले गए, कइयों के माँ-बाप साहूकारों से परेशान होकर आत्महत्या कर चुके हैं। लेकिन यह सब भुगतकर भी वे ऐसे भयभीत और खूनी दिखाई नहीं दिए जितना कल दिखे।

और सबसे विचित्र तो वह औरत थी जो गली में अपने लड़के को पीटते हुए चीख़ रही थी, "बदमाश कहीं के! तूने मुझे इतना दुखी किया है कि मैं तुझे कच्चा खा जाऊँगी।" लेकिन इस बीच वह मुझे ही देखे जा रही थी। मैं अपनी घबराहट नहीं छिपा सका और भाग खड़ा हुआ। तब लंबे-लंबे दाँतों, क्रूर चेहरे वाले लोग मेरी खिल्ली उड़ाने लगे। बुजुर्ग छन मुझे पकड़कर घर ले आए।

वे जब मुझे पकड़कर घर लाए तो घर के लोगों ने ऐसा दिखाया जैसे मुझे पहचानते ही न हों। उनकी आँखों में भी वही भाव था जो बाकी सबकी में था। जब मैं पढ़ने के कमरे में गया तो उन्होंने बाहर से कुंडी बंद कर दी जैसे मुर्गी या बत्तख को दरबे में बंद कर दिया गया हो। इससे मैं और परेशान हो गया।

कुछ दिन पहले की बात है भेड़िया शिशु गाँव से हमारा एक आसामी फ़सल की बरबादी की खबर देने आया था। उसने मेरे बड़े भाई को बताया कि उनके गाँव में लोगों ने एक गुंडे को घेरकर मार डाला। उसके बाद कुछ लोगों ने उसका दिल और कलेज़ा निकाल लिया, उन्हें तेल में तला और खा गए जैसे इससे उनकी बहादुरी बढ़ जाएगी। मैंने जब बीच में टोका तो भैया और आसामी दोनों मुझे घूरने लगे। वे भी उसी तरह मुझे देख रहे थे जैसे सडक पर लोग देख रहे थे।

यह सोचकर ही मैं एड़ी से चोटी तक सिहर उठा।

ये लोग आदमखोर हैं, ये मुझे भी खा सकते हैं।

याद आया, "तुझे कच्चा चबा जाऊँगी" कहती औरत, क्रूर चेहरों पर लंबे दाँतों वाले हँसते लोग और आसामी द्वारा सुनाई गई वह कहानी। ये सब गुप्त संकेत हैं। अब मैं समझा इन लोगों की बातों में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितना विष भरा है, उनकी हँसी कितनी मारक है। उनके दाँत कितने सफेद और चमकीले हैं। ये इन्हीं दाँतों से आदमियों को खाते हैं।

मैं जानता हूँ कि मैं कोई बुरा आदमी नहीं हूँ। लेकिन जबसे ऊ साहब की बही पर मेरा पैर पड़ा है तबसे लोग मेरे पीछे पड़ गए हैं। ये मुझसे कुछ छिपा रहे हैं। जब ये किसी से नाराज़ होते हैं तो उसे बदमाश समझ लेते हैं। मुझे याद है जब बड़े भैया मुझे लिखना सिखाते थे तो किसी भी भले-से-भले आदमी को भी मैं बुरा सिद्ध कर देता तो उन्हें वह बहुत पसंद आता। यदि मैं बुरे लोगों के दोषों पर पर्दा डाल देता तो वे कहते, "बहुत अच्छा, यह तुम्हारी मौलिकता है।" मैं उनके मन के रहस्यों को कैसे समझ सकता हूँ—खासकर जब ये लोग किसी को खा जाने की बात सोच रहे हों!

किसी भी चीज़ को समझने के लिए ठीक से सोच-विचार करना ज़रूरी है। जहाँ तक याद पड़ता है प्राचीन काल में लोग मनुष्यों को खा जाते थे। लेकिन इस बारे में मैं बहुत आश्वस्त नहीं हूँ। इस बारे में इतिहास की किताबों में खोज करने पर भी कोई क्रमबद्ध जानकारी नहीं मिली। प्रत्येक पृष्ठ पर 'सद्‌गुण और सदाचार' शब्द मिलते हैं। क्योंकि मुझे नींद नहीं आ रही थी इसलिए आधी रात तक पंक्तियों के बीच में अर्थ दीखने लगे। सारी पुस्तक केवल इन दो शब्दों से भरी थी—"लोगों को खा जाओ।"

पुस्तक में लिखे ये सारे शब्द, आसामी की सारी बातें मेरी ओर गूढ़ हँसी से घूर रही हैं।

मैं भी तो मनुष्य हूँ और ये लोग मुझे खा जाना चाहते हैं।

:4:

सुबह मैं कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। बूढ़ा छन खाना लेकर आया—एक कटोरे में सब्ज़ी, दूसरे में भाप से पकाई मछली। मछली की आँखें सफ़ेद और पथरीली थीं और उसका मुँह आदमखोर लोगों के मुँह की तरह खुला था। कुछ ग्रास खाने के बाद मुझे यह मालूम नहीं चला कि वह मछली का माँस था या मनुष्य का। इसलिए मैंने सब उगल डाला।

मैंने कहा, "छन दादा, भैया से कहो कि कोठरी में मेरा दम घुट रहा है, मैं बाहर बगीचे में टहलना चाहता हूँ।" बूढ़ा छन चुपचाप बाहर चला गया और तुरंत वापस आकर उसने दरवाज़ा खोल दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बिना उठे चुपचाप देखता रहा कि अब वे क्या करेंगे। मुझे विश्वास था कि वे मुझे बाहर नहीं जाने देंगे। इतने में बड़े भैया भी एक बूढ़े आदमी को साथ लिए धीमे कदमों से आए। बूढ़े की आँखों में क़ातिलाना चमक थी। कहीं मैं देख न लूँ इसलिए उसने गर्दन झुका ली लेकिन चश्मे के भीतर से कनखियों से मेरी ओर देख लेता था।

''आज तो तुम्हारी तबीयत बहुत अच्छी लग रही है।'' भैया ने कहा।

''हाँ'', मैंने कहा।

''मैंने तुम्हारी जाँच कराने के लिए ही हो साहब को आज यहाँ बुलाया है।''

''बहुत अच्छा'', मैंने कहा। लेकिन मैं समझ गया कि हक़ीम के वेष में यह बुड्ढा असल में जल्लाद है। मेरी नब्ज़ देखने के बहाने वह मेरे माँस का अनुमान लगा रहा था क्योंकि उसमें इसका भी हिस्सा होगा। इस पर भी मैं डरा नहीं।हालाँकि मैं आदमखोर नहीं हूँ लेकिन मुझमें उनसे अधिक साहस है। मैंने यह सोचकर अपनी दोनों कलाइयाँ आगे बढ़ा दीं कि देखूँ क्या करता है। बूढ़ा चौकी पर बैठ गया और आँखें मूँदे मेरी नब्ज़ देखता रहा, कुछ देर मौन रहा बिना हिले-डुले। फिर अपनी धूर्त आँखें खोलकर बोला, ''अपनी कल्पना को काबू में रखो, कुछ दिन तक आराम करो, तुम ठीक हो जाओगे।''

अपनी कल्पना को क़ाबू में रखो! कुछ दिन तक आराम करो! यानी मैं मोटा हो जाऊँ जिससे उन्हें ज़्यादा माँस खाने को मिले। लेकिन इससे मेरा क्या भला होगा! इसे ही 'ठीक' होना कहते हैं! मैं समझ गया, ये लोगों को खाना भी चाहते हैं लेकिन खुले आम ऐसा नहीं कर पा रहे इसलिए भलमनसाहत का ढोंग भी रच रहे हैं। यह सोचकर ही हँसी के मारे मेरे पेट में बल पड़ गए। मेरी हँसी नहीं रुक सकी और मैं ठहाका लगाकर हँस पड़ा। बड़ा मज़ा आया। मैं जानता था इस हँसी में निर्भीकता और आत्मविश्वास भरे थे। भैया और बूढ़े हकीम के चेहरे पीले पड़ गए। वे लोग मेरी निर्भीकता और आत्मविश्वास देखकर डर गए।

लेकिन मेरा साहस उन्हें मुझे खा जाने को और आतुर बना रहा है जिससे कि उनमें भी वह साहस पैदा हो जाए। बढ़ा हकीम दरवाज़े से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाहर जाते-जाते भैया के कान में कहता गया, "इसे तुरंत खाना है।" भैया ने सिर हिलाकर हामी भरी। तो तुम भी इस साज़िश में शमिल हो! इस रहस्योद्घाटन से मुझे धक्का तो लगा लेकिन मैं जानता था कि यह होना ही था। मेरा अपना भाई मुझे खा डालने के षड्यंत्र में शामिल है।

मेरा अपना ही बड़ा भाई आदमखोर है।

मैं एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ।

मैं, जो दूसरे लोगों द्वारा खाया जाने वाला हूँ, एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ।

:5:

पिछले कुछ दिनों से एक दूसरी बात मन में उठ रही है। हो सकता है हकीम के वेष में वह बूढ़ा जल्लाद न हो, हकीम ही हो। लेकिन वह आदमखोर तो है ही। वैद्यों के पुरखे ली शि चन[1] की जड़ी-बूटियों की पोथी में साफ़ लिखा है कि नर-माँस को उबालकर खाया जा सकता है। तो फिर वह वैद्य कैसे कह सकता है कि वह आदमखोर नहीं है।

जहाँ तक बड़े भैया का सवाल है उनके आदमखोर होने का तो एक और प्रमाण मेरे पास है। वे जब मुझे पढ़ाते थे तो उन्होंने स्वयं मुझे बताया कि, "लोग अपने बेटों को खाने के लिए बदल लेते थे।"[2] और एक बदमाश के बारे में उन्होंने कहा था कि उसे मार डालना ही काफी नहीं होगा बल्कि "उसका गोश्त खा डालना चाहिए, उसकी चमड़ी का बिछौना बना लेना चाहिए।" मैं उस समय छोटा था। यह सुनकर देर तक मेरा दिल धड़कता रहा। जब भेड़िया शिशु गाँव के हमारे आसामी ने एक बदमाश का कलेजा निकालकर खा जाने की बात कही थी तो भैया को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, वे चुपचाप सिर हिलाते रहे। यह साफ़ है कि वे पहले जैसे ही खूँखार हैं। चूँकि "बेटों को खाने के लिए बदल लेना" संभव है, तो किसी भी चीज़ को बदला जा सकता है और किसी को भी खाया जा सकता है। उन दिनों भैया की इन व्याख्याओं को मैं सुन लेता था, उनके बारे में सोचता नहीं था। लेकिन अब मैं खूब समझता हूँ

---

1. एक प्रसिद्ध चीनी औषधि—वैज्ञानिक (1518-1593)। उसकी पुस्तक 'कनछाओखुंग' में मानव माँस के औषधि के रूप में प्रयोग का कोई जिक्र नहीं है। यह पागल की ही एक कल्पना थी।

2. एक प्राचीन चीनी इतिहास—ग्रंथ च्वो च्वान में लिखा है कि ई.पू. 488 के घेरे में घिरे हुए लोगों में ऐसी भुखमरी फैली की उन्होंने "अपने बेटों को खाने के लिए बदल लिया।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि ऐसी बातें करते समय उनके मुँह में नर-माँस का स्वाद भर आता होगा और उनका मन मनुष्य को खाने के लिए व्याकुल हो उठता होगा।

:6:

घना अँधेरा है। मुझे नहीं पता दिन है कि रात। चाओ परिवार का कुत्ता फिर भौंक रहा है।

शेर की तरह खूँखार, खरग़ोश की तरह डरपोक, लोमड़ी की तरह चालाक.......

:7:

मैं उनके तरीक़ों को जानता हूँ। वे सीधे-सीधे नहीं मारेंगे। वे इसके परिणामों से भयभीत हैं। इसलिए इन्होंने षड्यंत्रों का जाल ऐसे फैलाया है कि मैं आत्महत्या के लिए विवश हो जाऊँ। पिछले कुछ दिनों से गली के पुरुषों और स्त्रियों का बरताव और बड़े भैया के रंग-ढंग से यह साफ़ ज़ाहिर है। ये लोग तो चाहेंगे कि आदमी अपनी पेटी को शहतीर से बाँध उसमें झूल जाए। तब उन पर खून का आरोप भी नहीं लगेगा औ उनकी तमन्ना भी पूरी हो जाएगी। इसी की कल्पना करके ये खुशी से फूले नहीं समा रहे। चाहे कोई व्यक्ति डर और चिंता से मर जाय और उसमें रक्त-माँस कुछ भी न बचे लेकिन ये लोग उसे भी खा डालेंगे।

ये लोग केवल मुरदार माँस खाते हैं। मैंने ऐसे ही एक घिनौने जानवर 'लकड़बग्घा' के बारे में कहीं पढ़ा है जो मुरदार माँस ही खाता है। वह मोटी-से-मोटी हड्डी को भी दाँतों से चबाकर निग़ल जाता है। इसकी कल्पना से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लकड़बग्घा भेड़िये की जाति का है और भेड़िया कुत्तें की जाति का। उस दिन चाओ परिवार का कुत्ता बार-बार मेरी ओर देख रहा था। इससे साफ है कि वह भी इस षड्यंत्र में शामिल है। बूढ़े हकीम की आँखें झुकी हुई थीं लेकिन मैं समझ गया।

लेकिन सबसे दुःखद तो मेरे भाई का इसमें शामिल होना है। आख़िर वह भी आदमी है, उसे डरना चाहिए। क्यों वह मुझे खा जाने के लिए दूसरों के साथ मिला है! क्या आदत से लोग इतने मजबूर हो जाते हैं कि बुरे-भले में फ़र्क ही नहीं कर पाते! या बड़े भैया इतने क्रूर-हृदय हैं कि जानबूझकर अपराध कर रहे हैं!

सबसे पहले मैं अपने आदमखोर भाई का ही भंडाफोड़ करूँगा और सबसे पहले उसे ही यह पाप करने से रोकूँगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

:8:

असल में ये बातें बहुत पहले ही उनकी समझ में आ जानी चाहिए थीं!.....

अचानक कोई भीतर आया। वह बीस-एक वर्ष का नौजवान होगा लेकिन मैं उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पाया। वह मुस्करा रहा था लेकिन जब उसने मुझे नमस्कार किया तो उसकी मुस्कान बनावटी-सी लगी। मैंने उससे पूछा, "क्या नर-मांस खाना उचित है?"

वह मुस्कराता हुआ बोला, "जब कहीं अकाल नहीं पड़ा है तो कोई नर-मांस क्यों खाएगा?"

मैं एकदम समझ गया कि यह भी उन्हीं में से है। लेकिन मैंने साहस करके अपना सवाल फिर दोहरा दिया:

"क्या यह उचित है?"

"आख़िर तुम ऐसा सवाल क्यों पूछ रहे हो? तुम वास्तव में ही.... मजाकिया हो.... आज मौसम सुहावना है।"

"ठीक है, मौसम अच्छा है, चाँदनी भी खूब उजली है। पर तुम मेरी बात का जवाब दो, क्या यह उचित है?"

वह परेशान होकर बोला, "नहीं....।"

"नहीं! तो फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं?"

"तुम्हारा मतलब क्या है?"

"मेरा मतलब! भेड़िया-शिशु गाँव में लोग मनुष्यों को खा रहे हैं। तुम सारी किताबों में देख लो ताज़ा लाल अक्षरों में यही लिखा पड़ा है।"

उसके भाव बदल गए। उसका चेहरा पीला पड़ गया। मुझे घूरते हुए वह बोला, "हो सकता है, यह सदा से ही होता आया है।"

"सदा से होता आया है, क्या इसीलिए उचित है?"

"मैं इस बारे में तुमसे बहस नहीं करना चाहता। तुम्हें भी इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए। ये फिजूल की बातें हैं।"

मैं उछल पड़ा और आँखें फाड़कर देखने लगा। वह नौजवान गायब हो गया था। मैं पसीने से तर हो गया। नौजवान की उम्र मेरे भाई से बहुत कम थी, लेकिन फिर भी उनके साथ था। उसके माँ-बाप ने उसे यह सब सिखाया होगा और मुझे डर है कि उसने अपने बेटे को भी यह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिखा दिया होगा। तभी तो वे ज़रा-ज़रा से छोकरे मुझे यों घूर-घूरकर देखते हैं।

:9:

मनुष्यों को खा जाने का लालच लेकिन साथ ही स्वयं को खाए जाने का भय। सब एक-दूसरे को गहरी आशंका से देखते हैं.....

यदि वे इन शंकाओं और भयों से मुक्त हो जाएँ तो मजे में काम पर जा सकते हैं, घूम सकते हैं और आराम से सो सकते हैं। यह कोई मुश्किल बात तो नहीं। लेकिन ये एक-दूसरे को ऐसा अच्छा कदम उठाने नहीं देते और बाप-बेटे, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र, गुरु-शिष्य एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन गए हैं और एक-दूसरे को खा जाने के षड्यंत्र में शामिल हैं।

:10:

आज सुबह मैं बड़े भैया से मिलने गया। वे ड्योढ़ी के सामने खड़े आकाश की ओर ताक रहे थे। मैं उनके पीछे दरवाज़े और उनके बीच खड़ा हो गया और बहुत ही शाँत और विनम्र स्वर में बोला:

''भैया, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।''

''कहो, क्या है?'' उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए सिर हिलाया।

''कोई ख़ास बात तो नहीं है, पर मैं कह नहीं पा रहा। भैया, शायद सभी आदिम लोग थोड़ा-बहुत मानव-मांस खाते थे। बाद में जब उनके विचार बदले तो उनमें से कुछ ने मानव-मांस खाना बंद कर दिया और सभ्य मनुष्य बनने की कोशिश की। लेकिन कुछ लोग अभी भी खाए जा रहे हैं—मगरमच्छों की तरह। कुछ जीव विकास करके मछली बन गए, पक्षी बन गए, बंदर बन गए और अंततः मनुष्य बन गए। लेकिन जिन्होंने अच्छाई को विकसित करने का प्रयत्न नहीं किया, वे रेंगने वाले जीव ही बने रहे। नर-मांस खाने वाले लोग न खाने वालों की तुलना में कितने असभ्य महसूस करते होंगे। उनसे भी अधिक लज्जा जितनी रेंगने वाले जीव बंदरों के सामने करते हैं।''

''प्राचीन काल में ई या ने अपने बेटे को पकाकर च्ये और चओ[1]

1. ई.पू. सातवीं शताब्दी में ई या, छी के ड्यूक का मुँहलगा रसोया था। जब ड्यूक ने कहा कि उसने बच्चों का माँस कभी नहीं चखा तो ई या ने अपना बेटा ही उसे परोस दिया था। च्ये और चओ इससे पहले के शासक थे। यहाँ उनका उल्लेख पागल की मानसिक विक्षिप्तता का प्रमाण है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के सामने परोस दिया था। यह एक पुरानी कहानी है। लेकिन इससे भी पूर्व जिस दिन से फान यू[1] ने स्वर्ग और धरती बनाए तथा ई या के बेटे से लगाकर श्वी शी लिन[2] के ज़माने तक और फिर श्वी शी लिन के ज़माने से लेकर भेड़िया-शिशु गाँव में पकड़े आदमी तक मनुष्य एक-दूसरे को खाते रहे हैं। पिछले साल शहर में एक अपराधी को मौत की सज़ा दी गई और तपेदिक के एक मरीज़ ने उसके खून में रोटी डुबोकर खा ली थी।''

''मैं जानता हूँ ये लोग मुझे खा जाने चाहते हैं। यह सही है कि तुम अकेले उन्हें इससे नहीं रोक सकते लेकिन तुम उनसे क्यों मिल गए हो! ये लोग आदमखोर हैं और कुछ भी कर सकते हैं। ये मुझे खा जाएँगे और बाद में तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे। फिर ये लोग एक-दूसरे को भी नहीं छोड़ेंगे। लेकिन यदि तुम अपना रास्ता बदल दो तो सब चैन से रह सकते हैं। माना कि प्राचीन काल से ही यह सिलसिला चला आ रहा है लेकिन आज हम इसे ख़त्म करने की कोशिश कर सकते हैं और कह सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा। भैया मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा कर सकते हो। अभी उस दिन जब असामी लगान घटाने के लिए कह रहा था तो तुमने कह दिया था कि ऐसा नहीं हो सकता।''

भैया पहले तो लापरवाही से हँसते रहे, फिर उनकी आँखों में खून उतर आया और जब मैंने उनका रहस्योद्घाटन कर दिया तो उनका चेहरा पीला पड़ गया। इस बीच दरवाज़े के बाहर अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई थी। चाओ साहब और उनका कुत्ता भी वहाँ थे। सब लोग गर्दनें बढ़ाकर भीतर झाँक रहे थे। मैं उन सबके चेहरे नहीं देख पाया। लगता था कई लोगों ने अपने चेहरे ढके हुए थे। दूसरे वही पुराने चेहरे थे—लंबे दाँतों वाले भयावने चेहरे जो अपनी हँसी दबा रहे थे। मैं जानता था वे सब मिले हुए हैं, सब आदमखोर हैं। उनमें से कुछ का ख़्याल था कि जब हमेशा से ही ऐसा है तो मनुष्यों को खाना बुरी बात नहीं। कुछ इसे बुरा मानते हुए भी लालच दबा नहीं पा रहे थे और चाहते थे कि लोग उनका भेद न जान पाएँ। इसलिए मेरी बात सुनकर उन्हें गुस्सा तो आया लेकिन वे फिर भी होंठ भींचे मुस्कराते रहे।

अचानक भैया का चेहरा काला पड़ गया और वे ज़ोर से चिल्लाए :

1. एक मिथक चरित्र।
2. अफसर की हत्या के अपराध में मौत की सज़ा पाने वाला एक क्रांतिकारी (1907)। उसके दिल और ज़िगर का गोश्त खाया गया था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''भागों यहाँ से, क्यों भीड़ लगा रखी है? क्या पागल कोई तमाशे की चीज़ है?''

तब मैं उनकी चाल समझा। वे अपनी राह से टलने वाले नहीं हैं। इन लोगों ने सारी योजना बना ली है। उन्होंने मुझे पागल घोषित कर दिया है। भविष्य में जब ये लोग मुझे खायेंगे तो इन्हें दोष देने की बजाय लोग इनके कृतज्ञ होंगे। जब भेड़िया-शिशु गाँव के असामी ने एक बदमाश को खा जाने की बात कही तो ये लोग ऐसे ही खुश हुए थे। यह उनकी पुरानी चाल है।

बुजुर्ग छन भी गरमी खाता भीतर आ गया। लेकिन वे मेरा मुँह बंद नहीं कर सके। मैं उन्हें आगाह कर देना चाहता हूँ:

''अगर तुमने अपने को नहीं बदला तो तुम सब एक-दूसरे द्वारा खा लिए जाओगे। तुम लोग कान खोलकर सुन लो एक दिन तुम वास्तविक आदमी द्वारा नष्ट कर दिए जाओगे जैसे शिकारीं द्वारा भेड़िये और रेंगने वाले जंतु नष्ट हो गए।''

बूढ़े छन ने सब लोगों को भगा दिया। भैया कहीं चले गए। छन ने मुझे कमरे में जाने के लिए कहा। वहाँ घुप्प अँधेरा था। सिर के ऊपर की बल्लियाँ और कड़ियाँ हिलती जान पड़ रही थीं। उनका आकार बढ़ता ही जा रहा था। फिर छत मुझ पर आ गिरी।

छत का बोझ इतना ज़्यादा था कि मैं हिल भी नहीं सका। वे लोग यही चाहते थे कि मैं मर जाऊँ। मैं जानता था कि यह बोझ ख़याली है। मैं ज़ोर लगाकर उठा और पसीने में लथपथ बाहर आया। मैं उनको आगाह करना चाहता था:

''तुम्हें तुरंत अपने को बदलना होगा। अपना मन सिरे से बदलना होगा। याद रखो, भविष्य में दुनिया में आदमखोरों के लिए कोई जगह नहीं होगी....''

:11:

कोठरी का दरवाज़ा हमेशा बंद रहता है। सूरज ने निकलना बंद कर दिया है। केवल दो बार खाना भिजवा दिया जाता है।

मैंने खाने की चापस्टिकें उठाईं तो भैया का ख़याल आ गया। मैं जानता हूँ मेरी छोटी बहन कैसे मरी थी। यह सब उन्हीं की करतूत थी। तब मेरी बहन केवल पाँच वर्ष की ही थी। वह कितनी प्यारी और निरीह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी। माँ रो-रोकर बेहाल हो रही थी। भैया उसे चुप करा रहे थे। कारण शायद यह था कि उन्होंने खुद ही उसे खा डाला था और अब रोना देख उन्हें शर्म आ रही थी। अगर उनमें शर्म-हया होती.....

मेरी बहन को भैया ने ही खाया लेकिन मुझे नहीं मालूम माँ यह भेद जान सकीं या नहीं।

मेरा ख़याल है कि माँ सब जानती थीं। पर माँ जब रो रही थी तो उसने साफ-साफ कुछ नहीं कहा। शायद उन्होंने कहना ठीक नहीं समझा। मुझे याद आता है मैं चार-पाँच साल का था। मैं सहन में बैठा था। भैया ने कहा था—यदि किसी के माँ-बाप बीमार हों तो उसे ज़रूरत पड़ने पर अपने शरीर का माँस काटकर भी खिला देना चाहिए। यही एक सपूत का धर्म है। माँ ने उनकी बात का विरोध नहीं किया। अगर नर-मांस का एक टुकड़ा खाया जा सकता है तो पूरे आदमी को भी खाया जा सकता है। और जब मैं माँ के विलाप की याद करता हूँ तो कलेजा भर आता है। बड़ी आश्चर्य की बात है।

:12:

मैं अब और सहन नहीं कर सकता।

मेरी समझ में आ गया है कि मैं अब तक ऐसे लोगों के बीच रह रहा हूँ जो चार हज़ार वर्ष से मानव-मांस का आहार करते आ रहे हैं। भैया ने अभी घर का भार सँभाला ही था कि कुछ दिन बाद छोटी बहन मर गई। उन्होंने उसका मांस हमारे खाने में मिलाया होगा और हमने अनजाने में ही खा लिया होगा।

संभव है अनजाने में मैंने अपनी बहन के मांस के कई टुकड़े खा लिए हों। और अब मेरी बारी है.....

मेरे जैसा आदमी चार हज़ार वर्षों के मानव-भक्षी इतिहास के रहते हुए इससे कैसे बेखबर रहा। मैं आने वाले वास्तविक आदमी को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा?

:13:

संभव है ऐसे भी बच्चे हों जिन्होंने अभी नर-मांस नहीं खाया हो! इन बच्चों को तो बचा लें.....

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुंग ई ची

लूचन कस्बे में शराब की दुकानों की बनावट विशिष्ट है। उनमें घुसते ही एक समकोणीय काउंटर होता है जहाँ शराब गर्म करने के लिए गर्म पानी रखा रहता है। दोपहर या शाम के समय जब लोग काम से छूटकर आते हैं तो शराब का प्याला ले लेते हैं। बीस वर्ष पहले एक प्याली शराब का दाम चार ताँबे के सिक्के था, मगर अब दस ताँबे के सिक्के हो गया है। लोग वहीं खड़े-खड़े आराम से गरम-गरम शराब पीते हैं। एक और ताँबे के सिक्के में बाँस के कल्ले की या सौंफ के मसाले में पके मटर की एक प्लेट मिल जाती है जो शराब के साथ चलती है। कलेजी-कबाब बारह सिक्कों में मिलती है। लेकिन यहाँ आने वाले अधिकांश ग्राहक छोटी जाकेट वाले ग़रीब लोग होते हैं जो इतना खर्च नहीं कर सकते। जहाँ तक बड़े चोगों वाले लोगों का सवाल है, वे अंदर कमरे में बैठकर खाने और पीने का आनंद लेते हैं।

बारह वर्ष की आयु में मैंने कस्बे के किनारे के खुशहाली मदिरालय में नौकरी कर ली थी। मालिक क्योंकि मुझे निरा बुद्धू समझता था और लंबे चोगों वाले ग्राहकों के लिए ठीक नहीं मानता था, इसलिए मुझे बाहर के कमरे में 'आम लोगों' का काम दिया गया। वैसे तो छोटे लोगों को सँभालना आसान काम था पर उनमें कई टेढ़े मिज़ाज के लोग भी आ जाते थे जो पीली शराब लेने से पहले अपनी आँखों से केतली की तली देख लेते थे कि उसमें कहीं पानी तो नहीं है और अपनी आँखों के सामने केतली को गरम पानी में रखवाते थे। ऐसी चौकसी बरतते थे कि मजाल है बूँद भर पानी मिलाया जा सके। कुछ दिन बाद ही मालिक को लगा कि मैं यह काम करने के लायक नहीं हूँ। भाग्यवश एक बड़े आदमी ने मुझे दुकान पर रखवाया था, इसलिए नौकरी से तो नहीं हटाया, लेकिन मुझे शराब गरम करने का नीरस काम सौंप दिया।

उसके बाद मैं दिनभर काउंटर के पीछे खड़ा काम में लगा रहता। हालाँकि मैं मालिक का काम बखूबी निबाह रहा था, पर इस काम से मेरा मन ऊब गया था। मालिक का चेहरा मनहूस-सा था और जो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्राहक आते वे भी रूखे मिज़ाज के थे। बड़ी मनहूसियत छाई रहती थी। जब कभी दुकान में खुंग ई ची आ जाता ता कुछ हँसी-ठट्ठा हो जाता। इसलिए उसकी याद आज भी बनी है।

खुंग लम्बा चोगा पहनने वाला एकमात्र व्यक्ति था जो काउंटर पर खड़े होकर पीता था। खुंग एक अच्छा उँचा कद्दावर आदमी था जिसके झुर्रियों भरे चेहरे पर कभी-कभी घाव या खरोंच के निशान बने होते थे। उसकी लम्बी खिचड़ी दाढ़ी उलझी-उलझी रहती थी। खुंग का चोगा तो लम्बा था, परंतु बहुत मैला और चिथड़ा-सा हो गया था। उसे देखते ही लगता था कि कम-से-कम दस वर्षों से उसे न तो धोया गया है, न सिला। वह बात के बीच-बीच में ऐसे पेचीदा शब्द बोलता था कि उसकी बात आधी ही समझ में आती थी, क्योंकि उसका कुलनाम खुंग था, इसलिए लोगों ने उसका नाम 'खुंग ई ची' रख दिया था, जो बच्चों की पुराने किस्म की किताबों के पहले तीन अक्षरों से बनता है। वह जैसे ही दुकान में कदम रखता तो हर आदमी के चेहरे पर मुस्कान आ जाती। कोई पुकार उठता:

"खुंग ई ची यह क्या? चेहरे पर ये नए दाग़ कैसे आ गए?"

खुंग अनसुनी कर सीधा काउंटर पर आ जाता और नौ सिक्के रख दो प्याली गरम शराब तथा मसालेदार चना-मटर माँग लेता। तब कोई दूसरा ज़रा ऊँची आवाज़ में कह देता:

"तुमने ज़रूर फिर चोरी की है।"

"क्यों किसी भलेमानुस पर झूठी तोहमत लगा रहे हो।" खुंग घूर कर देखता हुआ जवाब देता।

"झूठी तोहमत? अभी परसों ही मैंने अपनी आँखों से तुम्हें हो के घर से किताबें चुराने के जुर्म में पिटते देखा।"

खुंग का चेहरा तमतमा जाता, माथे की नसें फूल आतीं। वह विरोध करता: "पुस्तक-पोथी उठाना भी कोई चोरी होती है? पुस्तक उठाना एक विद्वान के लिए चोरी नहीं माना जाता।" और फिर प्राचीन ग्रन्थों में से कोई उद्धरण सुना देता, जैसे "सज्जन की सत्यनिष्ठा निर्धनता में भी बनी रहती है।"* इसी तरह की अनेक पंडिताऊ बातें

* 'कन्फ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह' नामक पुस्तक से उद्धृत।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और सब लोग उसकी बातों पर हँसने लगते और सारी दुकान में ख़ुशी का वातावरण छा जाता।

लोगों की कानाफूसी से मुझे पता चला कि खुंग अनेक क्लासिकी ग्रंथ पढ़ चुका है, पर कभी कोई सरकारी परीक्षा पास नहीं कर सका। जीविका के अभाव में हालत बिगड़ती गई और अब तो माँगने तक की नौबत आ गई है। भाग्यवश खुंग की लिखावट बहुत सुन्दर थी जिससे उसे लिखाई का काम मिल जाता था और किसी तरह निर्वाह हो जाता था। पर ऐबी भी तो कम नहीं था: नशे-पानी की आदत डाल ली और काहिल अव्वल दर्जे का था। कुछ दिन ढंग से काम करता और फिर किताब, काग़ज़, कूची और स्याही समेत चम्पत हो जाता। कई बार ऐसे ही चकमा देने के बाद भला उसे लिखाई का काम कौन देता? काम नहीं मिला तो लाचार होकर उठाईगिरी पर आ गया। पर हमारी दुकान पर वह एक आदर्श ग्राहक था जो वादे पर अपना बकाया चुका देता। पर कभी-कभी ग़रीब का हाथ सचमुच तंग रहता, जिसकी वजह से मालिक को उसका नाम उधारखाते की तख्ती पर लिखना पड. जाता। खुङ् हमेशा महीने के अंदर ही अपना हिसाब चुकता कर देता और उसका नाम तख्ती से कट जाता।

आधी प्याली पी लेने ते बाद खुंग स्वस्थ हो जाता। तब तक कोई दूसरा बोल उठता:

''खुंग सच कहना, क्या तुम सचमुच पुस्तक-पोथी बाँच लेते हो?''

खुंग कनखियों से देख चुप रह जाता मानो ऐसी बात का क्या उत्तर दे। लेकिन प्रश्न जारी रहते: ''अच्छा यह बताओ कि तुम न्यूनतम सरकारी परीक्षा भी क्यों पास नहीं कर पाए?''

खुंग का खीझता और तिलमिलाता चेहरा स्याह हो जाता और वह होठों ही होठों में न समझ आने वाली पंडिताऊ बातें बड़बड़ाने लगता। तब सब लोग ज़ोर से हँस देते, और सारी दुकान का वातावरण उल्लासमय हो उठता।

सब हँसते तो मैं भी हँसी में शामिल हो जाता क्योंकि उस समय मालिक से डाँट का डर नहीं रहना था। मालिक सबको हँसाने के लिए खुद ही खुंग से छेड़खानी करता रहता था। खुंग फिजूल समझ उन लोगों की अनसुनी कर पीठ फेर लेता और हम छोकरों से बातें करने लगता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दिन उसने मुझसे पूछ लिया :

"तू कभी पाठशाला में पढ़ा है?"

मैंने हामी भरी तो वह बोला, "अच्छा तो लिखकर दिखा मटर में 'हु इ' अक्षर कैसे लिखते हैं?"

मुझे अच्छा नहीं लगा। 'ऊँह, यह भिखमंगा मेरा इम्तहान लेगा।' यह सोचकर उसकी बात अनसुनी कर मैं चला आया। कुछ देर रुककर खुंग बड़ी आत्मीयता से फिर बोला :

"'हु इ' लिखना नहीं आता तुझे? मैं सिखाऊँगा। तुम इसे याद रखना। बाद में जब तेरी अपनी दुकान होगी तो लिखा-पढ़ी में यह काम आएगा।"

खुंग की बात मुझे अजीब लगी, क्योंकि अपनी दुकान में बैठने की बात मेरे लिए महज एक सपना थी। इसके अलावा मेरा मालिक तो 'हु इ' वाली मटर की अदद बही-खाते में चढ़ाता ही नहीं था। मैंने अनमना-सा जवाब दिया, "वाह, इसके लिए कौन बड़े पण्डित की ज़रूरत है। देखो, क्या यह बुनियादी अक्षर नहीं है?"

खुंग खिल उठा। काउंटर की मेज़ पर हाथ मारकर बोला, "शाबाश! 'हु इ' लिखने के चार अलग-अलग तरीके हैं। क्या तुझे मालूम हैं?" लेकिन मेरा धैर्य चुक गया। मैंने मुँह फेर लिया। मगर खुंग प्याली में उँगली डुबो कर काउंटर पर लिखकर दिखाने लगा। उसने मेरी उपेक्षा देखी तो उसका मुँह लटक गया और उसने आह भरी।

कभी-कभी शराब की दुकान में हँसी-मज़ाक का शोरगुल सुनकर पड़ोस के बच्चे चले आते और खुंग को घेर लेते। खुंग मसालेदार चना-मटर, एक-एक, दो-दो दाने उनके हाथ पर रख देता। बच्चे नमकीन खाकर और पाने की आशा में उसे घेरे रहते। परेशान होकर खुंग अपनी प्लेट को हाथ से ढककर छिपा लेता और आगे की ओर झुककर कहता, "जाओ-जाओ, अब नहीं है। ख़त्म हो गया।" फिर सीधे होकर मटर की प्लेट पर एक नज़र डालकर विश्वास दिलाता "जाओ-जाओ, अब नहीं है। सचमुच ख़त्म हो गया है।" छोकरे ज़ोर से हँसते हुए भाग जाते।

इस तरह खुंग हमारा मनोरंजन करता। मगर उसके बिना भी सब चलता ही था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दिन, शरदोत्सव से कुछ दिन पहले मालिक दुकान के हिसाब-किताब में डूबा हुआ था। सहसा कलम रखकर वह पुकार उठा, "बहुत दिनों से खुंग ई ची नहीं आया। उसके नाम उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया हैं।" तब कहीं ख़्याल आया कि खुंग सचमुच बहुत दिनों से नहीं आया था।

"अरे वह अब क्या आएगा," कोई ग्राहक बोल उठा। "उस दिन ऐसी मार पड़ी है कम्बख़्त पर कि उसके घुटने ही टूट गए।"

"अरे!" मालिक ने कहा।

"फिर चोरी में पकड़ा गया। हिम्मत तो देखो, इस बार तिंग साहब प्रसिद्ध विद्वान के यहाँ चोरी करने जा पहुँचा। वहाँ से बचकर कैसे निकल आता?"

"तब क्या हुआ?"

"होता क्या? पहले तो उन लोगों ने पकड.कर उससे इकबाली बयान लिखवा लिया। फिर खूब मारा। रात भर पीटा। मार-मार कर कम्बख़्त के घुटने तोड़ दिए।"

"फिर?"

"फिर क्या, पैरों से तो गया।"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर.... कौन जानता है फिर क्या हुआ? शायद मर ही गया हो।"

मालिक ने और कुछ नहीं पूछा, अपने बही-खाते पर झुककर हिसाब-किताब करता रहा।

शरदोत्सव बीत चुका था। जाड़ा पड़ने लगा था। ठिठुरन बढ़ती जा रही थी। हालाँकि मैं अँगीठी के पास ही खड़ा रहता था, फिर भी मुझे रुई की बंडी पहननी पड़ती थी। एक दिन तीसरे पहर, जब दुकान में कोई ग्राहक नहीं था और मैं अंगीठी के पास बैठा ऊँघ रहा था, तो सहसा किसी के कदमों की आहट हुई और फिर सुनाई दिया:

"एक प्याली शराब तो गरम कर दो।"

आवाज़ बहुत धीमी थी, पर पहचानी हुई लगी। आँख खोली तो कोई दिखाई नहीं दिया। खड़े होकर काउंटर के ऊपर से झुककर देखा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो नीचे फर्श पर खुंग बैठा दिखाई दिया। खुंग दरवाज़े की ओर आँख लगाए था। चेहरा सूखा हुआ, बीमार-सा अस्त-व्यस्त। उसके बदन पर एक फटी-पुरानी बंडी थी। घुटने मोड़े चटाई के एक टुकड़े पर बैठा था जो रस्सी से उसके कँधे पर बँधा था। मुझसे आँख मिली तो फिर बोला :

''एक प्याली शराब तो गरम कर दो भैया।''

मालिक ने गद्दी से झुककर देखा और बोला : ''खुंग है क्या? अरे तेरी तरफ उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया हैं।''

''वह.... अब की बार आऊँगा तो चुका दूँगा''—खुंग ने उदास से स्वर में कहा, ''अभी के तो यह नकद ले लो, पर भैया शराब ज़रा अच्छी देना।''

मालिक ने सदा की तरह ठट्ठा किया :

''खुंग तुम फिर पकड़े गए चोरी में?''

इस बार खुंग ने हठपूर्वक प्रतिवाद नहीं किया। खीसें निकालकर बोला : ''मुझसे मज़ाक क्यों करते हो भाई?''

''हँसी की बात क्या है इसमें? चोरी में नहीं पकड़े गए तो पैर कहाँ तुड़वाए?''

''गिर पड़ा था भैया,'' खुंग धीरे से बोला, ''गिरने से हड्डी टूट गई।'' उसने बड़ी कातरता से मालिक की ओर देखा, जैसे अनुरोध कर रहा हो कि ऐसी बात न करे। तब तक और लोग भी आ गए और खुंग को देखकर दुकान में हँसी के फुव्वारे छूटने लगे। मैंने शराब गरम की और खुंग के सामने रख दी। खुंग ने अपनी फटी बंडी की जेब से चार ताँबे के सिक्के निकालकर मेरे हाथ पर रख दिए। मैंने देखा उसके हाथ मिट्टी में सने थे। मैं समझ गया, बेचारा हाथों के बल रेंगता आया है। खुंग ने प्याली की शराब पी ली और फिर हाथों के सहारे रेंगता हुआ हँसी-ठट्ठा व तानेबाजी सुनता हुआ दुकान से निकल गया।

काफी दिन बीत गए, खुंग फिर नहीं दिखाई दिया। वर्ष के अंत में जब मालिक ने हिसाब लिखने के लिए उधारखाते की पटिया को नीचे उतारा तो उसे याद आ गया, खुंग की तरफ उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया थे। अगले साल नाग-नौका उत्सव के मौके पर उसने फिर यह बात दोहराई। साल भर बाद फिर से शरदोत्सव आया तो मालिक ने इस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय पर कोई बात नहीं की। एक और नया वर्ष भी आ गया, परंतु खुंग फिर दिखाई नहीं दिया।

उसके बाद मैंने फिर कभी उसे नहीं देखा। जान पड़ता है, खुंग ई ची अब सचमुच इस संसार में नहीं रहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औषधि

वह शरद ऋतु का उषाकाल था। चाँद क्षितिज पर झुक गया था, पर सूर्योदय में अभी देर थी और आकाश में गहरी नीलिमा छायी हुई थी। रतजगा करनेवाले प्राणियों को छोड़कर बाकी अभी सब नींद में थे। बूढ़ा श्वान सहसा अपने बिस्तर में उठ बैठा। उसने माचिस से चीकट कुप्पी जलायी जिससे चायघर की दोनों कोठरियों में धुँधला प्रकाश फैल गया।

''क्या तुम अभी जा रहे हो?'' एक बुढ़िया की आवाज़ आयी। अंदर की कोठरी से खाँसने की आवाज़ सुनाई दी।

''हूँ।''

बूढ़े श्वान ने कपड़े पहनते हुए यह सुना। फिर हाथ बढ़ाकर बोला ''ला, दे।''

तकिये के नीचे थोड़ी देर टटोलकर बुढ़िया ने चाँदी के डालरों की थैली उसे थमा दी। बूढ़े श्वान ने घबराकर उसे जेब में रख लिया और फिर दो बार जेब को थपथपाया। कागज़ की लालटेन जलाकर और कुप्पी को बुझाकर बूढ़ा अंदर कोठरी में गया। कपडों में सरसराहट हुई और फिर खाँसी। खाँसी थमी तो बूढ़ा धीमे से बोला, ''बेटा। ....तू बिस्तर में ही रहना। ....दुकान तेरी माँ देख लेगी।''

कुछ उत्तर नहीं मिला तो श्वान ने समझ लिया बेटा फिर गहरी नींद सो गया है। वह गली में जा पहुँचा। बाहर अभी अँधेरा था और सड़क भी मुश्किल से दिखाई पड़ रही थी। कंदील की रोशनी बूढ़े के चलते पाँवों पर पड़ रही थी। कहीं-कहीं कुत्ते दिखाई दिए, पर वे भौंके नहीं। बाहर खूब ठिठुरन थी परंतु बूढ़ा उत्साह से चला जा रहा था, जैसे फिर से जवानी आ गई हो और उसके शरीर में एक अद्‌भुत प्राणदायक शक्ति उत्पन्न हो गई हो। वह लंबे-लंबे डग भरने लगा। अब आकाश में प्रकाश बढ़ने लगा था और सड़क भी साफ-साफ दिखाई पड़ रही थी।

श्वान अपने विचारों में डूबा तेज़ी से चला जा रहा था कि सामने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौराहा दिखाई पड़ा और वह विस्मय से ठिठककर रुक गया। कुछ कदम पीछे लौटा और सड़क के किनारे एक बंद दुकान के छज्जे के नीचे खड़ा हो गया। कुछ देर खड़ा रहा तो जाड़ा लगने लगा।

"शायद कोई बूढ़ा है।"

"खूब प्रसन्न जान पड़ता है।...."

श्वान चौंका। उसने ध्यान से देखा—सड़क पर कई लोग चले जा रहे थे। जाने वालों में से एक ने घूमकर उसकी ओर देख भी लिया। उसे पहचान तो नहीं पाया, पर उसकी आँखें चमक गईं, जैसे भूखे की आँखें खाना देखकर चमक उठती हैं। श्वान ने अपनी कंदील की ओर नज़र डाली, वह बुझ गई थी। उसने अपनी बंडी की जेब को हाथ से दबाया। थैली सुरक्षित थी। श्वान ने नज़र उठाकर देखा तो सड़क पर दो-दो, तीन-तीन करके कई अजीब-से लोग आ-जा रहे थे, जैसे भटकी आत्माएँ इधर-उधर भटक रही हों। श्वान ने फिर ध्यान से उनकी ओर देखा तो और कोई विशेष बात नज़र नहीं आई।

सड़क पर कुछ सैनिक भी घूमते दिखाई दिए। उनकी वर्दियों पर आगे और पीछे सफेद गोल निशान दूर से ही दिखाई दे रहे थे। सिपाही जब समीप आ गए तो उनकी वर्दियों पर गहरे लाल रंग के बार्डर भी दिखाई देने लगे। कुछ पल बाद एक साथ बहुत से कदमों की आहट सुनाई दी और वे लोग बढ़ गए। पहले से आए लोग भी उनके साथ मिल गए। चौराहे पर जाकर सब लोग ठहर गए और अर्धचंद्राकार खड़े हो गए।

श्वान ने भी उस ओर देखा मगर लोगों की पीठ ही दिखाई दी। सभी लोगों की पूरी तनी गर्दनें देखकर लगता था जैसे कोई अदृश्य हाथ अनेक बत्तखों को थामे हों। कुछ देर सन्नाटा रहा, फिर एक आहट हुई। भीड़ में थिरकन-सी जान पड़ी और चौराहे पर खड़े लोग एक साथ हल्ले में पीछे लौट पड़े जिनके धक्के से बूढ़ा श्वान गिरते-गिरते बचा।

"दाम निकाल, तब मैं तेरी चीज़ दूँगा।" एक आदमी श्वान के सामने रुककर बोला। आदमी सिर से पैर तक काले कपड़ों में था। आँखें खंजर की तरह चमक रही थीं। श्वान भयानक आशंका से सिमट गया। स्याहपोश ने अपना बड़ा सा हाथ पैसों के लिए बढ़ा दिया। उसके दूसरे हाथ में भाप छोड़ती बेलनाकार रोटी थी जिससे धरती पर लाल-लाल बूँदें टपक रही थीं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बूढ़े श्वान ने घबराहट में जेब टटोल कर थैली बाहर निकाली और काँपते हाथ से देना चाहता था पर रोटी ले लेने का उसे साहस न हुआ। काला स्याहपोश अधीरता से झुँझला उठा : ''डर से क्यों मरा जा रहा है? लेता क्यों नहीं?'' श्वान को फिर भी साहस न हुआ तो स्याहपोश ने श्वान के हाथ से कंदील छीन ली और कंदील का काग़ज़ का शेड फाड़ रोटी को काग़ज़ में लपेट कर श्वान के हाथ में ठूँस दिया। श्वान से थैली लेकर उसे टटोलकर देखा। ''बूढ़ा मुर्ख....'' बड़बड़ाता हुआ वह चल दिया।

''किसकी बीमारी के लिए ले जा रहा है?'' श्वान को सुनाई दिया, पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। श्वान काग़ज़ में लिपटी रोटी को बहुत सावधानी से सँभाले लौट रहा था, जैसे कोई बड़ी साध से पाए बड़े वंश के एकमात्र वारिस को सँभाल कर लिए जा रहा हो। बाकी किसी का कोई महत्त्व नहीं। अब वह इस नए जीवन को अपने घर में रोपेगा और सुखी होगा। सूर्योदय हो गया था। सामने घर तक उजली सड़क दिखाई दे रही थी। श्वान घर की ओर चला जा रहा था। चौराहे पर लगा पत्थर पीछे छूट गया था जिस पर मिटते-से, सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था 'पुरानी ड्योढ़ी'।

2

जब श्वान लौटकर घर पहुँचा तो दुकान में झाड़-पौंछे हो चुकी थी। मेजें धुली-पुँछी चमक रही थीं, परंतु ग्राहक अभी नहीं आए थे। उसका लड़का ही दीवार के साथ लगी मेज पर बैठा खाना खा रहा था। लड़के के माथे से पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदें टपक रही थीं। उसकी दोहरी बंडी पीठ से लदी सटी हुई थी। कँधों और हँसली के उभर आए हाडों के बीच से गर्दन ऐसे उठी हुई थी, जैसे कोई चीज़ गढ़े में खोंस दी गई हो। लड़के को इस अवस्था में देखकर श्वान के माथे पर फिर चिन्ता की रेखाएँ उभर आईं। उसकी पत्नी हड़बड़ाकर रसोई से निकल आई—उत्सुकता भरी आँखों और अधीर स्वर में पूछा :

''मिल गई?''

''हूँ।''

श्वान बुढ़िया के साथ रसोई में चला गया। दोनों में कुछ बातें हुईं। बुढ़िया रसोई से निकल कर गली में चली गई और कुछ ही क्षणों में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लौटी तो कमल का सूखा पत्ता लिए थी। बुढ़िया ने पत्ता मेज पर फैला दिया। श्वान ने कंदील के कागज़ में लिपटी रक्त भीगी रोटी निकाली और पत्ते पर रख दी। श्वान का बेटा खाकर उठ रहा था। माँ उसको देखकर बोल पड़ी:

"बेटा, अभी न जा। ज़रा बैठा रह।"

बूढ़े ने अँगीठी में आग जला दी और फिर रोटी पर से उतरे कंदील के रंगीन कागज़ और पत्ते में लिपटी रोटी को अँगीठी पर रख दिया। अँगीठी से धुआँ उठा और फिर लाल-काली लपटें उठीं और दुकान में विचित्र-सी गंध भर गई।

"क्या महक रहा है? क्या खा रहे हो?" कुबड़े ने दुकान में कदम रखते ही पूछा। कुबड़े का दिन दुकान में ही बीतता था। सुबह दुकान खुलते ही आ बैठता और रात दुकान बढ़ाने के समय लौटता। वह एक कोने में जा बैठा। उसके प्रश्न का किसी ने उत्तर नहीं दिया।

"लपसी है?"

श्वान ने कोई उत्तर नहीं दिया और उसके लिए चाय बनाने लगा।

बुढ़िया भीतर की कोठरी में चली गई थी। उसने बेटे को वहीं बुला लिया। बेटे को चौकी पर बैठाकर एक तश्तरी में काली-सी टिकिया उसके सामने रखकर पुचकारा:

"ले बेटा, खा ले.... अब तू चंगा हो जाएगा।"

श्वान के बेटे ने टिकिया उठाकर देखी। अजीब-सा लगा, जैसे स्वयं अपना जीवन-मरण हाथ में उठाए हो। लड़के ने टिकिया को तोड़ा। जली हुई रोटी के भीतर से सफेद-सी भाप उठी और फैल गई। रोटी ऊपर से जल गई थी, पर भीतर से अच्छी थी। लड़के ने रोटी खा ली। तश्तरी पड़ी रह गई। बुड्ढा-बुढ़िया समीप खड़े बेटे की ओर ममताभरी आँखों से देखते रहे जैसे दोनों आँखों से आशीर्वाद दे रहे हों और बेटे के शरीर का रोग समेट लेना चाहते हों। बेटे का हृदय तेज़ी से धड़कने लगा। उसने सीने को दोनों हाथों से दबा लिया और खाँसने लगा।

"बेटे, थोड़ी देर के लिए सो जा, बस अब तू चंगा हो जाएगा," माँ ने कहा।

लड़का चुपचाप जाकर खाँसता हुआ बिस्तर में लेट गया। जल्दी ती.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे नींद आ गई। माँ के कान बेटे के श्वास की गति की ओर थे। जब समझ लिया कि सो गया है तो थेकलीदार पुराना लिहाफ उसे ओढ़ा दिया।

3

दुकान में ग्राहकों की भीड़ थी। श्वान ताँबे की बड़ी केतली हाथ में लिए जल्दी-जल्दी ग्राहकों के लिए चाय बनाता जा रहा था। परंतु आँखों के नीचे काले गड्ढे पड़ गए थे।

"कहो बाबा, क्या हाल-चाल हैं?.... कोई तकलीफ है क्या?" एक दढ़ियल ग्राहक ने पूछ लिया।

"नहीं, कुछ नहीं," श्वान ज़रा मुस्करा दिया।

"कुछ नहीं? ....तुम ज़रा मुस्कराए तो जान में जान आई। हमें तो फिक्र हो गई थी।" प्रौढ़ ने अपनी चिन्ता से मुक्ति पाई।

"श्वान को दम लेने की भी फुर्सत नहीं है।" कोने से कुबड़ा बोल उठा, "बेचारे का बेटा....।" बात पूरी नहीं हुई कि तभी दुकान में एक और आदमी ने कदम रखा—गाल लटके हुए और शरीर भारी-भरकम। वह कत्थई रंग का कुरता पहने था, बटन खुले हुए, कुरते को कमर पर चौड़ी पेटी से लापरवाही से समेटे। आते ही श्वान से चिल्लाकर बोला:

"खिला दिया लड़के को? कुछ फायदा हुआ? भाग्य अच्छे हैं तुम्हारे श्वान। भाग्य की ही तो बात है कि मुझे समय से खबर मिल गई।...."

एक हाथ में केतली और दूसरे से सम्मान दिखाते हुए श्वान ने मुस्कराते हुए सुना। पहलवान की बात सभी अदब से सुन रहे थे। भीतर की कोठरी से बुढ़िया भी निकल आई। बुढ़िया की आँखों के नीचे भी चिन्ता की झांई फ़ैली हुई थी। पहलवान की खुशामद में वह भी मुस्कराई। बुढ़िया के हाथ में प्याला था जिसमें चाय की नई पत्ती और जैतून का टुकड़ा था। श्वान ने प्याले में खौलता पानी छोड़कर पहलवान के लिए चाय बना दी।

"शर्तिया इलाज है। कोई मामूली नुस्ख़ा नहीं।" पहलवान बोला। "देखा नहीं था, बिलकुल ताजा गरम-गरम लाकर दिया था तुम्हें। गरम-गरम तुमने भी खिला दिया होगा।"

"हाँ, और नहीं तो क्या, चाचा खुंग मदद न करते तो यह हमारे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस का थोड़े ही था।" बुढ़िया ने बहुत कृतज्ञता प्रकट की।

"अरे शर्तिया इलाज है। आदमी के ताज़े गरम-गरम खून में रोटी भिगोकर खाने से कैसा ही तपेदिक हो, शर्तिया ठीक हो जाता है।"

'तपेदिक' शब्द सुनकर बुढ़िया का चेहरा उतर गया। फिर भी उसने मुस्कराने का यत्न किया और किसी बहाने से उठकर भीतर चली गई। पहलवान ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोले जा रहा था जिससे भीतर की कोठरी में सोया लड़का जाग उठा और खाँसने लगा।

"श्वान् के लड़के ही के भाग थे कि ऐसा मौका बन गया। अब क्या है, अब तो समझो कि लड़का चंगा हो गया। तभी तो बूढ़ा श्वान इतना खुश है।" दढ़ियल आदमी बात करते-करते पहलवान के पास आ बैठा, और उसने धीरे से कहा:

"खुंग साहब, सुना है आज जिस बदमाश की गर्दन काटी गई वह श्या। परिवार का लड़का था। क्या नाम था? किस जुर्म में गर्दन काटी गई?"

"कौन? विधवा श्या का लड़का। वह बदमाश?"

पहलवान ने एक नज़र चारों ओर डाली। यह देख कि सभी लोगों की उत्सुक आँखें उसी की ओर लगी हुई थीं। वह पहले से भी ऊँचे स्वर में बोला:

"अरे बड़ा बदमाश था। साले के सिर पर मौत खेल रही थी। जानबूझकर मरा। हमारे हाथ क्या लगा, कुछ भी नहीं। उसके कपड़े-लत्ते भी शरीर से उतार कर लाल आँखों वाले जेलर ने दबा लिए। यह तो बूढ़े श्वान की किस्मत थी कि इसका काम बन गया; उसके रिश्ते का चाचा श्या भी भाग्यवान था, उसने इनाम ले लिया। पच्चीस औंस नकद चाँदी मार ली। उसके पल्ले से कौड़ी भी खर्च नहीं हुई।"

श्वान का बेटा कोठरी से निकल आया। वह दोनों हाथों से सीना दबाए खाँसता जा रहा था। वह रसोई में चला गया। कटोरे में बासी भात ले लिया। भात पर खौलता पानी डाला और खाने लगा। माँ ने लड़के के पास आकर प्यार से पूछा:

"अब कैसा लग रहा है बेटा? वैसी ही भूख मालूम हो रही है?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे अब यह शर्तिया चंगा हो जाएगा।" लड़के की ओर देखकर पहलवान बोल उठा और फिर पास बैठे लोगों को बताने लगा। "उस लड़के का चाचा श्या बड़ा चालू आदमी है। अगर उसने लड़के का भेद न दे दिया होता तो उसके खानदान भर की गर्दन काट दी जाती, घर-ज़मीन सब ज़ब्त हो जाती। उसने उल्टे इनाम मार लिया। पर लड़का था बड़ा बदमाश। जेलर को भी बगावत के लिए उकसा रहा था।"

"बाप रे, इतनी हिम्मत?" एक ओर बैठे पच्चीस-छब्बीस बरस के एक नौजवान ने तिरस्कार के साथ कहा।

"लाल आँखों वाले जेलर ने उसे समझाया कि मुखबिर बन जा। लड़का उल्टे जेलर को ही पाठ पढ़ाने लगा। कहने लगा विशाल छिङ् साम्राज्य के मालिक तो हम ही हैं। सुना तुमने? क्या यह बुद्धिमानी की बात थी? जेलर को यह तो मालूम था कि लड़के की बस बुढ़िया माँ ही है, पर यह ख़याल थोड़े ही था कि कमबख़्त के घर कुछ भी नहीं निकलेगा। जेलर के हाथ कुछ नहीं लगा तो यों ही चिढ़ा बैठा था। लड़का उसे उल्टा पाठ पढ़ाने लगा। देखो तो साले का दिमाग़। बाघ की मूँछ पकड़ने चला था। जेलर ने दो-चार हाथ जड़ दिए साले को।"

"जेलर साहब बहुत तगड़े मुक्केबाज़ रहे हैं भैया। वह हाथ पड़े होगें कि लड़के के होश ठिकाने आ गए होंगे।" कोने में बैठे हुए कुबड़े ने राय दी।

"बदमाश ने पिटाई की भी परवाह नहीं की। उल्टे अफसोस जताता रहा।"

"ऐसे बदमाश के अफसोस का क्या।" दढ़ियल ने राय दी।

पहलवान ने दढ़ियल की ओर तिरस्कारपूर्ण नज़रों से देखा:

"अरे तुम समझे भी? लड़का अफसोस करके माफी थोड़े ही माँग रहा था। वह तो कोतवाल की अक्ल पर अफसोस जता रहा था कि कितना बेसमझ है।"

सब लोग टकटकी लगाए सुनते रहे। कोई कुछ नहीं बोला। श्वान के लड़के ने भात खा लिया। वह पसीना-पसीना हो रहा था, सिर से भाप निकल रही थी।

"जेलर को अक्ल दे रहा था। बौरा गया था, और क्या।" दढ़ियल बोल उठा, मानो उसे सहसा सारी बात समझ में आ गई हो।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''बौरा नहीं गया था तो और क्या?'' पीछे बैठे नौजवान ने कहा।

ग्राहकों में एक बार फिर स्फूर्ति आ गई। सब फिर आपस में बातें करने लगे। दुकान में बातचीत की गूँज भर गई। लड़के को फिर खाँसी का दौरा आ गया। पहलवान उठकर उसके पास गया और लड़के के कँधे पर थपकी दी:

''अरे अब तो इलाज हो गया तेरा, अब काहे को खाँसता है। हो जा चंगा।''

''बौरा रहा है,'' पहलवान के समर्थन में कुबड़ा गर्दन हिलाकर बोल उठा।

4

शहर की फसील के साथ-साथ पश्चिमी दरवाज़े के बाहर की ज़मीन पहले शामिलाती थी। धरती के बीचोंबीच पैदल चलनेवालों ने राह बचाने के लिए पगडंडी बना दी थी। पगडंडी के दोनों ओर कब्रें फैली हुई थीं। बाएँ हाथ, सजा पाकर कत्ल किए जाने या जेल में मरने वाले लोगों को दफनाया जाता था और दाएँ हाथ बहुत ग़रीब या भिखारी लोगों को दफनाया जाता था। पगडंडी के दोनों ओर पाँतों में बनी कब्रें ऐसी जान पड़ती थीं मानों वे किसी धनी व्यक्ति के जन्म-दिन पर तरतीबवार सजे हुए बेलनाकार पकवान हों।

उस साल बहुत जाड़ा पड़ा था। छिङ्-मिंग का पर्व आ गया था, परंतु अब भी बहुत सर्दी थी। बेद के पेड़ों पर अभी कल्ले ही फूट रहे थे। पौ फटे अभी बहुत देर नहीं हुई थी। श्वान क़ी बुढ़िया पगडंडी के दाहिनी ओर कब्रिस्तान में पहुँच गई। एक ताज़ी बनी कब्र के साथ बुढ़िया ने चार तश्तरियों में चार किस्म के पकवान और एक कटोरा भात रख दिया और बैठकर रोने लगी। बुढ़िया ने मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए कब्र पर काग़ज़ के कुछ नोट जला दिए और खोई हुई सी बैठी रही, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रही हो। वह स्वयं नहीं जानती थी• क्यों बैठी है और किसकी प्रतीक्षा कर रही है? हवा का एक झोंका आया, बुढ़िया के छोटे-छोटे श्वेत केश फैल गए। पिछले एक वर्ष में उसके बाल पहले से ज़्यादा पक गए थे।

पगडंडी पर चिथड़े पहने एक और सफेद बालों वाली बुढ़िया भी चली आ रही थी। बुढ़िया एक पुरानी, लाल रंग की गोल टोकरी लिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी। टोकरी से डोरी में बँधे नोट भी लटक रहे थे। बुढ़िया धीमे-धीमे कदम रखती चली जा रही थी। उसकी नज़र श्वान की बुढ़िया पर पड़ी तो वह झिझक गई। मुरझाए चेहरे पर संकोच झलक गया। परंतु उसने साहस किया और पगडंडी के बाँईं ओर घूमकर एक कब्र के समीप जा हाथ की टोकरी धरती पर रख दी।

दोनों कब्रें पगडंडी के समीप ही एक-दूसरे के सामने थीं। श्वान की बुढ़िया दूसरी बुढ़िया को देखती रही। उस बुढ़िया ने भी टोकरी से चार तश्तरियों में पकवान और एक कटोरा भात निकालकर कब्र पर रख दिया और खड़ी होकर रोई। फिर उसने भी नोट जलाए। ''उस कब्र में इस अभागी का लड़का होगा'', श्वान की बुढ़िया ने सोचा। वह उधर ही देख रही थी। पगडंडी के बाँईं ओर वाली बुढ़िया अपने लड़के की कब्र के सामने लड़खड़ाते हुए दो-चार कदम चली। उसने ठिठक कर खोई-खोई सी नज़रों से चारों ओर देखा। उसके घुटने काँप गए। फैली हुई आँखें पथरा-सी गईं।

श्वान की बुढ़िया को लगा कि पगडंडी के पार खड़ी बुढ़िया शोक से बेहोश होकर गिर पड़ेगी। वह उठी और पगडंडी लाँघ कर दूसरी बुढ़िया के पास चली गई। धीमे से बोली: ''धीरज धरो बहन, चलो घर लौट चलें।''

''हूँ'', बुढ़िया ने सिर झुका लिया। अपनी धुँधली आँखें कब्र की ओर लगाए उसने पूछा: ''देखो देखो, वह क्या है?''

श्वान की बुढ़िया ने उस ओर ध्यान से देखा, नई बनी कब्र की मिट्टी पर अभी सब जगह घास नहीं उग पाई थी। जगह-जगह नंगी मिट्टी दिखाई दे रही थी। श्वान की बुढ़िया ने आँखें फैलाकर देखा तो विस्मित रह गई। उस कब्र पर लाल और सफेद फूल एक माला के आकार में उगे हुए मालूम पड़ते थे।

दोनों बूढ़ियों की नज़रें कमज़ोर हो चुकी थीं पर उन्होंने ध्यान से देखा तो सन्देह नहीं रहा। सचमुच कब्र पर फूल उगे हुए मालूम पड़ते थे। फूल अधिक नहीं थे, बहुत ताज़े भी नहीं थे, परंतु बड़ी सावधानी व जतन से उगाए हुए जान पड़ते थे। श्वान की बुढ़िया ने अपने लड़के की कब्र और दूसरी कब्रों पर भी नज़र डाली। जहाँ-तहाँ कोई-कोई पीला छोटा-सा फूल सरदी में ठिठुर रहा था। उसे मन में एक कचोट-सी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुभव हुई। वह स्वयं ही समझ नहीं पा रही थी कि उसे क्यों, कैसा लग रहा है।

दूसरी बुढ़िया इस बीच अपने लड़के की कब्र के बिलकुल करीब पहुँच गई थी। उसने झुककर ध्यान से फूलों को देखा। "जड़ें तो नहीं हैं," वह बुदबुदाई: "उग आए तो नहीं लगते। कौन आया होगा? बच्चे भी यहाँ खेलने नहीं आते। हमारे नाते-रिश्ते वालों में से भी कोई कभी नहीं आया। ये फूल कहाँ से आ गए?" बुढ़िया सोच नहीं पा रही थी। उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे और पुकारकर रो उठी:

"हाय मेरे बेटे, तुझ पर बड़ा जुल्म हुआ। हाय, तुझे कब्र में भी चैन नहीं। तू अब भी कलप रहा है। तभी तो ये फूल उग आए हैं, ताकि मैं तेरा दुख जान लूँ।"

बुढ़िया ने फिर चारों ओर देखा। कोई नहीं था। एक पेड़ की सूखी डाल पर सिर्फ़ एक कौआ बैठा था। बुढ़िया फिर बोली: "ज़ालिमों ने तुझे कत्ल कर डाला। लेकिन बदला चुकाने का दिन ज़रूर आएगा। भगवान कभी न कभी ज़रूर सुनेगा। हे भगवान, मेरे बेटे को शांति दे। ....बेटे, अगर तेरी आत्मा यहाँ है और तू सुन रहा है तो उस कौवे को उड़ाकर अपनी कब्र पर बैठा दे।"

बयार रूक गई थी। घास-फूस सब ताँबे के तार की तरह स्तब्ध तने खड़े थे। हवा का एक हल्का-सा झोंका आया, झाड़ियों में तनिक सरसराहट हुई और फिर सन्नाटा। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। दोनों बूढ़ियाँ, सुखी घास में खड़ी, कौए को देख रही थीं। डाल पर कौआ गर्दन सिकोड़े ऐसे निश्चल बैठा था मानो लोहे की प्रतिमा हो।

पल पर पल बीतते जा रहे थे। बूढ़े जवान कई लोग अपने संबंधियों की कब्रों पर चले आ रहे थे।

श्वान की बुढ़िया को लगा जैसे उसके मन पर पड़ा पुराना बोझ कुछ हल्का हो गया हो। घर लौटने का ध्यान आया तो दूसरी बुढ़िया से बोली: "चलो बहन, अब चलें।"

दूसरी बुढ़िया के कलेजे से एक गहरी आह निकली। उसने अपने आपको सँभाला और कब्र पर से भात के कटोरे व तश्तरियों को उठा लिया। एक क्षण के लिए वह रुकी और फिर धीरे-से बड़बड़ाती चल दी:

"न जाने इसका क्या मतलब है?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों बूढ़ियाँ पगडंडी पर कोई तीस एक कदम गई होंगी कि उनके पीछे कौआ बहुत ज़ोर से काँव-काँव कर उठा। दोनों चौंक पड़ीं और घूमकर देखने लगीं। कौए ने पँख फैला लिए थे। वह उचका और तीर की तरह दूर क्षितिज की ओर उड़ चला।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ क्यू की सच्ची कहानी

अध्याय : एक

भूमिका

अनेक वर्षों से मैं आ क्यू की सच्ची कहानी लिखने की सोच रहा था। उसे लिखने की इच्छा होते हुए भी मन में दुविधा बनी हुई थी। इससे जाहिर है कि मैं उन लोगों में नहीं जो लेखन-कार्य से गौरव अर्जित करते हैं। कारण यह कि एक अमर व्यक्ति के कारनामों का ब्यौरा देने के लिए हमेशा एक अमर लेखनी की आवश्यकता है। व्यक्ति लेखन के कारण भावी पीढ़ी में ख्याति प्राप्त करता है और लेखन व्यक्ति के कारण—अंतत: यह पता नहीं चल पाता कि किसने किस को ख्याति दिलाई। अंत में आ क्यू की कहानी लिखने का विचार एक भूत की तरह मेरे ऊपर सवार हो गया।

मगर ज्यों ही लेखनी उठाई, अमरता से कोसों दूर इस रचना के सृजन में आने वाली कठिनाइयों का अहसास होने लगा। पहला सवाल था कि इसे क्या नाम दिया जाए। कन्फ्यूशियस ने कहा है, ''यदि नाम ठीक न हो तो शब्द भी ठीक नहीं जान पड़ेंगे।'' इस कहावत पर अत्यंत ईमानदारी से अमल किया जाना चाहिए। जीवनियाँ कई प्रकार की होती हैं : अधिकृत जीवनियाँ, आत्मकथाएँ, अनधिकृत जीवनियाँ, दन्तकथाएँ, पूरक जीवनियाँ, परिवार-कथाएँ, रेखाचित्र..... किंतु दुर्भाग्यवश इनमें एक भी नाम ऐसा नहीं, जिससे मेरा काम चल जाय। 'अधिकृत जीवनी'? ज़ाहिर है कि इस विवरण को किसी अधिकृत इतिहास में अनेक विख्यात व्यक्तियों के विवरण के साथ सम्मिलित नहीं किया जाएगा। 'आत्मकथा'? किंतु मैं आ क्यू तो हूँ नहीं, इसलिए यह भी ठीक नहीं। यदि इसे 'अनधिकृत जीवनी' का नाम दिया जाय तो आख़िर उसकी 'अधिकृत जीवनी' कहाँ है? 'दन्तकथा' कहना भी संभव नहीं, क्योंकि आ क्यू किसी दन्तकथा का चरित्र तो है नहीं। 'पूरक जीवनी'? लेकिन किसी भी प्रेसीडेंट ने राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रतिष्ठान को अभी तक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ क्यू की 'प्रतिमानित जीवनकथा' लिखने का आदेश नहीं दिया। यह सच है कि यद्यपि इंग्लैंड के अधिकृत इतिहास में 'जुआरियों के जीवन' का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी सुप्रसिद्ध लेखक कॉनन डायल ने 'रोडनी स्टोन'[1] नामक उपन्यास की रचना की। किंतु जहाँ एक सुप्रसिद्ध लेखक को यह सब करने की अनुमति है, वहाँ मुझ जैसे व्यक्ति को इसकी इज़ाज़त कहाँ! तो क्या इसे 'परिवार-कथा' कहा जाए? लेकिन मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मैं आ क्यू के खानदान का सदस्य हूँ अथवा नहीं; फिर उसके बेटे-बेटियों या पोते-पोतियों ने तो मुझे यह काम सौंपा नहीं। अगर इसे 'रेखाचित्र' कहा जाय तो शायद इस पर भी ऐतराज़ किया जाएगा, क्योंकि आ क्यू का 'पूरा विवरण' तो कहीं उपलब्ध ही नहीं। संक्षेप में यह एक वास्तविक 'जीवन' है, किंतु चूँकि मेरी लेखन-शैली ज़रा अपरिष्कृत है और इसमें खोमचेवालों व फेरीवालों की भाषा का प्रयोग किया गया है, इसलिए मैं इसे इतना ऊँचा लगनेवाला नाम नहीं दे सकता। अतएव उपन्यासकारों की, जिनकी गिनती तीन मतों और संप्रदायों[2] में नहीं होती, प्रचलित शब्दावली के अंतिम दो शब्दों को शीर्षक के लिए चुनूँगा—'विषयान्तर काफी हो चुका और सच्ची कहानी' पर लौट आना चाहिए और अगर इससे प्राचीन काल की 'लिपिकला की सच्ची कहानी'[3] की याद ताज़ा हो जाए तो इसमें कोई क्या कर सकता है।

दूसरी कठिनाई मेरे सामने यह थी कि ऐसी जीवनी कुछ इस प्रकार आरंभ होनी चाहिए: 'अमुक नाम का व्यक्ति, जिसका कुलनाम अमुक था, अमुक स्थान में रहता था।' लेकिन सच बात तो यह है कि आ क्यू का कुलनाम मुझे मालूम ही नहीं था। एक बार पता लगा कि उसका कुलनाम शायद चाओ है, लेकिन अगले ही दिन इसके बारे में फिर एक बार बड़ा घपला हो गया था। बात यह थी कि चाओ साहब के बेटे ने काउन्टी की सरकारी परीक्षा-पास कर ली थी और उसकी सफलता की घोषणा ढोल-नगाड़ों के साथ पूरे गाँव में की जा रही थी। आ क्यू, जो

---

1. इस उपन्यास के चीनी रूपांतर का नाम था 'जुआरियों की पूरक जीवनियाँ'।
2. तीन मत इस प्रकार थे—कन्फ्यूशियसवादी मत, बौद्धमत और ताओ मत। नौ संप्रदायों में कन्फ्यूशियसवादी, ताओवादी, विधानवादी, मोवादी इत्यादि संप्रदाय सम्मिलित थे। उपन्यासकारों को, जो इनमें से किसी एक मत या संप्रदाय से सम्बद्ध नहीं होते थे, प्रतिष्ठित नहीं माना जाता था।
3. छिङ् राजवंश (1644-1911) के ज़माने के फ़ंग वू द्वारा रचित एक पुस्तक।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी-अभी दो प्याली पीली शराब पीकर आया था, इतराता हुआ कहता फिर रहा था कि यह उसके अपने लिए भी बड़े गौरव की बात है क्योंकि वह भी चाओ साहब के ही कुल का आदमी है और अगर ठीक-ठीक हिसाब लगाया जाय तो उसकी वरिष्टता सफल उम्मीदवार से तीन पीढ़ी ऊपर बैठती है। उस समय आसपास खड़े कुछ लोग तो आ क्यू से दहशत तक खाने लगे थे। लेकिन दूसरे ही दिन बेलिफ उसे चाओ साहब के घर बुला ले गया था। जब बूढ़े महाशय चाओ ने उसकी तरफ देखा था तो उनका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा था और वे गरजकर बोल पड़े थे :

''ओ आ क्यू के बच्चे! तू कहता फिर रहा है कि तू भी हमारे ही कुल का है?''

आ क्यू ने कोई उत्तर नहीं दिया।

जैसे-जैसे चाओ साहब उसकी तरफ देखते जा रहे थे, उनका पारा लगातार चढ़ता जा रहा था। दो-चार कदम आगे बढ़कर उसे धमकाते हुए उन्होंने कहा, ''तुझे ऐसी बेहूदा बात कहने की हिम्मत कैसे हुई? भला मैं तेरे जैसे लोगों का रिश्तेदार कैसे हो सकता हूँ? क्या तेरा कुलनाम चाओ है?''

आ क्यू ने कोई उत्तर नहीं दिया और वहाँ से भागने ही वाला था कि चाओ साहब ने आगे बढ़कर उसके मुँह पर एक तमाचा जड़ दिया।

''तेरा कुलनाम चाओ कैसे हो सकता है? क्या तू समझता है कि तेरी जैसी हैसियत का आदमी भी चाओ खानदान का हो सकता है?''

आ क्यू ने चाओ कहलाने के अपने अधिकार की पैरवी करने की कतई कोशिश नहीं की और अपना बायाँ गाल सहलाते हुए बेलिफ के साथ बाहर आ गया था। बाहर निकलते ही बेलिफ ने उस पर गालियों की बौछार शुरू कर दी थी, और दो सौ ताँबे के सिक्कों से उसकी हथेली चिकनी करने के बाद ही आ क्यू उससे अपना पिण्ड छुड़ा पाया। जिस किसी ने भी यह घटना सुनी उसने यही कहा कि आ क्यू को उसकी बेवकूफी की वज़ह से ही मार पड़ी। अगर उसका कुलनाम चाओ ही था—जिसकी संभावना कम थी—तो भी गाँव में चाओ साहब के रहते उसका इस तरह से डींग मारते फिरना उचित नहीं था। इस घटना के बाद आ क्यू की वंश-परंपरा की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। इसलिए मुझे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब भी ठीक-ठीक मालूम नहीं कि उसका कुलनाम सचमुच क्या था।

तीसरी कठिनाई, जिसका सामना मुझे इस रचना के दौरान करना पड़ा, यह थी कि आ क्यू का व्यक्तिगत नाम कैसे लिखा जाय? जब तक वह ज़िंदा रहा, सभी लोग उसे आह क्वेइ के नाम से पुकारते रहे। लेकिन जब वह नहीं रहा तो किसी ने आह क्वेइ की चर्चा तक न की। कारण स्पष्ट है: वह उन व्यक्तियों में नहीं था, जिनका नाम बाँस की तख्तियों और रेशम के कपड़े पर सुरक्षित[1] रखा जाता है। अगर नाम सुरक्षित रखने की ही बात है, तो निश्चय ही यह रचना इस दिशा में प्रथम प्रयास कहलाएगी। इसलिए मेरे सामने शुरू में ही यह कठिनाई आ खड़ी हुई। मैंने इस सवाल पर बड़ी बारीकी से विचार किया। आह क्वेइ—क्या यहाँ उसका अर्थ पारिजात लगाया जाए अथवा कुलीन वर्ग? अगर उसका दूसरा नाम चंद्र-मण्डप होता, या उसका जन्म-दिन चंद्रोत्सव वाले महीने में मनाया जाता, तो निश्चय ही उसका अर्थ पारिजात लगाया जा सकता था।[2] लेकिन चूँकि उसका कोई दूसरा नाम नहीं था—अगर था भी तो कोई जानता नहीं था—और चूँकि उसने अपने जन्म-दिन के मौके पर निमंत्रण-पत्र भेजकर अपने सम्मान में प्रशंसात्मक कविताएँ कभी प्राप्त नहीं की थीं, इसलिए उसका नाम पारिजात लिखना स्वेच्छाचारिता कहलाएगा। साथ ही अगर उसका आफू (खुशहाली) नाम का कोई बड़ा या छोटा भाई होता, तो उसे अवश्य ही कुलीन वर्ग नाम दिया जा सकता है। लेकिन वह तो अपने किस्म का एक ही आदमी था। इसलिए उसे कुलीन वर्ग नाम देने का कोई औचित्य नहीं। बाकी तमाम असामान्य रेखाक्षर, जिनकी ध्वनि क्वेइ से मिलती है, इससे भी कम औचित्य रखते हैं। मैंने एक बार यह सवाल चाओ साहब के लड़के से पूछा था, जो काउन्टी की सरकारी परीक्षा पास कर चुका था। लेकिन उसका कहना था कि इस नाम का पता इसलिए नहीं लग पा रहा क्योंकि छन तू श्यू[3] ने 'नया नौजवान' नामक पत्रिका निकालनी शुरू कर दी, जिसमें

---

[1] यह कथन ईसापूर्व तीसरी शताब्दी का है। बाँस की तख्तियों और रेशम के कपड़े को चीन के लोग प्राचीन काल में लेखन-साग्रमी के रूप में इस्तेमाल करते थे।

2. पारिजात के फूल चंद्रोत्सव वाले महीने में खिलते हैं। चीनी लोककथाओं के अनुसार चंद्रमा पर दिखाई देने वाला धब्बा वास्तव में पारिजात का वृक्ष है।

3. छन तू श्यू (1880-1942) उस समय पेईचिंग विश्वविद्यालय का एक प्रोफेसर और 'नया नौजवान' नामक मासिक पत्रिका का संपादक था। बाद में उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ गद्दारी की।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पश्चिमी वर्णमाला के इस्तेमाल की पैरवी की गई है; इससे राष्ट्रीय संस्कृति बिलकुल तहस-नहस हो रही है। अन्त में, मैंने अपने इलाके के किसी व्यक्ति से अनुरोध किया कि वह स्वयं जाकर आ क्यू के मामले से संबंधित कानूनी दस्तावेज़ों की जाँच-पड़ताल करे। लेकिन आठ महीने बाद उसने मुझे चिट्ठी लिखी कि उन दस्तावेज़ों में आह क्वेइ नाम के किसी आदमी का ज़िक्र नहीं है। हालाँकि मैं पक्के तौर पर यह नहीं बता सकता था कि मेरे मित्र की बात सच भी थी या नहीं अथवा उसने इस संबंध में कोई कोशिश भी की थी या नहीं, फिर भी जब मैं इस तरह उसके नाम का पता नहीं लगा पाया तो मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। चूँकि मुझे डर है कि नई ध्वनि-प्रणाली अभी आम लोगों में प्रचलित नहीं है, इस लिए पश्चिमी वर्णमाला का इस्तेमाल करने में अंग्रेज़ी हिज्जों के मुताबिक आह क्वेइ नाम लिखने में और उसका संक्षिप्त रूप आ क्यू लिखने में मुझे कोई हर्ज़ नहीं जान पड़ता। बेशक, यह 'नया नौजवान' पत्रिका का लगभग अंधानुकरण कहलाएगा और इसके लिए मैं बेहद शर्मिंदा हूँ; लेकिन चूँकि चाओ साहब के लड़के जैसा धुरंधर विद्वान भी मेरी समस्या हल नहीं कर पाया, ऐसी हालत में भला मैं और कर ही क्या सकता था?

मेरी चौथी कठिनाई आ क्यू के जन्म-स्थान के बारे में थी। अगर उसका कुलनाम चाओ होता, तो इलाके के मुताबिक वर्गीकरण करने के आज भी प्रचलित पुराने रिवाज़ के अनुसार 'सौ कुलनाम'[1] की टीका देखी जा सकती थी ओर मालूम हो सकता था कि वह 'क्वान शु प्रांत के थ्यान स्वेइ नामक स्थान का बाशिन्दा' है। लेकिन बदकिस्मती से उसका कुलनाम ही विवादास्पद था, इसलिए जन्म-स्थान भी अनिश्चित हो गया। हालाँकि उसकी ज़्यादातर ज़िंदगी वेइच्वांग में ही बीती, वह अक्सर दूसरे स्थानों में भी रहा इसलिए उसे वेइच्वांग का बाशिन्दा कहना भी ठीक नहीं मालूम होता। वह वास्तव में इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना कहलाएगा।

सिर्फ़ एक बात, जिससे मुझे तसल्ली हुई, यह है कि 'आ' अक्षर बिलकुल सही है। यह निश्चित रूप से किसी झूठी तुलना का परिणाम नहीं है और विद्वत्तापूर्ण आलोचना की कसौटी पर खरा उतरता है। जहाँ

1. एक पुरानी प्रवेशिका जिसमें सारे कुलनाम पद्य में लिखे होते थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक दूसरी समस्याओं का तुल्लुक है, उन्हें हल करना मेरे जैसे विद्वत्ताहीन व्यक्ति के बूते की बात नहीं और मैं उम्मीद करता हूँ कि डॉ. हू शी, जो 'इतिहास और पुरातत्व में गहरी रूचि' रखते हैं, के शिष्य भविष्य में इस पर नई रोशनी डाल सकेंगे। लेकिन मैं सोचता हूँ तब तक मेरी 'आ क्यू की सच्ची कहानी' विस्मृति के गर्त में विलीन हो चुकी होगी।

उपर्युक्त पंक्तियों को इस रचना की भूमिका माना जा सकता है।

अध्याय: दो

आ क्यू विजयों का संक्षिप्त विवरण

आ क्यू के कुलनाम, व्यक्तिगत नाम और जन्म-स्थान से संबंधित अनिश्चितता के अलावा उसके 'अतीत' के बारे में भी कुछ अनिश्चितता बनी हुई है। कारण यह है कि वेइच्वांग के लोगों ने उसके 'अतीत' पर ज़रा भी ध्यान दिए बिना उसकी सेवाओं का इस्तेमाल किया अथवा उसकी खिल्ली उड़ाई। आ क्यू खुद भी इस विषय में मौन रहता, सिर्फ़ ऐसे मौकों को छोड़कर जबकि उसका किसी से झगड़ा हो जाता और उसकी तरफ देखता हुआ वह बोल पड़ता, "किसी समय हमारी हालत तुमसे कहीं अच्छी थी। तुम अपने आप को समझते क्या हो?"

आ क्यू का अपना कोई परिवार नहीं था। वह वेइच्वांग गाँव में संरक्षक-देवता के मंदिर में रहता था। उसके पास कोई नियमित रोज़गार भी नहीं था। जो भी छोटा-मोटा काम मिल जाता, कर लेता : गेहूँ काटना होता तो गेहूँ काट देता, चावल पीसना होता तो चावल पीस देता, नाव चलाना होता तो नाव चला देता। अगर ज़्यादा दिनों का काम होता तो अपने अस्थायी मालिक के घर में ही रह जाता। लेकिन ज्यों ही काम ख़त्म होता, वहाँ से चल देता। सो जब भी लोगों के पास काम होता, वे आ क्यू को याद करते। लेकिन वे लोग सिर्फ़ उसकी सेवाओं को याद करते थे, न कि उसके 'अतीत' को और जब काम समाप्त हो जाता तो वे आ क्यू को भी भूल जाते, उसके 'अतीत' की बात तो दूर रही। एक बार एक बुज़ुर्ग आदमी ने कहा था, "कितना अच्छा काम करता है आ क्यू।" उस समय सामने खड़े आ क्यू का बदन कमर तक एकदम निर्वस्त्र था, शरीर बेजान व दुबला-पतला था, चेहरे पर उदासीनता थी। दूसरे लोग

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह नहीं समझ पाए थे कि ये शब्द उसने सचमुच आ क्यू की प्रशंसा में कहे थे अथवा उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए। जो हो, आ क्यू यह सुनकर बेहद खुश हुआ था।

आ क्यू दरअसल अपने बारे में बहुत ऊँची राय रखता था। वेइच्वांग के सभी बाशिन्दों को वह अपने से नीचा समझता था। यहाँ तक कि उन दो युवा 'विद्वानों' को भी किसी लायक नहीं समझता था, हालाँकि ज़्यादातर युवा 'विद्वानों' के सरकारी परीक्षा पास करने की संभावना थी। चाओ साहब और छांग साहब की गाँव वाले बहुत इज़्जत करते थे, क्योंकि वे दोनों धनी होने के साथ-साथ युवा विद्वानों के पिता भी थे। सिर्फ़ आ क्यू ही ऐसा था जो उनकी ख़ास इज़्जत नहीं करता था और सोचता था, "मेरे बेटे शायद इनसे भी ज़्यादा महान बनें।"

इसके अलावा, जब आ क्यू को कई बार शहर जाने का मौका मिला तो स्वभावतः उसका दिमाग़ पहले से ज़्यादा चढ़ गया, हालाँकि इसके बाद वह शहर के लोगों के प्रति और वितृष्णा से भर जाता। मिसाल के लिए, तीन फुट लंबे और तीन इंच चौड़े तख्ते से बने बैंच को वेइच्वांग गाँव के लोग 'लम्बा बैंच' कहते थे। आं क्यू भी उसे 'लम्बा बेंच' कहता था। लेकिन शहर के लोग उसे 'सीधा बैंच' कहते थे और आ क्यू सोचता, "यह कितना गलत है। कितना हास्यास्पद है।" इसके अलावा वेइच्वांग गाँव के लोग जब बड़े सिर वाली मछली को तेल में तलते तो सभी लोग हरे प्याज की पत्तियों के आधे इंच लंबे टुकड़े काटकर उसके साथ छौंकते थे, जबकि शहर के लोग उन्हें बारीक काट कर उसके साथ छौंकते थे। आ क्यू सोचता, "यह भी कितना गलत है। कितना हास्यास्पद है।" लेकिन वेइच्वांग गाँव के लोग सचमुच बिलकुल अपढ़-गँवार थे और उन्होंने यह कभी नहीं देखा था कि शहर में मछली कैसे तली जाती है।

आ क्यू, जो 'किसी समय काफी खुशहाल था' और दुनियादारी में कुशल एक 'अच्छा श्रमिक' था, एक बिलकुल मुकम्मिल इंसान होता, अगर बदकिस्मती से उसके शरीर पर कुछ विकृतियाँ न होतीं। सबसे ज़्यादा दुखदाई उसकी खोपड़ी पर वे चमकीले निशान थे जो अतीत काल में किसी समय दाद रोग से पीड़ित होने के कारण बन गए थे। हालाँकि ये निशान उसके अपने ही सिर पर थे, लेकिन आ क्यू इन्हें ज़रा भी सम्मानजनक नहीं समझता था। यही वजह थी कि वह 'दाद' या इससे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलते-जुलते किसी भी अन्य शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था। बाद में इससे एक कदम और आगे बढ़कर उसने 'चमकदार' और 'रोशनी' शब्दों का इस्तेमाल भी बंद कर दिया और इसके बाद 'चिराग' और मोमबत्ती' शब्दों का प्रयोग भी छोड़ दिया। जब भी कोई जानबूझकर या अनजाने में इन वर्जित शब्दों का इस्तेमाल करता, तो आ क्यू गुस्से से तमतमा उठता, उसके दाद के निशान लाल हो उठते। वह गुस्ताख़ी करने वाले की तरफ देखता और अगर वह कोई ऐसा आदमी होता जो जवाब देने में उससे कमज़ोर साबित होता तो उसे खूब जली-कटी सुनाता और अगर कोई ऐसा आदमी होता जो लड़ने में उससे कमज़ोर होता तो झट उस पर हाथ छोड़ देता। फिर भी यह अजीब बात थी कि इन मुठभेड़ों में अक्सर आ क्यू को ही मात खानी पड़ती। अंत में उसने नई रणनीति अपना ली और अपने प्रतिद्वंद्वी को गुस्से से लाल आँखों से घूरकर ही मन को तसल्ली दे लेता।

बात यह हुई कि जबसे आ क्यू ने लोगों को गुस्सैल लाल आँखों से घूरना शुरू किया, वेइच्वांग के निठल्ले लोगों को उसका मज़ाक उड़ाने में और ज़्यादा मज़ा आने लगा। वे ज्यों ही उसे देखते, उकसाने के लिए कह देते:

"देखे तो! रोशनी हो रही है।"

आ क्यू हमेशा की ही तरह उत्तेजित हो उठता और गुस्सैल लाल आँखों से उन्हें घूरने लगता।

"अच्छा तो यहाँ पैराफीन का चिराग रखा है," वे लोग उससे डरे बिना अपनी बात जारी रखते।

आ क्यू कुछ न कर पाकर माकूल जवाब ढूँढ़ पाने के लिए दिमाग़ पर ज़ोर डालकर कहता: "तुम इस लायक भी नहीं हो कि....।" ऐसे मौके पर उसे ऐसा लगता मानो उसकी खोपड़ी पर अंकित निशान उसके उदात्त गौरवपूर्ण चरित्र के द्योतक हों, दाद के मामूली निशान न हों। फिर भी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आ क्यू दुनियादारी में कुशल था: वह फौरन समझ जाता कि उसके मुँह से 'वर्जित शब्द' निकलने जा रहे हैं, इसलिए बात वहीं ख़त्म कर देता।

अगर निठल्ले लोगों को इतने से भी तसल्ली न होती और वे उसे उकसाना जारी रखते तो हाथापाई की नौबत आ जाती। और जब आ क्यू बिलकुल परास्त हो जाता और निठल्ले लोग उसकी भूरी चुटिया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खींच कर उसका सिर चार-पाँच बार दीवार से टकरा लेते, सिर्फ़ तभी वे अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से जाते। आ क्यू एक क्षण के लिए वहीं रुक जाता और मन-ही-मन सोचने लगता, ''मालूम होता है मुझे मेरे बेटे ने पीटा है। आजकल कैसा ज़माना आ गया है!....'' इसके बाद वह भी अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से चला जाता।

आ क्यू अपने मन में जो कुछ भी सोचता, बाद में दूसरे लोगों को ज़रूर बताता। इस तरह वे सभी लोग, जो उसकी खिल्ली उड़ाते थे, मनोवैज्ञानिक विजय प्राप्त करने के उसके तरीके को अच्छी तरह जान गए थे। इसलिए बाद में जो कोई भी उसकी भूरे रंग की चुटिया को खींचता या मरोड़ता था, वह उससे पहले ही कह देता : ''आ क्यू, बेटा बाप की पिटाई नहीं कर रहा, बल्कि इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है। ज़रा कहो तो : इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है।''

आ क्यू अपनी चुटिया की जड़ मजबूती से पकड़ लेता और सिर टेढ़ा करके कहता : ''यह क्यों नहीं कहते कि इंसान कीड़े की पिटाई कर रहा है? मैं एक कीड़ा हूँ—अब मुझे छोड़ोगे या नहीं?''

हालाँकि उसका अस्तित्व एक कीड़े के बराबर था, फिर भी निठल्ले लोग जब तक अपनी आदत के मुताबिक आसपास की किसी चीज़ से पाँच-छह बार उसका सिर न टकरा लेते, तब अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से जाते और उन्हें इस बात का यकीन हो जाता कि आ क्यू इस बार पूरी तरह हार गया है। लेकिन दस सैकंड बीतने से पहले ही आ क्यू भी अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से चल देता, यह सोचता हुआ कि वह 'सर्वप्रथम आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति' है, और अगर 'आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति' शब्द निकाल दिए जाएँ तो सिर्फ़ 'सर्वप्रथम' रह जाता है। क्या सर्वाधिक अंक लेकर सरकारी परीक्षा पास करनेवाला उम्मीदवार भी 'सर्वप्रथम' नहीं है? ''आख़िर तुम लोग अपने को समझते क्या हो?''

अपने दुश्मनों से लोहा लेने के लिए ऐसी चतुर चालें चलने के बाद आ क्यू खुशी-खुशी मदिरालय में जा पहुँचता और दो-चार पैग चढ़ाकर दूसरों से फिर हँसी-मज़ाक करता, फिर झगड़ा करता, फिर विजयी होकर संरक्षक-देवता के मंदिर में खुशी-खुशी लौट जाता और तकिए पर सिर रखते ही गहरी नींद सो जाता। जब कभी उसकी जेब में पैसा होता तो जुआ खेलने पहुँच जाता। जुआरियों की टोली ज़मीन पर बैठी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होती। उनके बीच आ क्यू भी जा बैठता। उसके चेहरे से पसीना चू रहा होता और वह सबसे ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला उठता, ''हरे नाग पर चार सौ।''

''अरे, बाजी खोलो!'' पसीने से तर चेहरे वाला पणधर सन्दूकची खोल देता और ज़ोर से बोल पड़ता : '''स्वर्ग का दरवाज़ा'..... 'खुम' को कुछ नहीं मिला। ....'लोकप्रियता मार्ग' का दाँव खाली गया। आ क्यू के पैसे मेरे हवाले कर दो।''

'''मार्ग' पर–एक सौ–एक सौ पचास।''

इन शब्दों के साथ धीरे-धीरे आ क्यू का सारा पैसा पसीने से तर अन्य जुआरियों की जेब में पहुँच जाता। अंत में वह मजबूर होकर उनके बीच से बाहर निकल जाता और पीछे बैठकर दूसरों की हार-जीत की चिंता करता हुआ खेल देखता रहता। और जब खेल ख़त्म हो जाता तो बड़े बेमन से संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट जाता। अगले दिन जब काम पर जाता तो उसकी आँखें रतजगे के कारण सूजी हुई होतीं।

लेकिन एक बार जब आ क्यू जीतने पर भी बदकिस्मती से अन्त में हार गया, तो 'सौभाग्य के वेष में दुर्भाग्य भी आ सकता है' वाली कहावत सच साबित हो गई।

उस दिन वेइच्वांग में देवताओं का उत्सव मनाया जा रहा था। शाम का वक्त था। रिवाज़ के मुताबिक एक नाटक खेला जा रहा था और रिवाज़ के मुताबिक, रंगमंच के निकट जुआ खेलने के लिए बहुत-सी मेज़ें लगी हुई थीं। नाटक के ढोल-नगाड़ों की आवाज़ आ क्यू को ऐसी लग रही थी मानो मीलों दूर से आ रही हो। उसके कान सिर्फ़ पणधर की आवाज़ की तरफ लगे हुए थे। बाजी बार-बार आ क्यू के हाथ रही। उसके ताँबे के सिक्के चाँदी के सिक्कों में, चाँदी के सिक्के डालरों में बदलते गए; डालरों की ढेरी बढ़ती गई। वह खुशी से उछल पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया : ''स्वर्ग के दरवाजे पर दो डालर।''

आ क्यू को यह कभी मालूम न हो सका कि किसने झगड़ा शुरू किया ओर क्यों किया। गाली-गलौज़, लात-घूँसों की मार और भगदड़ के कोलाहल से उसका सिर चकरा गया और जब वह होश में आया तब तक सभी जुए की मेज़ें और जुआरियों की टोलियाँ नदारद हो चुकी थीं। उसके शरीर का अंग-अंग दुख रहा था; मालूम होता था कि उसे भी लात-घूँसे लगे हैं। आसपास जमा बहुत से लोग आश्चर्य से उसकी ओर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देख रहे थे। यह अनुभव करता हुआ कि उसकी कोई चीज़ खो गई है, वह संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट गया और जब पूरी तरह शांत हुआ तब कहीं उसे महसूस हुआ कि उसकी डालरों की ढेरी गायब हो चुकी है। उत्सव में जुए की मेज़ें लगानेवाले ज़्यादातर लोग दरअसल वेइच्वांग के निवासी नहीं थे, इसलिए अपराधियों का पता कैसे लगाया ज सकता था?

चाँदी के सिक्कों की कितनी उजली, कितनी चमकदार ढेरी थी वह। यह सारी की सारी रकम उसकी हो चुकी थी.... लेकिन अब वह गायब हो चुकी थी। यह सोचकर भी कि इसे उसके अपने ही बेटे ने चुरा लिया है, उसके मन को तसल्ली नहीं हो पाई। अपने आपको एक कीड़ा समझकर भी उसे चैन नहीं मिला। यह पहला मौका था जब उसे सचमुच पराजय की कटुता का स्वाद चखने को मिला।

किंतु दूसरे ही क्षण उसने अपनी पराजय को विजय में बदल डाला। दायाँ हाथ ऊपर उठाकर उसने कस कर अपने मुँह पर दो थप्पड़ जड़ दिए, इतनी ज़ोर से कि चेहरा दर्द से झनझना उठा। थप्पड़ खाने के बाद उसका दिल कुछ हल्का हो गया, क्योंकि उसे लगा मानो थप्पड़ मारनेवाला तो वह खुद हो और थप्पड़ खानेवाला कोई और हो, और जल्दी ही उसे ऐसा लगा मानो उसने किसी अन्य व्यक्ति की पिटाई की हो—हालाँकि उसका चेहरा अब भी दर्द से झनझना रहा था। अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वह लेट गया।

शीघ्र ही उसकी आँख लग गई।

अध्याय: तीन

आ क्यू की अन्य विजयों का विवरण

हालाँकि आ क्यू सदैव विजय प्राप्त करता जाता था, फिर भी उसे मशहूरी सिर्फ़ तभी हासिल हुई जब चाओ साहब ने उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की इनायत फरमाई।

बेलिफ के हाथ में दो सौ ताँबे के सिक्के रखने के बाद वह क्रोध से ज़मीन पर लेट गया। बाद में वह अपने आपसे कहने लगा: ''आजकल कैसा ज़माना आ गया है, बेटे अपने बाप को पीटने लगते हैं।....'' तब वह चाओ साहब की प्रतिष्ठा के बारे में सोचने लगा, जिन्हें अब वह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपना बेटा समझने लगा था। धीरे-धीरे उसका जोश बुलंद होता गया। वह उठा और 'नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर' नामक गीत की पंक्तियाँ गुनगुनाता हुआ मदिरालय में जा पहुँचा। उस समय ज़रूर उसे यह महसूस हुआ कि चाओ साहब का दर्ज़ा ज़्यादातर लोगों से ऊपर है।

यह कहते हैरानी होती है कि इस घटना के बाद सभी लोग आ क्यू की असाधारण रूप से इज़्ज़त करने लगे। इसका कारण वह शायद यह समझता रहा कि लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वह चाओ साहब का पिता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं थी। वेइच्वांग में दरअसल यह रिवाज़ था कि अगर सातवाँ बेटा आठवें बेटे को पीट दे अथवा अमुक ली अमुक छांग को पीट दे तो कोई ख़ास बात नहीं समझी जाती थी, लेकिन जब पिटाई की घटना का संबंध चाओ साहब जैसे किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से होता तो गाँववासी इसे चर्चा का विषय समझते थे और जहाँ एक बार उन्होंने इसे चर्चा का विषय समझ लिया तो पिटाई करनेवाले के एक प्रसिद्ध व्यक्ति होने के कारण पिटने वाले को भी इस प्रसिद्धि का कुछ-न-कुछ भाग अवश्य प्राप्त हो जाता था। पक्के तौर पर कसूर तो आ क्यू का ही माना गया, क्योंकि लोग समझते थे कि चाओ साहब हरगिज़ गलती नहीं कर सकते। लेकिन अगर आ क्यू ही कसूरवार था तो सभी लोग असाधारण रूप से उसकी इज़्जत करते क्यों जान पड़ते थे? इसका कारण बताना कठिन है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि शायद आ क्यू का यह कहना कि वह भी चाओ परिवार का ही सदस्य है, इसका कारण था। हालाँकि उसकी पिटाई की जा चुकी थी, फिर भी लोग शायद यह समझते थे कि उसकी बात में कुछ सच्चाई है, इसलिए उसके प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करना ज़्यादा सुरक्षित होगा। अथवा यह भी कहा जा सकता था कि यह मामला कन्फ्यूशियस के किसी मंदिर में बलि के रूप में चढ़ाए गए गोमांस की तरह है; हालाँकि गोमांस भी शूकर अथवा भेड़-बकरी के मांस की ही तरह पशु का मांस होता है, फिर भी बाद में कन्फ्यूशियसवादी संप्रदाय के अनुयायियों ने उसे छूने का साहस नहीं किया, क्योंकि कन्फ्यूशियस स्वयं इसका सेवन कर चुके थे।

इसके बाद आ क्यू अनेक वर्षों तक सुख-चैन से रहा।

एक दिन बसंत के मौसम में जब वह खुशी से झूमता हुआ जा रहा था तो उसने देखा कमर तक नंगे बदन धूप में बैठा मुछन्दर वांग दीवार के सहारे बैठा जूँ निकाल रहा है। यह दृश्य देखकर आ क्यू को भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुजली महसूस होने लगी। चूँकि मुछन्दर वांग का शरीर दाद से पीड़ित था और उसके चेहरे पर लम्बी-लम्बी मूँछें थीं, इसलिए सभी लोग उसे 'दाद वाला मुछन्दर वांग' नाम से पुकारते थे। आ क्यू 'दाद वाला' शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था, फिर भी वह मुछन्दर वांग को बिलकुल नाचीज़ समझता था। आ क्यू सोचता था, दाद से पीड़ित होना कोई ख़ास बात नहीं है, मगर दोनें गालों पर मूँछ के बालों के इतने ज़्यादा गुच्छे होना सचमुच कितना भद्दा लगता है। सो आ क्यू उसकी बगल में जा बैठा। अगर क़ोई और निठल्ला आदमी होता तो आ क्यू उसके पास इतनी लापरवाही से हरगिज़ न बैठता, मगर मुछन्दर वांग के पास बैठने में उसे भला किस बात का डर था? सच तो यह था कि आ क्यू का वांग के पास बैठना वांग के लिए बड़े गौरव की बात थी।

आ क्यू ने अपनी अस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट उतार ली और उसे पलट डाला; लेकिंन काफी देर खोजने के बाद भी सिर्फ़ तीन-चार जूँ ही निकाल पाया। कारण या तो यह था कि उसने अपनी जाकिट हाल हीं में धोई थी अथवा यह कि वह ख़ुद जूँ पकड़ने में एकदम अनाड़ी था। उसने देखा मुछन्दव वांग अब तक लगातार एक के बाद एक कई जूँ पकड़ चुका है और दाँतों के बीच रखकर चट्ट की आवाज़ के साथ उन्हें मार चुका है।

आ क्यू कों पहले निराशा हुई और फिर गुस्सा आने लगा: यह निकम्मा मुछन्दर व़ांग इतनी ज़्यादा जूँ पकड़ चुका है जबकि मैं सिर्फ़ कुछ ही पकड़ पाया हूँ—कितनी शर्म की बात है। उसने एक-दो बड़ी जूँ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन कोई हाथ न आई। बड़ी मुश्किल से वह एक दरमियाने आकार की जूँ पकड़ पाया, जिसे उसने बड़े रोष के साथ मुँह में डालकर दाँत से कुचल दिया। लेकिन उसके पिचकने की आवाज़ बड़ी धीमी थी, मुछन्दर वांग की चट्ट की आवाज़ के मुकाबले बिलकुल धीमी।

आ क्यू के सिर के सारे निशान सुर्ख हो गए। उसने अपनी जाकिट ज़मीन पर पटक दी और उसकी तरफ थूककर बोला, "साला झबरीला कीड़ा।"

"अबे खजुहे कुत्ते, गाली किसे बक रहा है?" मुछन्दर वांग ने तिरस्कारपूर्ण निगाह ऊपर उठाते हुए कहा।

हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में आ क्यू को मिले अपेक्षाकृत सम्मान से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका घमण्ड कुछ बढ़ गया था, लेकिन जब कभी मारपीट में माहिर लोफरों से पाला पड़ता तो वह बिलकुल भीगी बिल्ली बन जाता। लेकिन आज उसका मन झगड़ा करने को बेहद मचल रहा था। एक झबरीले गालों वाला कीड़ा उसका अपमान करने का साहस करे?

"जिस किसी का नाम इससे मेल खाता हो," आ क्यू ने उत्तर दिया और वह दोनों हाथ कमर पर रख तनकर खड़ा हो गया।

"अबे क्या तेरी हड्डियाँ खुजला रही हैं?" यह कहता हुआ मुछन्दर वांग भी अपनी जाकेट पहन तनकर खड़ा हो गया।

यह सोचकर कि वांग का इरादा भाग खड़े होने का है, आ क्यू उस पर वार करने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन मुट्ठी का प्रहार करने से पहले ही मुछन्दर वांग ने उसे दबोच लिया और इतने ज़ोर का झटका दिया कि वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। इसके बाद मुछन्दर वांग ने आ क्यू की चुटिया पकड़कर उसे दीवार की तरफ घसीटा, ताकि उसका सिर हमेशा की ही तरह दीवार से टकराया जा सके।

"एक शरीफ आदमी ज़बान इस्तेमाल करता है, हाथ नहीं।" आ क्यू ने सिर टेढ़ा करके विरोध किया।

जाहिर है मुछन्दर वांग कोई शरीफ आदमी नहीं था, इसलिए आ क्यू की बात पर ज़रा भी गौर किए बग़ैर उसने एक के बाद एक पाँच बार उसका सिर दीवार से दे मारा और उसे इतने ज़ोर का धक्का दिया कि वह लड़खड़ाता हुआ दो गज दूर जा गिरा। सिर्फ़ तभी मुछन्दर वांग जीत की खुशी में वहाँ से चला गया।

जहाँ तक आ क्यू को याद है, यह उसकी ज़िन्दगी में पहला मौका था जबकि उसे इस तरह अपमान का घूँट पीना पड़ा था। मुछन्दर वांग के झबरीले गालों की वह हमेशा ही खिल्ली उड़ाया करता था, लेकिन वांग ने उसका कभी उपहास तक नहीं किया था, मार-पीट करना तो दरकिनार। मगर आज आशा के विपरीत मुछन्दर वांग ने उसकी पिटाई कर दी थी। शायद लोग बाज़ार में जो कुछ कह रहे थे, वह सच था: "शहंशाह ने सरकारी इम्तहान लेना बंद कर दिया है। जिन विद्वानों ने ये इम्तहान पास किए हैं, उनकी अब ज़रूरत नहीं है।" संभवतः इसके परिणामस्वरूप चाओ परिवार की प्रतिष्ठा कम हो गई होगी। लोगों द्वारा आ क्यू के प्रति तिरस्कारपूर्ण रुख अपनाए जाने का क्या यही कारण तो नहीं था?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ क्यू अस्थिर खड़ा था।

दूर से आ क्यू का एक और दुश्मन आ रहा था। यह छ्येन साहब का सबसे बड़ा लड़का था, जिससे आ क्यू पूरी तरह घृणा करता था। शहर के एक विदेशी स्कूल में पढ़ने के बाद शायद वह जापान चला गया था। छह महीने बाद जब वह स्वदेश लौटा तो तनकर चलने लगा था और अपनी चुटिया कटवा चुका था। उसकी माँ दसियों बार रो चुकी थी और पत्नी तीन बार कुएँ में छलाँग लगाने की कोशिश कर चुकी थी। बाद में उसकी माँ ने सबको बताया : "जब वह शराब के नशे में था तो किसी शोहदे ने उसकी चुटिया काट दी। अब तक वह न जाने कब का अफसर बन गया होता, लेकिन अब उसे तब तक इन्तज़ार करना होगा जब तक चुटिया फिर नहीं उग आती।" आ क्यू को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ और वह बड़ी ज़िद के साथ उसे 'नकली विदेशी दरिन्दा' और 'विदेशी तनखाह पाने वाला देशद्रोही' कहता फिर रहा था। ज्यों ही आ क्यू उसे देखता, धीमी आवाज़ में गाली बकने लगता।

आ क्यू को उसकी जो चीज़ सबसे बुरी लगती थी वह थी नकली चुटिया। जिसकी चुटिया भी नकली हो ऐसे आदमी को भला इंसान कैसे कहा जा सकता था; साथ ही चूँकि उसकी पत्नी ने चौथी बार कुएँ में छलाँग मारने की कोशिश नहीं की थी, इसलिए उसे भला एक अच्छी औरत कैसे कहा जा सकता था!

और अब वही 'नकली विदेशी दरिन्दा' उसकी तरफ आ रहा था।

"गंजा.... गधा...." पहले आ क्यू उसे सिर्फ़ धीमी आवाज़ में ही गाली दिया करता था, ताकि वह सुन न सके। लेकिन आज चूँकि उसका मिज़ाज़ ठीक नहीं था और वह अपने दिल की भड़ास निकालना चाहता था, इसलिए ये शब्द उसके मुँह से अनायास ही ज़रा ज़ोर से निकल गए।

बदकिस्मती से वह 'गंजा' एक चमकदार भूरी छड़ी लिए था, जिसे आ क्यू 'मातमपुर्सी करनेवाले की छड़ी' कहता था। लम्बे कदम बढ़ाता हुआ वह आ क्यू पर टूट पड़ा, जो पहले से ही यह अनुमान लगाकर कि उसे मार अवश्य पड़ने वाली है, अपनी पीठ तानकर पिटाई के लिए तैयार था। निश्चय ही बड़े ज़ोर से चटाक की आवाज़ हुई और ऐसा लगा मानो छड़ी से सिर पर वार किया गया हो।

"मैंने तो उसके लिए कहा था।" पास ही खड़े एक बच्चे की ओर इशारा करते हुए आ क्यू ने सफाई पेश की।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चटाक! चटाक!! चटाक!!!

जहाँ तक आ क्यू को याद है, यह उसकी ज़िन्दगी में दूसरा मौका था जबकि उसे अपमान का घूँट पीना पड़ा था। ख़ुशकिस्मती से जब पिटाई ख़त्म हो गई तो उसे लगा मामला ख़त्म हो चुका है। उसे कुछ राहत महसूस हुई। साथ ही अपनी उस मूल्यवान 'भूल जाने की क्षमता' के कारण, जो उसे अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी, उसे बड़ा फायदा हुआ। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ गया और मदिरालय के दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते काफी खुश नज़र आने लगा।

तभी 'शान्त आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' की एक छोटी भिक्षुणी उसकी तरफ़ आती दिखाई दी। भिक्षुणी को देखते ही आ क्यू के मुँह से गाली निकल जाती थी और आज हुए अपमान के बाद वह भला उसे गाली दिए बग़ैर कैसे रह सकता था? जब उसे अपने अपमान की बात याद आई तो उसका पारा फिर से चढ़ने लगा।

"अच्छा, तो आज मुझे बदकिस्मती का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि इसकी शकल देखनी थी।" उसने मन-ही-मन कहा।

भिक्षुणी के निकट पहुँच कर उसने ज़ोर से खँखार कर थूका: "आख थू। ....आख थू।"

छोटी भिक्षुणी उसकी ओर ज़रा भी ध्यान दिए बिना सिर नीचा करके चलती रही। आ क्यू उसके पास जा पहुँचा और हाल ही में मूँड़े हुए उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ पागल की तरह अट्टहास करके बोला: "अरे ओ गंजी, जल्दी जा। तेरा भिक्षु तेरी बाट जोह रहा होगा।...."

"कौन हो जी तुम मुझे छूने वाले?...." भिक्षुणी ने कहा। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा और क़दम तेज़ी से उठने लगे।

मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। यह देखकर कि उसका कारनामा लोगों ने पसंद किया है, आ क्यू को बड़ी खुशी हुई।

"अगर तुझे तेरा भिक्षु छू सकता है तो भला मैं क्यों नहीं छू सकता?" यह कहते हुए उसने भिक्षुणी का गाल मसल डाला।

एक बार फिर मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। आ क्यू और ज़्यादा फूल उठा और प्रशंसकों को और अच्छी तरह संतुष्ट करने के लिए उसने फिर एक बार भिक्षुणी का गाल ज़ोर से मसल डाला। तब कहीं उसे जाने दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस घटना ने मुछन्दर वांग और नकली विदेशी दरिन्दे का अपमान भुला दिया। उसे लगा मानो सारे दिन की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का बदला ले चुका हो। और ताज्जुब की बात यह थी कि मार खाने के बाद के मुकाबले अब वह कहीं ज़्यादा तनावशून्य और हल्का अनुभव कर रहा था, मानो हवा पर सवार हो।

"आ क्यू, तू निपूता ही मर जाए।" छोटी भिक्षुणी ने दूर जाकर रुआँसी आवाज़ में कोसा।

आ क्यू एक बार फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा।

मदिरालय में उपस्थित लोग भी खिलखिलाकर हँस पड़े, हालाँकि उन्हें आ क्यू से कम ही तसल्ली हुई।

अध्याय : चार

प्रेम की दुखान्त कहानी

कुछ विजेता ऐसे होते हैं जो अपनी विजय से तब तक खुश नहीं होते, जब तक उनके प्रतिद्वंद्वी बाघ या बाज की तरह खूँखार न हों; अगर उनके प्रतिद्वंद्वी भेड़-बकरी या मुर्गी की तरह डरपोक हों, तो उन्हें अपनी विजय बिलकुल खोखली जान पड़ती है। कुछ दूसरे विजेता ऐसे होते हैं जो अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर, सभी दुश्मनों को मौत के घाट उतार कर अथवा उनसे आत्मसमर्पण करवाकर और बिलकुल नाक रगड़वाकर, यह महसूस करने लगते हैं कि अब उनका कोई दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी या दोस्त नहीं रहा—केवल स्वयं ही रह गए हैं, सर्वोच्च, एकाकी, निराश और परित्यक्त। तब वे अपनी विजय को एक दुखान्त घटना समझने लगते हैं। लेकिन हमारा नायक ऐसा नहीं था। वह सदैव विजयोल्लास से परिपूर्ण रहता था। यह शायद इस बात का प्रमाण था कि चीन नैतिक दृष्टि से बाकी दुनिया के मुकाबले श्रेष्ठ है।

ज़रा आ क्यू को तो देखिए! वह कितना प्रफुल्लित अनुभव कर रहा है, मानो हवा पर तैर रहा हो।

यह विजय वास्तव में विचित्र परिणामों से रहित न थी। काफी समय तक हवा में उड़ने के बाद वह संरक्षक-देवता के मंदिर में जा पहुँचा, जहाँ वह अक्सर लेटते ही खर्राटे मारने लगता था। लेकिन आज रात उसकी आँखों से नींद गायब हो चुकी थी। उसे अनुभव हो रहा था

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि उसके अँगूठे और तर्जनी को न मालूम क्या हो गया है, उनमें आम दिनों के मुकाबले अधिक कोमलता आ गई थी। यह कहना मुश्किल था कि उस छोटी भिक्षुणी के चेहरे की कोई मुलायम व कोमल वस्तु उसकी उँगलियों से चिपक गई थी अथवा भिक्षुणी के गालों की रगड़ से उसकी उँगलियाँ मुलायम हो गई थीं।

"आ क्यू, तू निपूता ही मर जाए।"

ये शब्द आ क्यू के कानों में बार-बार गूँज रहे थे। वह सोचने लगा, "ठीक है, मेरी भी पत्नी होनी चाहिए। कारण, अगर कोई आदमी निपूता ही मर जाए तो मृतात्मा को पिण्डदान कौन करेगा?.... मेरी पत्नी अवश्य होनी चाहिए।" जैसी कि कहावत है, 'अपुत्रोचित आचरण के तीन रूप होते हैं, जिनमें सबसे निकृष्ट है सन्तानहीन होना।'[1] यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि 'संतानहीन मृतात्मा भूखी ही रह जाती है।'[2] स्पष्ट है कि उसके विचार ऋषि-मुनियों की शिक्षा के बिलकुल अनुकूल थे। लेकिन बड़े दुख की बात है कि बाद में उसके सिर पर पागलपन सवार हो गया।

"औरत, औरत!...." उसने सोचा।

"....वह भिक्षु उसका स्पर्श करता है.... औरत, औरत.... औरत।" उसने फिर सोचा।

हम यह कभी नहीं जान पाएँगे कि उस रात आ क्यू कब सो सका। मगर इसके बाद शायद हमेशा ही उसे अपनी उँगलियाँ ज़रा कोमल और मुलायम अनुभव होने लगीं, उसके मस्तिष्क में एक उन्माद-सा छाने लगा। "औरत...." वह लगातार सोचता गया।

इससे हम देख सकते हैं कि औरत मानव जाति के लिए एक अभिशाप है।

चीन के अधिकांश पुरुषों को यदि स्त्रियाँ बरबाद न कर देतीं तो शायद वे ऋषि-मुनि बन गए होते। शांग राजवंश का विनाश ता ची ने किया था और चओ राजवंश का उन्मूलन पाओ स ने किया था; जहाँ तक छिन राजवंश का सवाल है, हालाँकि इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद नहीं है, फिर भी अगर हम यह मान लें कि इसका पतन भी किसी औरत के ही कारण हुआ तो शायद ज़्यादा गलत नहीं होगा। और

1. मन्शियस (373-389 ईसा पूर्व) का एक उद्धरण।
2. प्राचीन ग्रंथ 'चओ च्वान' का एक उद्धरण।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सच है कि दोंग झुओ की मृत्यु का कारण भी दियाओ चान ही थी।[1]

आ क्यू भी शुरू में बड़े नैतिक मूल्यों वाला आदमी था। हालाँकि हमें इस बात की जानकी नहीं है कि उसका मार्गदर्शन किसी अच्छे शिक्षक ने किया था अथवा नहीं, वह 'स्त्री-पुरुषः को सख्ती के साथ एक दूसरे से पृथक् रखने' के सिद्धांत का हमेशा बड़ी ईमानदारी से पालन करता था तथा छोटी भिक्षुणी और नकली विदेशी दरिन्दे के पाखण्डीपन की ईमानदारी से भर्त्सना करने में कभी पीछे नहीं रहता था। उसकी राय थी, "सभी भिक्षुणियाँ गुप्त रूप से भिक्षुओं के साथ नाजायज़ संबंध रखती हैं। अगर कोई औरत रास्ते में अकेली चल रही हो, तो वह ज़रूर बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती है। जब कोई मर्द और औरत आपस में बात कर रहे हों तो वे दोनों ज़रूर अपनी मुलाकात का स्थान व समय निश्चित कर रहे होंगे।" इस तरह के लोगों को सुधारने के लिए वह उन्हें बड़े खूँखार ढंग से घूरता था, ऊँची आवाज़ में तीखा व्यंग्य करता था, अथवा यदि एकान्त हो तो पीछे से पत्थर तक मार देता था।

कौन कह सकता था कि लगभग तीस वर्ष की उम्र में, जबकि एक आदमी को 'दृढ़ता से खड़ा'[2] होना चाहिए, वह इस तरह एक छोटी भिक्षुणी पर फिसल जाएगा? शास्त्रों के अनुसार इस प्रकार का हल्कापन अत्यन्त निंदनीय होता है; स्त्री सचमुच ही घृणा की पात्र होती है। कारण, यदि उस छोटी भिक्षुणी का चेहरा कोमल व मुलायम न होता तो आ क्यू उस पर मोहित न होता; यदि उसका चेहरा किसी कपड़े से ढका होता, तो भी ऐसी स्थिति न आती। आज से पाँच-छह साल पहले खुले मंच पर आपेरा देखते समय उसने एक दर्शक स्त्री की टाँग पर चुटकी काट ली थी। लेकिन चूँकि उसकी टाँगे पाजामे से ढकी थीं, इसलिए उस घटना के बाद आ क्यू को ऐसे उन्माद की अनुभूति नहीं हुई थी जैसी कि आज हो रही है। छोटी भिक्षुणी का चेहरा ढका हुआ नहीं था, जो उसके घिनौने पाखण्डीपन का एक अन्य प्रमाण था।

"औरत...." आ क्यू सोचता रहा।

1. ता ची ईसा पूर्व बारहवीं शताब्दी में शांग राजवंश के अंतिम राजा की रखैल थी। पाओ स ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी में पश्चिमी चाओ राजवंश के अंतिम राजा की रखैल थी। त्याओ छान ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के एक शक्तिशाली मंत्री तुंग च्वो की रखैल थी।

2. कन्फ्यूशियस ने कहा था कि वह तीस वर्ष की आयु में 'दृढ़ता से खड़ा' है। बाद में इस वाक्यांश का प्रयोग तीस वर्ष की उम्र बताने के लिए होने लगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह उन औरतों पर कड़ी नज़र रखता जिनके बारे में उसे यह ख़्याल होता कि वे 'बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती हैं,' मगर उसकी तरफ देखकर मुस्कराती तक नहीं थीं। जब कभी कोई औरत उससे बात करती तो वह बड़े गौर से सुनता था, मगर अब तक उसे एक भी औरत ऐसी नहीं मिली थी जिसने उससे गुप्त रूप से मिलने-जुलने के बारे में कोई बात कही हो। ओह! यह औरत के घिनौनेपन का एक अन्य प्रमाण है: वे सब दरअसल एक झूठी शालीनता का लबादा ओढ़े रहती हैं।

एक दिन जब आ क्यू चाओ साहब के घर चावल पीस रहा था, तो रात का भोजन करने के बाद वह रसोईघर में बैठकर चिलम सुलगाने लगा। अगर किसी और का घर होता तो भोजन के बाद वह फौरन घर लौट गया होता। लेकिन चाओ परिवार के लोग रात का खाना ज़रा जल्दी खा लेते थे। हालाँकि वहाँ यह नियम था कि खाना खाने के बाद कोई रोशनी नहीं कर सकता था और सब लोग बिस्तर में पहुँच जाते थे, मगर कभी-कभी इसका अपवाद भी देखने को मिलता था। चाओ साहब के बेटे को काउंटी की सरकारी परीक्षा पास करने से पहले इस बात की इजाज़त थी कि वह रोशनी करके परीक्षा में आने वाले निबन्धों की तैयारी करे; इसी तरह जब आ क्यू वहाँ काम करने जाता तो उसे इस बात की इजाज़त थी कि चावल पीसने के लिए रोशनी किए रखे। इस अपवाद के कारण अपना काम शुरू करने से पहले आ क्यू अब भी रसोईघर में बैठा चिलम पी रहा था।

चाओ परिवार की एकमात्र नौकरानी आमा ऊ ने जब घर के बर्तन-भाँडे माँज लिए तो वह भी लंबे बेंच पर बैठकर आ क्यू से बातें करने लगी:

"मालकिन ने दो दिन से कुछ नहीं खाया, क्योंकि मालिक रखैल लाना चाहते हैं!...."

"औरत.... आमा वू.... यह छोटी-सी विधवा," आ क्यू ने सोचा।

"हमारी नौजवन मालकिन आठवें चंद्रमास में बच्चा जननेवाली हैं।...."

"औरत...." आ क्यू सोचता रहा।

उसने अपनी चिलम एक तरफ़ रख दी और उठ खड़ा हुआ।

"हमारी नौजवान मालकिन...." आमा वू बोलती गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आ, मेरे साथ सो जा।" आ क्यू ने अचानक कहा और आगे बढ़कर उसके पैरों पर गिर पड़ा।

एक क्षण के लिए वहाँ बिलकुल सन्नाटा छा गया।

"हाय माँ।" आमा वू अवाक् रह गई। सहसा काँप उठी और चीखती हुई वहाँ से भाग खड़ी हुई। कुछ देर बाद उसके रोने-सिसकने की आवाज़ आने लगी।

दीवार के सामने घुटनों के बल बैठा आ क्यू भी अवाक् रह गया। खाली बेंच को दोनों हाथों से थामकर वह धीरे-धीरे उठा। उसे एक धुँधला-सा आभास हो रहा था कि कुछ-न-कुछ घपला अवश्य हो गया है। वास्तव में इस समय वह खुद भी बहुत घबराया हुआ था। हड़बड़ाकर उसने अपनी चिलम कमरबंद में खोंस ली और चावल पीसने के लिए जाने लगा। लेकिन तभी किसी ने ज़ोर से उसके सिर पर प्रहार किया। घूमकर देखा तो काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार सामने खड़ा दिखाई दिया। उसके हाथ में एक लंबा-सा बाँस था।

"तुझे हिम्मत कैसे हुई.... तुझे?...."

लंबा बाँस आ क्यू के कंधों के ऊपर उठा। जब उसने अपना सिर दोनों हाथों से ढक लिया तो प्रहार उसकी उँगलियों की पोरों पर पड़ा। वह दर्द से कराह उठा। जब वह रसोईघर के दरवाज़े से भाग रहा था तो उसे लगा पीठ पर भी बाँस का प्रहार हुआ है।

"अबे ओ कछुए की औलाद।" सफल उम्मीदवार ने पीछे से टकसाली ज़बान में ज़ोर से गाली दी।

आ क्यू भागकर धान कूटने के दालान में जा पहुँचा। वहाँ वह अकेला ही खड़ा था। उसकी उँगलियों की पोरों में अब भी दर्द हो रहा था, 'कछुए की औलाद'—ये शब्द उसके कानों में अब भी गूँज रहे थे क्योंकि यह गाली वेइच्वांग के आम गाँववासी कभी इस्तेमाल नहीं करते थे। इसे सिर्फ़ वे धनी लोग ही इस्तेमाल करते थे जो किसी-न-किसी रूप में सरकारी अफसर रह चुके थे। इस वजह से यह अधिक चौंकाने वाली और असरदार हो गई थी। अब तक "औरत...." के बारे में सभी तरह के विचार उसके दिमाग़ से रफूचक्कर हो चुके थे। गालियाँ और मार खाने के बाद उसे ऐसा लगने लगा मानो वह सारा मामला ख़त्म हो चुका

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो। प्रफुल्लित होकर वह फिर से चावल पीसने लगा। कुछ देर चावल पीसने के बाद उसे गर्मी लगने लगी और वह अपनी कमीज़ उतारने के लिए रुक गया।

जब आ क्यू अपनी कमीज़ उतार रहा था तो उसे बाहर कोलाहल सुनाई दिया और चूँकि आ क्यू को हर तरह की सरगरमी में शामिल होना पसंद था, इसलिए कोलाहल का पता लगाता हुआ वह बाहर निकल गया। वह सीधा चाओ साहब के भीतरी आँगन से आ रहा था। हालाँकि संध्या का समय हो चुका था, फिर भी बहुत से लोग वहाँ जमा थे। चाओ परिवार के सभी लोग मौजूद थे जिनमें दह मालकिन भी थी जिसने दो दिन से खाना नहीं खाया था। इसके अलावा पड़ोसिन श्रीमती चओ और संबंधी चाओ पाए येन व चाओ स छन भी उपस्थित थे।

नौजवान मालकिन आमा ऊ को नौकरों के कमरे से बाहर ले जाती हुई कह रही थीं:

''बाहर चल.... अपने कमरे में बैठकर दुखी क्यों हो रही है?''

''हर आदमी जानता है कि तू एक नेक औरत है,'' श्रीमती चओ बगल से बोलीं। ''तुझे खुदकुशी का विचार दिमाग़ से निकाल देना चाहिए।''

आमा ऊ रोती-चिल्लाती रही और मन-ही-मन कुछ बड़बड़ाती रही।

''यह खूब तमाशा है,'' आ क्यू ने सोचा। ''यह छोटी-सी विधवा न जाने क्या गुल खिलाना चाहती है?'' कारण पता लगाने के लिए वह चाओ स छन के पास जा ही रहा था कि अचानक उसकी नज़र चाओ साहब के बड़े लड़के पर पड़ी, जो लंबा बाँस हाथ में उठाए उसकी तरफ बढ़ रहा था। लंबे बाँस को देखते ही उसे याद आ गया कि इससे उसकी पिटाई हो चुकी है और वह समझ गया कि यहाँ जो घपला मचा हुआ है उसका किसी-न-किसी रूप में उसके अपने साथ अवश्य ताल्लुक है। वह पीछे मुड़ा और भाग खड़ा हुआ, इस उम्मीद से कि धान कूटने के आँगन में जा छिपेगा, लेकिन यह नहीं सोच सका कि लंबा बाँस उसे पीछे नहीं लौटने देगा। इसके बाद वह फिर से मुड़ा और दूसरी दिशा में भागता हुआ बिना कोई बखेड़ा खड़ा किए पिछले दरवाज़े से बाहर चला गया। कुछ ही समय में वह संरक्षक-देवता के मंदिर में जा पहुँचा।

कुछ देर बैठने के बाद आ क्यू ठंड से ठिठुरने लगा और उसके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोंगटे खड़े हो गए। कारण, यद्यपि बसंत आ चुका था फिर भी रातें काफी ठण्डी थीं और पीठ नंगी नहीं रखी जा सकती थी। उसे याद आया कि उसकी कमीज़ चाओ परिवार के घर पर रह गई है। डर था कि अगर उसे लेने गया तो सफल उम्मीदवार के लंबे बाँस की मार का स्वाद कहीं फिर न चखना पड़े।

और तभी बेलिफ अन्दर आ पहुँचा।

"तेरा सत्यानाश हो आ क्यू के बच्चे।" बेलिफ ने कहा। "अबे ओ बागी, तू चाओ परिवार की नौकरानी पर हाथ साफ करने से बाज़ नहीं आया? तूने तो मेरी नींद ही हराम कर दी है। तेरा सत्यानाश हो।...."

इस तरह गालियों की बौछार होने पर यह स्वाभाविक था कि आ क्यू चुप रहता। अंत में, चूँकि रात का वक्त था इसलिए आ क्यू को बेलिफ के हाथ में दुगुने पैसे, यानी चार सौ ताँबे के सिक्के रखने थे। लेकिन चूँकि उसके पास एक दमड़ी भी नहीं थी, इसलिए उसने अपना टोप ज़मानत के तौर पर देकर नीचे लिखी पाँच शर्तें मंजूर कर लीं :

1. अगले दिन सुबह आ क्यू एक पौण्ड वजन वाली दो लाल मोमबत्तियाँ और एक बंडल अगरबत्तियाँ चाओ परिवार के पास भेजकर अपने पाप का प्रायश्चित करेगा।
2. ताओ धर्म के उस पुजारी की दक्षिणा आ क्यू देगा जिसे चाओ परिवार ने भूत-प्रेतों को भगाने के लिए बुलाया है।
3. भविष्य में आ क्यू चाओ परिवार के घर में हर्गिज़ कदम नहीं रखेगा।
4. अगर आमा ऊ को बदकिस्मती से कुछ हो गया, तो उसके लिए आ क्यू को ही ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा।
5. आ क्यू अपनी मजूरी और कमीज़ लेने चाओ परिवार के घर नहीं जाएगा।

आ क्यू ने ये सारी शर्तें मान लीं, लेकिन अफसोस की बात कि उसके पास नकद पैसा बिलकुल नहीं था। भाग्यवश बसंत का मौसम आ चुका था और रूई के लिहाफ के बिना भी गुज़ारा हो सकता था। इसलिए उसने अपना रूई का लिहाफ दो हज़ार ताँबे के सिक्कों के बदले गिरवी रखकर उक्त तमाम शर्तें पूरी कीं। अपनी नंगी पीठ झुकाकर नाक रगड़ने के बाद भी आ क्यू के पास कुछ ताँबे के सिक्के बाकी रह गए थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन उन्हें देकर बेलिफ से अपना टोप छुड़ाने के बदले उसने यह सारा पैसा शराब में उड़ा दिया।

चाओ परिवार ने वास्तव में न तो आ क्यू की दी हुई अगरबत्तियाँ जलाईं और न मोमबत्तियाँ। चूँकि उनका इस्तेमाल मालकिन भगवान बुद्ध की पूजा के लिए कर सकती थीं, इसलिए उन्हें अलग रख दिया गया। आ क्यू की फटी-पुरानी कमीज़ से नौजवान मालकिन के उस बच्चे की लंगोटियाँ बना दी गईं जो आठवें चंद्रमास में पैदा हुआ। बचे-खुचे चिथड़ों से आमा ऊ ने अपने जूते का तला तैयार कर लिया।

अध्याय : पाँच

जीविका की समस्या

चाओ परिवार के सामने नाक रगड़ने और उसकी सारी शर्तें मान लेने के बाद आ क्यू हमेशा की ही तरह संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट गया। सूरज डूब चुका था। उसे कुछ अजीब-सा लग रहा था। काफी सोच-विचार करने के बाद वह इस नतीज़े पर पहुँचा कि शायद पीठ नंगी होने के कारण ही उसे ऐसा महसूस हो रहा है। उसे याद आया उसके पास एक फटी-पुरानी अस्तर वाली जाकिट अब भी मौजूद है। वह जाकिट पहनकर लेट गया। आँख खुली तो देखा सूरज की रोशनी पश्चिमी दीवार के ऊपर तक पहुँच चुकी है। ''अरे, सत्यानाश हो गया....'' कहता हुआ वह उठ बैठा।

उठने के बाद वह हमेशा की ही तरह गली-कूचों में आवारागर्दों की तरह घूमने लगा। उसे फिर कुछ अजीब-सा लगने लगा, हालाँकि इसकी तुलना नंगी पीठ के कारण होने वाली शारीरिक असुविधा से नहीं की जा सकती थी। जाहिर था कि उस दिन के बाद वेइच्वांग की सभी औरतें आ क्यू से कतराने लगीं; जब भी उसे आता हुआ देखतीं, घर के भीतर छिप जातीं। यहाँ तक कि श्रीमती चाओ भी, जो लगभग पचास की हो चुकी थीं, उसे देखते ही घबराकर बाकी औरतों के साथ घर के भीतर घुस गईं और उन्होंने अपनी ग्यारह वर्ष की लड़की को भी भीतर बुला लिया। यह सब आ क्यू को बड़ा अजीब-सा लगा। ''कुतिया कहीं की'' उसने सोचा। ''ये औरतें अचानक नई-नवेलियों की तरह शर्म करने लगी हैं।....''

लेकिन जब कई दिन बीत गए तो उसे और भी ज़्यादा अजीब-सा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगने लगा। पहले, मदिरालय वाले ने उसे उधार देना बंद कर दिया; दूसरे, संरक्षक-देवता के मंदिर के बूढ़े पुजारी ने उससे कुछ ऐसी कड़वी बातें कहीं जिससे ऐसा लगा मानो वह आ क्यू को वहाँ से निकालना चाहता हो; तीसरे, कई दिनों तक—उसे ठीक-ठीक याद नहीं कितने दिनों तक—उसे मजूरी के लिए बुलाने एक भी आदमी नहीं आया। मदिरालय में उधार मिलना बंद होने पर भी वह काम चला सकता था; बूढ़े पुजारी द्वारा बार-बार मंदिर से निकलने के लिए कहे जाने के बावजूद आ क्यू उसकी शिकायतों की उपेक्षा कर सकता था; लेकिन अगर मजूरी के लिए बुलाने कोई नहीं आया तो क्या वह भूखों मरेगा? यह स्थिति सचमुच एक 'अभिशाप' बनकर आ गई थी।

जब हालात आ क्यू के बरदाश्त के बाहर हो गए, तो वह उन घरों में गया जहाँ उसे नियमित रूप से काम मिलता रहता था—सिर्फ चाओ साहब के मकान को छोड़कर जिसकी दहलीज़ पार करने की इजाज़त उसे नहीं थी—ताकिं मालूम कर सके कि आख़िर बात क्या है। लेकिन हर जगह लोग उसके साथ अजीबोग़रीबो ढंग से पेश आए। घर से बाहर आनेवाला आम तौर पर पुरुष ही होता था, जो बेहद चिढ़ा हुआ जान पड़ता था और आ क्यू को इस तरह दुत्कारता था मानो कोई भिखारी हो:

''यहाँ तुझे कुछ नहीं मिलेगा। दफा हो जा यहाँ से।''

आ क्यू को यह सब देखकर और भी ज़्यादा आश्चर्य होने लगा। ''इन लोगों को पहले अपने काम में मदद के लिए ज़रूर किसी-न-किसी की आवश्यकता होती थी,'' उसने सोचा। ''अचानक यह कैसे हो सकता है कि इनके पास कोई भी काम न रह गया हो। ज़रूर दाल में कुछ काला है।'' अच्छी तरह पूछताछ करने पर पता चला कि जब भी उनके यहाँ कोई छोटा-मोटा काम होता तो वे लोग नौजवान डी को बुला लाते। नौजवान डी एक दुबला-पतला, कमज़ोर कंगाल व्यक्ति था जो आ क्यू की नज़रों में मुछन्दर वांग से भी गया-बीता था। कौन जानता था कि यह निचले दर्जे का आदमी उसकी रोज़ी छीन लेगा। इसलिए इस बार आ क्यू का रोष आम दिनों के मुकाबले कहीं ज़्यादा भड़क उठा। रास्ते में चलते-चलते वह गुस्से से उबल पड़ा और अचानक हाथ उठाकर गाने लगा: ''हड्डी-पसली चूर तुम्हारी लोहे की छड़ से कर दूँगा।....''[1]

1. 'नाग और बाघ की लड़ाई' नामक आपेरा की एक पंक्ति। यह आपेरा शाओशिंग में काफी लोकप्रिय है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ दिनों बाद छ्येन साहब के मकान के सामने उसकी मुलाकात नौजवान डी से हो गई। "जब दो शत्रु मिलते हैं तो उनकी आँखों से अंगारे बरसने लगते हैं।" जब आ क्यू करीब पहुँचा तो नौजवान डी निस्तब्ध खड़ा रह गया।

"अबे ओ पाजी गधे।" आ क्यू क्रोध में फुंफकारा।

"मैं एक कीड़ा हूँ—बस, अब तो खुश हो?" नौजवान डी ने कहा।

उसकी इस नम्रता से आ क्यू का पारा और ज़्यादा चढ़ गया। लेकिन चूँकि उसके पास लोहे की छड़ नहीं थी, इसलिए वह हाथ फैलाकर सिर्फ़ नौजवान डी की चुटिया पकड़ने के लिए झपटा। नौजवान डी एक हाथ से अपनी चुटिया की रक्षा करता हुआ दूसरे हाथ से आ क्यू की चुटिया पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। इस पर आ क्यू ने भी खाली हाथ से अपनी चुटिया बचाने की कोशिश की। आ क्यू ने नौजवान डी को पहले कभी कुछ नहीं समझा था, मगर चूँकि कुछ समय से आ क्यू भुखमरी का सामना कर रहा था, इसलिए वह भी अपने प्रतिद्वंद्वी की ही तरह दुबला-पतला और कमज़ोर हो गया था। इस तरह दोनों ही बराबर के प्रतिद्वंद्वी लग रहे थे। चार हाथों ने दो सिर थामे हुए थे, दोनों आदमी कमर झुकाए हुए थे और कोई आधे घंटे तक छ्येन परिवार की सफेद दीवार पर उनकी नीली इन्द्रधनुषाकार छाया पड़ती रही।

"बहुत हो चुका। बस करो।" कुछ दर्शकों ने कहा। वे शायद उनके बीच सुलह कराना चाहते थे।

"बहुत अच्छा, बहुत खूब।" कुछ अन्य दर्शकों ने कहा। लेकिन यह साफ-साफ मालूम न हो सका कि उनका उद्देश्य क्या था—सुलह कराना, लड़ाई करनेवालों की प्रशंसा करना अथवा उन्हें और ज़्यादा लड़ने के लिए उकसाना।

मगर दोनों ही योद्धाओं ने उन सब की एक न सुनी। अगर आ क्यू तीन कदम आगे बढ़ता तो नौजवान डी तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों स्थिर खड़े रहते। अगर नौजवान डी तीन कदम आगे बढ़ता तो आ क्यू तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों फिर से स्थिर खड़े रहते। लगभग आधे घंटे बाद—वेइच्वांग में सिर्फ़ गिनी-चुनी ही घड़ियाँ थी, इसलिए ठीक समय बताना मुश्किल है; हो सकता है बीस ही मिनट हुए हों—उनके सिर से भाप उठने लगी और चेहरों पर पसीने की धार बहने लगी। आ क्यू ने अपने हाथ पीछे खांच लिए। उसी क्षण

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौजवान डी ने भी अपने हाथ पीछे खींच लिए। दोनों ने एक साथ कमर सीधी की, दोनों एक साथ पीछे हटे और भीड़ को चीरते हुए निकल गए।

"तेरी खबर फिर कभी लूँगा, कमीने!...." आ क्यू ने उसे कोसते हुए कहा।

"मैं भी तेरी खबर फिर कभी लूँगा, कमीने।...." नौजवान डी ने भी वही वाक्य दोहराया।

इस महायुद्ध में न तो किसी की विजय हुई और न पराजय; यह भी मालूम न हो सका कि दर्शकों को इससे संतोष हुआ या नहीं, क्योंकि उनमें से एक भी आदमी ने अपनी राय ज़ाहिर नहीं की। यह सब होने के बावजूद आ क्यू को रोज़गार देने कोई नहीं आया।

एक दिन जब मौसम में कुछ गर्मी थी और गुलाबी बयार से ग्रीष्म के आगमन का आभास हो रहा था तो आ क्यू को कुछ ठण्ड महसूस होने लगी; लेकिन वह ठण्ड तो बरदाश्त कर सकता था—उसकी सबसे बड़ी चिंता भूखे पेट की थी। वह अपना रूई का लिहाफ, टोप और कमीज़ काफी पहले ही गँवा चुका था। बाद में उसने अपनी रूईदार जाकिट को भी बेच डाला। अब उसके पास सिर्फ एक पाजामा बच गया, जिसे उतारना उसके लिए संभव नहीं था। यह सच है कि उसके पास एक अस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट और थी, लेकिन वह बिलकुल चिथड़े-चिथड़े हो चुकी थी और सिर्फ़ जूते के तले बनाने लायक रह गई थी। वह काफी समय से उम्मीद कर रहा था कि उसे कहीं रास्ते में पड़ा पैसा मिल जाएगा, लेकिन अभी तक कामयाब नहीं हो पाया था। वह यह उम्मीद भी कर रहा था कि शायद किसी दिन उसे अपने टूटें-फूटे कमरे में अचानक कोई रकम मिल जाएगी और इसे पाने के लिए उसने अपने कमरे की पूरी छानबीन भी कर डाली थी; लेकिन कमरे में फूटी कौड़ी भी न थी। इसके बाद उसने निश्चय कर लिया कि भोजन की खोज में गाँव के बाहर चला जाएगा।

'भोजन की खोज' में जब वह सड़क पर जा रहा था तो सामने चिरपरिचित मदिरालय और भाप से पकी रोटी पर नज़र पड़ी। लेकिन वहाँ एक क्षण के लिए भी रुके बिना, यहाँ तक कि उन्हें पाने के लिए लालायित हुए बिना वह आगे बढ़ गया। उसे इन चीज़ों की तलाश नहीं थी, हालाँकि यह बात वह खुद भी नहीं जानता था कि उसे किस चीज़ की तलाश थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चूँकि वेइच्वांग कोई बड़ा गाँव न था, इसलिए शीघ्र ही उसे पीछे छोड़कर आ क्यू आगे बढ़ गया। गाँव के बाहर ज़्यादातर इलाके में धान के खेत फैले हुए थे। दूर क्षितिज तक धान के कोमल अंकुरों की हरियाली छाई हुई थी। कहीं-कहीं गोल-गोल काली-काली आकृतियाँ हिलती-डुलती दिखाई दे रही थीं। वे लोग खेतों में काम करनेवाले किसान थे। लेकिन देहाती जीवन की इस आनंदमय अनुभूति से विमुख आ क्यू लगातार अपने रास्ते चलता जा रहा था, क्योंकि वह बखूबी इस बात को जानता था कि यह उसकी 'भोजन की खोज' से कोसों दूर है। अंत में वह 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' की चारदीवारी के पास जा पहुँचा।

यह भिक्षुणी-विहार भी चारों तरफ से धान के खेतों से घिरा था। इसकी सफेद दीवारें हरे-भरे खेतों के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। पिछवाड़े की तरफ गारे-मिट्टी की नीची दीवार के अंदर की तरफ एक साग-सब्ज़ी का बगीचा था। एक क्षण के लिए आ क्यू ठिठका और उसने अपने चारों ओर नज़र डाली। चूँकि आसपास कोई नज़र नहीं आया, इसलिए वह एक पेड़ के सहारे उस नीची दीवार पर चढ़ गया। गारे-मिट्टी की दीवार सहसा भरभराकर गिरने को हुई। आ क्यू डर के मारे काँपने लगा। लेकिन शहतूत के पेड़ की शाख से लटककर दीवार फाँदकर वह अंदर चला गया। वहाँ साग-सब्ज़ियों की भरमार थी, लेकिन पीली शराब,.भाप से पकी रोटी अथवा अन्य किसी खाद्य-पदार्थ का कहीं कोई चिन्ह न था। पश्चिमी दीवार के निकट बाँसों का झुरमुट खड़ा था, जहाँ बाँस की कोमल कोपलें फूट रही थीं। लेकिन बदकिस्मती से ये कोपलें पकी हुई नहीं थीं। सरसों के पौधे खड़े थे, जो काफी समय पहले ही बीज के लिए चुन लिए गए थे, राई के पौधों पर फूल खिलने वाले थे और पातगोभी की छोटी-छोटी गाँठे बड़ी सख्त मालूम पड़ रही थीं।

परीक्षा में असफल किसी विद्वान के समान निराश हो वह धीर-धीरे बगीचे के फाटक की तरफ बढ़ने लगा। सहसा वह खुशी से झूम उठा। कारण, उसकी नज़र सामने शलजम की क्यारी पर पड़ी। नीचे झुककर उसने शलजम खोदना शुरू कर दिया कि अचानक फाटक के पीछे से एक घुटा हुआ सिर नज़र आया, जो फौरन गायब हो गया। वह वास्तव में वही छोटी भिक्षुणी थी। हालाँकि आ क्यू छोटी भिक्षुणी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे लोगों को बेहद हिकारत की नज़र से देखता था, फिर भी कभी-कभी ऐसा समय आ जाता है जब 'सावधानी को ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी समझा जाता है।' उसने जल्दी-जल्दी चार शलजम उखाड़े, पत्तियाँ तोड़कर फेंक दीं और उन्हें अपनी जाकिट में ठूँस लिया। तब तक एक बूढ़ी भिक्षुणी बाहर आ पहुँची।

"भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें। अरे आ क्यू हमारे बगीचे में कूदकर शलजम चुराने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?.... हे भगवान, यह कितना बड़ा पाप है। भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें।...."

"मैं तुम्हारे बगीचे में कब कूदा, तुम्हारे शलजम कब चुराए?" आ क्यू ने उत्तर दिया और भिक्षुणी की तरफ देखता हुआ वहाँ से चल पड़ा।

"अभी-अभी चुराए हैं—देख, यह क्या है?" उसकी जाकिट की तरफ इशारा करते हुए बूढ़ी भिक्षुणी बोली।

"क्या ये तुम्हारे हैं? क्या तुम इसे साबित कर सकती हो? तुम...."

अपनी बात पूरी करने से पहले ही आ क्यू सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ। उसके पीछे एक बेहद मोटा, काला कुत्ता लपका। शुरू में यह कुत्ता सामने के फाटक पर था। वह पीछे के बगीचे में कैसे पहुँचा यह बड़े आश्चर्य की बात थी। काला कुत्ता गुर्राता हुआ आ क्यू के पीछे दौड़ा और उसकी टाँग पर दाँत मारने ही वाला था कि उसी समय उसकी जाकिट में से एक शलजम नीचे गिर गया। कुत्ता चौंका और एक क्षण के लिए वहीं रुक गया। मौके का फायदा उठाकर आ क्यू शहतूत के पेड़ पर चढ़ गया और मिट्टी-गारे की दीवार फाँदकर दूसरी तरफ जा गिरा। काला कुत्ता शहतूत के पेड़ के पास भौंकता रह गया और बूढ़ी भिक्षुणी भगवान को याद करती हुई खड़ी रह गई।

इस डर से कि कहीं भिक्षुणी काले कुत्ते को उसके पीछे फिर न छोड़ दे, आ क्यू ने झटपट शलजम बटोरे और दो-चार छोटे-छोटे पत्थर हाथ में उठाकर भाग निकला। काला कुत्ता फिर नहीं आया। आ क्यू ने पत्थर नीचे फेंक दिए और शलजम खाता हुआ आगे बढ़ गया। उसने मन में सोचा, "यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। शहर जाना ज़्यादा ठीक रहेगा।...."

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीसरा शलजम खा चुकने तक उसने शहर जाने का फैसला कर लिया था।

अध्याय : छह

उत्थान से पतन की ओर

उस वर्ष चंद्रोत्सव से पहले आ क्यू वेईच्वांग में नहीं दिखाई दिया था। उसके वापस लौटने की खबर सुनकर हर आदमी ताज्जुब करने लगा और पुरानी बातों को याद करके सोचने लगा कि इस बीच आखिर वह गया कहाँ था। इससे पहले जब आ क्यू शहर गया था तो लोगों को पहले से ही बड़ी शान से सूचित कर गया था; चूँकि इस बार उसने ऐसा नहीं किया, इसलिए उसके शहर जाने का किसी को पता ही न चला। शायद उसने संरक्षक-देवता के मंदिर के बूढ़े पुजारी को बताया हो। लेकिन वेइच्वांग के रिवाज़ के मुताबिक शहर जाना सिर्फ़ तभी महत्त्वपूर्ण समझा जाता था जब चाओ साहब, छ्येन साहब अथवा काउंटी के सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार शहर जाते थे। यहाँ तक कि नकली विदेशी दरिन्दे के शहर जाने की भी चर्चा नहीं होती थी, आ क्यू की भला क्या बिसात। शायद इसीलिए बूढ़े पुजारी ने आ क्यू के शहर जाने की बात किसी से नहीं कही थी और गाँववाले इस संबंध में कुछ नहीं जान पाए।

आ क्यू की इस बार की वापसी भी पहले के मुक़ाबले अलग किस्म की थी और लोगों को आश्चर्य में डालने के लिए काफी थी। साँझ हो चुकी थी। नींद से भरी आँखें लिए वह मदिरालय के दरवाज़े पर जा पहुँचा और सीध काउंटर पर पहुँचकर अपने कमरबंद से मुट्ठीभर चाँदी और ताँबे के सिक्के निकाल उन्हें खनखनाता हुआ काउंटर पर रखकर बोला, "नकद पैसा! शराब लाओ।" वह एक नई अस्तर वाली जाकिट पहने था और कमर में एक बड़ा-सा बटुआ लटक रहा था, जिसके भारी वज़न से कमरबंद कुछ नीचे की तरफ झुक गया था।

वेइच्वांग में रिवाज़ था कि अगर किसी आदमी में कोई अनोखी बात नज़र आती तो उसके साथ इज्ज़त का बरताव किया जाता, न कि बदतमीज़ी का। हालाँकि उस समय लोग अच्छी तरह जान गए थे कि यह आ क्यू ही है, फिर भी वह फटे-पुराने कोट वाले आ क्यू से बिलकुल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भिन्न व्यक्ति बन चुका था। प्राचीन कहावत है, 'यदि कोई विद्वान तीन दिन के लिए भी बाहर गया हो, तो उसे नई दृष्टि से देखना चाहिए।' इसलिए वेटर, मदिरालय का मालिक, ग्राहक और सड़क पर आने-जानेवाले सभी लोग स्वाभाविक रूप से उसे एक आदरमिश्रित संदेह की नज़र से देख रहे थे। मदिरालय के मालिक ने सिर हिलाकर कहा :

"क्यों भाई आ क्यू, वापस आ गए?"

"हाँ, आ गया हूँ।"

"खूब पैसा कमाया है तुमने.... आख़िर गए कहाँ थे?"

"शहर चला गया था।"

अगले दिन तक यह खबर पूरे वेइच्वांग में फैल गई और चूँकि हर आदमी आ क्यू की सफलता, उसकी नकद पूँजी और नई अस्तर वाली जाकिट की कहानी जानना चाहता था, इसलिए गाँववासियों ने मदिरालय में, चाय की दुकान में और मंदिर की ओलती के नीचे धीरे-धीरे इस खबर की छानबीन शुरू कर दी। नतीज़ा यह हुआ कि उन्होंने आ क्यू के साथ एक नए सम्मानपूर्ण ढंग से बरताव करना शुरू कर दिया।

आ क्यू ने बताया कि शहर जाकर वह एक प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का घरेलू नौकर बन गया था। उसकी कहानी का यह किस्सा जिसने भी सुना वह चकित रह गया। प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का नाम पाए था, लेकिन चूँकि वह पूरे शहर में एकमात्र सफल प्रांतीय उम्मीदवार था, इसलिए उसका कुलनाम लेने की ज़रूरत नहं समझी जाती थी : जब भी कोई प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का जिक्र करता तो उसका तात्पर्य पाए साहब से ही होता था। यह बात सिर्फ़ वेइच्वांग के लोग ही नहीं, बल्कि तीस मील तक के पूरे क्षेत्र के लोग जानते थे, मानो हर आदमी उसका नाम श्री प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार ही समझता हो। इतने महत्त्वपूर्ण आदमी के घर में काम करनेवाले की इज़्ज़त होना स्वाभाविक था; लेकिन आ क्यू ने आगे बताया कि कुछ समय बाद उसे वहाँ काम करने की इच्छा नहीं रही, क्योंकि वह सफल उम्मीदवार नम्बर एक 'कछुए की औलाद' था। कहानी का यह किस्सा जिसने भी सुना उसने एक राहत की साँस ली। लेकिन इसके पीछे खुशी छिपी हुई थी, क्योंकि इससे ज़ाहिर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाता था कि आ क्यू ऐसे आदमी के घर में काम करनेलायक नहीं है। फिर भी काम न करना बड़े खेद की बात थी।

आ क्यू ने बताया, उसके लौटने का कारण यह भी था कि शहर के लोगों को देखकर उसे तसल्ली नहीं हुई थी, क्योंकि वे लोग लंबे बेंच को सीधा बेंच कहते थे, मछली तलने के लिए हरे प्याज के बारीक टुकड़े इस्तेमाल करते थे और उनमें एक ऐसा नुक्स था जिसका उसे हाल ही में पता लगा था—उनकी औरतें चलते समय अपने कूल्हे ज़्यादा आकर्षक ढंग से नहीं मटकाती थीं। लेकिन शहर में कुछ अच्छी बातें भी थीं। मिसाल के लिए वेइच्वांग में हर आदमी बाँस के बत्तीस पाँसों से खेलता था और सिर्फ़ नकली विदेशी दरिन्दा ही ऐसा था जो 'माच्याङ्' खेलना जानता था, लेकिन शहर में गली-मुहल्लों के लड़के भी 'माच्याङ्' के खेल में माहिर थे। अगर कहीं नकली विदेशी दरिन्दे को इन किशोर शैतानों के हाथ में सौंप दिया जाता तो वे उसे सीधे 'दोज़ख के बादशाह के दरबार का एक छोटा शैतान' बना डालते। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना उनके चेहरे शर्म से लाल हो गए।

''क्या तुम लोगों ने कभी किसी को मृत्यु-दण्ड देते देखा है?'' आ क्यू ने पूछा। ''ओह, कितना शानदार दृश्य होता है वह।.... जब वे लोग क्रांतिकारियों को मृत्यु-दण्ड देते हैं.... ओह, कितना शानदार दृश्य होता है वह, कितना शानदार दृश्य होता है।....'' बात करते-करते जब उसने सिर हिलाया तो उसके मुँह से निकले थूक के छींटे चाओ स छन के चेहरे पर जा गिरे, जो उसके बिलकुल सामने खड़ा था। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना वे डर के मारे काँप उठे। तभी चारों तरफ नज़र डालने के बाद उसने अचानक अपना दायाँ हाथ उठाकर मुछन्दर वांग की गर्दन दबोच ली, जो सिर आगे करके उसकी बात बड़े गौर से सुन रहा था।

''इसका सिर काट डालो।'' आ क्यू ज़ोर से चिल्लाया।

बिजली या चकमक पत्थर की चिंगारी की सी तेज़ी के साथ मुछन्दर वांग ने एक झटके से अपना सिर पीछे खींच लिया और भाग खड़ा हुआ। आसपास खड़े लोग कौतुकपूर्ण आशंका से सिहर उठे। इसके बाद मुछन्दर वांग कई दिनों तक दहशत खाए रहा और आ क्यू के पास फटकने की उसको हिम्मत न हुई, न किसी और को।

हालाँकि यह नहीं कहा जा सकता कि उस समय वेइच्वांग के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निवासियों की नज़रों में आ क्यू का रुतबा चाओ साहब के रुतबे से बड़ा था, फिर भी बिना गलतबयानी के ख़तरे के यह ज़रूरत कहा जा सकता है कि दोनों का रुतबा लगभग एक जैसा था।

कुछ ही दिनों में आ क्यू की ख्याति अचानक वेइच्वाग के स्त्री समाज में भी फैल गई। हालाँकि वेइच्वांग में छ्येन और चाओ सिर्फ़ ये दो परिवार ही ऐसे थें, जिन्हें ठाठ-बाट से रहनेवाले परिवार कहा जा सकता था और नब्बे फीसदी बाकी परिवार बिलकुल ग़रीब थे, फिर भी स्त्री समाज स्त्री समाज ही होता है, और जिस ढंग से आ क्यू की ख्याति उसमें फैल गई थी, उसे एक छोटा-मोटा चमत्कार ही समझा जाएगा। जब भी औरतें आपस में मिलतीं, वे एक-दूसरे से कहतीं, ''श्रीमती चओ ने आ क्यू से एक नीले रंग का रेशमी लहँगा ख़रीदा है। हालाँकि लहँगा पुराना है, फिर भी उसकी कीमत सिर्फ़ नब्बे सेंट है। और चाओ पाए-येन की माँ (इसकी जाँच करना अभी बाकी है, क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि वह चाओ स छन की माँ थी) ने गहरे लाल रंग की विदेशी छींट की बनी बच्चे की पोशाक, जो लगभग नई जैसी थी, सिर्फ़ तीन सौ ताँबे के सिक्कों में ख़रीदी थी और उसे इसके दाम में आठ फीसदी की छूट भी मिली थी।''

इसके बाद जिन औरतों के पास रेशम का लहँगा नहीं था या जो विदेशी छींट का कपड़ा लेना चाहती थीं, वे इन चीज़ों को ख़रीदने के वास्ते आ क्यू से मिलने के लिए बेहद बेचैन हो उठीं। अगर वह कहीं नज़र आ जाता तो उससे बचने के बजाय वे उसके पीछे-पीछे चल पड़तीं और रुकने का आग्रह करतीं।

''आ क्यू, क्या तुम्हारे पास कुछ रेशमी लहँगे और हैं?'' वे पूछतीं।

''नहीं है क्या? हमें विदेशी छींट का कपड़ा भी चाहिए। है तुम्हारे पास?''

बाद में यह ख़बर ग़रीब घरों से अमीर घरों में जा पहुँची। श्रीमती चओ अपने रेशमी लहँगे से इतनी खुश हुईं कि वे इसे दिखाने श्रीमती चाओ के पास ले गईं और श्रीमती चाओ ने चाओ साहब के सामने इसकी बहुत तारीफ की।

चाओ साहब ने उस दिन रात के भोजन के समय इस बात की चर्चा अपने लड़के से की, जो काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्मीदवार था। चाओ साहब ने यह भी कहा कि आ क्यू का आचरण बड़ा संदिग्ध मालूम होता है और उन्हें अपने दरवाज़ों व खिड़कियों को सावधानी से बंद रखना चाहिए। लेकिन साथ ही वे यह भी जानना चाहते थे कि आ क्यू के पास अब कोई सामान बाकी रह गया है या नहीं और उनका ख़्याल था कि उसके पास अब शायद कोई अच्छी चीज़ बाकी रह गई है। चूँकि श्रीमती चाओ को एक अच्छी, सस्ती फर की जाकिट की ज़रूरत थी, इसलिए परिवार के अन्दर सलाह-मशविरा करने के बाद यह फैसला किया गया कि श्रीमती चओ से कहा जाए कि वे आ क्यू का पता लगाकर उसे तुरंत यहाँ ले आएँ। इसके लिए अपवाद रूप में तीसरी बार परिवार का नियम तोड़ा गया—उस रात बत्ती जलाए रखने की विशेष इज़ाजत दी गई।

काफी तेल जल चुका था, लेकिन आ क्यू का कहीं कोई पता न था। पूरा चाओ परिवार बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करता-करता उबासियाँ लेने लगा था। कुछ लोग आ क्यू के अनुशासनहीन तौर-तरीकों की आलोचना कर रहे थे, कुछ अन्य लोग श्रीमती चओ को दोष दे रहे थे कि उन्होंने आ क्यू को लाने के लिए ज़्यादा कोशिश नहीं की होगी। श्रीमती चाओ को डर था, कहीं ऐसा तो नहीं कि उस साल बसंत में मंजूर की गई शर्तों के कारण आ क्यू को यहाँ आने की हिम्मत ही न हो रही हो। लेकिन चाओ साहब का ख़्याल था कि "इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि इस बार उसे मैंने खुद बुलाया है।" चाओ साहब ने साबित कर दिया कि वे कितनी पैनी दृष्टि रखते हैं, क्योंकि आख़िरकार श्रीमती चओ के साथ आ क्यू आ ही पहुँचा।

"यह बार-बार कहता जा रहा है कि अब इसके पास कोई चीज़ बाकी नहीं रह गई," श्रीमती चओ हाँफती हुई बोलीं। "जब मैंने इससे कहा कि तुम यह सब खुद जाकर बता आओ तो यह बोलता ही चला गया। मैंने इससे कहा..."

"जनाब।" आ क्यू ओलती के नीचे रुककर मुस्कराने की कोशिश करते हुए बोला।

"आ क्यू, मैंने सुना है तुम वहाँ जाकर काफी धनवान बन गए हो," चाओ साहब ने उसके नज़दीक जाकर एक नज़र उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा। "बहुत अच्छी बात है। अब.... लोग कहते हैं तुम्हारे पास कुछ पुरानी चीज़ें भी हैं। ....उन सबको यहाँ ले आओ,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताकि हम लोग देख सकें। ....हम उनमें से कुछ चीज़ें लेना चाहते हैं।...."

"श्रीमती चओ को मैं बता चुका हूँ कि अब मेरे पास कुछ भी बाकी नहीं रह गया।"

"कुछ भी बाकी नहीं बचा?" श्रीमती चाओ की बात से साफ निराशा झलक रही थी। "ये चीज़ें इतनी जल्दी कैसे ख़त्म हो गईं?"

"ये सब चीज़ें मेरे एक दोस्त की थीं और दरअसल बहुत ज़्यादा तो थीं नहीं। लोगों ने ख़रीद लीं।"

"कुछ न कुछ तो बचा ही होगा।"

"सिर्फ़ दरवाज़े का एक पर्दा रह गया है।"

"दरवाज़े का पर्दा ही ले आओ। हम उसे देखना चाहते हैं," श्रीमती चाओ झट से बोल उठीं।

"अगर उसे कल ला सको तो ठीक रहेगा," बिना अधिक उत्साह दिखाए चाओ साहब ने कहा। "आ क्यू, भविष्य में जब भी तुम्हारे पास कोई चीज़ आए पहले हमें दिखा देना।...."

"हम लोग तुम्हें औरों से कम पैसा नहीं देंगे।" काउंटी सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार बोला। उसकी पत्नी ने आ क्यू की प्रतिक्रिया जानने के लिए तेज़ी से एक नज़र उसकी तरफ देखा।

"मुझे तो एक फर की जाकिट की ज़रूरत है," श्रीमती चाओ ने कहा।

हालाँकि आ क्यू ने उनकी बात मान ली, लेकिन वह इतनी लापरवाही से बाहर निकला कि उन लोगों को विश्वास ही नंहीं हो पाया कि उसने उनकी बात दिल से मानी है या नहीं। इसकी वजह से चाओ साहब तो इतने निराश, परेशान और चिंतित हो उठे कि उन्हें उबासियाँ आनी भी बंद हो गईं। काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार भी आ क्यू के बरताव से बिलकुल असंतुष्ट था। वह बोला, "ऐसी कछुए की औलाद से बहुत सतर्क रहना चाहिए। अच्छा यह होगा कि बेलिफ को आदेश देकर इसके वेइच्वाङ् में रहने पर पाबंदी लगा दी जाए।"

लेकिन चाओ साहब नहीं माने। उन्होंने कहा, "कहीं ऐसा न हो कि वह बदला लेने पर उतारू हो जाए। वैसे कभी-कभी इस तरह के मामलों में 'चील अपने खुद के घोंसल में शिकार नहीं करती' वाली कहावत लागू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होती है : आ क्यू से उसके अपने गाँव वालों को किसी तरह का डर नहीं होना चाहिए; सिर्फ़ रात के वक्त उन्हें ज़रूर ज़्यादा चौकन्ना रहना चाहिए।'' पिता के इस आदेश से प्रभावित होकर काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने आ क्यू को गाँव से बाहर निकालने का अपना प्रस्ताव तुरंत वापस ले लिया और श्रीमती चओ को सावधान कर दिया कि यह बात किसी के सामने हरगिज़ न दोहराएँ।

लेकिन अगले दिन श्रीमती चओ अपने नीले लहँगे को काला रंग करवाने ले गईं, तो उन्होंने आ क्यू पर लगाए गए आक्षेपों की चर्चा छेड़ दी, हालाँकि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा कही हुई उस बात का जिक्र उन्होंने नहीं किया, जो उसने आ क्यू को गाँव से निकालने के बारे में कही थी। इसके बावजूद, आ क्यू को इससे बेहद हानि हुई। सबसे पहले तो बेलिफ उसके पास जा पहुँचा और दरवाज़े का पर्दा उठा ले गया। हालाँकि आ क्यू ने विरोध किया और कहा कि इसे श्रीमती चाओ देखना चाहती हैं, मगर बेलिफ ने वापस देने से इनकार कर दिया और यहाँ तक कि आ क्यू से हर महीने कुछ मुँहभराई की माँग भी की। दूसरे, गाँव वालों के मन में उसके लिए जो इज़्ज़त पैदा हो गई थी, वह अचानक ख़त्म हो गई। हालाँकि वे लोग अब भी उसके साथ हँसी-मज़ाक करने का साहस नहीं करते थे, मगर हर आदमी उससे ज़्यादा से ज़्यादा कन्नी काटने की कोशिश करने लगा। हालाँकि उसके 'सिर काट डालो' का जो डर उनके दिमाग़ में पहले से बैठा हुआ था, उससे यह भिन्न प्रकार का डर था, फिर भी प्राचीन समाज द्वारा भूत-प्रेतों के प्रति अपनाए गए रवैये से यह काफी मिलता-जुलता था; लोग उसके और अपने बीच एक सम्मानपूर्ण अंतर बनाए रखते थे।

कुछ निठल्ले लोगों ने, जो इस व्यापार की तह में जाना चाहते थे, आ क्यू के पास जाकर अच्छी तरह पूछताछ की। बात छिपाने की ज़रा भी कोशिश किए बिना आ क्यू ने बड़े गर्व के साथ उनके सामने अपने कारनामों का बख़ान कर डाला। उसने उन्हें बताया कि शहर में वह महज़ एक छोटा-सा चोर था, जो न सिर्फ़ दीवार फाँदने में बल्कि खुले खिड़की-दरवाज़ों से भीतर जाने में भी असमर्थ था। वह तो सिर्फ़ खुले खिड़की-दरवाज़ों के बाहर खड़ा होकर चोरी का माल थाम सकता था।

एक दिन रात के वक्त जब चोरी के माल की एक गठरी उसे थमाने के बाद उसके गिरोह का मुखिया फिर से अंदर गया, तो भीतर से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े ज़ोर का शोरगुल सुनाई पड़ा। आ क्यू ने आव देखा न ताव, सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ। उसी रात वह शहर से भाग कर वेइच्वांग पहुँच गया और इसके बाद उसने दुबारा इस व्यापार में लौटने की हिम्मत नहीं की। गाँववासी उसके और अपने बीच एक सम्मानपूर्ण अंतर इसलिए बनाए रखते थे क्योंकि वे लोग उससे दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहते थे। भला यह कौन जानता था कि वह एक ऐसा चोर है जिसके अंदर फिर से चोरी करने का साहस नहीं? अब कहीं उन्हें मालूम हुआ कि वह सचमुच कितना तुच्छ प्राणी था, जिससे डरने की ज़रूरत नहीं थी।

अध्याय : सात

क्रांति

सम्राट श्वान थुंग के शासन-काल के तीसरे वर्ष के नवें चंद्र-मास की चौदहवीं तिथि को[1]—जिस दिन आ क्यू ने अपना बटुआ चाओ पाए-येन को बेच दिया था—आधी रात के वक्त जब तीसरी घड़ी ने चौथा घंटा बजाया तो एक बड़े-से काले पाल वाली विशाल नौका चाओ परिवार के घाट पर आ लगी। यह नौका अंधकार में उस समय किनारे आ लगी जब गाँव वाले गहरी नींद सो रहे थे, इसलिए उन्हें इसकी कानोंकान ख़बर न लगी; लेकिन पौ फटने पर जब नौका वहाँ से जाने लगी तो कई लोगों ने उसे देख लिया। जाँच-पड़ताल के बाद मालूम हुआ कि नौका प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की थी।

इस घटना से वेइच्वांग में भारी खलबली मच गई और दोपहर होने तक सभी गाँववासियों के दिल तेज़ी से धड़कने लगे। चाओ परिवार इस नौका की यात्रा के उद्देश्य के बारे में बिलकुल मौन रहा, लेकिन चाय की दुकान और मदिरालय में ज़ोरों की चर्चा थी कि कि क्रांतिकारी लोग शहर में प्रवेश करनेवाले हैं और प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार सिर्फ़ कुछ टूटे-फूटे संदूक वेइच्वांग में रखवाना चाहता था, मगर चाओ साहब ने उन्हें वापस भिजवा दिया था। वास्तव में प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार और काउंटी परीक्षा में सफल चाओ परिवार के उम्मीदवार की आपस में बिलकुल नहीं बनती थी; इसलिए आड़े

1. 1911 की क्रांति में इसी दिन शाओशिंग आज़ाद हुआ था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय में वे भला एक-दूसरे के काम कैसे आ सकते थे? यही नहीं, चूँकि श्रीमती चओ चाओ परिवार के पड़ोस में रहती थीं और बाकी लोगों के मुकाबले ज़्यादा अच्छी तरह जानती थीं कि क्या हो रहा है, इसलिए उनकी बात में कुछ ज़्यादा वज़न मालूम होता था।

फिर भी इसके बाद यह अफवाह उड़ गई कि प्रांतीय विद्वान खुद नहीं आया, बल्कि उसने एक लंबा पत्र भेजा है, जिसमें उसने चाओ परिवार से अपना दूर का रिश्ता निकाल लिया है और सोच-विचार करने के बाद चाओ साहब को यह लगा कि संदूक रखने से उन्हें कोई नुकसान नहीं होने जा रहा, इसलिए उन्होंने ये संदूक अपनी पत्नी के पलंग के नीचे छिपाकर रखवा दिए हैं। जहाँ तक क्रांतिकारियों का ताल्लुक है, कुछ लोगों का कहना था कि वे लोग सफेद रंग के लोहे के टोप और कवच पहनकर—सम्राट छुंग चन की मातमपुर्सी करते हुए[1]—उस रात शहर में प्रवेश कर चुके हैं।

आ क्यू क्रांतिकारियों के बारे में काफी पहले से जानता था और इस वर्ष उनके सिर कटते अपनी आँखों से देख चुका था। लेकिन चूँकि वह सोचता था कि क्रांतिकारी लोग विद्रोही होते हैं और अगर विद्रोह हो गया तो हालात उसके लिए और मुश्किल हो जाएँगे, इसलिए वह उन्हें हमेशा नापसंद करता था और उनसे दूर ही रहता था। कौन सोच सकता था कि वे लोग प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी, जिसकी ख़्याति चारों ओर तीस मील तक के इलाके में फैली हुई थी, इतना भयभीत कर सकते हैं? नतीज़े के तौर पर आ क्यू प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रह सका, और गाँववासियों में फैले आतंक से उसकी खुशी और बढ़ गई।

"क्रांति होना कोई बुरी बात नहीं," आ क्यू ने सोचा। "उन सब का ख़ात्मा हो.... उन सब का नाश हो! ....मैं खुद भी क्रांतिकारियों के पास जाना चाहता हूँ।"

कुछ समय से आ क्यू बहुत तंग था और शायद असतुंष्ट भी; इसके अलावा दोपहर के वक्त उसने खाली पेट दो प्याली शराब भी पी ली थी। नतीज़े के तौर पर उसे नशा आसानी से चढ़ गया था और जब वह

1. मिंग राजवंश के अंतिम सम्राट छुंग चन ने 1628 से 1644 तक शासन किया। जब ली च छंग के नेतृत्व में विद्रोही किसानों की सेना ने पेइचिंग में प्रवेश किया, उससे पहले ही छुंग चन ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने ख़यालों में डूबा हुआ चला जा रहा था तो उसे एक बार फिर ऐसा लगा मानो हवा में उड़ रहा हो। अचानक न जाने कैसे उसे लगा कि वह खुदही क्रांतिकारी है और वेइच्वांग के लोग उसकी हिरासत में हैं। अपनी खुशी को दबाने में असमर्थ होकर वह अनायास ही ज़ोर से चिल्ला पड़ा :

''विद्रोह! विद्रोह!''

सभी गाँववासी विस्मय से उसकी ओर देखने लगे। आ क्यू ने इतनी अधिक करुणायुक्त आँखें पहले कभी नहीं देखी थीं। इन्हें देखकर उसे भरी गर्मी में बर्फ का पानी पीकर मिलनेवाली ताज़गी अनुभव हुई। इसलिए वह और ज़्यादा खुश होकर ज़ोर से चिल्लाता हुआ आगे बढ़ गया :

''ठीक है.... जो भी मेरे मन भाएगा आज वही मैं लूँगा। ....जो भी मेरे मन भाएगा उसे मीत समझूँगा।''

''त्रा ला, त्रा ला!
है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली
चूर नशे में होकर अपने चंग भैया की,
है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली....
या, या, या!
त्रा ला, त्रा ला, थुम थी थुम!
हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूँगा।''

चाओ साहब और उनका लड़का अपने फाटक पर दो रिश्तेदारों के साथ क्रांति के बारे में चर्चा कर रहे थे। आ क्यू ने उन्हें नहीं देखा और वह अपना सिर पीछे की तरफ लटकाए गाता हुआ आगे बढ़ गया : ''त्रा ला ला, थुम थी थुम।''

''अरे यार क्यू।'' चाओ साहब ने भयमिश्रित स्वर में धीमे से पुकारा।

''त्रा ला!'' आ क्यू गाता चला गया। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके नाम के साथ 'यार' शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे पक्का यकीन था कि उसने गलत सुना है और उसे किसी ने नहीं पुकारा। इसलिए उसने अपना गाना जारी रखा : ''त्रा ला ला, थुम थी थुम।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''अरे यार क्यू।''

''है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली....''

''आ क्यू!'' काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार को उसका पूरा नाम लेकर पुकारना पड़ा।

सिर्फ़ तभी आ क्यू रुका। ''कहिए, क्या है?'' उसने अपना सिर एक तरफ झुकाकर पूछा।

''क्यू, यार.... अब....'' चाओ साहब की ज़बान लड़खड़ाने लगी। ''क्या यह सच है कि अब तुम अमीर बनते जा रहे हो?''

''अमीर बनता जा रहा हूँ? बेशक, जो चीज़ मेरे मन भाती है उसे ले लेता हूँ।....''

''आ क्यू, यार आ क्यू, हम जैसे ग़रीब दोस्तों की तरफ ध्यान देने की तुम्हें फुरसत ही कहाँ?....'' चाओ पाए-येन ने ज़रा सशंकित होकर कहा, मानो क्रांतिकारियों के रुख की तह लेने की कोशिश कर रहा हो।

''ग़रीब दोस्त? लेकिन तुम तो मुझसे ज़्यादा अमीर हो,'' आ क्यू में उत्तर दिया और वहाँ से चला गया।

वे लोग हताश होकर मौन खड़े रहे। चाओ साहब और उनका लड़का अपने घर के भीतर चले गए और उस दिन इस प्रश्न पर तब तक विचार-विमर्श करते रहे जब तक बत्ती जलाने का वक्त नहीं हो गया। जब चाओ पाए-येन घर पहुँचा तो उसने अपनी कमर से बटुवा निकालकर पत्नी को दिया और उससे कहा कि इसे अपने संदूक की तह में छिपा ले।

कुछ समय तक आ क्यू हवा में उड़ता रहा लेकिन जब संरक्षक-देवका के मंदिर में पहुँचा तो उसका नशा उतर चुका था। उस रात मंदिर के बूढ़े पुजारी ने भी उसके प्रति अप्रत्याशित मैत्रीपूर्ण रुख अपनाया और उसे चाय पिलाई। इसके बाद आ क्यू ने पुजारी से दो चौरस केक माँग लिए और उन्हें खा लेने के बाद चार औंस की एक बड़ी अधजली मोमबत्ती और एक छोटा बत्तीदान माँग लिया। मोमबत्ती जलाकर वह अकेला ही अपने कमरे में लेट गया। जैसे-जैसे मोमबत्ती की लौ दीप-महोत्सव की रात के समान घटती-बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे वह एक अप्रत्याशित ताज़गी और प्रसन्नता महसूस अनुभव कर रहा था और इसके साथ-साथ उसकी कल्पना भी नई उड़ान लेने लगी थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"विद्रोह? खूब मज़ा आएगा.... क्रांतिकारियों का दल आएगा। सबके सिर पर लोहे का टोप होगा और शरीर पर सफेद कवच। वे लोग तलवारों, लोहे की छड़ों, बमों, विदेशी बंदूकों, नुकीले दुधारी चाकुओं और हुक वाले भालों से लैस होंगे। वे लोग जब संरक्षक-देवता के मंदिर से गज़रेंगे तो पुकारेंगे, 'आ क्यू आ जाओ।' और तब मैं उनके साथ चला जाऊँगा।...."

"तब ये सारे गाँववासी हास्यास्पद स्थिति में होंगे, घुटने टेककर गिड़गिड़ा रहे होंगे, 'आ क्यू, हमें बख़्श दो।' लेकिन उनकी बात कौन सुनेगा। सबसे पहले नौजवान डी और चाओ साहब को मौत के घाट उतारा जाएगा, उसके बाद काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और नकली विदेशी दरिन्दे की बारी आएगी। ....लेकिन संभवतः मैं कुछ लोगों को छोड़ दूँगा। कोई वक्त था जब मैं मुछन्दर वांग को छोड़ देता, लेकिन अब तो मैं उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहता।...."

"चीज़ें.... मैं सीधा अंदर चला जाऊँगा और संदूक खोल डालूँगा: चाँदी की सिल्लियाँ, विदेशी सिक्के, विदेशी छींट की जाकिटें.... सबसे पहले मैं काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का निंगबो पलंग मंदिर में उठा ले जाऊँगा और छ्येन परिवार की मेज़-कुर्सियाँ भी—अथवा चाओ परिवार की मेज़-कुर्सियाँ इस्तेमाल करूँगा। मैं अपने हाथ से तिनका भी नहीं तोड़ूँगा, सिर्फ़ नौजवान डी को हुक्म दूँगा कि मेरे लिए सारा का सारा सामान उठा लाए और ज़रा फुर्ती दिखाए, वरना उसे मेरा थप्पड़ खाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।...."

"चाओ स छन की छोटी बहन बड़ी बदसूरत है। कुछ ही वर्षों में श्रीमती चओ की लड़की भी जवान हो जाएगी तो सोचा जाएगा। नकली विदेशी दरिन्दे की पत्नी सिर्फ़ ऐसे आदमी के साथ सोने को तैयार है जिसकी चुटिया न हो। छिः! वह अच्छी औरत नहीं जान पड़ती। काउंटी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी की पलकों में निशान हैं.... आमा ऊ मुझे बहुत दिनों से नहीं दिखाई दी, न मालूम वह कहाँ है—अफसोस की बात है कि उसके पाँव बहुत बड़े हैं।"

इससे पहले कि आ क्यू कोई संतोषजनक निर्णय कर पाता, उसके खर्राटों की आवाज़ आने लगी। चार औंस की मोमबत्ती सिर्फ़ आधा इंच जली थी, उसकी टिमटिमाती लाल रोशनी में आ क्यू का खुला मुँह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चमक रहा था।

"ओ हो, हो।" आ क्यू अचानक चिल्लाया और सिर उठाकर फटी-फटी आँखों से चारों तरफ देखने लगा। लेकिन जब उसकी नज़र चार औंस की मोमबत्ती पर पड़ी तो वह फिर से लेट गया और खर्राटे लेने लगा।

अगले दिन सुबह वह बड़ी देर से उठा। बाहर गली-मोहल्ले में पहुँचा तो हर चीज़ पहले जैसी ही नज़र आई। उसे भूख लग रही थी। काफी दिमाग़ लड़ाने पर भी उसे कोई रास्ता न सूझा। अचानक उसके मन में एक विचार आया। वह धीरे-धीरे चल पड़ा और जानबूझकर या अनजाने में 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' में जा पहुँचा।

भिक्षुणी-विहार उस वर्ष के बसंत के ही समान शांत था। उसकी सफेद दीवारें और चमकदार काला फाटक वैसे ही दिखाई दे रहे थे। एक क्षण सोचने के बाद उसने फाटक पर दस्तक दी, जिसे सुनकर भीतर से एक कुत्ता भौंकने लगा। उसने झट टूटी ईंटों के कई टुकड़े उठा लिए और फाटक पर पहुँच कर और ज़ोर से खटखटाने लगा। काले फाटक को उसने ज़ोर से पीटा कि उस पर कई जगह निशान पड़ गए। अंत में उसे फाटक खोलने के लिए किसी के आने की आहट सुनाई दी।

टूटी ईंटों के टुकड़े हाथ में उठाए आ क्यू अपनी दोनों टांगें साधे काले कुत्ते से जूझने को तैयार खड़ा था। भिक्षुणी-विहार का फाटक थोड़ा-सा खुला, मगर काला कुत्ता बाहर नहीं निकला। आ क्यू ने अंदर झाँका तो उसे सिर्फ़ बूढ़ी भिक्षुणी दिखाई दी।

"तुम यहाँ फिर क्यों आए हो?" बात शुरू करते हुए उसने पूछा।

"क्रांति हो गई है.... क्या तुम्हें नहीं मालूम?" आ क्यू ने अस्पष्ट स्वर में कहा।

"क्रांति.... क्रांति तो यहाँ एक बार हो चुकी," बूढ़ी भिक्षुणी बोली। उसकी आँखें रो-रोकर लाल हो रही थीं। "तुम्हारी इन क्रांतियों से हम पर न जाने क्या बीतेगी?"

"क्या कहा?" आ क्यू ने आश्चर्य से पूछा।

"तुम्हें नहीं मालूम? क्रांतिकारी यहाँ पहले ही आ चुके हैं।"

"कौन से क्रांतिकारी?" आ क्यू ने और अधिक आश्चर्य से पूछा।

"काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और नक़ली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विदेशी दरिन्दा।''

यह सुनकर आ क्यू की सारी हवा निकल गई। जब उस बूढ़ी भिक्षुणी ने देखा कि उसका लड़ाकूपन कुछ कम हो गया है तो उसने फौरन फाटक बंद कर लिया जो आ क्यू के धक्का देने से नहीं खुला। जब उसने दुबारा खटखटाया तो कोई उत्तर नहीं आया।

यह उसी दिन सुबह की बात थी। काउंटी की परीक्षा में सफल चाओ परिवार के उम्मीदवार को एकदम ख़बर मिल गई थी। ज्यों ही उसे पता चला कि क्रांतिकारी उस रात शहर में प्रवेश कर गए हैं, उसने झटपट अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर छिपा ली और सबसे पहले छ्येन परिवार के नकली विदेशी दरिन्दे को मिलने गया, हालाँकि उन दोनों के ताल्लुक पहले कभी अच्छे नहीं रहे थे। चूँकि अब समय आ गया था कि ''सब लोग मिलकर समाज-सुधार करें,'' इसलिए उन दोनों के बीच बड़ी आत्मीयतापूर्ण बातचीत हुई। दोनों तुरंत ही एक-सी विचारधारा वाले साथी बन गए और दोनों ने क्रांतिकारी बनने की शपथ ले ली।

कुछ देर माथापच्ची करने के बाद उन्हें याद आया कि 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' में एक शाही शिलालेख लगा हुआ है जिस पर लिखा है: 'सम्राट की जय हो।' जिसे तुरंत हटा दिया जाना चाहिए। यह विचार आते ही वे अपनी क्रांतिकारी योजना को कार्यान्वित करने तुरंत भिक्षुणी-विहार में जा पहुँचे। चूँकि बूढ़ी भिक्षुणी ने उन्हें रोकने की कोशिश की और उनसे कुछ कहा, इसलिए उन्होंने उसे छिंग सरकार समझकर, डंडों व मुट्ठियों से उसकी खोपड़ी पर अनेक प्रहार किए। जब दोनों चले गए तो भिक्षुणी ने विहार का निरीक्षण किया। शाही शिलालेख टुकड़े-टुकड़े करके ज़मीन पर फेंक दिया गया था और मूल्यवान श्वान धूपदान*, जो करुणा की देवी क्वानयिन की मूर्ति के सामने रखा था, वहाँ से गायब हो चुका था।

यह सब आ क्यू को बाद में मालूम हुआ। उसे इस बात का बड़ा अफसोस था कि उस समय वह सोया क्यों रह गया और वे लोग उसे बुलाने क्यों नहीं आए। उसने मन-ही-मन कहा: ''हो सकता है उन्हें

---

* काँसे के अंत्यंत कलात्मक धूपदान चीन में मिंग राजवंश के श्वेन द काल (1426-1435) में बनाए जाते थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब भी यह मालूम न हो कि मैं क्रांतिकारियों की पाँतों में शामिल हो चुका हूँ।"

अध्याय: आठ

क्रांति से बहिष्कृत

वेइच्वांग के लोग दिन-ब-दिन आश्वस्त होते जा रहे थे। जो ख़बरें उनके पास पहुँच रही थीं, उनके आधार पर वे यह बात समझ चुके थे कि क्रांतिकारियों के शहर में प्रवेश करने से कोई ख़ास तब्दीली नहीं आई। मजिस्ट्रेट अब भी सबसे बड़ा अफसर था, सिर्फ़ उसका ओहदा बदल गया था; प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी कोई पद– वेइच्वांग गाँव के निवासियों के लिए इन ओहदों के नाम याद रखना संभव नहीं था–किसी किस्म का कोई सरकारी पद सौंप दिया गया था। फौज का मुखिया अब भी वही पुराना कप्तान था। खटके की बात सिर्फ़ यह थी कि कुछ बुरे क्रांतिकारियों ने शहर में पहुँचने के बाद लोगों की चुटिया काटकर उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था। सुनने में आया था कि पड़ोस के गाँव का 'साढ़े-तिसेरा' नाम का एक मल्लाह उनके चँगुल में फँस गया था और अब उसकी शक्ल देखने लायक नहीं रही थी। फिर भी यह ख़तरा इतना बड़ा नहीं था, क्योंकि पहले तो वेइच्वांग गाँब के लोग वैसे ही शहर बहुत कम जाते थे, फिर जो लोग शहर जाने की बात सोच भी रहे थे, उन्होंने इस ख़तरे से बचने के लिए अपना कार्यक्रम फौरन रद्द कर दिया था। आ क्यू भी अपने पुराने दोस्तों से मिलने शहर जाने की योजना बना रहा था लेकिन ज्यों ही चुटिया काटने की ख़बर सुनी, उसने अपना विचार बदल दिया।

यह कहना गलत होगा कि वेइच्वांग में कोई सुधार हुआ ही नहीं। आने वाले कुछ दिनों में ऐसे लोगों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई जिन्होंने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली थी, और जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसकी शुरुआत सबसे पहले काउंटी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार से हुई; इसके बाद चाओ स छन और चाओ पाए-येन आगे आए और उनके बाद आ क्यू। अगर वह गर्मी का मौसम होता और ये सब लोग अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध लेते अथवा गाँठ लगा लेते तो किसी को अचम्भा न होता; लेकिन उन दिनों शरद ऋतु ख़त्म

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होने वाली थी, इसलिए गर्मियों के रिवाज़ को शरद में अपनाकर जिन लोगों ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली थी, उनका यह फैसला कोई कम बहादुरी का काम नहीं था। और जहाँ तक वेइच्वांग का ताल्लुक है, यह नहीं कहा जा सकता था कि इस बात का सुधारों से कोई संबंध ही न था।

जब चाओ स छन अपनी केशविहीन गर्दन लिए लोगों के सामने पहुँचा तो वे बोल पड़े, "वाह! यह है क्रांतिकारी।"

जब यह बात आ क्यू ने सुनी तो वह बड़ा प्रभावित हुआ। हालाँकि वह काफी पहले ही सुन चुका था कि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली है, फिर भी उसके मन में यह विचार कभी नहीं आया कि वह खुद भी ऐसा कर ले। मगर जब उसने चाओ स छन को भी उसके पदचिह्नों पर चलते देखा, सिर्फ़ तभी उसे ख़याल आया कि वह भी ऐसा ही करेगा। उसने इन लोगों का अनुसरण करने की ठान ली। बाँस की चापस्टिक की सहायता से उसने अपनी चुटिया सिर पर लपेट ली और कुछ संकोच होने के बावजूद अंत में साहस करके बाहर चला गया।

जब वह गाँव की गलियों से गुज़र रहा था तो लोगों ने उसकी तरफ देखा मगर किसी ने कुछ नहीं कहा। आ क्यू पहले तो कुछ खीज गया और बाद में बहुत गुस्सा हो गया। कुछ समय से उसका पारा एकदम चढ़ जाता था। वास्तव में उसकी ज़िंदगी की मुश्किलें क्रांति के पहले की तुलना में बढ़ी नहीं थीं और लोग उससे नम्रता से बरताव करते थे तथा दुकानदार नकद पैसे देने का आग्रह नहीं करते थे. फिर भी आ क्यू असंतोष अनुभव करता था। वह सोचता, चूँकि क्रांति हो चुकी है, उसका असर और ज़्यादा व्यापक होना चाहिए। तभी उसकी नज़र नौजवान डी पर पड़ी और उसका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया।

नौजवान डी ने भी अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँधी हुई थी और मज़ेदार बात यह थी कि उसने भी चुटिया लपेटने में बाँस की चापस्टिक की ही सहायता ली थी। आ क्यू सोच भी नहीं सकता था कि नौजवान डी भी यह सब करने की हिम्मत कर सकता है; वह इसे बरदाश्त नहीं कर सकता था। नौजवान डी आख़िर है किस खेत की मूली? उसके मन में यह विचार ज़ोरों से मचलने लगा कि उसे वहीं पकड़ ले और उसके सिर पर लगी बाँस की चापस्टिक तोड़ डाले, चुटिया खोल दे और चेहरे पर कई तमाचे जड़ दे, जिससे उसे अपनी औकात

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूलने और अपने को क्रांतिकारी समझने की सज़ा मिल जाए। लेकिन अंत में उसने नौजवान डी की तरफ सिर्फ़ क्रोधित आँखों से देखा, तिरस्कार से थूका और "छि:।" कहकर उसे जाने दिया।

पिछले कुछ दिनों में सिर्फ़ नकली विदेशी दरिन्दा ही शहर गया था। चाओ परिवार के काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने सोचा था कि प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा रखे गए संदूकों के बहाने उससे मुलाकात करने शहर जाएगा, मगर चुटिया कटवा बैठने के डर से उसने अपना विचार बदल दिया था। उसने बेहद तकल्लुफ के साथ एक चिट्ठी लिखी थी और नकली विदेशी दरिन्दे के हाथ शहर भेज दी थी। नकली विदेशी दरिन्दे से उसने यह अनुरोध भी किया था कि वह 'स्वाधीनता पार्टी' से उसका परिचय करा दे। जब नकली विदेशी दरिन्दा वापस लौटा तो उसने काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार से चार डालर लेकर उसकी छाती पर चांदी के आड़ू वाला एक बिल्ला टाँक दिया। वेइच्वांग गाँव के सभी निवासियों पर धाक जम गई। उन्होंने बताया कि यह 'परसिमन-तेल पार्टी'[1] का बिल्ला है, जिसका दर्जा हान लिन[2] के बराबर है। इसके परिणामस्वरू चाओ साहब का सम्मान अचानक उस ज़माने के मुकाबले कहीं ज़्यादा बढ़ गया जब उनके लड़के ने पहली बार सरकारी परीक्षा पास की थी। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने बाकी सब लोगों को हिकारत की नज़र से देखना शुरू कर दिया और जब कभी उनकी नज़र आ क्यू पर पड़ती तो ज़रा उपेक्षा का रुख अपना लेते।

आ क्यू भी इस निरंतर उपेक्षा के कारण बेहद असंतुष्ट था, लेकिन ज्यों ही उसने चाँदी के आड़ू वाले बिल्ले की बात सुनी तो फौरन समझ गया कि उसे उपेक्षित क्यों किया जा रहा है। किसी के यह कहने मात्र से कि वह क्रांति के पक्ष में चला गया है, वह क्रांतिकारी नहीं बन सकता; और न अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध लेना मात्र ही क्रांतिकारी बनने के लिए काफी है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है क्रांतिकारी पार्टी से संपर्क कायम करना। अपनी पूरी ज़िंदगी में उसका सिर्फ़ दो ही क्रांतिकारियों से साक्षात्कार हुआ था। उनमें से एक शहर में अपना सिर

---

1. 'स्वाधीनता पार्टी' का चीनी नाम 'च यओ तांग' है। लेकिन गाँववालों को 'स्वाधीनता' शब्द की जानकारी न होने के कारण उन्होंने 'च यओ' को 'शि यओ' में बदल दिया, जिसका मतलब परसिमन-तेल होता है।
2. छिंग राजवंश (1644-1911) की सर्वोच्च साहित्यिक उपाधि।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कटवा चुका था। सिर्फ़ दूसरा, यानी नकली विदेशी दरिन्दा, ही बाकी रह गया था। जब तक आ क्यू तुरंत नकली विदेशी दरिन्दे से बात नहीं कर लेता, तब तक उसके लिए कोई रास्ता नहीं खुल सकेगा।

छ्येन परिवार के मकान का फाटक खुला था। आ क्यू डरता-डरता अंदर जा पहुँचा। अंदर घुसते ही वह चौंक पड़ा, क्योंकि उसने देखा नकली विदेशी दरिन्दा आँगन के बीचोंबीच ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने, जो निस्संदेह विदेशी कपड़े थे, और चाँदी के आड़ू वाला बिल्ला लगाए खड़ा है।वह अपने हाथ में छड़ी थामे हुए था, जिसका मज़ा आ क्यू पहले ही चख चुका था। लगभग एक फुट लंबे बाल, जो उसने फिर से बढ़ा लिए थे, कँधों पर संत ल्यू[1] के बालों की तरह लटक रहे थे। उसके सामने चाओ पाए-येन और अन्य तीन व्यक्ति सीधे तन कर खड़े थे और नकली विदेशी दरिन्दे की बात बड़े आदर-भाव के साथ सुन रहे थे।

आ क्यू पंजे के बल चलता हुआ अंदर पहुँच गया और चाओ पाए-येन के पीछे जा खड़ा हुआ। वह नकली विदेशी दरिन्दे का अभिवादन करना चाहता था, किंतु समझ में नहीं आ रहा था कि उसे किस नाम से पुकारे। जाहिर था कि वह उसे 'नकली विदेशी दरिन्दा' कह कर नहीं पुकार सकता था, और न 'विदेशी' अथवा 'क्रांतिकारी' शब्द ही उपयुक्त जान पड़ता था। शायद संबोधन का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि उसे 'मिस्टर विदेशी' कहा जाए।

लेकिन मिस्टर विदेशी की नज़र अभी उस पर नहीं पड़ी थी। अपनी आँखे चढ़ाकर वह बड़े आवेश के साथ कह रहा था:

''मैं इतना ज़्यादा भावुक हूँ कि जब हमारी मुलाकात हुई तो मैंने उनसे बार-बार कहा, ''हुंग साहब, हमें काम की बात तय करनी चाहिए।'' लेकिन उन्होंने हर बार जवाब दिया—''नो।''—यह एक विदेशी शब्द है जिसका अर्थ तुम लोग नहीं समझ सकते। वरना हमें काफी पहले ही सफलता मिल चुकी होती। यह इस बात की मिसाल है कि वे कितना फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं। उन्होंने मुझसे बार-बार हूपेइ जाने को कहा, लेकिन मैं नहीं माना। ज़िले के छोटे से कस्बे में कौन काम करना चाहता है?....''

---

1. चीन की लोककथाओं का एक अमर चरित्र, जिसका वर्णन हमेशा लंबे बालों वाले व्यक्ति के रूप में किया जाता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अ र् र् र्–" आ क्यू ने कुछ देर तक उसके रुकने का इंतज़ार किया और तब बोलने के लिए साहस बटोरने की कोशिश की। लेकिन किसी वजह से वह अब भी उसे मिस्टर विदेशी के नाम से नहीं पुकार सका।

जो चार आदमी उसकी बात सुन रहे थे, वे चौंक पड़े और आ क्यू की तरफ घूरने लगे। मिस्टर विदेशी ने भी पहली बार उसकी तरफ देखा।

"क्या है?"

"मैं...."

"निकल जाओ यहाँ से।"

"मैं शामिल होना चाहता हूँ...."

"निकल जाओ यहाँ से।" मिस्टर विदेशी ने 'मातमपुर्सी करने वाले की छड़ी' उठाते हुए कहा।

तब चाओ पाए-येन और दूसरे लोग भी चिल्लाकर बोल पड़े, "छ्येन साहब तुम्हें बाहर निकलने को कह रहे हैं। तुमने सुना नहीं?"

आ क्यू ने अपना सिर बचाने के लिए दोनों हाथ उठाकर उस पर रख लिए और बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है, फाटक खोलकर निकल गया। इस बार मिस्टंर विदेशी ने उसका पीछा नहीं किया। कोई पचास-साठ कदम दौड़ने के बाद आ क्यू धीरे-धीरे चलने लगा। वह बेहद परेशान था, क्योंकि अगर मिस्टर विदेशी ने उसे क्रांतिकारी न बनने दिया तो उसके सामने और कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। भविष्य में वह हरगिज़ उम्मीद नहीं कर सकता था कि लोहे का सफेद टोप और सफेद कवच पहने सैनिक उसे बुलाने आएँगे। उसकी सारी आकांक्षा, उद्देश्य, आशा और भविष्य एक झटके मात्र से तहस-नहस हो गए थे। इस बात से कि यह ख़बर कहीं लोगों में न फैल जाए और वह नौजवान डी और मुंछन्दर वांग जैसे लोगों के लिए उपहास का विषय न बन जाए केवल गौण बातें थीं।

इतना अधिक हतोत्साह वह पहले कभी नहीं हुआ था। चुटिया लपेट कर सिर पर बाँधना भी अब उसे व्यर्थ और हास्यास्पद मालूम हो रहा था। बदला लेने के लिए उसके मन में तेज़ी से विचार आया कि वह अपनी चुटिया तुरंत खोल दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। शाम तक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह इधर-उधर घूमता रहा और जब उधारखाते में दो प्याली शराब पी तब कहीं उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह एक बार फिर लोहे के सफेद टोपों और सफेद कवचों की झलक अपने कल्पना-चक्षु से देखने लगा।

एक दिन वह काफी रात गए तक घूमता रहा। जब मदिरालय बंद होने का समय हो गया, सिर्फ़ तभी संरक्षक-देवता के मंदिर की तरफ लौटने लगा।

"धाँय! धाँय!"

अचानक उसने एक अजीब-सी आवाज़ सुनी, जो निश्चित रूप से पटाखों की आवाज़ नहीं थी। आ क्यू, जो हमेशा हलचल पसंद करता था और जिसे दूसरों के मामलों में दखल देने में मज़ा आता था, अँधकार में उस आवाज़ को खोजने निकल पड़ा। उसे लगा उसके सामने किसी के पैरों की आहट आ रही है। वह सावधानी से कान लगाकर सुन रहा था कि एक आदमी उसके सामने से तेज़ी से भाग निकला। ज्यों ही आ क्यू ने उसे देखा, उसके पीछे भरपूर तेज़ी से दौड़ पड़ा। जब वह आदमी मुड़ा तो आ क्यू भी मुड़ गया और जब वह मुड़ने के बाद रुका तो आ क्यू भी रुक गया। उसने देखा पीछे कोई नहीं है और उस आदमी को पहचान लिया। वह नौजवान डी था।

"क्या बात है?" आ क्यू ने गुस्से से पूछा।

"चाओ.... चाओ परिवार के घर चोरी हो गई है," नौजवान डी ने हाँफते हुए कहा।

आ क्यू का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। नौजवान डी इतना कहकर चला गया। आ क्यू दौड़ पड़ा। रास्ते में वह दो या तीन बार रुका, फिर आगे बढ़ गया। लेकिन चूँकि वह किसी समय इस धंधे में रह चुका था, इसलिए उसमें एक अद्‌भुत साहस पैदा हो गया था। एक गली के नुक्कड़ से गुज़रते हुए उसने कान लगाकर सुनने की कोशिश की। कल्पना में उसे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से देखा तो उसे लगा कि बहुत-से सैनिक लोहे का सफेद टोप और सफेद कवच पहने संदूक ले जा रहे हैं, फर्नीचर ले जा रहे हैं, यहाँ तक कि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का निगपो प्लंग ले जा रहे हैं। लेकिन वे लोग उसे ज़्यादा साफ-साफ नज़र नहीं आ रहे थे। वह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नज़दीक जाना चाहता था, लेकिन उसे लगा जैसे उसके पाँव धरती में गड़ गए हों।

उस रात आकाश में चाँद नहीं उगा था। वेइच्वांग में गहन अंधकार था, चारों ओर निस्तब्धता थी, सम्राट फू शी[1] के शांतिपूर्ण शासन-काल की तरह। आ क्यू वहाँ तब तक खड़ा रहा जब तक वह उकता नहीं गया। फिर भी उसे चीज़ें पहले की ही तरह मालूम हो रही थीं। दूर कहीं लोग तरह-तरह का सामान ले जाते हुए, संदूक ले जाते हुए, फर्नीचर ले जाते हुए, काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का पलंग ले जाते हुए.... ऐसा-ऐसा सामान ले जाते हुए, जिसे देखकर उसे खुद अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। लेकिन आ क्यू ने उनके नज़दीक न जाने का फैसला कर लिया और मंदिर में लौट गया।

संरक्षक-देवता के मंदिर में और भी ज़्यादा अँधेरा था। बड़ा फाटक बंद करने के बाद वह टटोलता हुआ अपने कमरे में जा पहुँचा। कुछ देर लेटने के बाद ही उसका मन शांत हुआ और वह सोच सका कि इस घटना का उस पर क्या असर पड़ सकता है। लोहे का सफेद टोप और सफेद कवच धारण किए सैनिक आ चुके थे, लेकिन वे लोग उससे मिलने नहीं आए थे। वे लोग बहुत-सी चीज़ें ले गए थे, लेकिन उसे अपना हिस्सा नहीं मिला था—यह सब उस नकली विदेशी दरिन्दे का ही कसूर था, जिसने उसे विद्रोह में शामिल नहीं होने दिया था। अन्यथा यह कैसे हो सकता था कि इस बार उसे अपना हिस्सा न मिलता?

आ क्यू इसके बारे में जितना ज़्यादा सोचता जाता, उसका गुस्सा भी उतना ही ज़्यादा बढ़ता जाता। सोचते-सोचते उसका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। "तो यह विद्रोह मेरे लिए नहीं, सिर्फ़ तुम लोगों के लिए है?" बड़ी कुढ़न के साथ सिर हिलाते हुए वह बुदबुदाया। "सत्यानाश हो तेरा ओ नकली विदेशी दरिन्दे के बच्चे—अच्छा, तो तू बना रह विद्रोही। जानता है विद्रोह की कीमत सिर कटाकर चुकानी पड़ती है। मैं मुखबिर बन जाऊँगा और तेरा सिर कटवाने के लिए—तेरा और तेरे पूरे कुनबे का सिर कटवाने के लिए—तुझे शहर भिजवा कर रहूँगा।.... भाड़ में जाओ तुम।"

---

1. चीन की प्राचीनतम दंतकथाओं में वर्णित एक सम्राट।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय : नौ

शानदार पटाक्षेप

चाओ परिवार के घर चोरी होने पर वेइच्वांग के ज़्यादातर लोग बड़े खुश हुए, मगर वे सहम भी गए। आ क्यू इसका अपवाद न था। लेकिन चार दिन बाद अचानक आधी रात के वक्त आ क्यू को घसीट कर शहर ले जाया गया। वह एक अँधेरी रात थी। एक सैनिक दस्ता, एक मिलिशिया दस्ता, एक पुलिस दस्ता और गुप्तचर विभाग के पाँच आदमी चुपचाप वेइच्वांग पहुँचे और संरक्षक-देवता के मंदिर के फाटक के सामने मशीनगन लगाकर, उन्होंने अँधेरे में मंदिर को घेर लिया। आ क्यू बाहर नहीं भागा। काफी समय तक मंदिर में तिनका भी नहीं हिला। कप्तान बेचैन हो उठा और उसने बीस हज़ार ताँबे के सिक्कों के इनाम का ऐलान कर दिया। सिर्फ़ तभी दो मिलिशयामैनों ने साहस बटोर कर दीवार फाँदी और अंदर घुस गए। उनके सहयोग से बाकी लोग भी तेज़ी से अंदर घुस गए और आ क्यू को बाहर घसीट लाए। लेकिन जब तक उसे मंदिर के बाहर मशीनगन के नज़दीक नहीं लाया गया, तब तक वह होश में नहीं आया कि हो क्या रहा है।

शहर पहुँचने तक दोपहर हो चुकी थी। वे लोग आ क्यू को एक टूटे-फूटे सरकारी दफ्तर में ले गए जहाँ पाँच-छह मोड़ पार करने के बाद उसे एक छोटे से कमरे में धकेल दिया गया। जैसे ही वह गिरता-पड़ता कमरे में पहुँचा, काठ के सींखचों का दरवाज़ा, जो कठघरे के दरवाज़े जैसा प्रतीत हो रहा था, पीछे से फौरन बंद हो गया। कमरे में बाकी तीन तरफ तीन नंगी दीवारें थीं और जब उसने सावधानी से देखा तो कमरे के एक कोने में उसे अन्य व्यक्ति नज़र आए।

हालाँकि आ क्यू को ज़रा बेचैनी महसूस हो रही थी, फिर भी वह निराश बिलकुल नहीं हुआ, क्योंकि संरक्षक-देवता के मंदिर वाला उसका कमरा, जहाँ वह सोता था, इस कमरे के मुकाबले किसी भी मायने में बेहतर नहीं था। अन्य दो व्यक्ति भी देहाती जान पड़ते थे। धीरे-धीरे उन्होंने आ क्यू से बातचीत शुरू कर दी। उनमें से एक ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताया कि प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उसके दादा के ज़माने का लगान वसूल करने के लिए उसे परेशान कर रहा है। दूसरा व्यक्ति यह नहीं जानता था कि उसे यहाँ क्यों लाया गया है। जब उन्होंने आ क्यू से उसके बारे में पूछा तो उसने दो टूक कह डाला, ''क्योंकि मैं विद्रोह करना चाहता था।''

उस दिन तीसरे पहर उसे काठ के सींखचों वाले दरवाज़े से बाहर घसीट कर एक बड़े कमरे में ले जाया गया। कमरे के दूसरे किनारे पर एक बूढ़ा आदमी बैठा था जिसकी चाँद घुटी हुई थी। आ क्यू ने पहले तो उसे कोई भिक्षु समझा, लेकिन जब देखा कि सैनिक उसकी रक्षा कर रहे हैं और लंबे कोट वाले कोई एक दर्जन व्यक्ति उसके दोनों तरफ खड़े हैं, जिनमें से कुछ लोगों की चाँद उसी बूढ़े आदमी की तरह घुटी हुई है, और कुछ लोग नकली विदेशी दरिन्दे की ही तरह अपने बाल लगभग एक फुट लंबे बढ़ाकर उन्हें अपने कंधों तक लटकाए हुए हैं, और सब-के-सब गुस्से से लाल-पीले होकर अत्यंत गंभीर मुद्रा में उसकी ओर घूर रहे हैं, तो वह समझ गया कि अवश्य ही यह कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। उसके घुटने खुद-ब-खुद मुड़ते गए और वह सिकुड़कर ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

''खड़े होकर बोलो। घुटने टेकने की ज़रूरत नहीं।'' लंबे कोट वाले सभी व्यक्ति ज़ोर से बोल पड़े।

हालाँकि आ क्यू उनकी बात समझ गया था, फिर भी वह खड़ा होने में असमर्थ अनुभव कर रहा था : उसका शरीर अनायास ही सिकुड़ गया और अंत में वह अच्छी तरह घुटनों के बल बैठ गया।

''गुलाम कहीं का!....'' लंबे कोट वाले व्यक्तियों ने तिरस्कार के साथ कहा। लेकिन उन्होंने आ क्यू से उठने का आग्रह नहीं किया।

''अगर सच-सच बता दोगे तो हल्की सज़ा मिलेगी,'' घुटे सिर वाले बूढ़े आदमी ने आ क्यू की आँखों में आँखें डालकर धीरे किंतु स्पष्ट स्वर में कहा। ''हमें सब कुछ मालूम हो चुका है। अगर कबूल कर लोगे तो छोड़ दिए जाओगे।''

''कबूल कर लो।'' लंबे कोट वाले व्यक्तियों ने ज़ोर से कहा।

''बात यह है कि मैं.... खुद ही शामिल होना.... चाहता था....'' आ क्यू ने एक क्षण के लिए अवाक् रहने के बाद लड़खड़ाती ज़बन से उत्तर दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अगर ऐसी बात थी तो तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?" बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी से कहा।

"नकली विदेशी दरिन्दे ने नहीं करने दिया।"

"बकवास बंद करो। यह सब चर्चा अब फिजूल है। तुम्हारे साथी कहाँ हैं?"

"क्या कहा?...."

"जिन लोगों ने उस रात चाओ परिवार के घर चोरी की, वे लोग कहाँ हैं?"

"वे लोग मुझे अपने साथ नहीं ले गए थे। उन्होंने चोरी खुद ही की थी।" यह कहते-कहते आ क्यू कुछ क्रोधित हो उठा।

"वे लोग कहाँ हैं? अगर बता दोगे तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा," बूढ़े आदमी ने और अधिक नरमी से दोहराया।

"मुझे नहीं मालूम.... वे लोग मुझे अपने साथ नहीं ले गए थे।"

इसके बाद बूढ़े आदमी के इशारे पर आ क्यू को घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाज़े के भीतर धकेल दिया गया। अगले दिन सुबह उसे एक बार फिर घसीट कर बाहर निकाला गया।

बड़े कमरे में हर चीज़ पहले जैसी ही थी। घुटे सिर वाला बूढ़ा आदमी अब भी वहीं बैठा था और आ क्यू एक बार फिर पहले की ही तरह घुटनों के बल बैठ गया।

"तुम्हें कुछ और कहना है?" बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी से पूछा।

आ क्यू ने सोचा और फैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं कहना। इसलिए उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

इसके बाद लंबे कोट वाला एक आदमी काग़ज़ और कूँची लेकर आ पहुँचा। उसने कूँची आ क्यू के हाथ में थमाने की कोशिश की। आ क्यू डर के मारे लगभग काँपने लगा, क्योंकि उसकी ज़िंदगी में यह पहला मौका था जबकि उसे लिखने के काम आनेवाली कूँची हाथ में उठानी पड़ रही थी। अभी वह सोच ही रहा था कि कूँची कैसे थामी जाए, उस आदमी ने काग़ज़ पर एक जगह उँगली रखते हुए उससे दस्तखत करने को कहा।

"मैं.... मैं.... लिखना नहीं जानता," आ क्यू ने कहा। वह शर्म से गड़ा जा रहा था। कूँची थामे उसका हाथ काँप रहा था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अगर ऐसी बात है तो एक गोल दायरा बना दो। यह तो तुम्हारे लिए आसान है।"

आ क्यू ने एक गोल दायरा बनाने की कोशिश की लेकिन जिस हाथ से उसने कूँची थामी हुई थी, वह काँप रहा था, इसलिए उस आदमी ने आ क्यू के लिए काग़ज़ ज़मीन पर फैला दिया। आ क्यू झुका और उसने बड़े जतन से, मानो उस पर उसके जीवन का अस्तित्व ही निर्भर हो, एक दायरा बना दिया। इस डर से कि कहीं लोग उसकी हँसी न उड़ाएँ, उसने दायरे को गोल बनाने की कोशिश की, लेकिन वह जालिम कूँची न सिर्फ़ बहुत भारी थी, बल्कि उसके आदेश का पालन भी नहीं कर रही थी। इसके विपरीत वह इधर-उधर डगमगाती हुई चल रही थी और जब दायरा पूरा होने ही जा रहा था तो वह फिर एक बार डगमगा गई, जिससे तरबूज के बीज जैसा आकार बन गया।

आ क्यू इस असफलता पर शर्म के मारे गड़ा जा रहा था कि उस आदमी ने बिना कुछ कहे काग़ज़ और कूँची को उसके हाथ से ले लिया। इसके बाद कई लोगों ने उसे तीसरी बार घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाज़े के भीतर धकेल दिया।

इस बार उसे ज़्यादा परेशानी नहीं हुई। उसने सोचा कि इस दुनिया में हर आदमी को किसी-न-किसी समय कैदख़ाने के अंदर या बाहर अवश्य जाना पड़ता है और क़ाग़ज़ पर दायरे अवश्य बनाने पड़ते हैं; चूँकि उसका बनाया हुआ दायरा गोल नहीं था, इसलिए आ क्यू को ऐसा लग रहा था मानो उसकी प्रतिष्ठा पर धब्बा लग गया हो। लेकिन तभी उसने यह सोचकर अपने मन को तसल्ली दी कि, "केवल मूर्ख लोग ही मुकम्मिल दायरा बना सकते हैं।" मन में यही विचार लिए वह सो गया।

मगर उस रात प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका, क्योंकि कप्तान से उसका झगड़ा हो गया था। सफल उम्मीदवार इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि सबसे ज़्यादा महत्त्व की बात है चुराए गए माल को बरामद करना, जबकि कप्तान कह रहा था कि सबसे ज़्यादा महत्त्व की बात है लोगों के सामने मिसाल पेश करना। कुछ समय से कप्तान प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार के साथ बड़ा तिरस्कारपूर्ण बरताव कर रहा था। इसलिए मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारते हुए उसने कहा, "एक को सज़ा दो और सौ को डराओ। मालूम है तुम्हें, मुझे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य बने अभी बीस दिन भी नहीं हुए कि लूटमार की एक दर्जन से ज़्यादा वारदातें हो चुकी हैं और इनमें से एक भी मामले का सुराग नहीं लग पाया। ज़रा सोचो तो, इसका मेरी प्रतिष्ठा पर कितना बुरा असर पड़ रहा है। बड़ी मुश्किल से यह मामला सुलझ सका है, लेकिन तुम टाँग अड़ाने चले आए हो। इससे काम नहीं चलेगा। यह मेरा मामला है।''

प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार बेहद क्षुब्ध हो उठा। लेकिन अपनी बात पर अडिग रहते हुए उसने कहा कि अगर चोरी का माल बरामद नहीं हुआ तो वह सहायक नागरिक प्रशासक के पद से तुरंत इस्तीफा दे देगा।

''जो जी में आए करो।'' कप्तान ने उत्तर दिया।

इस घटना के परिणामस्वरूप प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उस रात सो नहीं सका। लेकिन मज़े की बात यह है कि अगले दिन सुबह उसने इस्तीफा नहीं दिया।

जिस रात प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका था, उसके अगले दिन सुबह आ क्यू को घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाज़े के बाहर फिर लाया गया। जब उसे बड़े कमरे में ले जाया गया तो घुटे हुए सिर वाला बूढ़ा आदमी पहले की ही तरह वहाँ बैठा था। आ क्यू भी पहले की ही तरह घुटनों के बल बैठ गया।

बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी के साथ उससे पूछा, ''तुम्हें कुछ और कहना है?''

आ क्यू ने सोचा और फैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं कहना इसलिए उसने उत्तर दिया, ''कुछ नहीं।''

लंबे कोट और छोटी जाकिट वाले कई लोगों ने विदेशी कपड़े की बनी एक सफेद बनियान उसे पहना दी जिस पर काले रंग के अक्षर अंकित थे। आ क्यू को कुछ घबराहट महसूस हुई, क्योंकि यह पोशाक बहुत कुछ शोक मनानेवालों की सी जान पड़ती थी, और शोक मनाने वालों की पोशाक पहनना अपशकुन माना जाता है। साथ ही उसके दोनों हाथ पीठ पर बँधे हुए थे। वे लोग उसे सरकारी दफ्तर से बाहर घसीट ले गए'

आ क्यू को एक खुले छकड़े में बैठा दिया गया और छोटी जाकिट वाले कई लोग उसके साथ बैठ गए। छकड़ा तुरंत चल पड़ा। छकड़े के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामने बहुत से सैनिक व मिलिशियामैन चल रहे थे, जिनके कँधों पर विदेशी राइफ़लें लटक रही थीं; दोनों तरफ स्तब्ध तमाशबीनों की भीड़ चल रही थी। पीछे की तरफ क्या था, यह आ क्यू नहीं देख पाया। अचानक उसे ख़्याल आया, "कहीं ये लोग मेरी गर्दन उड़ाने तो नहीं ले जा रहे?" उसका दिल दहल उठा, आँखों के सामने अँधेरा छा गया, कानों में घूँ-घूँ की आवाज़ गूँजने लगी और उसे लगा मानो बेहोश हो जाएगा। मगर वह बेहोश नहीं हुआ। हालाँकि वह कुछ देर तक भयभीत रहा, लेकिन बाद में शांत हो गया। उसने सोचा कि इस दुनिया में शायद हर आदमी को किसी-न-किसी समय अपना सिर अवश्य कटवाना पड़ता है।

इस सड़क से वह अच्छी तरह परिचित था। मगर उसे बड़ा ताज्जुब हो रहा था : ये लोग उसे कत्लगाह की तरफ क्यों नहीं ले जा रहे हैं? यह बात वह नहीं जानता था कि लोगों के सामने मिसाल पेश करने के लिए उसे पूरे शहर में घुमाया जा रहा है। अगर उसे मालूम भी हो जाता तो भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला था; सिर्फ़ यही विचार उठता कि इस दुनिया में शायद हर आदमी को किसी-न-किसी दिन लोगों के सामने अवश्य मिसाल बनकर पेश होना पड़ता है।

और जब वे लोग कत्लगाह की तरफ मुड़े, तब कहीं उसे मालूम हुआ कि उसका सिर कटने वाला है। जो लोग चींटियों की तरह उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए थे, उनकी तरफ आ क्यू ने बड़ी दु:खभरी नज़रों से देखा। सड़क के किनारे जमा लोगों की भीड़ में सहसा उसकी नज़र आमा ऊ पर पड़ी। अच्छा, तो इसीलिए इतने दिनों तक वह नहीं दिखाई दी, वह शहर में काम करने लगी थी।

अचानक आ क्यू को अपने बुझे हुए उत्साह पर लज्जा अनुभव होने लगी, क्योंकि उसने आपेरा की एक भी पंक्ति नहीं गाई थी। उसके मन में अनेक विचार घूम गए : 'नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर' ज्यादा वीररसपूर्ण नहीं है। 'नाग और बाघ की लड़ाई' के ये शब्द कि 'है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली' बिलकुल निर्जीव से हैं। 'हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूँगा' सबसे अच्छा रहेगा। लेकिन जब उसने अपने हाथ ऊपर उठाने की कोशिश की तो याद आया कि उसके दोनों हाथ तो बँधे हुए हैं। इसलिए उसने 'हड्डी-पसली चूर तुम्हारी...' भी नहीं गाया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बीस वर्ष बाद मैं एक अन्य...."[1] क्षुब्ध आ क्यू के मुँह से इस कथन की आधी ही पंक्ति निकली, जिसे उसने कभी पहले याद कर लिया था, किंतु इस्तेमाल कभी नहीं किया था। "बहुत अच्छे!!!" भीड़ की आवाज़ भेड़िये की गुर्राहट के समान गूँज उठी।

छकड़ा लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। इस शोरगुल के बीच आ क्यू की आँखें आमा ऊ को खोज रही थीं, लेकिन मालूम होता था कि उसने आ क्यू को नहीं देखा, क्योंकि वह सैनिकों के कँधों पर लटकी विदेशी राइफ़लों पर नज़र गड़ाए हुए थी।

आ क्यू ने शोरगुल मचाते जन-समूह पर फिर एक बार नज़र डाली।

उस समय उसके मन में फिर एक बार अनेक विचार घूम गए। आज से चार वर्ष पहले, पहाड़ की तलहटी में उसका सामना एक भूखे भेड़िये से हो गया था। भेड़िया उसके पीछे लग गया था और उसे खा जाना चाहता था। आ क्यू को लगा कि डर के मारे उसके प्राण ही निकल जाएँगे। लेकिन भाग्यवश उसके हाथ में एक छुरा था, जिससे उसके अंदर वेइच्वांग लौटने की हिम्मत आ गई थी। मगर उस भेड़िये की आँखों को वह कभी नहीं भूल सका था—खूँखार होते हुए भी वे डरी-सहमी हुईं, दो प्रकाश-पुंजों की तरह चमक रही थीं, मानो दूर से ही उसे बेध डालेंगी। आज उसे उस भेड़िये से भी ज़्यादा खूँखार आँखें नज़र आ रही हैं: बुझी हुई किंतु मर्मभेदी आँखें, जो उसके शब्दों को निगल जाने के बाद उसके हाड़-माँस से भी कुछ अधिक चीज़ें निगल जाने को तत्पर थीं और ये आँखें एक निश्चित फासले पर बराबर उसका पीछा कर रही थीं।

लगता था कि ये आँखें एक ही बिंदु पर केन्द्रित होकर उसकी आत्मा को बेध रही हैं।

"बचाओ! बचाओ!"

लेकिन ये शब्द आ क्यू के मुँह से हर्गिज़ नहीं निकले। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया, कानों में घूँ-घूँ की आवाज़ गूँजने लगी और उसे लगा मानो उसका सारा शरीर खाक की तरह बिखर गया हो।

---

1. 'बीस वर्ष बाद मैं एक अन्य हट्टा-कट्टा नौजवान बन जाऊँगा'—ये पंक्तियाँ अक्सर अपराधी मौत की सज़ा पाने के पहले मृत्यु को तुच्छ समझने के लिए कहा करते थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस चोरी के बाद सबसे ज्यादा असर प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार पर पड़ा, क्योंकि चोरी का माल बरामद नहीं हो पाया। उसका पूरा परिवार दुःख के सागर में डूब गया। दूसरे नंबर पर सबसे ज़्यादा असर चाओ परिवार पर पड़ा क्योंकि जब काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार चोरी की रपट लिखाने शहर गया तो कुछ बुरे क्रांतिकारियों ने न सिर्फ़ उसकी चुटिया ही काट डाली बल्कि उससे बीस हज़ार ताँबे के सिक्के भी वसूल कर लिए। परिणामस्वरूप पूरा चाओ परिवार भी दुःख के सागर में डूब गया। उस दिन के बाद से उन लोगों में महज एक सत्ताच्युत राजवंश के उत्तराधिकारियों की सी शान बाकी रह गई।

इस घटना की चर्चा करते समय वेइच्वांग में किसी ने कोई सवाल नहीं उठाया। आम तौर पर सभी लोग इस बात के बारे में एकमत थे कि आ क्यू एक बुरा आदमी था; इसका सबूत यह था कि उसे गोली मार दी गई थी। अगर वह एक बुरा आदमी न होता तो भला उसे गोली क्यों मार दी जाती? लेकिन शहर के लोगों की राय इसके पक्ष में नहीं थी। ज़्यादातर लोग इसलिए असंतुष्ट थे क्योंकि मारने का दृश्य उतना शानदार नहीं होता जितना कि सिर काटने का और वह कितना हास्यास्पद अपराधी था जो आपेरा की एक भी पंक्ति गाए बिना ही इतने गली-कूचों से गुज़र गया था। वे लोग व्यर्थ ही उसके पीछे-पीछे गए थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नववर्ष की बलि

पुराने पंचांग के अनुसार नववर्ष की पूर्वसंध्या वास्तव में ही नये वर्ष के अंत का आभास देती है। गाँवों और नगरों की बात जाने दीजिए, समस्त वायुमंडल नये साल के आने की उद्‌घोषणा करता जान पड़ता है। शाम के मटमैले, उदास, कोहरे के बोझ से झुके बादलों में थोड़ी-थोड़ी देर बाद चमकने वाली बिजलियाँ, फिर पटाखों की गर्जन-तर्जन से अग्निदेव[1] की विदाई और उसके बाद कान के पर्दे फाड़ने वाले पटाखों के धमाके समाप्त होते-होते वायु में बारूद की गंध भर जाती है। ऐसी ही उत्सव की एक रात में मैं अपने जन्म-स्थान लूचन लौटा था। लूचन मेरा जन्म-स्थान ज़रूर था, लेकिन वहाँ अपना कोई घर न होने से अपने संबंधी लू साहब के यहाँ ठहरा। लू और हमारे लकड़दादा एक ही थे और वे मेरे पिता की पीढ़ी के थे, अतः चौथे स्थान के चाचा थे। वे शाही अकादमी के पुराने छात्र और नव-कन्फ्यूशियसवाद[2] के समर्थक थे। चाचा में कोई खास परिवर्तन नहीं आया था, कुछ बुजुर्ग से लगते थे पर दाढ़ी अभी तक नहीं उगी थी। मुलाकात हुई तो शिष्टाचार और राम-जुहार के बाद कहने लगे कि मैं पहले के मुकाबले मोटा हो गया हूँ और ऐसा कहते ही फौरन सुधारवादियों पर अपना क्रोध प्रकट करने लगे। जानता था, उनका क्रोध मुझ पर नहीं, बल्कि खांग यवो वेइ [3] पर था। ख़ैर, इस हालत में बातचीत क्या होती। कुछ ही क्षणों में वे चले गए और मैं अध्ययनकक्ष में अकेला रह गया।

दूसरे दिन काफी देर से नींद टूटी। दोपहर में खा-पीकर पुराने मित्रों और नातेदारों से मिलने चला गया। अगला दिन भी ऐसे ही बीता। उन लोगों में कोई विशेष परिवर्तन मालूम नहीं दे रहा था बस, आयु में

---

1. बारहवें चंद्र महीने के तेईसवें दिन अग्निदेवता स्वर्ग जाकर अपनी रिपोर्ट देता है, ऐसा विश्वास था।
2. सुंग राजवंश (960-1279) में कन्फ्यूशियस संस्थान जिसकी मान्यता थी कि दुनिया में सभी चीज़ें और सामंतशाही 'तर्क' पर आधारित है और कभी बदल नहीं सकतीं।
3. खांग यवो वेइ (1858-1927) एक प्रसिद्ध सुधारवादी था, जिसने वैधानिक राजतंत्र का पक्षपोषण किया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़रा बढ़ गए थे। सभी परिवार नववर्ष की बलि-पूजा की तैयारियों में जुटे थे। लूचन में बीते वर्ष को बड़ी धूमधाम से विदाई दी जाती है। लोग बहुत श्रद्धा और उत्साह से नए वर्ष के आरंभ में भाग्य के देवता का स्वागत-सत्कार करके नए वर्ष में सुख-सौभाग्य के लिए प्रार्थना करते हैं। मुर्गियाँ और कलहँस मारे जाते हैं, शूकर का माँस ख़रीदा जाता है, फिर इन्हें पानी में बड़ी सावधानी से धोया जाता है जब तक स्त्रियों के कंगन भरे हाथ सर्दी में पानी से लाल नहीं हो जाते। मांस को पकाकर उसमें तीन-चार जगह चापस्टिकें खोंस दी जाती हैं और पूजा के इस भोग को प्रातः मुँह अँधेरे ही धूप-दीप से लगाकर बहुत श्रद्धा से भाग्य-देवता से भोग स्वीकार करने की प्रार्थना की जाती है। पूजा का भोग केवल पुरुष ही लगा सकते हैं और पूजा के बाद भी पहले की तरह कुछ देर तक पटाखे चलते हैं। सभी परिवार प्रतिवर्ष इसी प्रकार पूजा करते हैं। लोग अपनी औकात-बिसात के अनुसार भोग लगाते हैं और पटाखों से उत्सव मना लेते हैं। जैसे सदा से होता आया था, वैसे ही उस वर्ष भी हो रहा था।

उस दिन सुबह ही बादल चढ़ आए, दोपहर में तो बर्फ भी गिरने लगी। बर्फ आलूचे के फूलों की पंखुड़ियों की तरह आकाश में से थिरकती तैरती चली आ रही थी और पटाखों के धुएँ और कोलाहल से मिल लूचन में विचित्र समा बँध गया था। मैं चाचा के यहाँ लौटा तो मकान की छत बर्फ से ढककर श्वेत हो चुकी थी। चारों ओर की शुभ्रता से कमरे के भीतर भी चमक बढ़ गई थी। दीवार पर लटकी लाल रंग की शिला पर ताओपंथी संत छन त्वान[1] द्वारा लिखा हुआ 'चिरायु' शब्द खूब बड़ा और उजला दिखाई दे रहा था। सुभाषित से अंकित दो लंबी कुंडलीनुमा पट्टियों में से एक पट्टी दीवार से मेज़ पर गिरकर ढीली-ढीली लिपट गई थी। लटकी हुई दूसरी पट्टी पर लिखा था 'सिद्धांतों की समझ से चित्त को शांति प्राप्त होती है।' करने को कुछ था नहीं। खिड़की के समीप पड़ी मेज़ पर रखी पुस्तकों को उलट-पलट कर देखने लगा। खांग शी के शब्दकोष के कुछ खंडों, नव-कन्फ्यूशियसवादी दार्शनिकों की पुस्तकों और चार पुस्तकों की टीकाओं के अलावा वहाँ कुछ नहीं था। जो हो, मैंने निश्चय कर लिया कि कल लौट जाऊँगा।

1. दसवीं शताब्दी का एक साधु।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल श्यांग लिन की पत्नी से हुई मुलाकात से भी मन बेचैन था। यह घटना दोपहर के बाद घटी। नगर के पूर्वी मुहल्ले में एक मित्र के यहाँ से लौट रहा था तो नदी किनारे श्यांग लिन की पत्नी से सामना हो गया। उसकी निगाहों से ही मैं समझ गया था कि कुछ कहना चाहती है। लूचन में जिन लोगों से मैं मिला उनमें सबसे ज़्यादा बदली हुई वही दिखाई दी। पाँच वर्ष पूर्व उसके सिर में कहीं कोई एक-आध केश सफेद था लेकिन अब पूरा सिर सफेद था जिससे वह चालीस से काफी बूढ़ी लग रही थी। उसका पीला, सिकुड़ा, काठ की मुर्ति सा चेहरा बिलकुल भावशून्य लग रहा था और उस पर से पहले की उदासी भी ख़त्म हो गई थी। आँखों में कभी-कभी पुतलियाँ नाच जाती थीं जो जीवन का एकमात्र चिह्न था। बुढ़िया एक हाथ में सींकों की बुनी टोकरी लिए थी जिसमें टूटा-सा खाली कटोरा था। दूसरे हाथ में बाँस की, सिर से ऊँची छड़ी लिए थी जिसका नीचे का सिरा फटा हुआ था। स्पष्ट था कि वह भीख माँगने लगी है।

उसने देखा तो मैं यह सोच मौन खड़ा रह गया कि समीप आकर शायद कुछ माँगे।

''तुम लौट आए?'' समीप आकर उसने पूछ लिया।

''हाँ।''

''बहुत अच्छा हुआ। तुम पढ़े-लिखे आदमी हो, देश-विदेश घूमे हो, दुनिया देखे हो। मैं तुमसे एक बात पूछना चाहती हूँ।'' उसकी बुझी-बुझी आँखें चमक उठीं।

उसकी बात इतनी अप्रत्याशित थी कि मैं विस्मय से खड़ा रहा।

''यह तो बताओ,'' वह दो कदम समीप सरक आई और स्वर धीमा कर रहस्य के स्वर में फुसफुसाकर बोली: ''आदमी मर जाता है तो क्या सचमुच प्रेत बन जाता है?''

क्या उत्तर देता? वह मेरी और जिस तरह टकटकी लगाए थी कि शरीर में सिहरन-सी दौड़ गई, रोमांच हो आया जैसे परीक्षक विद्यार्थी से कोई अप्रत्याशित, बहुत कठिन प्रश्न पूछ ले और सामने खड़ा होकर तुरंत उत्तर माँगे। मृत्यु के बाद जीव के भूत या प्रेत बन जाने के संबंध में मैंने कभी विचार नहीं किया था। बहुत संकट में था, क्या उत्तर देता। कुछ क्षण अवाक् होकर सोचता रहा कि गाँव-देहात में लोग मृत्यु के बाद आत्मा के भूत-प्रेत बन जाने में विश्वास करते हैं। जान पड़ता है, उसके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन में किसी कारण कुछ संदेह हो गया है या शायद आशा—मृत्यु के बाद जीवन की आशा, जिससे घृणा भी थी। दुखिया को और दु:ख देने से क्या लाभ? उसे कुछ आशा, सांत्वना मिले, यही अच्छा है। यही कहना उचित है कि आत्मा नहीं मरती।

''ख़याल तो है आत्मा रहती है,'' मैंने झिझकते हुए हामी भर ली।

''तो फिर नरक भी जरूर होता होगा?''

''कैसा नरक?'' उसके प्रश्न से मैं घबरा गया था। टालने के लिए बोला, तर्क के अनुसार तो नरक होता है—पर कौन जाने। ख़ैर, इन बातों में क्या रखा है।....''

''तब क्या मरने के बाद कुनबे के सब लोग फिर से आपस में मिलते होंगे?''

''कौन जाने, मृत्यु के बाद कौन किससे मिलता है?....'' अब मुझे समझ में आया कि मैं एकदम मूर्ख था। मेरा सारा सोच-विचार और चालबाज़ी उसके तीन प्रश्नों के सामने निरस्त थे। डर के मारे मैंने सीधे कह दिया—''उस हालत में.... वास्तव में मुझे स्वयँ नहीं मालूम.... वस्तुत: मैं नहीं कह सकता कि भूत होते भी हैं या नहीं।''

वह न जाने और क्या पूछ ले, इस डर से तेज़ चाल से चाचा के मकान की ओर चल पड़ा। उसके प्रश्न से मन में बड़ी बेचैनी थी। सोच रहा था कि मेरी बात से बेचारी और अधिक दु:खी और निराश न हो गई हो। हो सकता है वह अकेली महसूस कर रही हो क्योंकि दूसरे लोग उत्सव मनाने में व्यस्त हैं, या इसके मन में कोई और बात हो, कोंई पूर्वानुमान? यदि मेरी बात से निराश होकर वह कुछ कर बैठी तो वह मेरे ही उत्तर के कारण होगा। फिर मुझे स्वयं पर ही हँसी आने लगी कि इतनी छोटी-सी बात पर सोच्-सोचकर मैं बेकार परेशान हो रहा हूँ। तभी तो कइ शिक्षा-शास्त्री मुझे स्नायु-रोग का शिकार बताते हैं। साथ ही मैंने उसे स्पष्ट कह ही दिया था कि मुझे निश्चित कुछ नहीं मालूम और इस प्रकार पहले जो बात कही थी, उसे बाद में काट दिया था। अब अगर कुछ हो भी जाए ता उसकी ज़िम्मेदारी मेरी नहीं हो सकती।

''मैं निश्चित नहीं कह सकता''—यह एक अत्यंत उपयोगी वाक्यांश है।

अल्हड़ साहसी नौजवान प्राय: दूसरों के झमेले अपने सिर पर ले लेने के लिए उतावले रहते हैं और झमेला दूर करने का तरीका बता देते

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। यदि बदकिस्मती से कुछ ऐसा-वैसा हो जाए, होनी-अनहोनी हो जाए, तो संभवतः कलंक उनके ही सिर मढ़ दिया जाएगा। पर अपनी बात को इस टरकाऊ वाक्यांश से समाप्त कर दें, तो वे हर तरह की जवाबदेही से छुटकारा पा लेंगे। उस समय यह शब्दावली मुझे और भी अधिक उपयोगी जान पड़ी। उस भिखारिन को भी इससे उचित कोई दूसरा उत्तर नहीं दिया जा सकता था।

फिर भी मैं परेशान रहा और रात के विश्राम के बाद भी मेरा मन एक पूर्वशंसा से इस बारे में उलझ रहा। बर्फीले मौसम और मनहूस अध्ययन-कक्ष ने मेरे मन की बेचैनी को और बढ़ा दिया। सोचा कल सुबह ही शहर लौट जाऊँगा। फू-शिग रेस्तराँ में पहले शार्क मछली के पंख की प्लेट एक डालर में मिल जाती थी। न मालूम अब इसका दाम बढ़ गया है कि नहीं। पुराने मित्र, जिनके साथ फू-शिग रेस्तराँ में जाया करता था, जहाँ-तहाँ बिखर चुके थे। परंतु शार्क मछली के पंख खाने के लिए तो जा ही सकता था। कुछ भी क्यों न हो दूसरे दिन सुबह लौट जाने का निश्चय तो कर ही लिया था।

कई बार अनुभव कर चुका हूँ कि जिस बात के न घटने की उम्मीद करता हूँ और जिससे बचना चाहता हूँ, वह ज़रूर होकर रहती है। मन में भय समा गया था कि इस बार भी कुछ-न-कुछ अनिष्ट होकर ही रहेगा। सचमुच ही अजीब-अजीब-सी बातें हो रही थीं। संध्या समय घर के भीतर से बातचीत के स्वर सुनाई देने लगे, जैसे किसी बात पर बहस हो रही हो। कुछ समय बाद बातचीत बंद हो गई और फिर सुनाई दिया कि चाचा घर से बाहर जाते हुए कह रहे हैं: "आगे न पीछे, यह इसी समय होना था क्या? क्या यह उसके कुलच्छनी होने का प्रमाण नहीं है?"

सुनकर पहले धक्का लगा और फिर गहरी बेचैनी। सोचा, इसका मुझसे कुछ संबंध है। दरवाज़े से बाहर झाँका, परंतु वहाँ कोई नहीं था। बड़ी कठिनाई से अपने आपको वश में किए था कि नौकर संध्या के भोज से पहले चाय लेकर आ गया। अवसर पाकर उससे पूछताछ की।

"लू साहब अभी किस पर बिगड़ रहे थे?" मैंने पूछा।

"वही श्यांग लिन की पत्नी पर।" नौकर ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"श्यांग लिन की पत्नी? क्या हुआ उसे?" मैंने फिर पूछा।

"मर गई।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मर गई?" मेरे दिल की धड़कन रुक गई। शायद चेहरे का रंग बदला और शायद पसीना भी आ गया हो। नौकर सिर झुकाए चाय बना रहा था, इसलिए उसने यह नहीं देखा। जैसे-तैसे अपने आपको संभाकर पूछा :

"कब मरी?"

"कब? कल रात या आज, कौन जाने?"

"कैसे मर गई?"

"कैसे मर गई? भूख से, और क्या।" नौकर ने निर्विकार भाव से उत्तर दे दिया और मेरी ओर नज़र उठाए बिना कमरे से चला गया।

कुछ देर बाद मेरी बेचैनी मिट गई। आशंका तो थी ही, सो घटना भी घट गई थी। अब 'कौन जाने' कहकर उत्तरदायित्व टालने की चिंता का कुछ प्रयोजन नहीं था, या नौकर के अनुसार उसके भूख से मर जाने की बात से उत्तरदायित्व से बचने का आश्वासन पा लेने की भी आवश्यकता न थी। समय-समय पर वह घटना मेरे मन को कचोटती रहती थी। शाम का खाना मेज पर लगा दिया गया और चाचा भी मेरे साथ बैठे। मन में आया, श्यांग लिन की पत्नी की बात पूछ लूँ। जानता था कि चाचा ने पढ़ा होगा, 'भूत-प्रेत और रूहें प्राकृति की दो शक्तियों के फलरूप हैं।[1] फिर भी पुराने अंधविश्वासों में, उनकी इतनी आस्था थी कि नववर्ष के उत्सव की पूर्व संध्या समय मृत्यु या बीमारी की चर्चा नहीं की जा सकती थी। अगर अनिवार्य ही हो जाए तो ऐसी बात केवल व्यंजना या संकेत से ही कही जानी चाहिए। दुर्भाग्य से मैं इस प्रकार के व्यवहार में अनाड़ी हूँ इसलिए होंठों पर बार-बार आने पर भी बात को दबा लेना पड़ा। चाचा के गंभीर चेहरे को देख मुझे संदेह होने लगा, कहीं वे मुझे भी तो कुलच्छना नहीं समझ रहे थे जिसने उन्हें परेशान करने के लिए आने का यही अवसर चुना। अपने संबंध में चाचा के मन से किसी भी संदेह को दूर कर देने के लिए मैंने कहा कि मैं सुबह ही लूचन से शहर लौटना चाहता हूँ। चाचा ने मुझसे रुकने का अधिक आग्रह नहीं किया। किसी तरह यह मौन भोजन समाप्त हुआ।

जाड़े के दिन यों भी छोटे होते हैं और क्योंकि बर्फ भी पड़ रही थी सो पूरे कस्बे पर जल्दी ही अँधेरा छा गया था। घर में रोशनियाँ जल गईं थी

1. एक कन्फ्यूशियसवादी उक्ति।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और सभी लोग किसी-न-किसी काम में लगे थे। परंतु घरों के बाहर अँधेरा और सन्नाटा था। ढेरों बर्फ पड़ चुकी थी और लगातार पड़ती जा रही थी जिससे सन्नाटा और सूनापन और भी गहरा हो रहा था। मैं वनस्पति-तेल के दिये के पीले, मध्यम प्रकाश में अकेला बैठा सोच रहा था—इस ग़रीब औरत को सब लोगों ने ठुकरा दिया था, जैसे टूटे बेकार हो गए खिलौने से मन ऊबने लगता है, तो उसे धूल में डाल दिया जाता है। कभी धरती की धूल में उसका भी कोई स्थान था और जो लोग सुख से जीवन बिता रहे हैं उन्हें ताज्जुब होता होगा कि यह स्त्री भी अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। जो हो, अब मृत्यु ने उसका अस्तित्व मिटा दिया है। नहीं जानता प्रेत-आत्माओं का अस्तित्व है या नहीं; परंतु ऐसे निरर्थक लोग, जिनके अस्तित्व से दूसरे लोग ऊब चुके हैं, जब इस संसार से मिट जाते हैं तो उनका या शेष रहे दूसरे लोगों की इसी में भलाई है। इसी ख़याल में खोया मौन बैठा सोचने लगा और बाहर गिरती बर्फ की आहट सुनता रहा और धीरे-धीरे मन की बेचैनी मिटती जा रही थी।

'श्यांग लिन की पत्नी के संबंध में जो कुछ देखा था या लोगों से सुना था, सब एक साथ सामने आने लगा।

श्यांग लिन की पत्नी लूचन की नहीं थी। बहुत वर्ष पहले, जाड़े के आरंभ में जब चाचा अपनी नौकरानी बदलना चाहते थे तब वेइ की बुढ़िया उसे लेकर आई थी। श्यांग लिन की पत्नी सिर पर मातमी सफेद फीता बाँधे थी, काला लहँगा, नीली जाकिट और हल्का हरा ब्लाउज पहने थी। तब उसकी आयु लगभग छब्बीस की रही होगी। चेहरे का रंग पीला था, परंतु गालों पर सुर्खी थी। वेइ की बुढ़िया उसे 'श्यांग लिन की पत्नी' के नाम से पुकारती थी। बुढ़िया ने बताया कि श्यांग लिन की पत्नी उसके मायके वालों की पड़ोसिन है। चूँकि उसका पति मर चुका था, वह चाहती थी कि दूसरों के यहाँ चाकरी कर ले। मेरे चाचा ने सुना तो उनके माथे पर बल पड़ गए। चाची समझ गई कि चाचा विधवा को नहीं रखना चाहते। परंतु श्यांग लिन की पत्नी के मज़बूत-चुस्त हाथ-पैरों, उसके चेहरे पर नम्रतापूर्ण मौन को देखने से ही चाची समझ गई कि वह परिश्रमी और शांत स्वभाव वाली है। चाची ने चाचा की त्यौरियों की परवाह न कर उसे रख लिया। काम परखने की अवधि के दौरान श्यांग लिन की पत्नी सुबह से रात तक काम में लगी रहती थी,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे विश्राम से उसका मन घबराता हो। उसके शरीर में पूरे आदमी की ताकत थी। तीसरे दिन चाची ने उसकी तनखाह बाँध दी—हर महीने पाँच सौ ताँबे के सिक्के।

उसे सब लोग श्यांग लिन की पत्नी के नाम से ही पुकारने लगे। किसी ने उसका अपना नाम नहीं पूछा। वेइ की बुढ़िया उसे लेकर आई थी और बता गई थी वह उन्हीं के मायके वालों के पड़ोस की थी, सो अनुमान हो गया कि उसका कुलनाम भी वेइ ही होगा। वह स्वभाव से चुप रहती थी, कोई कुछ पूछता तभी बोलती और तब भी दो-चार शब्द से अधिक नहीं। दस-बारह दिन बाद पता चला कि घर में उसकी रौबीली सास और कोई दस वर्ष का एक देवर है जो लकड़ी काट लेता था। पति की पिछले बसंत में मृत्यु हो गई थी। वह भी लकड़हारा ही था। उम्र में अपनी पत्नी से दस वर्ष छोटा था और अधिक उसने कुछ नहीं बताया।

समय तेज़ी से बीतता गया। श्यांग लिन की पत्नी पहले की ही तरह कड़ी मेहनत करती जा रही थी। मोटा-बासी जो कुछ मिल जाता खा लेती, पर काम में कोई कोर-कसर नहीं रहती थी। लोग-बाग कहते थे कि लू साहब की नौकरानी किसी अच्छे मेहनती जवान मर्द से क्या कम है! पुराने वर्ष की विदाई की पूजा के समय उसने अकेले ही घरभर की झाड़-पोंछ की, मुर्गियाँ और कलहँस मारे, भोग का माँस पकने के लिए चढ़ा दिया। चाची तो खुश थी ही साथ ही वह भी संतुष्ट और प्रसन्न थी। उसके होंठों पर हल्की-हल्की मुस्कान झलकने लगी थी, गाल भर आए थे और रंग भी उजला हो गया था।

नववर्ष के बाद एक दिन वह नदी किनारे चावल धोकर लौटी तो उसका चेहरा उतरा हुआ था क्योंकि उसे नदी के उस पार एक आदमी घूमता दिखाई दिया जो उसके पति के बड़े चचेरे भाई जैसा लग रहा था। शायद वह उसी की खोज में आया था। चाची ने अधिक जानकारी लेनी चाही लेकिन उसने और कुछ नहीं बताया। चाचा ने सुना तो उनके माथे पर बल पड़ गए, बोले : "मामला गड़बड़ है, यह अपनी ससुराल से भाग कर आई होगी।"

जल्दी ही बात पक्की हो गई कि श्यांग लिन की पत्नी ससुराल से भाग कर आई थी।

एक और पखवाड़ा बीत गया और लोग उस घटना को भूलने लगे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे कि वेइ की बुढ़िया एक दिन अचानक पैंतीस-चालीस वर्ष की एक औरत को लेकर आ पहुँची। बुढ़िया ने बताया कि वह श्यांग लिन की पत्नी की सास है। सास रूप-रंग से पहाड़ी देहातिन ही लगती थी, परंतु बातचीत खूब आत्मविश्वास और फर्राटे से कर रही थी। उसने शिष्टता प्रदर्शन करके इस बात के लिए क्षमा-याचना की कि वह अपनी बहू को लिवा ले जाने के लिए आई है क्योंकि बसंत के शुरू में खेती-बाड़ी का काम बहुत है और घर में बुढ़िया-बच्चे के सिवाय और कोई नहीं।

चाचा बोले, "उसकी सास बुलाने आई है, तो हम कैसे रोक सकते हैं।"

तत्पश्चात् उसका हिसाब कर दिया गया। उसने अपनी पूरी तनखाह चाची के पास जमा रहने दी थी, कभी एक पैसा भी नहीं लिया था। हिसाब से एक हज़ार सात सौ पचास ताँबे के सिक्के बनते थे। चाची ने सब पैसा उस की सास के हाथ में रख दिया। सास ने धन्यवाद दिया और बहू के कपड़े भी साथ ले गई। इस समय तक दोपहर हो चुकी थी।

"भात का क्या हुआ? श्यांग लिन की पत्नी क्या चावल धोने नहीं गई थी?" चाची पुकार बैठीं। उन्हें भूख लग आई थी, इसलिए भात याद आ रहा था।

चावल की डलिया की खोज होने लगी। चाची रसोई में देखने गई, इस कमरे में देखा, उस कमरे में ढूँढ़ा, परंतु चावल की डलिया कहीं दिखाई नहीं दी। चाचा ने आंगन में और घर के आसपास नज़र डाली वहाँ भी कुछ नहीं था। वे खोजते हुए नदी की ओर चले गए। देखा कि नदी किनारे चावल की डलिया सही-सलामत रखी हुई है और डलिया के साथ कुछ तरकारी भी पड़ी हुई है।

नदी किनारे पर खड़े कई लोगों ने चाचा को बताया कि नदी में सुबह से सफेद पाल वाली एक नाव खड़ी थी। कौन जाने पाल के पीछे कौन था। किसी ने उधर विशेष ध्यान भी नहीं दिया था। जब श्यांग लिन की पत्नी चावल धोने आई थी और चावल की डलिया उसने नदी किनारे रखी ही थी कि नाव से दो पहाड़ी कूद आए और उसे ज़बरदस्ती उठाकर नाव पर ले गए। वह रोई और चिल्लाकर पुकारा, फिर उसकी पुकार सुनाई नहीं दी। शायद उसका मुँह दबा लिया होगा। उसके बाद नाव से दो औरतें उतर आईं। उनमें एक अजनबी थी, मगर दूसरी वेइ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की बुढ़िया थी। नाव में झाँककर देखना तो मुश्किल था लेकिन लगता था कि उन्होंने उसे बाँध-बूँध कर नाव में नीचे डाल रखा था।

"कितनी घृणित बात है, ख़ैर ..." चाचा चुप रह गए।

उस दिन दोपहर में चाची ने स्वयं रसोई बनाई। मेरे चचेरे भाई आ न्यू ने चूल्हा सुलगाया।

दोपहर का खाना हो चुका तो बुजुर्ग वेइ की बुढ़िया आ पहुँची।

"कितनी घृणित बात है।" चाचा बोले।

चाची रसोई में बर्तन धो रही थीं। बर्तनों में उलझी हुई गरज पड़ीं: "खूब मज़ाक किया तूने। अब और क्या करने आई है? तू खुद ही उसे रखवाकर गई थी और फिर बेचारी को इस तरह से उड़वा दिया। अच्छा-खासा बखेड़ा खड़ा कर दिया तूने। लोग क्या कहेंगे? हमारी भी खिल्ली उड़वाएगी क्या?"

"हाय रे दैया, मैं किस झगड़े में फँस गई। मैं तो आपको पूरी बात बताने आई हूँ। मुझे क्या मालूम था कि सास से बिना पूछे वह भाग कर चली आई है। श्रीमान ली, मुझे माफ कर दीजिए मैं बेवकूफ ठहरी, मैं इन बातों घो क्या जानूँ। मुझे माफी मिले, मुझसे ख़ता हुई। मुझे तो आपकी ही दया का भरोसा है। मालिक तो सदा ग़रीबों पर दया करते हैं। मैं ढूँढ़कर हुज़ूर के लिए ऐसी अच्छी नौकरानी लाऊँगी कि मालकिन खुश हो जाएँ।"

"ख़ैर...." चाचा ने कहा।

"श्यांग लिन की पत्नी का मामला समाप्त हो गया और कुछ दिनों में लोग यह बात भूल भी गए।

श्यांग लिन की पत्नी को और सब लोग तो भूल गए, पर चाची उसे नहीं भूलीं। भूलतीं भी कैसे? फिर उन्हें ढंग की नौकरानी मिली ही नहीं। जो नौकरानी आती, कामचोर होती या रसोई की अथवा दूसरी चीज़ों की चोरी करती, अथवा कामचोर भी होती और चोर भी। चाची नौकरानियों से परेशान हो जातीं तो श्यांग लिन की पत्नी को याद करने लगतीं—"न जाने वह ग़रीब कहाँ होगी।" स्पष्ट था कि वह लौट आती तो चाची उसे रख लेतीं। परंतु अगले नववर्ष की पूजा आते-आते उन्हें उसके लौटने की आशा न रही।

नववर्ष का पहला महीना ख़त्म हो रहा था जब वेइ की बुढ़िया एक दिन डगमगाती हुई चाची को नववर्ष की बधाई देने आ पहुँची। क्षमा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँग कर बोली कि वह अपने मायके चली गई थी। वहाँ कई दिन लग गए, इसलिए पहले नहीं आ सकी। बातचीत में श्यांग लिन की पत्नी की चर्चा भी होने लगी।

"वह बड़े मज़े में है," वेइ की बुढ़िया ने किलककर कहा। "उसकी सास जब उसे यहाँ से उठाकर ले गई तो पहले ही एक गाँव में हो परिवार के छठे लड़के से शादी की बात पक्की कर आई थी। उसे यहाँ से लिवा ले जाने के कुछ दिन बाद ही डोली में डालकर चलता कर दिया।"

"हे भगवान, ऐसी सास भी क्या।" चाची ने विस्मय प्रकट किया।

"अरे मालकिन, आप तो बड़े लोग ठहरे इसलिए वैसी ही बातें करती हैं। हम ग़रीब देहाती औरतों के लिए इसमें क्या है? हमारे यहाँ तो सब ऐसे ही चलता है। सास बेचारी क्या करती? उसे छोटे लड़के का भी तो ब्याह करना था। उसे घर में ही रोके रखती तो लड़के के ब्याह के लिए पैसा कहाँ से आता। पर उसकी सास है बड़ी माहिर और चालाक। दूर पहाड़ में ब्याह दिया है उसे। आसपास के किसी देहात में ब्याहती तो इतना दाम कहाँ मिलता? लेकिन धुर पहाड़ में जाने के लिए कोई औरत तैयार नहीं होती, इसलिए वहाँ से अस्सी हज़ार ताँबे के सिक्के मिल गए। छोटे लड़के के लिए लड़की पचास हज़ार में मिली, बीस हज़ार बरात-ज्योनार में लग गया, दस हज़ार फिर भी बचा लिया। देख लो मालकिन, कैसी चालाक औरत है?"

"क्या श्यांग लिन की पत्नी राज़ी थी?" चाची ने पूछा।

"औरत की राज़ी-नाराज़ी कौन पूछता है। हर कोई कुछ विरोध तो करती ही है। उसके हाथ-पाँव बाँध डोली में डाल दिया, दुलहिन का मुकुट सिर पर बाँध कर ब्याह की रीति पूरी कर ली, दोनों को कोठरी में बंद कर दिया। बस काम पूरा हो गया। पर वह भी बड़ी अड़ियल निकली। सुना है उसने काफी झंझट खड़ा कर दिया। लोग कह रहे थे कि बड़े लोगों के यहाँ रह आई है, इसीलिए कुछ नखरे तो दिखाएगी ही। मालकिन मुझ जैसी बिचौलियों ने ज़िंदगी देखी है। जानती हूँ विधवाओं का ब्याह होता है तो चीखती-चिल्लाती हैं, कोई-कोई तो ज़हर खा लेने को तैयार हो जाती हैं। डोली में डाल कर मर्द के यहाँ पहुँचा दो तो भी कोई-कोई अड़ जाती है कि ब्याह की रीति नहीं करेंगी। कोई ब्याह की रीति के लिए जलाए धूप-दीप उठाकर पटक देती हैं। लेकिन श्यांग लिन की पत्नी की तो पूछो मत। उसे डोली में डालकर ले गए तो रास्ते भर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीख़ती-चिघाड़ती रही। ससुराल पहुँची तो गला बैठ गया था। डोली से उसे खींच क़र निकाला तो दो डोली वाले और उसका जवान देवर भी उससे ब्याह की रस्में पूरी नहीं करा पाए। ज़रा ढील पाई तो—बुद्ध भगवान रक्षा करें—जाकर मेज़ के कोने से माथा टकरा लिया, सिर फोड़ लिया। इतना खून बहा कि दो मुट्ठी धूप की राख डाल कर दो लाल अंगोछे लपेट दिए तो भी खून बहता रहा। अंत में बहुत से लोगों ने मिल कर उसे दूल्हे के साथ कोठरी में बंद कर दिया तो भी वह चीखती-चिल्लाती रही। हे भगवान, कैसी औरत है।'' बुढ़िया ने सिर हिलाते हुए कहा और गर्दन झुका चुप हो गई।

''फिर क्या हुआ?'' चाची ने पूछा।

''फिर? वह उठी। साल भर में लड़का हो गया जो इस बार नए साल के मौके पर दो वर्ष का हो गया है। अभी मैं मायके गई थी तो कुछ लोग पहाड़ में हो परिवार के गाँव जाकर लौटे और वे बता रहे थे कि भली-चंगी है, लड़का भी खूब तगड़ा है। अब उसके ऊपर सास थोड़े है। अच्छा तगड़ा-कमाऊ मर्द है, घर अपना है। उसके तो भाग जग गए हैं।''

इस घटना के बाद चाची ने फिर श्यांग लिन की पत्नी की चर्चा नहीं की।

श्यांग लिन की पत्नी की सुख-समृद्धि का समाचार मिले दो वर्ष बीत चुके थे कि शरद में एक दिन अचानक वह चाचा के द्वार पर आ पहुँची। एक छोटी-सी गोल टोकरी लिए थी और बगल में कपड़े-लत्ते की गठरी थी। सिर पर अब भी सफेद मातमी फीता बँधा था, वही काला लहँगा, नीली जाकिट, हल्का हरा ब्लाउज़। चेहरे पर स्याही फिर गई थी, गालों की सुर्खी उड़ गई थी। झुकी हुई पलकों पर आँसू सूखे हुए थे और आँखें बुझी हुई थीं। वेइ की बुढ़िया अब भी उसके साथ थी। वही उसे चाची के यहाँ लिवा लाई थी। भरे गले से उसने कहा:

''बेचारी ग़रीब पर बिजली गिर पड़ी। बेचारी बरबाद हो गई। क्या तगड़ा मर्द था। कौन जानता था कि ऐसा मियादी बुखार आएगा कि जान ले लेगा। बुखार तो टूट गया था पर उसने ठंडा भात खा लिया और हालत फिर ख़राब हो गई। तब भी बेचारी का भाग अच्छा था, लड़का तो था। काम से घबराती नहीं थी, ज़रूरत हो तो लकड़ी भी फाड़ ले, चाय की पत्ती चुन लाए, रेशम के कीड़े पाल ले। अकेले घर सँभाल रही

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी, पर कौन जानता था कि लड़के को भेड़िया उठा ले जाएगा? भेड़िये के आने का कोई मौसम भी नहीं था। बसंत बीत गया था, किसे ख़याल था कि ऐसे समय भेड़िया आ जाएगा? फिर बेचारी अकेली रह गई। इसके जेठ ने इसे घर से निकाल दिया और सारा घर व खेत समेट लिए। मालकिन अब इसे आपके सिवा और किसका सहारा है। अब-इस पर किसी का ज़ोर तो है नहीं और सरकार को भी नौकरानी की ज़रूरत है। इसीलिए इसे यहाँ लिवा लाई हूँ। आपके यहाँ वही नौकरानी ठीक से काम कर सकती है जो यहाँ के तौर-तरीके जानती हो।''

''मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच....'' श्यांग लिन की पत्नी ने अपनी उदासीन आँखें उठाईं और सुनाने लगी: ''मैं तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती है तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ नहीं पाते और गाँव में घुस आते हैं। मैं क्या जानती थी कि बसंत में भी जानवर गाँव में आ घुसेंगे। मुँह अँधेरे उठी, किवाड़ खोले, टोकरी में फलियाँ भर अपने आ माओ को पुकारा, ''बेटा देहरी पर बैठकर इन्हें छील दे।'' लड़का बहुत कहना मानता था। मैं पिछवाड़े चली गई। ईंधन काटा, चावल धोकर चूल्हे पर रख दिए और आ माओ को पुकारा कि फलियाँ दे जा। कोई जवाब नहीं मिला। मैं दरवाज़े पर देखने आई तो क्या देखती हूँ कि फलियाँ धरती पर बिखरी पड़ीं हैं और आ माओ का कुछ पता नहीं। बच्चा खेलने के लिए पड़ोसियों के घर कभी नहीं जाता था। मैं सब जगह ढूँढ़ती फिरी, कुछ पता नहीं चला। मैं घबरा गई और उसे ढूँढ़ने के लिए लोगों को पुकारा। दोपहर तक इधर-उधर सब जगह ढूँढ़ने के बाद वे लोग घाटी में जा पहुँचे। वहाँ बच्चे का एक जूता कंटीली झाड़ी में उलझा टँगा मिला। लोगों ने कहा, ''बेचारा लड़का गया। उसे भेड़िया ले गया।'' वही बात थी। लोग और आगे बढ़े तो लड़का भेड़िये की माँद में पड़ा हुआ था। भेड़िये ने उसका पेट खा लिया था। नन्हीं-सी मुट्ठी में वह अब भी टोकरी पकड़े हुए था।....'' इतना कहने पर श्यांग लिन की पत्नी रोने लगी और फिर उसका गला रुँध गया।

चाची पहले कुछ असमंजस में थीं लेकिन उसकी कहानी सुनते ही उनकी आँखें डबडबा आईं। उन्होंने एक क्षण के लिए सोचा और श्यांग लिन की पत्नी से कहा कि वह अपनी चीजें नौकरानी के कमरे में रख दे। वेइ की बुढ़िया ने राहत की साँस ली, मानो किसी बड़े बोझ से मुक्त हो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गई हो। श्यांग लिन की पत्नी को भी पहले से ज्यादा तसल्ली हुई और रास्ता पूछे बिना ही चुपचाप अपना सामान उठाकर चल दी। तब से वह लूचन में फिर नौकरानी का काम करने लगी।

लोग अब भी उसे श्यांग लिन की पत्नी के नाम से ही पुकारते थे।

लेकिन अब वह बिलकुल बदल गई थी। तीन ही दिन में मालकिन ने समझ लिया कि नौकरानी में अब पुरानी चुस्ती-फुर्ती नहीं रही। अब उसे बात भी भूल जाती थी। चेहरे पर ऐसी मुर्दनी छा गई थी कि स्फूर्ति और मुस्कान का वहाँ कोई आभास ही न रहा था। चाची अपना असंतोष प्रकट कर रही थीं। श्यांग लिन की पत्नी आई तो चाचा के माथे पर फिर वही पुराने बल उभर आए। लेकिन अच्छी नौकरानी न मिल सकने की कठिनाई देखते हुए विशेष आपत्ति नहीं की। परंतु अकेले में उन्होंने चाची को समझा दिया कि ये लोग दयनीय तो दिखाई पड़ते हैं, परंतु घर के लिए सुलच्छने नहीं होते। इधर-उधर के मामूली काम यह बेशक करे, परंतु पूजा-बलि की सामग्री इसे मत छूने देना। पूजा का भोग अपने हाथों ही बनाना होगा। पवित्र काम में इन लोगों का स्पर्श ठीक नहीं होता। इन लोगों का छुआ भोग पितर और देवता कैसे स्वीकार करेंगे।"

चाचा के यहाँ पितरों के श्राद्ध-बलि का आयोजन बहुत समारोह से होता था और पहले यह सब तैयारी श्यांग लिन की पत्नी ही करती थी। अब उसे कुछ करने को ही न था। जैसे ही बड़ी मेज़ कमरे के बीचों-बीच रख दी जाती और पर्दा लगा दिया जाता तो श्यांग लिन की पत्नी मदिरा की प्यालियाँ और चापस्टिक पुरानी रीति के अनुसार पहले की तरह सजाने लगती।

"श्यांग लिन की पत्नी, तू रहने दे। यह मैं कर लूँगी।" चाची जल्दी से बोल उठीं।

श्यांग लिन की पत्नी ने घबराकर हाथ खींच लिया और धूप-दीप की सामग्री उठाने लगी।

"श्यांग लिन की पत्नी; तू रहने दे, मैं कर लूँगी।" चाची तुरंत बोल उठीं।

श्यांग लिन की पत्नी के पास करने को कुछ नहीं रहा तो बेचारी खोई-खोई-सी कभी इधर जाती कभी उधर। दिन भर रसोई में बैठी रही और चूल्हा सुलगाती रही।

सब लोग पुकारते तो अब भी उसे श्यांग लिन की पत्नी के नाम से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही थे, पर ध्वनि कुछ बदल गई थी। लोग उससे बोलते-चालते तो अब भी थे, पर ढंग बदल गया था। श्यांग लिन की पत्नी इससे बेखबर, सामने घूरती हुई, सबको अपनी कहानी सुनाती रही, दिन हो या रात, उसकी कहानी का तार कभी न टूटता:

"मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच...." श्यांग लिन की पत्नी सुनाने लगती: "मैं तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती है तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ नहीं पाते और गाँव में घुस आते हैं। मैं क्या जानती थी कि बसंत में भी जानवर गाँव में आ घुसेंगे। मुँह अँधेरे उठी, किवाड़ खोले, टोकरी में फलियाँ भर अपने आ माओ को पुकारा, "बेटा देहरी पर बैठकर इन्हें छील दे।" लड़का बहुत कहना मानता था। मैं पिछवाड़े चली गई। ईंधन काटा, चावल धोकर चूल्हे पर रख दिए और आ माओ को पुकारा कि फलियाँ दे जा। कोई जवाब नहीं मिला। मैं दरवाज़े पर देखने आई तो क्या देखती हूँ कि फलियाँ धरती पर बिखरी पड़ीं हैं और आ माओ का कुछ पता नहीं। बच्चा खेलने के लिए पड़ोसियों के घर कभी नहीं जाता था। मैं सब जगह ढूँढ़ती फिरी, कुछ पता नहीं चला। मैं घबरा गई और उसे ढूँढ़ने के लिए लोगों को पुकारा। दोपहर तक इधर-उधर सब जगह ढूँढ़ने के बाद वे लोग घाटी में जा पहुँचे। वहाँ बच्चे का एक जूता कंटीली झाड़ी में उलझा टँगा मिला। लोगों ने कहा, "बेचारा लड़का गया। उसे भेड़िया ले गया।" वही बात थी। लोग और आगे बढ़े तो लड़का भेड़िये की माँद में पड़ा हुआ था। भेड़िये ने उसका पेट खा लिया था। नन्हीं-सी मुट्ठी में वह अब भी टोकरी पकड़े हुए था।...." इतना कहते-कहते श्यांग लिन की पत्नी रोने लगती और फिर उसका गला रुँध जाता।

श्यांग लिन की पत्नी की कहानी में इतना दर्द था कि पुरुष सुनते तो हँसना छोड़ उदास हो जाते और स्त्रियाँ सुनतीं तो उस स्त्री के प्रति उनकी हिकारत की भावना धुल जाती और सहानुभूति में उनके भी आँसू बह जाते। जो बूढ़ी स्त्रियाँ गली में उससे यह बात नहीं सुन पाईं वे पूरी बात सुन पाने के लिए ढूँढ़ती उसके यहाँ आतीं। श्यांग लिन की पत्नी अपनी कहानी सुनाकर रो पड़ती तो बूढ़ियाँ भी रुलाई न रोक पातीं। फिर संतोष से आहें भरती आपस में चर्चा करती हुई अपने-अपने घर लौट जातीं।

श्यांग लिन की पत्नी किसी से कुछ नहीं चाहती थी बस यही कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ भी तीन-चार लोग मिलें वह अपनी दर्दभरी कहानी बार-बार सुना देना चाहती थी। कुछ ही दिनों में आसपास के सभी लोगों ने वह कहानी इतनी बार सुनी कि अब बहुत दयालु, ईश्वरभक्त स्त्रियाँ भी उसकी कहानी सुनतीं तो उनकी आँखों में आँसू न आते। अंत में यह कहानी लोगों को अक्षरश: याद हो गई और लोग वह कहानी सुनने से ऊबने और बचने लगे।

"मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच...." श्यांग लिन की पत्नी शुरू करती।

"हाँ, हाँ, तुम तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती है तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ नहीं पाते और गाँव में घुस आते हैं।" यह कहकर लोग तुरंत उसे टोक देते और मुँह फेर कर चल देते।

श्यांग लिन की पत्नी मुँह खोले, सूनी-सूनी आँखें फाड़े उनको जाते देख खड़ी रह जाती, फिर चल देती, जैसे अपनी कहानी से स्वयं ही ऊब गई हो। फिर भी वह इसी कोशिश में रहती कि किसी भी प्रसंग से चाहे डलिया की बात उठे अथवा बच्चों की चर्चा हो, वह उसे अपने आ माओ की कहानी पर ले आए। अगर किसी दो-तीन वर्ष के बच्चे पर नज़र पड़ जाती तो बोल उठती : "हाय, मेरा आ माओ होता तो ठीक इतना ही बड़ा होता।...."

श्यांग् लिन की पत्नी की आँखें और चेहरा ऐसा हो गया था कि बच्चे देखकर डर जाते और माँ का आँचल पकड़ उसे आगे खींच ले जाते। बेचारी अकेली रह जाती तो उदास होकर दूसरी तरफ चल देती। उसकी मानसिक अवस्था से सभी लोग परिचित हो गए थे। लोग स्वयं ही किसी बच्चे की ओर संकेत कर मुस्कान दबाकर कह देते, "श्यांग लिन की पत्नी, क्या कहती हो, तुम्हारा आ माओ होता तो क्या ठीक इतना बड़ा न हो गया होता?"

श्यांग लिन की पत्नी शायद यह बात नहीं समझ सकी कि उसकी कहानी लोगों के बीच अब पुरानी पड़ चुकी है और उनके दिलों में इस कहानी के प्रति एक ऊब व तिरस्कार की भावना पैदा हो चुकी है। वह यह बात जान गई थी कि लोगों की मुस्कान में ठंडा विद्रूप छिपा है और कि उसे अपनी कहानी अब नहीं सुनानी चाहिए। चुपचाप उनकी तरफ देखती रह जाती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लूचन में नववर्ष के उत्सव की तैयारियाँ 12वें महीने की 20वीं तारीख से ही शुरू हो जाती हैं। उस वर्ष चाचा के यहाँ अस्थाई नौकर रखना ज़रूरी हो गया। एक नौकर से भी काम नहीं चल सकता था, इसलिए एक नौकरानी भी रख लेनी पड़ी। नौकरानी का नाम आमा ल्यू था। पूजा के लिए मुर्गियाँ और कलहंस मारना ज़रूरी था, परंतु आमा ल्यू शुद्ध शाकाहारी थी जो जीव-हत्या नहीं कर सकती थी और पूजा के बर्तन-भाँडे ही माँज सकती थी। श्यांग लिन की पत्नी के लिए चूल्हा सुलगा देने के अतिरिक्त और कोई काम न था इसलिए एक कोने में बैठी चुपचाप आमा ल्यू को पूजा के बर्तन-भाँड़े माँजते देखती रहती। हल्की-हल्की बर्फ पड़ने लगी थी।

श्यांग लिन की पत्नी आकाश की ओर देखती हुई आह भर जैसे अपने आपसे ही बोल उठी, ''मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी।....''

''श्यांग लिन की पत्नी, तुम फिर शुरू हो गईं....'' आमा ल्यू ने परेशान होकर उसे टोक दिया। बोली, ''यह तो बता, तेरे माथे पर जो चोट का निशान है, वह तभी लगा था न?''

''हूँ,'' श्यांग लिन की पत्नी ने अस्पष्ट-सी हामी भरी।

''यह बता, तू राज़ी कैसे हो गई?''

''राज़ी?''

''और नहीं तो क्या? राज़ी कैसे नहीं थी? नहीं थी तो....''

''अरे, तू क्या जाने उसमें कितना ज़ोर था?''

''मैं नहीं मानती। उसमें कितना भी ज़ोर रहा हो, तू राज़ी नहीं होती तो क्या कर लेता? तू खुद राज़ी थी, अब बहाना बना रही है कि उसमें बहुत ज़ोर था।''

''क्यों.... तू ही आजमाकर देख लेती तो जान जाती।'' श्यांग लिन की पत्नी मुस्करा दी।

आमा ल्यू के झुर्रीदार चेहरे पर भी मुस्कान खेलने लगी और वह अखरोट की तरह सिकुड़ गया। काले मनकों जैसी उसकी आँखें श्यांग लिन की पत्नी के माथे पर गईं और फिर उसकी आँखों में गड़कर टिकी रह गईं। श्यांग लिन की पत्नी को सहसा झेंप आ गई, उसकी मुस्कान मिट गई। वह आकाश से गिरती बर्फ को देखने लगी।

''श्यांग लिन की पत्नी, यह भला काम नहीं हुआ।'' आमा ल्यू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहस्यपूर्ण स्वर में बोली, "इससे तो अच्छा था, तू कुछ और अड़ी रहती या सिर फोड़ कर मर जाती। हालाँकि दूसरे मर्द के साथ तू दो वर्ष भी नहीं रही, लेकिन यह बहुत बड़ा पातक तो हो गया। जानती है तू मरकर जब नरक में जाएगी तो दोनों मर्दों के प्रेत तेरे लिए आपस में लड़ेंगे। तू किसकी मानेगी? यमराज तुझे चीर कर दो टुकड़े कर देंगे, दोनों में आधी-आधी बाँट देंगे। ऐसा ही होगा....।"

श्यांग लिन की पत्नी ने सुना तो आतंक से स्तब्ध रह गई। पहाड़ी इलाके में किसी ने उससे ऐसी बात कभी नहीं कही थी।

"मैं कहती हूँ तू अभी से इसका उपाय कर ले। संरक्षक-देवता के मंदिर में अपने नाम की एक देहरी खरीदकर रखवा ले जिस पर हज़ारों आदमी पाँव रखेंगे। यदि इसी जीवन में तेरा पातक धुल जाएगा तो उस लोक में दुःख उठाने से बच जाएगी।"

श्यांग लिन की पत्नी उस समय तो कुछ नहीं बोली पर आमा ल्यू की बात उसके मन में लग गई और सुबह उठी तो आँखों के नीचे बड़ी-बड़ी झाइयाँ पड़ गई थीं। सुबह का खाना खाकर गाँव के पश्चिम में संरक्षक-देवता के मंदिर में गई और पुजारी से एक देहरी माँगी। पुजारी ने पहले तो उसे दुत्कार दिया लेकिन बहुत रोई-धोई तब कहीं पुजारी मुश्किल से बारह हज़ार ताँबे के सिक्कों के बदले देहरी देने के लिए तैयार हुआ।

श्यांग लिन की पत्नी अपनी कहानी के प्रति लोगों की उपेक्षा देख बहुत दिन पहले से ही किसी से बोलती नहीं थी। परंतु आमा ल्यू से हुई उसकी बात की ख़बर गाँव में फैली तो लोगों को फिर खिलवाड़ करने की सामग्री मिल गई और लोग उसे छेड़कर बुलवाने के लिए आने लगे। अब प्रसंग श्यांग लिन की पत्नी के माथे पर बना चोट का दाग बन गया।

"श्यांग लिन की पत्नी, सच बता, ऐसी बात के लिए तू राज़ी कैसे हो गई?" कोई पूछ बैठता।

"बड़े अफसोस की बात है, तूने व्यर्थ में अपना सिर क्यों फोड़ लिया था?" कोई और उसके चोट के निशान पर नज़र डालते हुए पूछ बैठता।

श्यांग लिन की पत्नी लोगों के लहजे और मुस्कान से जान गई थी कि लोग उससे मसखरी करने के लिए आ रहे हैं इसलिए वह किसी को उत्तर न देती और चुपचाप बिना सिर उठाए सामने देखती रह जाती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माथे पर चोट के निशान को, जो लोगों की दृष्टि में कलंक का चिह्न बन गया था, ले सारा दिन चुप रहती और भाग-दौड़ करने, झाड़ू-बुहारी करने, साग-तरकारी काटने, चावल धो लाने में लगी रहती। लगभग एक वर्ष और बीत गया तो उसने चाची से अपना हिसाब करा, पूरी रकम को चाँदी के बारह डालरों में बदलवा कर मालकिन से कस्बे के पश्चिम में जाकर रहने की इजाज़त माँगी। लेकिन तुरंत ही लौट भी आई और लौटी तो बहुत संतुष्ट लग रही थी। आकर प्रसन्नता से चाची को बताया कि वह देहरी के लिए दक्षिणा दे आई है।

शीतकाल में पूर्वजों की बलि का समय आ गया तो श्यांग लिन की पत्नी अब खूब उत्साह और लगन से काम में जुट गई। उसने चाची को पूजा के बर्तन लाते और आ न्यू के साथ मेज़ उठाकर लाते देखा तो स्वयं मदिरा की प्यालियाँ और चापस्टिकें उठा लाने के लिए जाने लगी।

"रहने दे, रहने दे, श्यांग लिन की पत्नी।" चाची ने तुरंत पुकारकर टोक दिया।

श्यांग लिन की पत्नी ने अपने हाथ पीछे खींच लिए, जैसे तपता हुआ लाल लोहा हाथों को छू गया हो। चेहरा एकदम फक्क पड़ गया और धूप-दीप का सामान उठा लाने की बजाय सन्न खड़ी रह गई। जब चाचा धूप-दीप करने के लिए अंदर आए तो उन्होंने उसे वहाँ से चली जाने के लिए कहा। श्यांग लिन की पत्नी एक ही दिन में कितनी बदल गई थी। उसकी आँखें धँस गईं, लगता कि शरीर की सब शक्ति खो बैठी है। वह बेबात ही घबरा जाती और न सिर्फ़ अँधेरे से या किसी की छाया से डरने लगी बल्कि आदमी की सूरत देखते ही भयभीत हो जाती। मालिक या मालकिन का सामने होते ही वह ऐसे सिमट जाती जैसे चुहिया बिल से निकल आए और उजाला देखकर डर जाए। दिन भर कोने में काठ के कुन्दे की तरह चुप बैठी रहती। छह महीने में सिर के बाल सफेद हो गए और उसकी स्मृति इतनी कमज़ोर हो गई कि भात धोने के लिए जाना भी भूल जाती।

"श्यांग लिन की पत्नी को न जाने क्या हो गया है? इस बार तो उसे रखकर ही पछताए।" चाची उसके सामने ही कह देतीं कि सुनकर शायद कुछ संभल जाए।

श्यांग लिन की पत्नी की अवस्था सुधरी नहीं, सुधरने की कोई आशा भी नहीं दिखाई देती थी। चाचा-चाची ने उसे वेइ की बुढ़िया के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहाँ भेंज देने का फैसला किया। मैं लूचंन में था तो अभी यह बात चल ही रही थी, परंतु बाद की घटनाओं से जान पड़ता है कि उसे निकाल ही दिया होगा। यह कह सकना कठिन है कि श्यांग लिन की पत्नी को जब चाचा ने काम से हटा दिया, तभी वह भीख माँगने लगी या पहले वेइ की बुढ़िया कें यहाँ गई और बाद में भीख माँगने लगी।

समीप ही छूटे पटाखों की आवाज़ से सहसा मेरी नींद टूट गई। लैंप के मद्धिम प्रकाश और पटाखों की गूँज से समझा कि चाचा के यहाँ पूजा की बलि दी जा रही थी और कि पौ फटने ही वाली थी। अधनींदे में मैंने सुदूर में अनवरत पटाखों की आवाज़ सुनी। सारा शहर आकाश में शोर के घने बादलों से घिर गया था जिसमें गिर रही बर्फ की पंखुड़ियाँ भी मिल गईं थीं। शोर के इस घटाटोप में मन कुछ हल्का जान पड़ रहा था। पिछले दिन से मेरे मस्तिष्क पर चिंता और आशंका का जो बोझ बना हुआ था, उत्सव की धूमधाम उसे न जाने कहाँ उड़ा ले गई। विश्वास हो गया कि आकाश और पृथ्वी के देवताओं ने पूजा की बलि और धूप-दीप को स्वीकार कर लिया है और वे आकाश में मुग्ध होकर लूचन निवासियों को चिर सुख-सौभाग्य का आशीर्वाद देने के लिए तत्पर हो रहे हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतीत के लिए पछतावा

(च्वान शंग की टिप्पणियों से)

मैं चाहता हूँ, जैसे भी बन पड़े, त्ज़ च्विन के लिए और अपने लिए अपने अवसाद और दु:ख-दर्द की कहानी लिख डालूँ।

छात्रावास के उपेक्षित कोने में यह गंदी कोठरी कितनी सूनी और वीरान है। समय जैसे उड़ता जाता है। ठीक एक वर्ष पहले मेरा त्ज़ च्विन से प्रेम हुआ जो इस वीराने और सूनेपन में मेरा एकमात्र अवलंब बना। लौटकर आया तो दुर्भाग्य से फिर वही कमरा खाली मिला। वही टूटी खिड़की, खिड़की के बाहर लोकस्ट का सूखा-सा पेड़ और उसके बाहर वही विस्तारिया की बेल, कमरे में वही चौकोर मेज़। सीलन से गिरे पलस्तर वाली दीवारों और उसके साथ लगे लकड़ी के तख़्त में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। त्ज़ च्विन से पहले जिस तरह रहता था आज भी रात में अकेला घड़ियाँ गिनता हूँ। पिछला साल स्मृति से इस तरह पुँछ गया है मानो था ही नहीं। लगता है मैं इस गंदे कमरे को छोड़कर कहीं गया ही न होऊँ, जैसे मैंने प्रेम की गली में ऊँची आशाएँ लेकर अपना छोटा-सा नीड़ बसाया ही न हो।

इतना ही नहीं। एक वर्ष पूर्व की और अब की इस ख़ामोशी और खालीपन में एक अंतर है। तब यह आशा और प्रतीक्षा का सहारा था, त्ज़ च्विन के आने ती प्रतीक्षा। ईंट के फर्श पर ऊँची एड़ी की टक-टक्र सुनकर मेरे रक्त में बिजली-सी दौड़ जाती थी। त्ज़ च्विन का प्यारा पीतवर्ण गोल चेहरा सामने आ जाता। उसके कपोलों पर मुस्कान के चुमचे पड़े रहते, गोरी-गोरी दुबली बाहें, धारीदार सूती कपड़े का ब्लाउज़ और काली छोटी स्कर्ट। त्ज़ च्विन लोकस्ट के सूखे-से पेड़ से कोई नया पत्ता या विस्तारिया की बेल से जामुनी फूलों का गुच्छा लाकर मुझे दिखाती।

परंतु अब तो वही पुराना सन्नाटा और वीरानी है। त्ज़ च्विन अब लौटकर नहीं आएगी—कभी नहीं आएगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब त्ज़ च्विन न रहती तो उस गंदी कोठरी में मेरे लिए अँधेरा हो जाता। ऊब से बचने के लिए मैं कोई पुस्तक उठा लेता—साहित्य की हो या विज्ञान की और उसे पढ़ता रहता जब तक यह अहसास नहीं होता कि दर्जनो पृष्ठ उलट जाने पर भी एक शब्द तक अंदर नहीं गया। मेरी सारी सुध कानों में ही समाई रहती और सड़क पर आते-जाते लोगों के कदमों की आहट कानों में गूँजती रहती, मैं त्ज़ च्विन के कदनों की आहट पहचान लेने की प्रतीक्षा में रहता। प्रायः मैं त्ज़ च्विन के कदमों की आहट पहचान लेता। जान पड़ता, उसके कदमों की आहट समीप आ रही है और वह पहले तो अधिक स्पष्ट सुनाई देती, फिर क्षीण होते-होते अनेक कदमों की आहटों में विलीन हो जाती। होस्टल के नौकर के लड़के के कदमों की आहट से मुझे बहुत परेशानी होती थी क्योंकि वह कपड़े के तल्ले वाला जूता पहनता था और उसके कदमों की आहट त्ज़ च्विन से बिलकुल भिन्न थी। साथ की कोठरी में, चेहरे पर क्रीम-पाउडर पोते रहने वाले छोकरे से भी मुझे बहुत घृणा थी क्योंकि वह त्ज़ च्विन जैसे ही चमड़े के जूते पहनता था और उसके कदमों की आहट से जिजुन के कदमों का धोखा हो जाता।

कहीं उसके रिक्शा को तो कुछ नहीं हो गया? या रास्ते में किसी मोटर-लारी से टकरा तो नहीं गई?....

अधीर होकर उसे ढूँढ़ने के लिए मैं टोप पहनकर चल देने को तैयार हो जाता। परंतु उसके चाचा के श्राप का ख़याल आ जाता तो ठिठक जाता।

सहसा त्ज़ च्विन के कदमों की आहट समीप आती सुनाई पड़ जाती और उसके स्वागत के लिए कोठरी से बाहर निकल ही रहा होता कि त्ज़ च्विन मुस्कराती हुई विस्तारिया की झाड़ी के नीचे पहुँच जाती। चाचा के घर में शायद उससे बदसलूकी नहीं की गई। मेरा उद्वेग शांत हो जाता और कई पल हम दोनों मौन एक दूसरे को अपलक देखते रहते। फिर वह गंदी कोठरी मेरी उद्घोषणाओं से गूँजने लगती, पारिवारिक बंधनों के अत्याचार, रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़ डालने की आवश्यकता, नर-नारी की समानता, इब्सन, टैगोर और शैली....। त्ज़ च्विन गर्दन झुकाकर हामी भरती जाती और उसके चेहरे पर मुस्कान आ जाती, नेत्रों में शैशव का विस्मय चमकने लगता। कोठरी की दीवार पर मैंने एक पत्रिका से काट कर शैली का चित्र लटका दिया था। चित्र बहुत ही अच्छा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था लेकिन जब मैंने चित्र की ओर उसका ध्यान दिलाया तो उड़ती-सी नज़र चित्र पर डाल कर उसने शर्म से गर्दन झुका ली। कुछ पुराने संस्कार अभी तक त्ज़ च्विन के मन में जमे हुए थे। ख़याल आया, उस चित्र के बजाय शैली का दूसरा चित्र—जल में डूबे शैली की मृत्यु का चित्र या इब्सन का चित्र वहाँ लटका दूँ। परंतु चित्र को बदल नहीं पाया। अब तो वह चित्र भी नहीं रह गया।

"मैं खुद अपनी स्वामिन हूँ। उन्हें मेरे मामले में बोलने का कोई अधिकार नहीं है।"

त्ज़ च्विन ने कुछ देर तक विचारमग्न, मौन रहकर स्पष्टता और दृढ़ता से कहा। फिर हम लोग उसके चाचा और पिता के विषय में बातें करने लगे। पिता दूर गाँव में थे और चाचा यहीं शहर में। हम दोनों एक-दूसरे को छह महीने से जानते थे। त्ज़ च्विन से मैंने कोई बात छिपाकर नहीं रखी थी और वह मेरे बारे में सब कुछ जानती थी। उसके इन शब्दों ने मुझे ऊपर से नीचे तक झकझोर दिया, वे शब्द कई दिनों तक मेरे कानों में गूँजते रहे। यह सोचकर मेरे उल्लास की सीमा नहीं थी कि चीन की नारी अब उतनी असहाय और अबला नहीं रही जैसा निराशावादियों ने उसे मान रखा था। विश्वास हो गया कि चीन की नारी निकट भविष्य में समाज को अपनी शक्ति का पूरा चमत्कार दिखा देगी।

त्ज़ च्विन को विदा करने जाता तो सदा ही उससे कुछ कदम पीछे चलता था। जब भी हम लोग बाहर जाते, पड़ोस की खिड़की में एक बूढ़े का चेहरा काँच के पीछे इस कदर चिपका दिखाई दे जाता कि बूढ़े की नाक काँच पर दबकर चपटी हो जाती और दोनों ओर दबी मूछें फैल कर चिपक जातीं जैसे कोई मछली काँच पर चिपका दी गई हो। दूसरे आँगन में पहुँचते तो खिड़की के पीछे उस छोकरे का क्रीम-पाउडर से पुता चेहरा दिखाई दे जाता। त्ज़ च्विन को इनकी रत्तीभर परवाह नहीं थी, वह निर्भय होकर गर्दन उठाए चली जाती। मैं भी गर्व के साथ लौट आता।

"मैं खुद अपनी स्वामिन हूँ। उन्हें मेरे मामले में बोलने का कोई अधिकार नहीं है।" त्ज़ च्विन का निश्चय स्पष्ट और दृढ़ था। उसे न चेहरे पर क्रीम-पाउडर पोते छोकरे का और न काँच पर चिपकी नाक का कोई भय था।

मैंने किन शब्दों में उसके प्रति अपने हृदय का सच्चा भावुक प्रेम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिव्यक्त किया, याद नहीं। अब तो क्या घटना के कुछ समय बाद ही यह बता सकना कठिन था कि मैंने किन शब्दों में अपने भावों को उसके सामने प्रकट किया था। उसी रात जब मैं दिन की घटना याद कर रहा था तो मुझे कुछ टुकड़े ही याद आए। दोनों को साथ रहते महीना भर या दो ही मास बीते होंगे कि हमारी वे बातें पुराने मधुर स्वप्न की भाँति बिलकुल विस्मृत हो गईं। हाँ, यह मुझे अब भी याद है कि त्ज़ च्विन से स्वीकृति पाने के लगभग दो सप्ताह पूर्व मैं निरंतर यही सोचता रहा था कि क्या करना होगा, क्या कहना होगा, और यदि मेरा प्रणय-निवेदन अस्वीकार कर दिया गया तो कैसा व्यवहार उचित होगा। परंतु समय आने पर वह सब विचार व्यर्थ ही रहा। उस समय उत्तेजना में, बिना सोचे वही कर बैठा जो प्रायः सिनेमा के पर्दे पर दिखाई देता है। बाद में अपने उस व्यवहार की याद से झेंप भी लगती, परंतु उसकी स्मृति अब भी स्पष्ट है। आज भी वह स्मृति मेरे अंधकारमय जीवन की कोठरी में एकमात्र प्रकाश है—त्ज़ च्विन का हाथ मेरे हाथ में था, मेरी आँखों में आँसू ... मैंने एक घुटना टेक दिया था।....

त्ज़ च्विन ने क्या कहा या किया था उस समय मैं नहीं देख पाया। बस इतना याद है कि उसने मेरा प्रणय-निवेदन स्वीकार कर लिया था। त्ज़ च्विन का चेहरा पहले तो पीला पड़ गया, फिर शनै-शनै उस पर गुलाबी झलक आने लगी और थोड़ी देर में उसका चेहरा लाली से दमक उठा—ऐसी आभा जो मैंने उससे पहले या बाद में कभी नहीं देखी। उसके शिशु के समान सरल नेत्रों में अवसाद, उल्लास और भय एक साथ प्रकट हुए और हालाँकि वह मुझसे आँखें चुराए थी लेकिन जान पड़ता था, मधुर बेचैनी की गूढ़ता में वह खिड़की से उड़ जाना चाहती है। तब अनुभव किया कि उसने मेरा निवेदन स्वीकार कर लिया है, नहीं जानता किन शब्दों में, कुछ बोली भी थी या नहीं।

परंतु त्ज़ च्विन को उस दिन की बात का एक-एक शब्द ज़बानी याद था। वह मेरे मुँह से निकला एक-एक शब्द मुझे सुना देती। मेरी प्रत्येक भावभंगिमा का ब्यौरेवार बखान करती मानो उसने वह सब सिनेमा के पर्दे पर देखा हो। उसमें वह फड़काऊ दृश्य भी था जो किसी भी चलचित्र में होता है और जिसे मैं भूल जाना चाहता था। रात्रि के एकान्त में हम वे बातें याद करने लगते। त्ज़ च्विन कुछ पूछ बैठती—बताओ तब तुमने क्या-क्या कहा था? वह छूटी हुई बातों की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याद दिलाती जाती मानो मैं एक अयोग्य विद्यार्थी था जो कितनी ही बातें भूल जाता था या गलत कह जाता।

शनै-शनै उन स्मृतियों की चर्चा कम होने लगी। परंतु जब भी त्ज़ च्विन अपनी कल्पना में डूबी, शून्य में दृष्टि लगाए रहती, उसके गालों पर दबी मुस्कान से चुमचे-से बन जाते। मैं समझ लेता, वह मन-ही-मन वही पुराना पाठ दुहरा रही है। मुझे झेंप अनुभव होने लगती कि वह स्मृति के चित्रपट पर मेरे उसी हास्यास्पद व्यवहार को देख रही है। निश्चय ही वही देख रही है, बार-बार उसे ही देखना चाहती है।

लेकिन उसे उसमें कुछ लज्जास्पद नहीं लगता था। मुझे वह व्यवहार हास्यास्पद यहाँ तक कि लज्जास्पद जान पड़ता था, परंतु उसके लिए मज़ाक। मैं निश्चित जानता था कि इसका कारण त्ज़ च्विन का मेरे प्रति सच्चा और आवेगपूर्ण अनुराग था।

पिछले वर्ष बसंत के आख़िरी दिन हमारे सबसे सुखद और व्यस्त दिन थे। मेरा मन भी तब उतना उद्विग्न नहीं था, अलबत्ता कभी-कभी कुछ आशंकाएँ सिर उठाने लगतीं। उन्हीं दिनों दोनों सड़क पर साथ-साथ घूमने भी लगे। कई बार घूमने के लिए पार्क की ओर चले जाते, परंतु ज़्यादातर घूमना मकान की खोज में ही होता था। सड़क पर कौतूहलपूर्ण निगाहों, व्यंग्यभरी मुस्कानों और अशिष्ट कटाक्षों के प्रति मैं सचेत रहता। मैं बेहद सावधान रहता और कदम-कदम पर आत्माभिमान और साहस को जगाता रहता। वह उस सबसे बेखबर नितांत निर्भय थी। वह सर्वथा निर्द्वन्द्व व शांत होकर चलती रहती, जैसे सड़क पर और किसी का अस्तित्व ही न हो।

मकान मिल जाना साधारण बात नहीं थी। लोग प्रायः किसी-न-किसी बहाने टाल देते। कई मकान हमें ही पसंद नहीं आए। शुरू में मकान को लेकर हमारी अपनी कल्पना थी, लेकिन दरअसल अधिकांश मकान रहने लायक थे ही नहीं। आख़िरकार थककर तैयार हो गए कि जैसी-तैसी जो भी जगह मिल जाए ले लेंगे। बीस-बाईस मकान देख लेने के बाद गुज़ारे लायक जगह मिल सकी। लकी गली में एक छोटे से मकान में दो कमरे मिल गए जिसका दरवाज़ा उत्तर की ओर था। मकान मालिक छोटा-मोटा सरकारी कर्मचारी था। आदमी समझदार था। बीच के और दूसरी ओर के कमरे में उसका परिवार रहता था। परिवार में उसकी पत्नी, चंद महीने की एक बच्ची और एक देहातिन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकरानी थी। यदि बच्ची न रोए तो शांति ही शांति व्याप्त रहती थी।

मैंने जो पैसे बटोरे थे वे मामूली फर्नीचर जुटाने में ही निकल गए इसलिए त्ज़ च्विन ने अपनी सोने की अँगूठी और कान के बुंदे बेच दिए। मैंने उसे बहुत रोका लेकिन वह ज़िद करने लगी तो मुझे मान लेना पड़ा। मैं समझता था कि नए घर में अपना हिस्सा डाले बिना उसे संतोष न होता।

अपने चाचा से त्ज़ च्विन ने झगड़ा कर उसे इतना नाराज़ कर दिया कि उसने उससे सारे संबंध तोड़ लिए। मेरे भी कई मित्र इस बात से नाराज़ हो गए थे कि मैंने उनकी सलाह नहीं मानी। उनका ख़याल था कि मैं पछताऊँगा, या उनके मन में ईर्ष्या थी। इससे हमारे घर में और अधिक शांति व्याप गई। दफ्तर से काफी देर में सूर्यास्त के बाद ही छुट्टी मिलती थी और रिक्शावाला भी धीरे-धीरे चलता था, फिर भी मिलन की घड़ी आ ही जाती थी। दोनों कई पल तक मौन आँखें मिलाए एक-दूसरे को निहारते रहते, कुछ देर आत्मीयता से बातचीत होती और फिर मौन बैठे रहते। हम चुपचाप गर्दन झुकाए बैठे रहते और मन में कोई बात नहीं होती। धीरे-धीरे वह मेरे लिए एक खुली किताब की तरह थी जिसे मैं पूरी तरह जान गया था। तीन ही सप्ताह के दौरान हमारे बीच शेष अदृश्य अंतर और व्यवधान भी मिट गए। पहले इन अंतरों व व्यवधानों का कोई आभास नहीं था, परंतु अनुभव से जान गया कि ये अंतर व व्यवधान मामूली नहीं हैं।

कुछ ही दिनों में त्ज़ च्विन और भी अधिक प्रफुल्लित दिखलाई देने लगी। उसे फूलों का शौक नहीं था क्योंकि मैं बाज़ार से फूलों के जो दो गमले ले आया था वे चार दिन तक एक कोने में पड़े-पड़े ही सूख गए। सारे कामों की तरफ ध्यान दे सकता, इतना समय मुझे भी नहीं था। अलबत्ता उसे पशु-पक्षी पालने का बड़ा शौक था जो हो सकता है, उसने मकान मालकिन से लिया हो। अभी एक महीना भी नहीं बीता था कि वह चार चूजे ले आई जो मालकिन के एक दर्जन चूजों में मिलकर आँगन में दाना चुगते रहते। लेकिन दोनों को अपने-अपने चूजे पहचान लेने में कोई दुविधा नहीं होती थी। फिर एक छोटा-सा चितकबरा पिल्ला भी ले आई। पिल्ले का कोई नाम तो पहले भी रहा होगा लेकिन त्ज़ च्विन ने उसका नया नाम रख दिया—आ स्वेइ। मुझे नाम विशेष जँचा नहीं, पर मैं भी उसे इसी नाम से पुकारने लगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह आवश्यक है कि प्रेम का नवीकरण, विकास और प्रतिफलन होता रहे। यह बात मैंने त्ज़ च्विन से कही तो उसने सोचकर सहमति में गर्दन हिला ली।

ओह! हमारी वे संध्याएँ कितनी सुखद व शांतिपूर्ण थीं।

सुख-शांति को चिरस्थाई बना सकने के लिए उनका संवर्द्धन और पोषण होता रहना चाहिए। जिन दिनों हम लोग होस्टल में थे तो कभी-कभी आपस में मतभेद या गलतफहमी हो जाती थी। लेकिन लकी गली में आने पर वे भी ख़त्म हो गए। हम दोनों लैम्प के प्रकाश में पास-पास बैठे रहते, पुरानी बातों की चर्चा कर लेते और आपस में छोटे-मोटे झगड़ों के समाप्त हो जाने के बाद अटूट ऐक्य के सुख का रस लेते रहते।

त्ज़ च्विन का जिस्म भरने लगा और गालों पर सुर्खी आ गई। परंतु दुख की बात यह थी कि वह सदा ही गृहस्थी के काम में उलझी रहती। उसे कुछ देर बैठ कर बातचीत के लिए, बैठकर कुछ पढ़ने या सैर-सपाटे के लिए बाहर जा सकने तक की फुरसत नहीं थी। सोचने लगे, नौकरानी रख ली जाए तभी ठीक होगा।

एक और बात से मेरा मन खिन्न हो जाता जब मैं संध्या समय दफ्तर से घर लौटकर देखता त्ज़ च्विन अपनी थकावट और उदासी छिपाने का यत्न कर रही है। मेरा दिल रखने के लिए वह मुस्कराने का यत्न करने लगती तो मेरे लिए और भी असह्य हो जाता। गनीमत थी कि मैं उसकी उदासी का कारण जान गया। मकान मालकिन से उसकी कुछ कहा-सुनी हो जाया करती थी और झगड़े का कारण थे चूजे। परंतु मुझसे यह बात छिपाने की क्या आवश्यकता थी? सोचा, अपना अलग मकान हो तभी चैन मिल सकता है। ऐसे स्थान में गुज़ारा संभव नहीं।

मेरी दिनचर्या निश्चित थी। सप्ताह में छह दिन नियमित रूप से दफ्तर जाता और संध्या समय लौटता। दफ्तर में अपनी मेज़ पर बैठकर अंतहीन सरकारी कागज़ात और पत्रों की प्रतिलिपियाँ बनाता रहता। घर लौटकर गृहस्थी के काम में भी कुछ सहायता देता। चूल्हा सुलगाने, भात राँधने या रोटी सेंक लेने में हाथ बटाता। उस तरह रसोई बनाने का काम मैं सीख गया था।

यहाँ मुझे होस्टल से अच्छा खाना मिल रहा था। त्ज़ च्विन में रसोई बनाने की विशेष योग्यता नहीं थी, पर अपनी ओर से वह अच्छा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खाना बनाने में कुछ भी उठा न रखती थी। उसको लेकर उसकी अतिरिक्त चिंता से मैं भी परेशान हो जाता। गृहस्थी के काम में वह इस तरह जुटी रहती कि पसीने से माथे पर बिखर आए केश चिपके रहते। दिन भर काम में लगे रहने से हाथ सख्त होने लगे थे।

इसके अतिरिक्त उसे चूजों और पिल्ले को चुगाने-खिलाने की भी चिंता लगी रहती थी। ....इस विषय में उसे किसी दूसरे का भरोसा नहीं था।

एक दिन मैंने कह ही दिया—गृहस्थी और रसोई के बोझ में तुम अपने आपको पीसे डाल रही हो। इससे तो बिना खाए रह जाना बेहतर है। वह मेरी ओर मौन देखती रह गई। उसके नेत्रों में कातरता का भाव था। मुझे हार मान लेनी पड़ी। त्ज़ च्विन गृहस्थी के बोझ में उसी प्रकार पिसती रही।

आख़िर एक दिन बिजली गिर ही पड़ी। बहुत समय से उसकी आशंका थी। दसवें मास की दसवीं तिथि के उत्सव से पूर्व की संध्या में त्ज़ च्विन साँझ के व्यालू के बाद बर्तन धो रही थी और मैं निठल्ला बैठा था कि किवाड़ों की साँकल खटकी। बाहर जाकर देखा, हमारे दफ्तर का चपरासी मेरे लिए एक टाइप किया हुआ काग़ज़ लेकर आया है। मैं जानता था कि उसमें क्या होगा। रोशनी के समीप जाकर पढ़ा:

कमिश्नर साहब के आदेशानुसार शी च्वान शंग को नौकरी से बर्खास्त किया जाता है।

सचिवालय,

9 अक्तूबर

जब हम लोग अभी होस्टल में ही थे तभी से इस बात की आशंका हो गई थी। क्रीम-पाउडर पोतने वाला लड़का कमिश्नर के साहबज़ादे की ताश की महफिल का यार था इसलिए निश्चित था कि वह अफवाहें उड़ाएगा और कुछ-न-कुछ मुसीबत खड़ी कर देगा। ताज्जुब यही था कि इतने दिनों तक टली रही। मैं तो पहले से ही तैयार था और उपाय भी सोच लिया था कि कहीं और क्लर्क की नौकरी कर लूँगा या कहीं ट्यूशन कर लूँगा या मुश्किल होने पर भी अनुवाद का काम ही कर लूँगा। 'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक से परिचय था और दो मास पूर्व उससे पत्र-व्यवहार भी हुआ था। फिर भी घबराहट तो हुई। सबसे दुख तो मुझे इस बात से हुआ कि त्ज़ च्विन जो बहुत साहसी थी, इसे सुन पीली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ गई। वह कुछ दिनों से दुर्बल कमज़ोर दिल भी होती जा रही थी।

"क्या चिंता है," उसने कहा, "कोई दूसरा काम ढूँढ़ लेंगे। हम...."

त्ज़ च्विन की बात आधी ही रह गई और मुझे उसमें विश्वास का अभाव लगा। जान पड़ा, कोठरी में प्रकाश बहुत कम हो गया है। आदमी भी क्या अजीब प्राणी है, ज़रा-ज़रा-सी बात से कातर हो जाता है। कुछ देर हम दोनों एक-दूसरे को देखते मौन बैठें रहे, फिर आगे की योजनाओं पर बात करने लगे। निश्चय कर लिया कि जेब के पैसों को बहुत सँभाल कर खर्च करेंगे, अख़बार में क्लर्क या अध्यापक की नौकरी के लिए विज्ञापन दे देंगे, 'स्वतंत्रता-प्रेमी' के संपादक को भी एक पत्र लिखेंगे, जिससे उसे अपनी कठिनाई बताकर सहायता के लिए अनुवाद स्वीकार करने के लिए अनुरोध करेंगे।

"काल करे सो आज कर। यह अभी ही क्यों न आरंभ कर दिया जाए।"

मैं सीधे मेज़ पर गया और वहाँ रखीं अचार, सिरके और तेल की बोतलें सरकाकर एक ओर कर दीं। त्ज़ च्विन ने टिमटिमाता लैम्प लाकर मेरे सामने रख दिया। पहले अख़बार में देने के लिए एक विज्ञापन लिख डाला। फिर सोचने लगा, अनुवाद के लिए कौन-सी पुस्तक अच्छी रहेगी। जब से मकान बदला था, पुस्तकों की ओर ध्यान ही नहीं गया था इसलिए उन पर खूब गर्द चढ़ी हुई थी। अंत में पत्र लिखा।

बहुत देर सोचना पड़ा, पत्र को किस प्रकार आरंभ करूँ। कुछ पंक्तियाँ लिखकर हाथ रुका और नज़र त्ज़ च्विन की ओर गई तो लैम्त के मद्धिम प्रकाश में उसका चेहरा बहुत कातर जान पड़ा। कभी कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी निर्भय और साहसी लड़की इस मामूली-सी घटना से इतनी डर जाएगी। सचमुच ही वह इधर दुर्बल होती जा रही थी—एक ही क्षण में इतना परिवर्तन नहीं आ सकता था। मन में बहुत व्याकुलता अनुभव हुई और कल्पना अपने निश्चिंततापूर्ण अतीत की ओर दौड़ गई। आँखों के सामने पुराने होस्टल की गंदी कोठरी आ गई। उस कोठरी को ठीक से देख भी नहीं पाया था कि ध्यान लैम्प के हल्के प्रकाश में सामने अधलिखे पत्र की ओर चला गया।

पत्र लिखने में काफी समय लग गया। वह लंबा भी काफी हो गया। पत्र लिखने में हुई थकावट से लगा कि पिछले दिनों मैं भी काफी कमज़ोर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो गया था। पत्र और विज्ञापन को सुबह डाक में छोड़ने के लिए एक ओर रख दिया। हम दोनों की आँखें मिलीं तो सहसा बल और साहस का अनुभव हुआ और मन में आशा और धैर्य लिए हम दोनों नए भविष्य के लिए तैयार हो गए।

वास्तव में इस आघात ने हमारे अंदर एक नई उमंग भर दी। दफ्तर की नौकरी जंगल से पकड़कर पिंजरे में बंद कर दिए गए पक्षी की भाँति थी जिसे मरने न देने के लिए कुछ दाना-दुनका डाल दिया जाता है, उसे पुष्ट रखने की चिंता नहीं की जाती। पिंजरे की निरंतर कैद में रहते-रहते वह पंखों का उपयोग ही भूल जाए और छोड़ दिए जाने पर भी वह उड़ नहीं पाए। अब मुझे पिंजरे के बाहर आने का अवसर मिला था। सोचा, इससे पहले कि मेरे पंख बेकार हो जाएँ, मैं एक बार फिर मुक्त आकाश में अपने पंखों की शक्ति से उड़ूँगा।

अख़बार में दिए गए विज्ञापन से तुरंत ही नौकरी पा जाने की आशा नहीं थी। अनुवाद कर सकना भी इतना आसान नहीं था। आप एक चीज़ पढ़ते हैं तो विश्वास होता है कि उसे समझ लिया, परंतु वही बात दूसरी भाषा में कहते समय कठिनाई अनुभव होने लगती है और रफ्तार काफी धीमी हो जाती है। परंतु निश्चय कर लिया कि इस कार्य को यथासामर्थ्य निबाहूँगा। दो सप्ताह में ही मेरी उँगलियों के स्पर्श से शब्दकोश के पन्नों के किनारे काले पड़ गए, समझ लीजिए कितनी तत्परता से काम में लगा हुआ था। 'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक ने आश्वासन दिया था कि उनकी पत्रिका अच्छी पांडुलिपि को साभार स्वीकार करेगी।

मुसीबत यह थी कि निर्विघ्न काम कर सकने के लिए मकान में कोई स्थान नहीं था और त्ज़ च्विन अब पहले जैसी शांत और सहनशील नहीं रही थी। कमरे में सब ओर बर्तन-भाँडे फैले रहते, धुआँ भरा रहता कि वहाँ जम कर काम कर सकना संभव नहीं था। पर दोष किसे देता? मैं किराया नहीं दे सकता था तो अच्छी जगह कहाँ मिल पाती? तिस पर घर में मौजूद पिल्ला और बड़ी मुर्गियाँ बन गए चूजे, जिनकी वजह से दोनों परिवारों में नित्य ही विवाद खड़ा हो जाता।

खाने-पकाने के चक्कर का भी अंत नहीं था। त्ज़ च्विन को उससे कभी फुर्सत न होती। मनुष्य खाने के लिए कमाता है और कमा सकने के लिए खाता है। परंत पिल्ले और मर्गियों के पेट भरने का भी तो सवाल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। त्ज़ च्विन को पढ़ने-लिखने से कोई सरोकार नहीं रह गया था और जान पड़ता था पिछला पढ़ा-लिखा सब भुला चुकी है। जब-तब खाने के लिए पुकार बैठती और उसे इतना भी ख़याल न आता कि मेरी एकाग्रता में खलल पड़ जाएगा। मैं कभी-कभी बैठते हुए अपनी खीज जाहिर करता लेकिन वह बिना ध्यान दिए चपड़-चपड़ खुद खाए चली जाती।

यह बात समझने में उसे सवा मास लग गया कि काम के समय खाने का आग्रह करके मेरे काम में विघ्न डालना उचित नहीं। यह जानकर शायद उसे कुछ बुरा भी लगा, पर चुप रह गई। इसके बाद काम की गति बढ़ गई और शीघ्र ही पचास हज़ार शब्दों के अनुवााद की पांडुलिपि पूरी कर डाली। अनुवाद को माँजना बाकी था और दो और छोटे-छोटे निबंधों के साथ 'स्वतंत्रता प्रेमी' को भेज देने का विचार था। फिर भी खाने की समस्या तो थी ही। ठंडे-बासी की तो उतनी परवाह नहीं थी, कम-से-कम पेट भर सकने योग्य तो होना ही चाहिए था। वैसे तो पूरे दिन बैठे-बैठे दिमाग़ी काम में लगे रहने से भूख भी कम हो जाती थी, फिर भी जो भात मिलता, उससे पेट नहीं भर पाता था। भात में से पिल्ले का भाग भी निकालना आवश्यक था। माँस तो कभी ही मयस्यर होता था, परंतु होने पर पिल्ले के लिए दे दिया जाता। ''देखो तो बेचारा कितना कमज़ोर है'', त्ज़ च्विन करुणा से द्रवित स्वर में कहती—''मकान मालकिन देख लेती तो हँसे बिना न रहती।'' अपने ऊपर किसी का हँस देना त्ज़ च्विन नहीं सह सकती थी।

मैं जो कुछ जूठन छोड़ देता था, वह सिर्फ़ मुर्गियों के ही काम आती थी। मुझे हक्सले के कथन की याद आई कि 'संसार में मेरा स्थान' पिल्ले और मुर्गियों के बीच में कहीं है।

मेरे बहुत आग्रह और तर्क का फल यह हुआ कि मुर्गियों का उपयोग रसोई में होने लगा और दस-बारह दिन हम दोनों और हमारा पिल्ला भी उनका स्वाद पाते रहे। मुर्गियों में अधिक माँस क्या निकलता, कई दिनों से बेचारियों को बाजरे का दाना भी नाममात्र को ही डाला जा सकता था। उसके बाद मकान में शांति तो काफी हो गई, परंतु मुर्गियों के वियोग में त्ज़ च्विन बहुत उदास रहने लगी। उसे अब किसी भी बात में रुचि और उत्साह नहीं रहा। मनुष्य कितनी आसानी से बदल जाता है।

पिल्ले को पालना भी कठिन हो गया था। नौकरी मिल जाने की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभी आशाएँ मिटती जा रही थीं। पिल्ले के लिए ग्रास भर भात या रोटी बचा लेना कठिन हो रहा था। त्ज़ च्विन बेचारी क्या दिखाकर पिल्ले को हाथ उठाकर माँगने या दो टाँगों पर खड़े हो जाने को कहती? ज़ाड़ा सिर पर आ गया था और आग की अंगीठी तक का प्रबंध नहीं था। पिल्ले को बड़ी भूख लगती थी जिससे हम पहले से ही परेशान थे। उसे पाल सकना हमारे लिए संभव नहीं था।

पिल्ले को मेले में ले जाकर बिक्री के लिए खड़ा कर देता तो कुछ-न-कुछ तो मिल ही जाता। परंतु हम दोनों में से किसी का भी ऐसा जिगरा न था। आख़िर एक दिन पिल्ले की आँखों पर पट्टी बाँध कर पश्चिमी दरवाज़े से शहर की फसील के बाहर ले गया और उसे वहाँ छोड़ आया। लौट रहा था तो पिल्ला मेरे पीछे-पीछे दौड़ कर आने लगा और उसे एक गड्ढे में ढकेल कर पीछा छुड़ाया। गड्ढा गहरा नहीं था।

घर लौटकर अनुभव किया कि पहले की अपेक्षा शांति थी, परंतु त्ज़ च्विन को देखकर हैरान रह गया। उसके चेहरे पर व्यथा की ऐसी गहरी छाप कभी नहीं देखी थी। कारण पिल्ले का वियोग ही था। परंतु इसमें इतनी गहरी व्यथा की क्या बात थी? पिल्ले को गड्ढे में ढकेलकर पीछा छुड़ाने की बात मैंने उसे नहीं बताई।

संध्या तक त्ज़ च्विन के दुखी चेहरे पर एक सर्द जड़ता छा गई।

"त्ज़ च्विन सच बताओ, तुम्हें क्या हो रहा है?" मुझे पूछना ही पड़ा।

"क्या?" त्ज़ च्विन ने मेरी ओर आँख भी नहीं उठाई।

"तुम जिस तरह हो गई हो...."

"कोई बात नहीं, कुछ नहीं है।"

सोचा, त्ज़ च्विन समझती है कि मैं हृदयहीन हूँ। जब मैं अकेला था, तो मेरा गुज़ारा मज़े में होता था और मैं संबंधियों से मिलना-जुलना तक पसंद नहीं करता था। निवासस्थान बदलने के बाद बहुत से पुराने दोस्तों से भी संबंध टूट चुका था। फिर भी यदि मैं इस झंझट से छुट्टी पा जाऊँ तो मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं। यह सब परेशानियाँ त्ज़ च्विन के कारण हैं–पिल्ले को भी उसी की वजह से हटाना पड़ा था। परंतु वह अब कुछ भी समझने से ऊपर थी।

जब मैंने उसे यह सब बताने की कोशिश की तो उसने हामी में ऐसे सिर हिलाया मानो समझ रही हो। परंतु समझ लेने का कोई प्रभाव

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस पर नज़र नहीं आया। या तो मेरी बात ही उसे समझ में नहीं आई, या उस पर भरोसा नहीं हुआ।

सर्दी और तिस पर त्ज़ च्विन के सर्द बरताव से मेरे लिए घर में चैन से रह सकना असंभव हो गया। परंतु जाता भी कहाँ? त्ज़ च्विन की उस शोकातुर विरक्ति से भाग कर गली या पार्क में ही जा सकता था, पर वहाँ सर्द हवा सनसनाते तीरों से शरीर को बेध देती थी। आख़िरकार, शरण के लिए एक बहिश्त मिल गया—नगर के पुस्तकालय में जा बैठता।

पुस्तकालय में प्रवेश निःशुल्क था और वाचनालय में दो अँगीठियाँ भी थीं। अँगीठियों में आग कम ही रहती थी, परंतु अँगीठियाँ सामने रहने से ही सहारा हो जाता था। पुस्तकालय में पढ़ने लायक कुछ भी नहीं था। पुस्तकें बहुत पुरानी थीं, नई प्रकाशित पुस्तकें बिलकुल नहीं थीं।

पर मैं पुस्तकालय पढ़ने के लिए नहीं जाता था। वहाँ बहुत कम लोग रहते थे, कभी-कभी दस-बारह तक हो जाते थे। सबकी अवस्था मेरे जैसी ही थी। पर्याप्त गर्म कपड़े किसी के पास नहीं थे। सर्दी से बचने के लिए पढ़ने का बहाना किए बैठे रहते। मुझे और क्या चाहिए था? सड़क-बाज़ार में परिचितों से सामना हो जाने की आशंका रहती जो आपको देख अपमानजनक दृष्टि डालते। पुस्तकालय में छिपे बैठे रहकर ऐसे अवसर से तो बचा जा सकता था। मेरे परिचित लोग अपने-अपने घरों में या मित्रों के यहाँ अँगीठियों के चारों ओर आग सुलगाए बैठे रहते होंगे।

पुस्तकालय में पढ़ने लायक पुस्तकें नहीं थीं लेकिन चुपचाप बैठे विचारों में डूबे रहने की सुविधा तो थी। वहाँ मौन बैठे अतीत के बारे में सोचता—इन छह महीनों में प्रेम के मोह में, अंधप्रेम के मोह में फँस कर जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण कामों को छोड़ बैठा हूँ। सबसे पहले तो जीविका की ओर ध्यान देना चाहिए। जीविका के आधार के बिना प्रेम करने का अर्थ ही क्या है? आदमी पूरी तरह यत्न करे तो असफल रह जाने का कोई कारण नहीं और अभी मैं इतना निर्जीव और असमर्थ नहीं हो गया हूँ। हाँ, इस झंझट ने मुझे कुछ निर्बल अवश्य बना दिया है।....

पुस्तकालय में बैठे-बैठे कल्पना में खो जाता। आँखों के सामने से पुस्तकों की अलमारियाँ और समीप बैठे पाठक विलीन हो जाते और क्षुब्ध समुद्र की तरंगों पर मछुवारों, खाइयों में शस्त्र उठाए सैनिकों,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोटर-गाड़ियों में जाते अधिकारीगणों, सट्टा बाज़ार में व्यस्त सटोरियों, पर्वत पर बीहड़ जंगलों में छिपे वीरों, विद्यार्थियों को पढ़ाते अध्यापकों, रात्रि के अंधकार में अवसर ढूँढ़ते लोगों, अँधकार में छिपे चोरों को आँखों के सामने देखता।.... त्ज़ च्विन कहीं बहुत दूर रह जाती। उसने श्वेई के वियोग और रसोई में अपना सारा साहस गँवा दिया था। आश्चर्य की बात थी कि उसके शरीर में कोई ह्रास या परिवर्तन दिखाई नहीं देता था!....

सर्दी बढ़ने लगी थी। अँगीठी में बाकी रह गए पत्थर के कोयले के दो-चार टुकडे भी राख बन गए थे और पुस्तकालय बंद होने का समय हो गया था। अपने घर लौट जाने के अलावा और कोई रास्ता न था जहाँ त्ज. च्विन की सर्द निगाहों का सामना करना पडता था। पिछले कुछ दिनों में दो-एक बार उसकी पुरानी स्फूर्ति का आभास ज़रा-ज़रा दिखाई दिया था। उस परिवर्तन से मैं और भी खिन्न हो गया। एक दिन शाम के वक्त त्ज़ च्विन की आँखों में वही बच्चे जैसी चमक दिखाई दी जिसे अरसे से नहीं देखा था और हँसकर उसने होस्टल की एक घटना याद दिलाई। परंतु उस सरलता के नीचे निरंतर आतंक की छाया उसकी आँखों में तब भी मौजूद थी। मैं समझ गया, उसके डर के पीछे उसके प्रति इधर मेरी उपेक्षा थी। इसलिए कई बार त्ज़ च्विन को कुछ सांत्वना दे सकने के लिए, अनिच्छा से भी हँसने-बोलने का यत्न किया। परंतु अपनी हँसी और अपने स्वर की कृत्रिमता मेरे अपने कानों को ही असह्य जान पड़ी। अपने प्रति बहुत ग्लानि अनुभव हुई जिसे सह सकना संभव नहीं था।

त्ज़ च्विन भी शायद समझ गई थी क्योंकि अब वह अपनी जड़ ख़ामोशी दूर कर देने का यत्न करती या अपनी व्यथा को मन की गहराइयों में छिपाए रखना चाहती। फिर भी उसके चेहरे पर आतंक का भाव समय-समय पर झलक जाता था। लेकिन मेरे प्रति वह कोमलता से पेश आती।

कई बार सोचा कि त्ज़ च्विन से स्पष्ट बात कर लेना उचित है, परंतु इतना साहस नहीं जुटा पाया। जब भी साहस बटोर कर तैयार होता, उसकी शैशव की सी सरल दृष्टि से परास्त हो जाता और मुस्करा देता। होंठों पर मुस्कान प्रकट करने की विवशता मन के भीतर अपने ही प्रति रोष में बदल जाती और मैं स्वयं अपने पर बौखला उठता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्ज़ च्विन फिर अपने पुराने तौर-तरीकों पर आ गई। वह प्रणय के पुराने प्रश्न दोहराती, परीक्षा लेती और उसके प्रति प्रेम जताने के लिए बनावटी उत्तर देने पर मजबूर करती। हृदय पर झूठ, छलना और पाखंड का इतना बोझ आ जाता कि मेरा दम घुटने लगता। निराशा में सोचता, सच कह देने के लिए कितने साहस की ज़रूरत है। कायरता से छलना को स्वीकार करने वाला, साहसहीन भीरू व्यक्ति कभी नया पथ खोजने की उम्मीद नहीं कर सकता। यही नहीं, ऐसे भीरू व्यक्ति का अस्तित्व ही मिट जाएगा।

त्ज़ च्विन फिर खिन्न दिखने लगी। एक दिन प्रातःकाल ही यह परिवर्तन आरंभ हुआ—कम-से-कम मैंने उसी दिन अनुभव किया। उस दिन भयंकर जाड़ा था। उसके नये व्यवहार पर मन-ही-मन खिन्न होकर मुस्करा दिया। उसका निर्भय, उदार और समझदार बनना महज एक आडंबर था जिसके खोखलेपन का उसे कतई आभास नहीं था। पढ़ना उसने काफी पहले ही छोड़ दिया था इसलिए उसे यह भी नहीं मालूम था कि जीवन के संघर्ष में सबसे पहला कर्त्तव्य जीविका की चिंता और उसका प्रयत्न होना चाहिए। इस संघर्ष में पति-पत्नी को कँधे-से-कँधा मिलाकर या अकेले ही कदम उठाना चाहिए। वह तो निर्वाह के लिए किसी से चिपट भर जाना जानती थी, ताकि तैर सकने वाले के गले का बोझ बन जाए—उसे डुबो दे, स्वयं भी डूब जाए।

अपने और त्ज़ च्विन दोनों के कल्याण के लिए मुझे एक ही मार्ग दिखाई देता था—वह था कि दोनों अलग-अलग, अपना-अपना रास्ता चुन लें। अचानक त्ज़ च्विन की मृत्यु का विचार आया—तो अपने प्रति बहुत लज्जा और ग्लानि अनुभव हुई। अभी सुबह ही थी और त्ज़ च्विन को ढंग से समझा-बुझा सकने के लिए शाम तक बहुत समय था। हम दोनों नई राह बना सकेंगे या नहीं, यह इसी पर निर्भर करता था।

मैंने जान-बूझकर अतीत से ही बात आरंभ की। कुछ साहित्य की, विदेशी लेखकों और उनकी पुस्तकों की बातें कहीं, इब्सन के नाटक 'गुड़िया का घर' और 'समुद्र की नारी' की चर्चा की। नोरा के साहस और दृढ़ निश्चय की सराहना की।.... पिछले वर्ष होस्टल की गंदी कोठरी में बैठकर भी मैं यह सब चर्चा कर चुका था, परंतु अब मुझे अपनी बात का खोखलापन स्वयं खटक रहा था। बोलते समय जान पड़ रहा था कि कोई नटखट छोकरा मुझे चिढ़ाने के लिए मेरी बातों को प्रतिध्वनित करता जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्ज़ च्विन ने सुनकर गर्दन हिला हामी भरी और मौन हो गई। मैंने अपनी बात अचानक समाप्त कर दी और मेरी आवाज़ की अंतिम प्रतिध्वनि खालीपन में खो गई।

"ठीक है," त्ज़ च्विन कुछ पल मौन रहकर बोली, "परंतु च्वान शंग तुम आजकल बिलकुल ही बदल गए हो। क्या बात है? सच-सच बताओ।"

त्ज़ च्विन की बात से मुझे भारी धक्का लगा, परंतु किसी प्रकार अपने आपको संभालकर उसे अपने विचार और सुझाव बताए: जीवन को नए सिरे से नए जीवन की शुरुआत करके ही हम दोनों, अपने जीवन को बरबाद होने से बचा सकते हैं।

अपना निश्चय स्पष्ट कर देने के लिए मैंने दृढ़ता से कह दिया:

"इसके अलावा तभी तुम निर्बाध अपने रास्ते पर चल सकती हो। तुम स्वयं चाहती हो कि मैं सच-सच कह दूँ। सच्चाई यही है कि अब मेरे मन में तुम्हारे प्रति प्रेम नहीं है। यह वास्तव में तुम्हारे लिए भी अच्छा है, तुम पर भी कोई बंधन नहीं रहेगा। तुम बिना किसी खेद और संकोच के अपना रास्ता बना सकोगी।"

आशंका थी कि त्ज़ च्विन यह सब सुनकर न जाने क्या कोहराम मचा देगी। परंतु वह मौन रही। उसका चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया, जैसे शरीर का संपूर्ण रक्त खिंच गया हो। लेकिन पल भर में वह संभल गई। चेहरे पर सुर्खी लौट आई और आँखों में वही शैशव की सी सरलता चमक उठी। उसकी भोली दृष्टि इधर-उधर भटकने लगी, जैसे बच्चा भूख से व्याकुल होकर माँ को खोज रहा हो। देर तक वह शून्य में ही देखती रह गई, मुझसे निगाह बचाती हुई।

उस समय त्ज़ च्विन के सामने रहना मेरे लिए संभव नहीं था। सौभाग्य से अभी सुबह ही थी। शरीर को बेधती सनसनाती हवा की परवाह न कर मैं घर से निकल पुस्तकालय की ओर चला गया।

पुस्तकालय में 'स्वतंत्रता प्रेमी' का अंक दिखाई दे गया जिसमें मेरे भेजे छोटे-छोटे निबंध प्रकाशित हो गए थे। मुझे एक साथ विस्मय और हर्ष का अनुभव हुआ। "मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं," मन में आया। "अपनी हालत को बदलने का उपाय करना ही होगा।"

पिछले काफी अरसे से जिन मित्रों से संपर्क तोड़ चुका था उनसे मिलने गया, परंतु एक-दो बार से अधिक किसी के यहाँ नहीं गया। उन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों के कमरे गर्म थे परंतु उनके यहाँ भी सर्दी से मेरी हड्डियाँ सिहर-सिहर उठती थीं। रातें घर में गुज़ारनी पड़ती थीं जहाँ बर्फ की गुफा से भी अधिक सर्दी थी।

जान पड़ता था कि बर्फ की बर्छियाँ हृदय में बिंधी जा रही हैं। अवसाद की बर्फ मुझे सुन्न किए दे रही थी। "मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं," मन को विश्वास दिलाता। "मैं उड़ सकने में असमर्थ नहीं हो गया हूँ।" अचानक मुझे त्ज़ च्विन की मौत का ख़्याल आया और इस विचार से आत्मग्लानि और लज्जा का अनुभव हुआ।

पुस्तकालय में बैठे-बैठे जीवन के नए-नए मार्गों की कल्पना करने लगता। त्ज़ च्विन साहस से वास्तविक स्थिति का सामना करने के लिए तैयार है, वह हमारी बर्फीली कोठरी को छोड़कर चली गई है। वह चली गई है और मेरे प्रति किसी भी दुर्भावना के बिना मेरे मन और मस्तिष्क पर से बोझ उतर गया। जान पड़ा कि मैं निर्बाध और निर्द्वन्द्व होकर असीम नीले आकाश में हल्के मेघ की भाँति उड़ा जा रहा हूँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, महासागरों, गगनचुंबी प्रासादों, युद्ध-क्षेत्रों, मोटर-कारों की पंक्तियों, सट्टे के बाज़ारों, रईसों की हवेलियों, जगमगाते नगरों के ऊपर से उड़ा जा रहा हूँ और घटाटोप अँधेरी रात।

मुझे लग रहा था कि मैं जीवन के नए मोड़ पर आ पहुँचा हूँ। यहाँ से नया जीवन आरंभ होने को है।

पेइचिंग के हड्डियाँ कँपा देने वाले जाड़े के पूरे मौसम में हम दोनों उसी मकान में रहे। हमारा साथ भी अजीब था, जैसे दो लखौरियाँ निर्दय नटखट बच्चों के हाथ पड़ गई हों, बच्चे दोनों लखौरियों को धागे से एक साथ बाँध कर, उड़ा-उड़ा कर, उन्हें सताकर अपना खेल कर रहे हों। हम बचे तो रह गए थे लेकिन अंतिम साँसें लेते हुए और लगता था कि अब अंत किसी भी समय आ सकता है।

"स्वतंत्रता प्रेमी" के संपादक को तीन पत्र लिख चुकने के बाद उसका उत्तर आया। लिफाफे में केवल पुस्तकें खरीदने वाले में तीस और बीस सेंट के दो कूपन निकले। पारिश्रमिक के लिए भेजे गए पत्रों पर नौ सेंट ख़र्च कर चुका था और उसके लिए एक दिन भूखे रह जाना पड़ा था। उसका यह परिणाम सामने आया।

और फिर जिसकी आशंका थी अंततः हो गया।

सर्दी के बाद बसंत आ गया और ठंडी वायु अब उतनी पैनी नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थी। दिन में प्रायः बाहर ही घूमता रहता और सूर्यास्त के समय घर लौटता। एक दिन साँझ का अँधेरा पड़े नित्य की भाँति शिथिल कदमों से घर की ओर लौट रहा था और मकान का दरवाज़ा देख कदम और भी शिथिल हो गए। फिर भी मकान में पहुँच ही गया। भीतर अँधेरे में टटोल कर माचिस उठाई, तीली जलाई तो कमरा और भी अधिक सूना और वीरान लगा।

मैं असमंजस में वहाँ खड़ा था कि खिड़की से मकान मालकिन की आवाज सुनाई दी:

"आज त्ज़ च्विन का पिता आया था, और उसे साथ ले गया है।" मकान मालकिन ने सहज रूप में कहा।

मेरा मस्तिष्क जैसे एक भारी पत्थर की चोट से सुन्न हो गया। कई पल निश्चल, अवाक् खड़ा रहा—यह क्या हो गया!

"चली गई?" किसी तरह पूछ लिया।

"हूँ।"

"कुछ कुछ कह गई है?"

"ऊँ हूँ! बस यही कि तुम आओ तो कह दूँ कि चली गई है।"

कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, परंतु आँखों के सामने कमरा खाली और सुनसान था। आँखें फाड़-फाड़ कर कमरे में चारों ओर त्ज़ च्विन को ढूँढ़ने लगा। लेकिन बदरंग, टूटी-फूटी मेज़, कुर्सी, खाट के अलावा कुछ नहीं दिखा। उनके पीछे किसी को छिपा देने या छिपे रहने के लिए स्थान नहीं था। सोचा, शायद कुछ लिखकर छोड़ गई हो। चारों ओर आँखें दौड़ाई, कुछ नहीं था। मेज़ पर नमक का डिब्बा, कुछ सूखी मिर्चें, थोड़ा-सा आटा और आधी पातगोभी और चालीस-पचास ताँबे के सिक्के रखे थे। संसार में यही हमारी संपत्ति थी और इसे वह सावधानी से मेरे लिए सहेज गई थी। बिना बोले संकेत से कह गई थी—जब तक संभव हो मैं अपना निर्वाह कर लूँ।

कमरे के वातावरण की घुटन से घबराकर मैं बाहर आँगन में जा खड़ा हुआ जहाँ चारों ओर अँधियारा था। बीच के कमरे की खिड़की में प्रकाश था जहाँ मकान मालिक और मालकिन अपने बच्चे को हँसाने के लिए गुदगुदा रहे थे। मन कुछ हल्का हुआ तो मुझे अँधेरे में आशा की किरण दिखाई देने लगी: ऊँचे पर्वत, दलदली मैदान, चकाचौंध प्रकाश

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में दाव्रतें, खंदकें, घटाटोप अँधकार, पैनी कटार का एक वार, दबे पाँवों की चाप।

मस्तिष्क ज़रा साफ हुआ तो यात्रा के खर्चों के बारे में सोचने लगा फिर एक गहरी साँस ली।

कोठरी में अकेला आँखें मूँदें खाट पर पड़ा था तो अर्धचेतन अवस्था में भावी जीवन की रूपरेखा की कल्पना कर ली, परंतु आधी रात होते-होते वह टिक न सकी। कोठरी में फैले घटाटोप अंधकार में व्यंजनों का एक बड़ा-सा ढेर दिखाई देने लगा फिर त्ज़ च्विन का रक्तहीन चेहरा, शैशव की सी भोली-भाली आँखों में कातर याचना का भाव लिए मेरी आँखों के सामने आ गया। अपने आप को सँभाल कर उठने का यत्न किया तो सब कुछ विलीन हो गया।

आत्मग्लानि का वह बोझ असह्य था। वह 'सच' कहकर त्ज़ च्विन को आघात पहुँचाने की मुझे क्या उतावली थी? कुछ दिन और धीरज नहीं रख सकता था? अब उस बेचारी के लिए जीवन में क्या सहारा है? केवल पिता का निर्दय व्यवहार, जो अपने बच्चों के साथ भी कसाई का सा व्यवहार करता है, और दूसरे लोगों की कठोर उपेक्षा। कितना डरावना है खालीपन का भारी बोझ उठाए संसार की निर्मम उपेक्षा के बियाबान में अकेले भटकते रहना। इतना भी भरोसा नहीं कि मर जाने पर कोई शव पर साफ कफन का टुकड़ा भी डालेगा।

बेचारी त्ज़ च्विन के मुँह पर वह 'सच' मैंने क्यों कह डाला? अपने प्रेम के लिए क्या मैं इतना-सा झूठ भी नहीं बनाए रख सकता था? यदि सच की इतनी महिमा है तो उस 'सच' ने निरीह त्ज़ च्विन के जीवन को इतना कंगाल क्यों बना दिया? मानता हूँ, झूठ निस्सार होता है परंतु वह झूठ त्ज़ च्विन पर निराशा की छत को गिर जाने से तो बचाए हुए था।

मेरा ख़्याल था कि त्ज़ च्विन से वह सच कह दूँगा तो वह झूठें बंधन से मुक्त होकर साहस से अपना मार्ग बना सकने के लिए स्वतंत्र हो जाएगी, ठीक उसी तरह जैसे उसने मुझे प्रेम कर एक नए जीवन की शुरुआत की थी। परंतु वह कितनी बड़ी भूल थी। वास्तव में त्ज़ च्विन को उस निर्भयता और साहस का स्रोत तो प्रेम ही था।

मैं झूठ और छलना का बोझ उठा सकने में असमर्थ था, इसलिए मैंने उसके सिर पर 'सच' का बोझ लाद दिया। क्योंकि उसने मुझसे प्रेम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया इसलिए जीवन के अंत तक उस बोझ के नीचे पिसती रहेगी, इस उपेक्षाभरे निर्मम संसार के बियाबान में अकेली भटकती रहेगी।

मैंने त्ज़ च्विन की मृत्यु की कल्पना कर ली थी, मैं कितना नीच हूँ। मुझे उसका दंड मिलना चाहिए, जिनके हाथ में सामर्थ्य है, वह मुझे दंड दें, चाहे वे लोग स्वयं ईमानदार हों या न हों। लेकिन त्ज़ च्विन तो सदा मेरे कल्याण की ही कामना करती रही।....

लकी गली के मकान का सूनापन मुझे काटने को दौड़ता था। सोचा यदि यहाँ से निकल सकूँ तो कल्पना में त्ज़ च्विन को अपने समीप अनुभव कर सकूँगा या कम-से-कम यही कल्पना कर सकूँगा कि वह इसी शहर में है और फिर किसी दिन हम दोनों का उसी प्रकार मिलन हो सकता है, जैसे होस्टल में रहते समय हो गया था।

नौकरी के लिए दी हुई मेरी दरखास्तों और पत्रों का कोई भी उत्तर नहीं आया। अब एक ही सहारा था। मेरे चाचा के पेइचिंग में एक पुराने सहपाठी थे, बहुत बड़े विद्वान। उनका बहुत नाम और प्रभाव था। वर्षों से उनके यहाँ नहीं गया था। सोचा, जाकर उनसे ही प्रार्थना करूँ।

चौकीवार ने सीधे मुँह बात नहीं की—मेरे कपड़ों की अवस्था ही ऐसी थी। बहुत कठिनाई से घर के भीतर जा पाया तो चाचा के मित्र ने मुझे पहचान लिया, परंतु बोले बहुत रुखाई से। हम लोगों के विषय में उन्हें सब कुछ मालूम हो चुका था।

''यहाँ तो जगह मिल सकना मुश्किल है।'' उन्होंने कह दिया। मैंने अनुरोध किया, ''आपकी बहुत कृपा होगी, कोई भी काम दिला दीजिए।'' उत्तर मिला—''बहुत मुश्किल है। फिर तुम रहोगे कहाँ?'' उन्होंने पूछ लिया। ''तुम्हें तो मालूम ही होगा, तुम्हारी वह त्ज़ च्विन मर चुकी है।''

मैं अवाक् रह गया।

''सच?'' अपने आप को सँभाल कर मैंने पूछा।

बुजुर्ग को हँसी आ गई—''शक की बात क्या है, वह लड़की हमारे नौकर वांग शंग के गाँव की ही तो थी।''

''कैसे मर गई?''

''कौन जाने। इतना मालूम है कि मर गई।''

मालूम नहीं, उनके यहाँ से घर तक कैसे पहुँचा। वह आखिर झूठी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बात क्यों कहते। त्ज़ च्विन सदा के लिए चली गई थी। अब गत वर्ष की तरह वह फिर कभी नहीं आएगी। हालाँकि वह अपने सूने-निराश जीवन का बोझ उठाए संसार की उपेक्षा के वीराने में भटकने के लिए भी तैयार थी लेकिन बोझ शायद असह्य हों गया। भाग्य ने उसे कठोर सच का बोझ उठाकर मर जाने का ही अभिशाप दिया था—प्रेम खोकर मरने का!

घर पर रह सकना अब संभव नहीं था, परंतु कहाँ जाता?

सभी ओर अभाव और शून्य था, मृत्यु का सन्नाटा। कल्पना में एक ही बात समा रही थी : प्रेम में ठुकराया गया व्यक्ति मृत्यु के समय कैसी निबिड़ निराशा का अँधकार देखता होगा। ऐसी अवस्था में मरने वालों की आर्त चीत्कारों से मेरा दिल दहलने लगता।

एक दबी हुई आशा अब भी बनी हुई थी कि जीवन में कोई अप्रत्याशित नया प्रकाश या मार्ग दिखाई दे जाएगा। लेकिन मृत्यु के सन्नाटे में दिन-पर-दिन बीतते जा रहे थे।

घर के बाहर बहुत कम जा पाता था। कोठरी के उस शून्य में ही बैठा या पड़ा रहता और प्रतीक्षा करता कि मुझे घेरे मृत्यु के सन्नाटे में मेरी चेतना भी डूब जाएगी। कभी-कभी तो ऐसा जान पड़ता कि यह सन्नाटा स्वयं भी सहम रहा है, और डरकर भाग जाएगा। फिर लगता कि दूर, बहुत दूर, अदृश्य में अनजानी-अपरिचित आशा का कुछ आभास-सा मिल रहा है।

एक दिन प्रातः बहुत ही घने बादल छाए हुए थे, सूर्य बादलों को चीर नहीं पा रहा था, वायु भी थकी-थकी-सी जान पड़ती थी कि कमरे में छोटे-छोटे पैरों की आहट और साँस लेने की आवाज़ से मेरी आँखें खुल गईं। कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ाई पर कुछ दिखाई नहीं दिया। अधिक ध्यान से फर्श पर देख तो एक छोटा-सा जीव, दुबला-पतला, कंकालमात्र, धूल से भरा, कमरे में चक्कर लगा रहा था।....

ध्यान से देखा तो साँस रुक गई। खाट से कूद पड़ा। पिल्ला लौट आया था।

मैंने लकी गली का मकान छोड़ दिया। मकान मालिक और उसकी नौकरानी की नाराज़गी के कारण नहीं, बल्कि पिल्ले के कारण। बड़ी भारी समस्या थी, जाऊँ तो कहाँ? यों तो जाने के लिए बीसियों जगहें हो सकतीं थीं और कभी ऐसा लगता कि आँखों के सामने कई रास्ते खुले हैं। लेकिन यह पता नहीं था कि पहला कदम कैसे उठाया जाए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत सोच-विचार करके और सभी बातों का ख़्याल करके मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि मेरे लिए होस्टल ही उपयुक्त स्थान हो सकता है। अब फिर होस्टल की उसी खाली कोठरी में आ गया हूँ, वही काठ का तख़्त, खिड़की के बाहर वही लोकस्ट का अधसूखा पेड़ और विस्तारिया की वही पुरानी बेल मौजूद है। परंतु अब पहले के स्नेह और जीवन, संतोष और आशा की किरण लुप्त हो गई है। अब केवल अभाव और निष्प्रयोजन ज़िंदगी ही है जिसे मैंने सच के बदले में पाया है।

निर्वाह के लिए कई उपाय संभव हैं, ज़िंदा हूँ तो कोई उपाय तो अपनाना ही होगा। यही निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ कि कहाँ से आरंभ करूँ। कभी तो भावी जीवन का मार्ग बहुत बड़े अजगर की भाँति बल खाता हुआ अपनी ओर झपटता चला आता दिखाई देने लगता है। प्रतीक्षा करता हूँ, उसे आता हुआ देखता हूँ परंतु सहसा सब कुछ अँधकार में विलीन हो जाता है।

बसंत के आरंभ की ये रातें अब भी उतनी ही लंबी हैं। बेकार बैठे-बैठे बहुत देर से सोच रहा हूँ। याद आया सुबह सड़क पर से किसी आदमी का जनाजा गुजरा था। जनाजे के आगे-आगे कई लोग आदमियों और घोड़ों की कागज़ की बनी मूर्तियाँ लेकर चल रहे थे और विलाप करते लोग गाने के स्वर में रो रहे थे। अब समझा कैसे चतुर हैं लोग, सहज में सब कुछ निपटा दिया।

फिर त्ज़ च्विन की शवयात्रा का दृश्य मन में उभरा—सूने जीवन का भारी बोझ उठाए अनंत अँधियारे, भयावने मार्ग पर अकेली चली जा रही थी लोगों के कठोर तिरस्कार द्वारा निगले जाने के लिए।

मृत्यु के पश्चात यदि भूत-प्रेतों या नरक का अस्तित्व होता तो भी अच्छा था। नरक के रौरव चीत्कारों के प्रबल झंझावात में भी मैं त्ज़ च्विन को ढूँढ़ लेता और अपना खेद और अवसाद उसके सामने स्वीकार कर उससे क्षमा माँग लेता। यदि ऐसा न कर पाता तो नरक की विषैली ज्वालाओं में मेरा खेद और अवसाद भस्म हो जाता।

नरक की ज्वालाओं और भँवरों में त्ज़ च्विन को अपनी बाहों में भरकर मैं उससे क्षमा-याचना करता, या उससे बदला लेने को कहता।

हालाँकि यह कल्पना मेरे नए जीवन की कल्पना से भी अधिक खोखली है। शुरु बसंत की यह रात लंबी है। शरीर में प्राण हैं तो जीवन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का आरंभ फिर करना ही होगा। पहला कदम है कि त्ज़ च्विन और अपने लिए अपने अवसाद और दु:ख को लिख डालूँ।

मैं रोने के सिवाय क्या कर सकता हूँ—त्ज़ च्विन के शोक में गाते हुए रोऊँ और उसे विस्मृति में दफना दूँ।

मैं उसे भूल जाना चाहता हूँ। यातना से बचने के लिए त्ज़ च्विन के लिए बनाई विस्मृति की समाधि को अपने स्मृति-पटल से मिटा देना चाहता हूँ।

जीवन के लिए नया कदम उठाना अनिवार्य है। उस सच को अपने घायल हृदय की गहराई में छिपाकर चुपचाप कदम बढ़ाना होगा। विस्मृति और आत्मप्रवंचना ही मेरा मार्गदर्शन करेंगी।....

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्रलोक की ओर उड़ान

(1)

यह सच है कि बुद्धिमान पशु मनुष्य की इच्छाओं को आसानी से भाँप लेता है। ज्यों ही उनका फाटक दिखाई दिया, घोड़े ने चाल धीमी कर दी और सवार की तरह ही अपना सिर झुकाकर उसे हर कदम के साथ ऐसे उठाने-गिराने लगा जैसे मूसल से चावल कूट रहा हो।

हवेली संध्या के कुहरे में लिपटी हुई थी जबकि पड़ोस की चिमनी से काला धुआँ उठ रहा था। यह शाम के ब्यालू का समय था। घोड़े की टाप सुनकर सईस बाहर आ गए थे और दोनों बाजू बदन से चिपकाकर फाटक के सामने सीधे खड़े हो गए। ज्यों ही ई[1] कचरे के ढेर के पास सुस्ती से उतरा, सईसों ने आगे बढ़कर लगाम और चाबुक ले लीं। देहरी पार करते समय जब उसने कमर में लगे तरकश में रखे बिलकुल नये तीरों और थैले में पड़े हुए तीन मृत कौवों व एक क्षतविक्षत गौरैया पर नज़र डाली तो उसका दिल बैठ गया। लेकिन वह चेहरे पर कोई भाव लाए बिना लंबे डग भरता हुआ भीतर चला गया। तरकश में रखे तीर खनखना उठे।

भीतर के आँगन में पहुँचते ही उसकी नज़र छांग अ[2] पर पड़ी, जो गोल खिड़की से बाहर झाँक रही थी। वह जानता था कि छांग अ की पैनी नज़र कौवों पर पड़ चुकी हैं। घबराहट में वह क्षण भर के लिए रुका—लेकिन अंदर तो उसे जाना ही था। दासियों ने उसकी अगवानी की, धनुष-बाण और तरकश उतारे और शिकार का झ़ोला उठा लिया। उसे लगा दासियों के चेहरे पर कृत्रिम मुस्कान झलक रही है।

हाथ-मुँह धोने के बाद वह भीतर के कमरे में पहुँचा और बोला : "श्रीमती जी...."

---

1. ई अथवा ह्वो ई चीन की प्राचीन दंतकथाओं में वर्णित धनुर्विद्या में पारंगत एक वीर था।
2. चीन की पौराणिक कथाओं में वर्णित एक देवी जिसे ई की पत्नी माना जाता है। अमृत-रसायन पीने के बाद वह उड़कर चंद्रलोक चली गई थी वहाँ जाकर एक देवी बन गई थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छांग अ गोल खिड़की से सूर्यास्त देख रही थी। वह धीरे से मुड़ी और अभिवादन का उत्तर दिए बग़ैर उपेक्षापूर्ण दृष्टि से ई की तरफ देखने लगी।

कुछ समय से, कम-से-कम एक साल से ज़्यादा समय से, ई ऐसे बरताव का आदी हो चुका था। सदा के समान वह सामने की तरफ लकड़ी के तख़्त पर बिछी चीते की पुरानी खाल पर जा बैठा। सिर खुजाते हुए बुदबुदाया :

''आज भाग्य ने फिर मेरा साथ नहीं दिया। कौवे के सिवाय और कुछ नहीं....''

''छिः छिः।''

छांग अ की कमानीदार भौंहें तन गईं और वह फुर्ती से कमरे के बाहर जाती हुई बोली : ''फिर वही कौवे की चटनी और सेवैयाँ। फिर वही कौवे की चटनी और सेवैयाँ। मैं जानना चाहती हूँ कि कौन है ऐसा जो वर्षों तक कौवे की चटनी और सेवैयाँ खा सकता है? मैं बड़ी अभागिन हूँ जो तुमसे ब्याह कर बैठी। बारहों महीने कौवे की चटनी और सेवैयाँ खानी पड़ती हैं।''

''श्रीमती जी।'' ई उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया। ''आज का दिन ज़्यादा बुरा नहीं रहा,'' वह बड़े कोमल स्वर में बोला, ''आज मैंने एक गौरैया का शिकार भी किया है। इसे तुम्हारे लिए ख़ास तौर से पकाया जाएगा। ....न्वी-शिन, ओ न्वी-शिन।'' ई ने दासी को पुकारा। ''मालकिन को दिखाने के लिए ज़रा वह गौरैया तो ले आओ।''

परिन्दों को रसोईघर में पहुँचा दिया गया था। न्वी-शिन दौड़कर गौरैया को ले आई और दोनों हाथों से उठाकर उसे छांग अ के सामने पेश कर दिया।

''यह?'' बड़े तिरस्कार से देखते हुए उसने गौरैया को धीरे-से छुआ। ''कैसी हालत बना दी है इसकी।'' उसने नाराज़ होकर कहा। ''तुमने इसकी बोटी-बोटी अलग कर दी है। गोश्त बचा ही कहाँ है?''

''मुझे मालूम है,'' ई ने पराजय के स्वर में स्वीकार किया। ''मेरा धनुष बड़ा शक्तिशाली है, मेरे बाणों की नोक बहुत चौड़ी है।''

''छोटे बाण नहीं इस्तेमाल कर सकते थे क्या?''

''मेरे पास छोटे बाण नहीं हैं। जब मैंने विशाल शूकर और विशाल अजगर को मारा था....''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो क्या यह विशाल शूकर या विशाल अजगर है?" वह न्वी-शिन की ओर मुड़ी और उसे आदेश दिया: "इसका सूप बना दो।" इसके बाद अपने कमरे में चली गई।

ई अकेला रह गया। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पीठ दीवार से लगाकर बैठ गया और रसोईघर में लकड़ी के ईंधन की चट-चट की आवाज़ सुनता रहा। उसे याद आया, वह विशाल शूकर दूर से एक मिट्टी के टीले की तरह नज़र आ रहा था। अगर शूकर को उसने तब न मारा होता और अब तक रहने दिया होता तो कम-से-कम आधे साल तक तो गोश्त की समस्या हल हो सकती थी और रोज़मर्रा के भोजन की समस्या न खड़ी होती। और उस विशाल अजगर का क्या कहना! कितना बढ़िया सूप बनता उसका!

न्वी-ई ने चिराग जला दिया। सिंदूरी धनुष-बाण, काला धनुष-बाण, कलदार धनुष, तलवार, कटार—ये सभी चिराग की धीमी रोशनी में सामने की दीवार पर चमक उठे। एक नज़र इन पर डाल कर ई ने गर्दन झुका ली और एक आह भरी। न्वी-शिन साँझ का ब्यालू ले आई और उसे मेज़ पर रख दिया: बाईं तरफ पाँच बड़े-बड़े कटोरों में सेवैयाँ, दाईं तरफ दो बड़े-बड़े कटोरों में सेवैयाँ और एक कटोरे में सूप तथा बीच में कौवे की चटनी रख दी गई।

खाते समय ई को स्वीकार करना पड़ा कि खाना बिलकुल स्वादिष्ट नहीं था। उसने कनखियों से छांग अ की तरफ देखा। छांग अ ने कौवे की चटनी की तरफ आँख उठाए बग़ैर ही अपनी सेवैयों को सूप में डाल लिया था और आधा कटोरा ख़त्म करके कटोरा मेज़ पर रख दिया था। ई ने देखा उसका चेहरा पहले से ज़्यादा पीला और पतला लगने लगा है—अगर बीमार पड़ गई तो क्या होगा?

रात के दूसरे पहर तक छांग अ की उदासीनता कुछ कम हो गई। वह बिलकुल मौन अपने बिस्तर पर बैठी पानी पी रही थी। ई बगल में लकड़ी के तख़्त पर बैठा-बैठा चीते की पुरानी खाल को, जिसके बाल उखड़ते जा रहे थे, सहला रहा था।

"अहा!" उसने समझौते वाली भावना से कहा। "इस चितकबरे चीते का मैंने शादी से पहले पश्चिमी पहाड़ी पर शिकार किया था। यह निहायत ख़ूबसूरत था—सोने के चमकदार पिण्ड की तरह।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहसा उसके मस्तिष्क में अतीत जीवन की स्मृति सजीव हो उठी। उन दिनों भालू का शिकार करने पर सिर्फ़ उसके पंजे खाए जाते थे, ऊँट का शिकार करने पर सिर्फ़ उसका कूबड़ खाया जाता था, बाकी सारा गोश्त दासियों और सईसों में बाँट दिया जाता था। जब बड़े-बड़े जानवर ख़त्म हो गए और जंगली शूकर, खरगोश और तीतर खाने शुरू कर दिए। ई इतना अच्छा शिकारी था कि जितने चाहे पशु-पक्षियों को मार सकता था।

उसने एक आह भरी।

"बात यह है कि मेरा निशाना ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा है," वह बोला। "यही वजह है कि यहाँ के सारे पशु-पक्षियों का सफाया हो गया है। किसे मालूम था कि हमारे खाने के लिए कौवों के सिवाय और कुछ बाकी नहीं रहेगा?"

छांग के चेहरे पर एक बनावटी मुस्कान खेल गई।

"आज और दिनों के मुकाबले मेरी किस्मत ज़्यादा अच्छी रही।" ई का हौंसला बढ़ रहा था। "कम-से-कम एक गौरैया तो मिली। इसकी खोज में मुझे तीस ली का फासला और तय करना पड़ा।"

"क्या इससे भी और थोड़ा आगे नहीं जा सकते थे?"

"हाँ श्रीमती जी, यही तो मैं भी सोच रहा हूँ। कल सुबह और जल्दी उठूँगा। अगर तुम्हारी नींद पहले खुल जाए तो उठा देना। पचास ली और आगे जाकर देखना चाहता हूँ कि कोई हिरन या खरगोश मिलता है कि नहीं। ....वैसे इन जानवरों का मिलना है ज़रा मुश्किल। याद है, जब मैंने विशाल शूकर और विशाल अजगर का शिकार किया था तब यहाँ सभी तरह के पशु-पक्षी मौजूद थे? काले-काले भालू तुम्हारी माँ के दरवाज़े के सामने से आते-जाते रहते थे और उन्होंने मुझसे कई बार उन्हें मारने का आग्रह किया था।...."

"सचमुच?" मालूम होता था यह बात छांग अ को याद नहीं रही थी।

"कौन जानता था कि ये सब पशु-पक्षी इस तरह लापता हो जाएँगे? ज़रा सोचो तो अब हमारा गुज़ारा न मालूम कैसे होगा। मेरी तो कोई बात नहीं। मैं तो पुजारी का दिया अमृत-रसायन पीते ही उड़कर चंद्रलोक पहुँच सकता हूँ। लेकिन मुझे तुम्हारी फिक्र है!.... यही वज़ह है कि शिकार की खोज में कल और दूर तक जाने की सोच रहा हूँ।...."

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हूँ।"

छांग अ ने सारा पानी पी लिया। इसके बाद धीरे-से लेट गई और आँखें मूँद लीं।

उसके चेहरे के फीके पड़ गए सौंदर्य-प्रसाधन चिराग के धीमे प्रकाश में स्पष्ट दिखाई देने लगे। बहुत-सा पाउडर पुँछ गया था। आँखों के नीचे गोलाकार काले गड्ढे पड़ गए थे और एक भौंह दूसरी के मुकाबले ज़्यादा काली लग रही थी। लेकिन होंठ अग्निशिखा की भाँति लाल थे और हालाँकि वह मुस्करा नहीं रही थी, फिर भी गालों में दो हल्के गड्ढे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

"नहीं, हरगिज़ नहीं। सिर्फ़ सेवैयों और कौवे की चटनी के सहारे मैं ऐसी स्त्री का पालन कैसे कर सकता हूँ।"

ई शर्म के मारे गड़ गया। उसका चेहरा कान तक लाल हो गया।

(2)

रात बीत चुकी थी, एक नया सवेरा हो चुका था।

ई चौंक कर उठ बैठा। आँखें खोलीं तो उसकी नज़र पश्चिमी दीवार को प्रकाशित करती सूरज की तिरछी किरणों पर पड़ी। उसे मालूम हो गया कि काफी देर हो चुकी है। उसने छांग अ को देखा। वह गहरी नींद में बेसुध पड़ी थी। कोई आहट किए बिना उसने चुपचाप कपड़े बदले, चीते की खाल वाले तख़्त से नीचे उतरा और पंजे के बल़ चलता हुआ बड़े कमरे में जा पहुँचा। हाथ-मुँह धोते हुए उसने न्वी-कंग को आदेश दिया कि वह वांग शंग को घोड़ा तैयार करने के लिए कहे।

फुर्सत न होने के कारण वह काफी दिनों से सुबह का नाश्ता नहीं कर पा रहा था। न्वी-ई ने पाँच खमीरी रोटियाँ, पाँच हरे प्याज की गाँठें और एक पुड़िया में लाल मिर्च की चटनी उसके झोले में रख दी और धनुष-बाण के साथ झोले को मजबूती से कमर में बाँध दिया। कमरबंद कसने के बाद वह लंबे डग बढ़ाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। रास्ते में न्वी-कंग मिल गई। उससे बोला :

"आज मैं शिकार की तलाश में ज़रा दूर जानेवाला हूँ। लौटने में शायद कुछ देर हो जाए। तुम्हारी मालकिन जब सुबह का नाश्ता कर चुकें और उनका मिज़ाज़ अच्छा हो तो मेरी तरफ से माफी माँग कर उनसे कह देना कि साँझ के ब्यालू तक मेरा इंतज़ार करें। मेरी तरफ़ से माफी माँगना न भूलना।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह तेज़ी से बाहर निकला और फुर्ती से काठी पर सवार हो गया। सईसों के बीच से गुज़रता हुआ उसका घोड़ा सरपट दौड़ पड़ा। जल्दी ही वह गाँव की सीमा को लाँघ गया। सामने काओल्यांग* के खेत फैले हुए थे, जिनके बीच से वह रोज़ाना निकलता था। इस जगह के बारे में उसे पहले से ही मालूम था कि यहाँ कुछ नहीं है। इसलिए ध्यान दिए बग़ैर आगे बढ़ता गया। दो बार चाबुक घुमाया तो घोड़ा हवा से बातें करने लगा और बिना रुके साठ ली फासला पार कर गया। सामने घना जंगल था और चूँकि घोड़ा लगातार हाँफ रहा था और पसीने से तरबतर हो रहा था, इसलिए उसकी चाल कुछ धीमी पड़ना स्वाभाविक था। दस ली और चलने के बाद वह एक घने जंगल में पहुँच गया। मगर वहाँ भी ई को बर्रों, तितलियों, मक्खियों, चीटियों और टिड्डियों के सिवाय और कुछ न दिखाई दिया—पशु-पक्षियों का तो कहीं नाम-निशान तक न था। नए इलाके की पहली झलक से उसे आशा बँध गई थी कि यहाँ कम-से-कम दो-एक लोमड़ियाँ और खरगोश तो मिल ही जाएँगे, मगर यह उसकी खामख्याली थी। निराश हो वह और आगे बढ़ गया। कांओल्यांग के हरे-भरे खेत फिर दिखाई दिए। दूर एक-दो मिट्टी के घरौंदे भी बने हुए थे। हवा बड़ी सुहानी थी और धूप प्यारी लग रही थी पर वहाँ न कोई कौवा दिखाई दिया न गौरैया।

"कैसी मुसीबत आ गई है।" अपने दिल का बोझ हल्का करने की कोशिश करते हुए वह चिल्लाया।

कोई दस-बारह कदम आगे गया होगा कि वह खुशी से झूम उठा। दूर एक मिट्टी के घरोंदे के बाहर सपाट धरती पर सचमुच एक पक्षी था जो चाल से एक बड़ा कबूतर मालूम होता था। उसने धनुष-बाण निकाला और निशाना साधकर पूरे ज़ोर से बाण छोड़ा। बाण टूटे तार की तरह हवा को चीरता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गया।

ई आज तक कभी निशाना नहीं चूका था इसलिए बिना किसी संदेह के शिकार के पीछे दौड़ पड़ा। पर ज्यों ही करीब पहुँचा तो एक बुढ़िया उसके घोड़े की तरफ दौड़ी आई। ई के बाण से बिंधा विशाल कबूतर हाथ में उठाए वह चिल्ला रही थी:

"तुम कौन हो? रोज़ अण्डे देने वाली मेरी बेहतरीन काली मुर्गी को तुमने क्यों मार डाला? क्या तुम्हारे पास और कोई काम नहीं?...."

* बाजरे के समान एक मोटा अनाज।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ई का दिल बैठ गया। मगर उसने फौरन उत्तर दिया।

''क्या कहा? यह मुर्गी है?'' उसने घबराकर कहा। ''मैं तो इसे जंगली कबूतर समझा था।''

''क्या तुम अंधे हो? उम्र तो तुम्हारी चालीस से कुछ ज़्यादा ही लग रही है।''

''हाँ, माँ जी, पिछले साल पैंतालीस पूरे किए हैं।''

''कहावत है: बूढ़े मूर्ख से बड़ा मूर्ख कोई नहीं होता। मुर्गी को तुमने जंगली कबूतर कैसे समझ लिया? आखिर तुम हो कौन?''

''मेरा नाम ई है।'' कहते-कहते उसकी नज़र मुर्गी पर पड़ गई। बाण उसके दिल के आर-पार हो चुका था और उसके प्राण ले चुका था। इसलिए घोड़े से उतरते समय अपना नाम बताने में वह कुछ हिचकिचाया।

''ई.... यह कैसा नाम है? पहले कभी नहीं सुना।'' बुढ़िया ने बड़े गौर से उसके चेहरे को देखा।

''मेरा नाम जानने वालों की कमी नहीं। गुणवान राजा याओ के ज़माने में मैंने जंगली शूकरों और अजगरों का शिकार किया था।....''

''यह सफेद झूठ है। इन्हें तो सामंत फंग मंग[1] और कुछ अन्य लोगों ने मारा था। हो सकता है तुमने उनकी मदद की हो। लेकिन तुम इतनी बड़ी डींग कैसे मार सकते हो कि यह सब तुमने अकेले ही किया? बड़ी शर्म की बात है।''

''नहीं माँ जी, फंग मंग तो मुझसे मिलने पिछले कुछ ही वर्षों से आ रहा है। हमने एक साथ कभी काम नहीं किया। उसका इसमें कोई योगदान नहीं है।''

''तुम झूठ बोल रहे हो। सभी ऐसा कहते हैं। महीने में चार-पाँच बार तो सुनने को मिल ही जाता है।''

''अच्छा माँ जी, अच्छा। जो कुछ तुम कहती हो वही ठीक है। अब काम की बात करो। इस मुर्गी के बारे में क्या विचार है?''

---

1. धनुर्विद्या में पारंगत एक अन्य वीर जो ई का शिष्य था। यहाँ चाओ छांग चुंग नामक एक नौजवान लेखक पर व्यंग्य है, जो लू शुन का शिष्य था और जिसने बाद में अपने लेखों के जरिए उन पर प्रहार किए थे। फंग मंग द्वारा ई पर किए गए प्रहार की कहानी के जरिए चाओ द्वारा लू शुन पर किए गए प्रहार की ओर इशारा किया गया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुम्हें हर्जाना देना होगा। यह मेरी बेहतरीन मुर्गी थी। रोज़ाना एक अंडा देती थी। इसके बदले मुझे दो कुदालियाँ और तीन तकलियाँ देनी होंगी।"

"लेकिन मेरी तरफ तो देखो, माँ जी। मैं न तो खेतीबाड़ी करता हूँ और न कताई। तुम्हारे लिए कुदालियाँ और तकलियाँ कहाँ से लाऊँगा? मेरे पास पैसे भी नहीं हैं। सफेद आटे की सिर्फ़ पाँच खमीरी रोटियाँ हैं। तुम्हारी मुर्गी के बदले इन पाँच खमीरी रोटियों के साथ हरे प्याज की पाँच गाँठें और एक पुड़िया में लाल मिर्च की चटनी भी दे सकता हूँ। बोलो, मंजूर है?...."

एक हाथ से झोले से खमीरी रोटियाँ निकाल कर उसने दूसरे हाथ से मुर्गी उठा ली।

बुढ़िया को लगा मुर्गी के बदले सफेद आटे की खमीरी रोटियाँ लेने का विचार बुरा नहीं है। लेकिन उसने पाँच की जगह पंद्रह रोटियों की माँग पेश कर दी। कुछ समय तक खींच-तान करने के बाद दस खमीरी रोटियों पर समझौता हो गया। ई ने वायदा किया कि अगले दिन दोपहर होने से पहले बाकी पाँच रोटियाँ पहुँचा देगा और जमानत के तौर पर अपना बाण उसके पास छोड़ने को तैयार हो गया। इसके बाद उसने बड़े इत्मीनान से मृत मुर्गी को अपने झोले में डाल दिया, उचक कर काठी पर सवार हो गया और घर की तरफ लौट पड़ा। वह भूखा था, मगर फिर भी खुश था। मुर्गी का सूप चखे उन्हें एक वर्ष से भी ज़्यादा समय हो गया था।

जंगल से बाहर निकलते-निकलते तीसरा पहर हो गया। वह घर पहुँचने को बेचैन हो उठा। घोड़े को कस कर चाबुक लगाया। लेकिन घोड़ा थककर चूर हो चुका था इसलिए साँझ होने से पहले कांओल्यांग के खेतों तक नहीं पहुँच पाया। सहसा कुछ दूर पर उसे एक धुँधली-सी आकृति दिखाई दी और तभी एक बाण हवा को चीरता हुआ उसकी तरफ बढ़ा।

दुलकी चाल से चल रहे घोड़े की लगाम खींचे बिना ही, ई ने धनुष उठाया और बाण छोड़ दिया। दोनों बाण आसमान में एक दूसरे से जा टकराए। ज़ोर की आवाज़ हुई। चिनगारियाँ फूट निकलीं। दोनों बाणों ने एक-दूसरे में गुँथ कर अंग्रेज़ी अक्षर वी का आकार बनाया और ज़मीन पर गिर पड़े। पहले दो बाणों के आपस में टकराते ही दोनों तरफ से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक-एक बाण और छोड़ दिया गया। वे भी आपस में टकराकर ज़मीन पर गिरे। इस तरह नौ बार बाण छोड़े गए और नौ के नौ बार वे एक-दूसरे से टकरा कर गिरे। ई के पास अब कोई बाण नहीं बचा था। उसे अपने सामने फंग मंग खड़ा दिखाई दिया, जो उसकी गर्दन पर धनुष से निशाना साध रहा था।

''अच्छा, तो तुम हो।'' ई ने मन-ही-मन सोचा। ''मैं तो समझा था कि तुम आजकल सागर के किनारे मछलियाँ पकड़ रहे होगे। मुझे क्या मालूम कि यहाँ काली करतूतों में लगे हो। अब समझा कि वह बुढ़िया ऐसी बातें क्यों कर रही थी।....''

पल भर में फंग मंग का धनुष पूर्ण चंद्रमा की तरह खिंच गया और सनसनाता हुआ बाण ई की गर्दन की तरफ बढ़ने लगा। पर निशाना चूक गया और तीर गर्दन के बदले मुँह में जा लगा। ई ने कलाबाजी खाई, बाण को मुंह में दबा लिया और ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका घोड़ा निश्चल खड़ा रहा।

यह सोचकर कि ई मर चुका है, फंग मंग पंजे के बल चलता हुआ धीरे-धीरे उसके करीब जा पहुँचा। विजय के उन्माद में मुस्कराते हुए उसने ई की लाश पर नज़र डाली।

फंग मंग अभी उसे ग़ौर से देख ही रहा था कि ई ने आँखें खोल दीं और उठ बैठा।

''सैकड़ों बार मेरे पास आकर शिक्षा लेने के बाद भी तुम कुछ नहीं सीख पाए।'' उसने बाण मुँह से बाहर निकाल लिया और हँस पड़ा। ''क्या तुम नहीं जानते कि मैं 'बाण को चबा जाने' की कला में कितना माहिर हूँ? बड़े अफसोस की बात है। ये चालें तुम्हें कहीं नहीं ले जाएँगी। भला अपने ही उस्ताद के बताए दांवपेंचों से तुम उसी को कैसे पछाड़ सकते हो? कुछ अपने दाँवपेंच भी तो दिखाओ।''

''मैं तो 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर' वाली कहावत चरितार्थ कर रहा था।....'' विजेता धनुर्धारी बुदबुदाया।

ई उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से हँस पड़ा। ''तुम हमेशा किसी-न-किसी कहावत का सहारा ले लेते हो। इससे कुछ बूढ़ियाँ भले ही प्रभावित हो जाएँ, किंतु मैं हर्गिज़ नहीं हो सकता। मैं हमेशा शिकार खेलता हूँ, तुम्हारी तरह राहजनी कभी नहीं करता।....''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झोले में पड़ी मुर्गी को सही-सलामत देखकर उसे संतोष हुआ और वह घोड़े पर सवार हो घर की तरफ चल पड़ा।

''तेरा नाश हो जाए।....'' पीछे से गाली सुनाई दी।

''मैं नहीं समझता था कि यह इतनी नीचता दिखाएगा।.... ज़रा-सी उम्र है, लेकिन अभी से गाली-गलौज सीख गया है। शायद इसीलिए वह बुढ़िया उसके चक्कर में आ गई।''

ई ने उदास होकर सिर हिलाया और आगे बढ़ गया।

(3)

कांओल्यांग के खेतों को पार करने तक रात हो चुकी थी। गहरे नीले आसमान में तारे छिटक आए थे और पश्चिम दिशा में शुक्रतारा अपूर्व चमक-दमक के साथ शोभायमान था। ई का घोड़ा खेतों के बीच मेड़ों से गुज़र रहा था। वह बेहद थक गया था, उसकी रफ्तार बहुत धीमी हो गई थी। भाग्यवश क्षितिज पर चंद्रमा ने अपना रुपहला प्रकाश बिखेर दिया।

''क्या मुसीबत है।'' भूख के मारे ई के पेट में चूहे कूद रहे थे और सब्र का बाँध टूट चुका था। ''पेट पालने के लिए मैं जितना ज़्यादा कठोर परिश्रम करता हूँ, उतनी ही ज़्यादा मुसीबतों का सामना मुझे करना पड़ता है। इस तरह मेरा कितना समय बरबाद होता है।'' उसने रफ्तार तेज़ करने के लिए घोड़े को एड़ लगाई लेकिन घोड़े ने सिर्फ़ पूँछ हिलाई और पहले की तरह धीरे-धीरे चलता रहा।

''इतनी देर हो गई है। छांग अ ज़रूर नाराज़ हो जाएगी,'' उसने सोचा। ''वह गुस्से से लाल-पीली भी हो सकती है। शुक्र है, मैं उसे खुश करने के लिए एक मुर्गी ले जा रहा हूँ। उससे कह दूँगा : ''श्रीमती जी, दो सौ ली का चक्कर लगाकर आया हूँ, तब कहीं यह मुर्गी मिली।'' नहीं, यह ठीक नहीं है, यह बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही बात मालूम होती है।''

शीघ्र ही सामने रोशनियाँ देख वह खुश हुआ और चिंता दूर हुई। घोड़ा बिना हाँके तेज़ दौड़ने लगा। हिम के समान श्वेत गोलाकार चंद्रमा उसके मार्ग को प्रकाशित कर रहा था और ठंडी-ठंडी हवा का स्पर्श चेहरे में एक नई ताज़गी भर रहा था—उसे किसी बड़े आखेट से लौटने से भी ज्यादा आनंद अनुभव होने लगा।

कचरे के ढेर के पास पहुँचकर घोड़ा अपने आप रुक गया। ई ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक नज़र में समझ लिया कि कोई गड़बड़ है। पूरे घर में हंगामा मचा हुआ था। सिर्फ़ चाओ फू उसकी अगुवानी करने बाहर आया।

"क्या हुआ? वांग शंग कहाँ है?" उसने पूछा।

"याओ परिवार के घर मालकिन को देखने गया है।"

"क्या कहा? मालकिन याओ परिवार के यहाँ गई हैं?" ई भौंचक्का रह गया और घोड़े से उतरना तक भूल गया।

"हाँ, मालिक।" चाओ ने लगाम और चाबुक सँभाल ली।

ई घोड़े से उतर पड़ा और देहरी पार करके भीतर चला गया। एक क्षण सोचकर उसने फिर पूछा:

"कहीं मालकिन इंतज़ार करते-करते थक कर किसी रेस्तराँ में तो नहीं चली गईं?"

"नहीं मालिक। मैंने तीनों रेस्तराँ देख लिए हैं। वहाँ नहीं हैं।"

ई विचारों में डूब गया। अंदर गया तो देखा तीनों दासियाँ बड़े कमरे के सामने घबराई खड़ी हैं। वह परेशान होकर चिल्लाया:

"यह क्या? तुम तीनों यहीं हो? तुम्हारी मालकिन अकेली तो याओ परिवार के घर जाती नहीं।"

वे चुपचाप उसकी तरफ देखती रहीं। उन्होंने ई का धनुष, तरकश और मुर्गी वाला झोला उतार लिया। ई एक क्षण के लिए सशंकित हो उठा। कहीं गुस्से में आकर छांग अ ने आत्महत्या तो नहीं कर ली? उसने न्वी-कंग को भेजकर चाओ फू को बुलवा लिया जिससे उसे पिछवाड़े के तालाब और पेड़ों में तलाश करने भेज सके। लेकिन जब अपने कमरे में पहुँचा तो मालूम हो गया कि उसका अनुमान गलत था। सारा कमरा अस्तव्यस्त पड़ा था। सन्दूक खुले हुए थे। पलंग के पीछे नज़र डालते ही मालूम हो गया कि जेवरदान ग़ायब है। उस पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया। सोने-चाँदी, हीरे-मोती की उसे परवाह नहीं थी मगर पुजारी का दिया अमृत-रसायन भी तो उसी में था।

ई कमरे में दो बार इधर-से-उधर चक्कर लगा चुका तो दरवाज़े पर वांग शंग दिखाई दिया।

"हुज़ूर, मालकिन याओ परिवार के यहाँ नहीं है। आज वहाँ माच्यांग का खेल नहीं हो रहा।"

ई ने उसकी तरफ देखा, मगर बोला कुछ नहीं। वांग शंग चला गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हुज़ूर, क्या आपने मुझे याद किया है?" चाओ फू ने अंदर आकर पूछा।

ई ने सिर हिलाकर मना कर दिया और इशारे से उसे बाहर भेज दिया।

वह लगातार कमरे में चक्कर लगाता रहा। कुछ देर बाद बड़े कमरे में जाकर वहाँ बैठ गया। सामने की दीवार पर नज़र गई तो सिंदूरी धनुष-बाण, काला धनुष-बाण, कलदार धनुष, तलवार, कटार सभी शस्त्र दिखाई दिए। कुछ देर सोचने के बाद वह काठ की मूरत की तरह खड़ी दासियों से बोला:

"तुम्हारी मालकिन कब से लापता है?"

"जब मैं चिराग लेकर अंदर आई तो यहाँ नहीं थीं," न्वी-ई बोली। "लेकिन उन्हें बाहर जाते किसी ने नहीं देखा।"

"क्या तुमने उन्हें उस संदूक से कोई औषधि निकालते देखा था?"

"नहीं मालिक। हाँ, आज तीसरे पहर उन्होंने मुझसे पानी ज़रूर माँगा था।"

ई व्याकुल होकर उठ खड़ा हुआ। उसे संदेह हुआ हो-न-हो छांग अ उसे इस दुनिया में अकेला छोड़कर चली गई है।

"क्या तुमने कोई चीज़ आसमान की तरफ उड़ती देखी?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ।" न्वी-शिन जैसे कुछ याद करने लगी हो। "जब मैं चिराग जलाकर बाहर आ रही थी तो देखा एक काली-सी छाया यहाँ से ऊपर की तरफ उड़ रही है। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मालकिन होंगी।...." उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"ज़रूर वही होंगी।" ई ने ज़ोर से घुटने पर हाथ मारा और उछल पड़ा। कमरे से बाहर निकल कर न्वी-शिन से बोला: "छाया किस तरफ गई थी?"

न्वी-शिन ने उँगली के इशारे से दिशा बताई। लेकिन उस ओर के आकाश में तो हिम के समान श्वेत गोलाकार चंद्रमा लटक रहा था, उसके अंदर धुँधले मंडपों व वृक्षों के सिवाय कहीं कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। जब ई छोटा था तो दादी ने चंद्रमा के अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में उसे बहुत-सी बातें बताई थी। उनकी धुँधली-सी याद

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मस्तिष्क में आज भी बनी हुई थी। नीले सागर में तैरते चंद्रमा का सौंदर्य देखकर उसे अपने हाथ-पाँव बोझिल महसूस होने लगे।

उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। क्रोध में किसी को मार गिराने के लिए बेचैन हो उठा। सिर से बाहर निकलती आँखों से गरज कर दासियों को आदेश दिया:

"मेरा धनुष लाओ। वह धनुष जिससे मैंने अनेक सूर्यों को मार गिराया था। साथ में तीन बाण भी।"

न्वी-ई और न्वी-कंग ने बड़े कमरे के बीच की दीवार से एक विशाल धनुष उतार लिया, उसकी धूल झाड़ी और तीन लंबे बाणों के साथ उसे ई के हाथ में दे दिया।

एक हाथ में धनुष उठाकर उसने दूसरे हाथ से तीनों बाण प्रत्यंचा पर चढ़ा लिए और चंद्रमा की तरफ निशाना साधकर भरपूर शक्ति से डोर खींची। वह चट्टान की तरह मजबूती से खड़ा था, आँखों से अंगारे बरस रहे थे, सिर और दाढ़ी के बाल आग की लपटों के समान हवा में उड़ रहे थे। एक क्षण के लिए वह फिर वही धनुर्विद्या में पारंगत वीर लगने लगा जिसने आज से काफी पहले अनेक सूर्यों को मार गिराया था।

केवल एक सरसराहट हुई। एक-एक करके तीनों बाण छूटे। रफ्तार इतनी तेज़ थी कि उन्हें देखना या उनकी आवाज़ सुनना असंभव था। वैसे तीनों बाणों को चंद्रमा के एक ही स्थल पर घुसना चाहिए था क्योंकि तीनों ठीक एक-दूसरे के पीछे छोड़ गए थे और उनमें बाल भर का भी अंतर नहीं था। लेकिन बाण निशाने पर शर्तिया वार करें इस ख़्याल से उसने तीनों बाणें की दिशा में मामूली-सा फर्क कर दिया था, ताकि तीनों बाण चंद्रमा के तीन अलग-अलग स्थलों पर लगकर तीन घाव कर दें।

सहसा दासियाँ चीख पड़ीं। उन्होंने देखा चंद्रमा लड़खड़ा रहा है, उन्हें लगा वह ज़रूर नीचे गिर जाएगा—लेकिन चंद्रमा बिलकुल सही सलामत शांति से आसमान में टिका रहा और पहले से भी ज्यादा शीतल और उज्ज्वल प्रकाश बिखेरता रहा।

ई ने अपना सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा और चंद्रमा को ललकारा। कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन चंद्रमा पर कोई असर न हुआ। ई ने तीन कदम आगे बढ़ाए, तो चंद्रमा तीन कदम पीछे हट गया। ई तीन कदम पीछे हटा तो चंद्रमा तीन कदम आगे बढ़ गया।

दोनों चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हताश होकर ई ने अपना धनुष बड़े कमरे की दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और स्वयं अंदर चला गया। दासियाँ उसके पीछे-पीछे अंदर जा पहुँचीं।

वह बैठ गया। मुंह से एक आह निकली। ''तुम्हारी मालकिन अकेली ही हमेशा-हमेशा के लिए चली गई हैं। वह सुख-चैन से रहेंगी। मुझे यहाँ छोड़कर वह अकेली ही क्यों चली गई? क्या मुझे बहुत बूढ़ा समझती थीं? लेकिन अभी पिछले ही महीने तो उन्होंने कहा था : ''तुम बूढ़े नहीं हो। खुद को बूढ़ा समझना मानसिक कमज़ोरी की निशानी है ।....''

''कारण यह नहीं है,'' न्वी-ई बोली। ''लोग आपको अब भी वीर योद्धा समझते हैं, सरकार।''

''कभी-कभी आप सचमुच एक कलाकार की तरह लगते हैं,'' न्वी-शिन बोल पड़ी।

''यह सब फिजूल की बात है। असलियत यह है कि सेवैयाँ और कौवे की चटनी उनसे खाई नहीं गई। इसके लिए मैं उन्हें दोषी नहीं समझता।....''

''चीते की खाल एक तरफ से बिलकुल घिस गई है। दीवार की तरफ वाली टाँग का हिस्सा काटकर इसे ठीक कर दूँगी। फिर यह अच्छी लगने लगेगी।'' यह कहती हुई न्वी-शिन अंदर की तरफ जाने लगी।

''ठहरो।'' ई ने कुछ सोचकर कहा। ''इसकी अभी क्या ज़ल्दी है। मैं भूखा हूँ। पहले मेरे लिए फौरन मुर्गी का माँस, मिर्च की चटनी और काफी सारी रोटियाँ बना लाओ। इसके बाद मैं सोऊँगा। कल पुजारी के पास जाकर एक और अमृत-रसायन माँग लाऊँगा ताकि छांग अ के पीछे-पीछे मैं भी चंद्रलोक में पहुँच जाऊँ। न्वी-कंग, तुम वांग शंग से कह दो कि घोड़े के सामने चार बाल्टी दाना डाल दे।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनोखी तलवार

(1)

मेइ च्येन छी सो जाने के लिए माँ की बग़ल में लेटा ही था कि चूहे आकर नाँद पर रखे लकड़ी के ढक्कन को कुतरने लगे। उस आवाज़ से वह परेशान हो गया। उसने चूहों को भगाने के लिए जो धीमी आवाज़ें निकालीं, पहले तो उनका कुछ असर हुआ, लेकिन बाद में वे उन्हें अनसुना करके ढक्कन को मज़े में काटने-कुतरने लगे। वह उन्हें डराने के लिए ज़ोर से आहट भी नहीं करना चाहता था क्योंकि माँ जग सकती थी। माँ दिन भर की मेहनत से निढाल हो तकिये पर सिर रखते ही गहरी नींद में सो गयी थी।

काफी देर की खटपट के बाद सन्नाटा छा गया। उसे झपकी आ रही थी कि ज़ोर के छपाके से अचानक उसकी आँखें खुल गयीं। उसे मिट्टी के बर्तनों पर पंजों की खरोंच का शब्द सुनायी दिया।

"अच्छा! तुझे अभी देखता हूँ।" वह मन-ही-मन खुश हो चुपचाप उठ बैठा।

वह चारपाई से उतरा और चाँदनी में रास्ता खोजता दरवाज़े तक गया। किवाड़ों के पीछे रखी माचिस उठाकर चीड़ की लकड़ी जलाकर उसने नाँद पर रोशनी डाली। उसका शक ठीक निकला। एक मोटा चूहा नाँद में गिर पड़ा था। नाँद में पानी कम था, इसलिए चूहा निकल नहीं पा रहा था। नाँद के साथ-साथ पानी में चक्कर लगा-लगा कर पंजों से ऊपर चढ़ने का यत्न कर रहा था।

"अब मज़ा करो!" मेइ बहुत प्रसन्न था। हर रात कमबख़्त चूहे घर की चीज़ें कुतर-कुतर कर, खटपट कर उसकी नींद खराब किया करते थे। मेइ ने मशाल कोठरी की कच्ची दीवार पर एक छेद में अड़ा दी और नाँद में पड़े चूहे का तमाशा देखने लगा। चूहे की काले मनकों जैसी आँखें देख उसे बहुत झुँझलाहट हुई, उसने एक लकड़ी से चूहे को दबाकर पानी में डुबो दिया। मेइ ने लकड़ी हटाई तो चुहा फिर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किनारे-किनारे तैर कर ऊपर चढ़ सकने के लिए पंजों से नाँद को खुरचने लगा लेकिन अब उसकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। उसका सिर पानी में डूबा हुआ था और पानी के ऊपर उसकी लाल थुथंनी ही दिखाई दे रही थी। दम घुटने के कारण वह बार-बार छींक रहा था।

मेइ को कुछ दिनों से लाल नाक वाले आदमियों से चिढ़ हो गई थी परंतु चूहे की नन्हीं-सी तीखी लाल नाक देखकर उसे दया आ गई। उसने लकड़ी चूहे के पेट के नीचे कर दी। चूहे ने लकड़ी पकड़ ली, पल भर साँस ली और फिर लकड़ी पर चढ़ आया। लेकिन उसके शरीर, उसके काले भीगे रोयें, पानी से फूला पेट केंचुए-सी पूँछ देखकर मेइ को बहुत घिन लगी। उसने लकड़ी को ज़ोर से झटका दिया। चूहा छप से फिर पानी में गिर पड़ा। मेइ ने लकड़ी को बार-बार चूहे के सिर पर मारा कि वह डूबकर मर जाए।

मेइ और चूहे का संघर्ष बहुत देर तक चलता रहा। रोशनी के लिए उसने छह बार चीड़ की लकड़ी की नई मशाल जलाई। थका हुआ चूहा अधडूबा-सा नाँद के बीचोंबीच तैर रहा था और कभी-कभी उसका शरीर ऊपर आने को ज़ोर मारता था। मेइ को फिर दया आ गई। उसने लकड़ी को तोड़कर दो टुकड़े कर लिए और बहुत यत्न से चूहे को पानी में से निकाल कर धरती पर रख दिया। चूहा कुछ देर निश्चल पड़ा रहा, फिर साँस लेने के लिए हिलता-सा जान पड़ा। बहुत देर वैसे ही रहा, फिर उसके चारों पैर हिले और वह पाँवों पर खड़ा हो गया, मानो उठकर भाग जाना चाहता हो। मेइ का मन फिर बदल दिया। उसने सहसा अपना पाँव उठाकर ज़ोर से चूहे पर पटक दिया। 'पच्च' की सी आवाज़ हुई। मेइ ने बैठ कर देखा तो चूहे के मुँह से खून निकल आया था—शायद मर गया होगा।

मेइ को दुख और ग्लानि अनुभव हुई, जैसे कोई पाप कर बैठा हो। वह चूहे की ओर देखता वैसे ही बैठा रहा, उठ नहीं पा रहा था।

माँ की आँख खुल गई थी।

''क्या कर रहा है बेटे।'' माँ ने लेटे-लेटे पूछा।

''चूहा....'' मेइ झटके से उठकर खड़ा हो गया और माँ की तरफ मुँह करके कहा।

''हाँ, हाँ, चूहा तो है। लेकिन तू वहाँ क्या कर रहा है? उसे मार रहा है कि बचा रहा है?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेइ चुप रहा। चीड़ की मशाल बुझ गई थी। लड़का अँधेरे में चुप खड़ा था और चाँदनी के प्रकाश में कमरे के भीतर आँखें फाड़-फाड़ कर देख पाने की कोशिश कर रहा था।

माँ ने एक आह भरी और बोली:

''आधी रात के बाद तू सोलह साल का हो जाएगा। लेकिन अब भी तेरा दिल कितना कमज़ोर है। तुम बदले नहीं। ऐसे में तेरे पिता का बदला कौन लेगा?''

चाँदनी के धुँधले प्रकाश में खाट पर बैठी माँ का शरीर काँपता-सा जान पड़ रहा था। बुढ़िया के धीमे स्वर की अनंत पीड़ा से मेइ सिहर उठा। क्षण भर में उसका रक्त खौल उठा।

''पिता का बदला? किस बात के लिए बदला?'' मेइ ने माँ के नज़दीक आकर विस्मय से पूछा।

''हाँ, बदला लेना होगा। और तुझे ही लेना होगा। बहुत दिनों से तुझे बताना चाहती थी पर तू अभी बच्चा था, इसलिए कुछ नहीं कहा। अब तू बच्चा थोड़े ही है, फिर भी बच्चों जैसी बातें करता है। मैं क्या करूँ? तेरे जैसा लड़का क्या जवान मर्द का काम कर पाएगा?''

''क्यों नहीं करूँगा, माँ। तुम बताओ तो। मैं सब कुछ कर सकता हूँ।....''

''मैं तो तुझे सिर्फ़ बता ही सकती हूँ। करना तो तुझे ही होगा।.... अच्छा, यहाँ आकर बैठ।''

मेइ माँ के पास चला गया। खाट पर माँ सीधी बैठी थी, बाहर की चाँदनी के प्रकाश के प्रतिबिम्ब में उसकी आँखें चमक रही थीं।

''सुन,'' माँ का स्वर गंभीर हो गया। ''तेरे पिता तलवार गढ़ने के लिए प्रसिद्ध थे, सारे मुल्क में बेजोड़। अपना पेट पालने के लिए मैंने तेरे पिता द्वारा छोड़े हुए औज़ार बेच डाले। अब तुझे क्या दिखाऊँ? दुनिया में उनके बराबर का तलवार गढ़नेवाला कोई नहीं था। बीस साल पहले की बात है। राजा की रखैल ने लोहे का टुकड़ा जना। लोग कहते थे कि रखैल ने लोहे के खंभे का आलिंगन किया था, उसी से उसे गर्भ हो गया था। लोहा क्या था, बिलकुल पारदर्शी। महाराज उस लोहे की कदर जानते थे और उन्होंने ठान लिया कि उस लोहे की तलवार बनवाएँगे—ऐसी तलवार जिससे राजा अपने राज्य की रक्षा कर सके; शत्रुओं का ख़ात्मा कर सके और स्वयं अपनी रक्षा कर सके।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदकिस्मती की बात, महाराज ने तेरे पिता को लोहे की तलवार गढ़ने का काम सौंपा। तेरे पिता लोहा घर ले आए। तीन बरस तक उस लोहे को तपा-तपा कर गढ़ते रहे और दो तलवारें तैयार कर लीं।"

"जिस दिन तेरे पिता ने तलवारों को आख़िरी बार तपाने के लिए भट्ठी सुलगाई तो बड़े अचरज की बात हुई। भट्ठी से सफेद-सफेद भाप बहुत ज़ोर से उठकर आसमान तक पहुँच गई और धरती डोल गई। सफेद भाप का एक बादल बन गया और थोड़ी ही देर में यह बादल लाल-सुर्ख हो गया। जिसके लाल-लाल प्रकाश में सब चीज़ें लाल-गुलाबी हो गईं। कोयलों से भरी काली भट्ठी में दोनों तलवारें भी तप कर लाल-सुर्ख हो रही थीं। तेरे पिता कुएँ से शुद्ध जल लाकर तलवारों पर हल्के-हल्के छींटे देने लगे तो तलवारें ज़ोर-ज़ोर से फुँफकारने लगीं और धीरे-धीरे नीली पड़ गईं। तेरे पिता सात दिन और सात रात तलवारों पर पानी चढाते रहे। सात दिन बाद भट्ठी में धरी तलवारें लुप्त हो गईं। कोई बहुत ध्यान से भट्ठी में नज़र टिकाकर देखता तो दो लंबे-लंबे महीन काँच के फलक से दिखाई देते थे।"

"तेरे पिता की आँखें प्रसन्नता और संतोष से दमक रही थीं। उस दिन तलवारें भट्ठी से निकाल लीं और उनकी गढ़ाई करने लगे। जाने क्यों तेरे पिता के माथे पर चिंता झलक आती थी। उन्होंने दोनों तलवारें दो पेटियों में रख कर बंद कर दीं।"

"तेरे पिता ने मेरे कान में धीमे से कहा, "तू जानती है, दुनिया जान गई है कि तलवारें बन गई हैं। कल महाराज के यहाँ एक तलवार देने जाऊँगा। महाराज को तलवार देने का दिन ही मेरा अंतिम दिन होगा। मुझे डर है कि मैं शायद लौटकर नहीं आ पाऊँगा।"

"मैं तो बहुत डर गई। तेरे पिता की बात कुछ समझ नहीं पाई सो क्या जवाब देती। केवल इतना कह पाई: "तलवारें तो ऐसी बनी हैं कि कोई क्या बनाएगा।"

"अरे, तू बहुत भोली है, कुछ नहीं समझती" तेरे पिता ने कहा। "तू जानती है, राजा कैसा शक्की और निर्दयी है? उसे सदा दुश्मनों का डर रहता है। उसके लिए मैंने ऐसी तलवार गढ़ दी है जिसका दुनिया में जवाब नहीं। वह ज़रूर मेरी गर्दन कटवा देगा जिससे उसकी तलवार के मुकाबले की दूसरी तलवार मैं और किसी के लिए न गढ़ सकूँ।"

"मैं रोने लगी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तू काहे को रोती है। तेरे रोने से क्या होगा?" तेरे पिता ने कहा, "जो भाग्य में लिखा है, वही होगा। होनी को कोई टाल नहीं सकता। मैं तो जानता था, यह होने को है। सो उपाय भी कर लिया है।" तेरे पिता की आँखों से चिनगारी फूट निकली जैसे ही उन्होंने पेटी में रखी दूसरी तलवार मेरी गोद में रखी। बोले, "एक नर-तलवार तुझे दे रहा हूँ। इसे सँभाल कर रखना। कल मादा-तलवार राजा के यहाँ देने जाऊँगा। मैं लौट कर नहीं आया तो जान लेना कि मैं मार दिया गया हूँ। चार-पाँच महीने में तेरे पेट से बाल-बच्चा होगा। तू मेरे लिए रोती मत रहना। बच्चे को होशियारी से पालना। जब बेटा जवान हो जाय, तो यह नर-तलवार उसे देकर कहना कि जा और राजा का सिर काट कर मेरा बदला ले।"

"क्या पिता उस दिन वापस लौटे?" मेइ ने उत्सुकता से पूछा।

"नहीं, कभी नहीं लौटे," माँ ने धैर्य से उत्तर दिया। "तेरे पिता को सब जगह खोजती फिरी, कहीं कुछ पता नहीं लगा। फिर ख़बर मिली कि तेरे पिता की गढ़ी तलवार ने सबसे पहले तेरे पिता का ही खून पिया। राजा को भय था कि तेरे पिता प्रेत बनकर महलों में उत्पात न मचाएँ इसलिए हुक्म दे दिया कि उनका धड़ सामने के फाटक पर दफनाया जाए और सिर महलों के पिछवाड़े बाग़ में गाड़ा जाय।"

मेइ च्येन छी की रगों में बिजली-सी दौड़ गई। उसे लगा उसके रोएँ-रोएँ से चिनगारियाँ उड़ रही हैं। अँधेरे में लड़के ने इतनी ज़ोर से मुट्ठियाँ भींचीं मानो अपनी उँगलियों को चूर-चूर कर लेगा।

माँ खाट से उठी और उसने खाट के सिरहाने पड़ा तख़्ता खींच कर हटा दिया। एक मशाल जला ली। फिर किवाड़ों के पीछे से कुदाली उठा कर लड़के के हाथ में दे दी और बोली, "यहाँ खोद डाल।"

मेइ का दिल धड़क रहा था फिर भी वह धैर्य से लगातार खोदता गया। गड्ढे से पीली मिट्टी निकाल कर एक ओर डालता जा रहा था। कोई पाँच फुट गहरा खोद चुका तो मिट्टी का रंग बदल गया। उसमें गले हुए काठ के टुकड़े भी थे।

"देखकर, अब होशियारी से खोदना," माँ ने ज़ोर से कहा।

मेइ गड्ढे में झुक कर बहुत सावधानी से सड़ी-गली लकड़ी निकालता जा रहा था कि सहसा उँगलियों में किसी बहुत ठंडी बर्फ जैसी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीज़ का स्पर्श अनुभव हुआ। यही स्फटिक की तरह चमचमाती तलवार थी। मेइ ने तलवार की मूठ पकड़ कर उसे उठा लिया।

तलवार के बाहर आते ही अचानक आकाश में चमकते चाँद-सितारों और कोठरी में जलती मशाल की रोशनी फीकी पड़ गई। चारों ओर चमचमाते फौलाद का नीला प्रकाश फैल गया। इस नीले प्रकाश में देखते-देखते तलवार पिघल कर लुप्त हो गई। नौजवान ने आँखें मल कर ध्यान से देखा तो साढ़े तीन फुट लंबी कोई चीज़ उसके हाथ में थी। तलवार की तेज़ धार नहीं दिखाई दे रही थी, मानो धार मुड़ कर छड़ी बन गई हो।

"अब तू अपना दयाभाव छोड़ दे," माँ बोली। "तलवार उठा और जाकर अपने पिता का बदला ले।"

"मेरे अंदर अब दयाभाव कहाँ है माँ? इस तलवार से पिता का बदला अवश्य लूँगा।"

"तुमसे यही आशा थी। तू नीले रंग का कोट पहन ले और तलवार पीठ पर बाँध ले। तेरा कोट उसी रंग का रहेगा तो तलवार छिपी रहेगी। तेरे लिए नीला कोट पहले से ही सिला रखा है। संदूक में से निकाल ले।" माँ ने खटिया के सिरहाने पड़े टूटे संदूक की ओर इशारा किया, "सुबह तू अपने रास्ते चल देना। मेरी चिंता मत करना।"

मेइ ने संदूक से कोट निकाला और पहनकर देखा। वह उसके बदन पर खूब सज रहा था। फिर उसने कोट उतारकर उसमें तलवार लपेटकर सिरहाने रख ली और चुपचाप लेट गया। उसे जान पड़ा कि उसके शरीर में अद्‌भुत शक्ति समा गई है। सोचा, अभी मन की सब चिंता दूर कर सो जाऊँ, सुबह स्वस्थ तरोताज़ा उठकर बदला लेने के लिए पिता के हत्यारे की खोज में चल दूँगा।

मेइ को नींद नहीं आ सकी। बार-बार करवटें लेता रहा। मन चाहता था कि उठकर बैठ जाय। माँ की गहरी लंबी साँसें और आहें बार-बार सुनाई दे जाती थीं। मुर्गे की पहली बाँग सुनाई दी तो मेइ ने समझ लिया कि दिन चढ़नेवाला है और वह सोलह वर्ष का जवान हो गया है।

(2)

रतजगे से सुर्ख सूजी आँखों से वह बिना पीछे देखे घर से निकला। शरीर पर नीले रंग का लंबा कोट पहने और पीठ पर तलवार बाँधे मेइ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेज़ चाल से नगर की ओर चला जा रहा था। अभी तक पूरब में रोशनी नहीं हुई थी। निशा की वायु अभी वनों में देवदार की पत्तियों पर टिकी ओस के नीचे विश्राम कर रही थी। मेइ जब वन के दूसरे छोर पर पहुँचा तो पूर्व में उषा झाँकने लगी थी और पेड़-पौधों पर अटकी ओस सूर्य की किरणों के स्पर्श से उज्ज्वल हो चमकने लगी थी। दूर, बहुत दूर उसके सामने नगर की काली-भूरी ऊँची-ऊँची दीवारें कुहासे में लिपटी दिखाई देने लगी थीं।

नगर के द्वार पर मेइ ने साग-तरकारी बेचने आनेवालों की भीड़ में मिल कर नगर में प्रवेश किया। बाज़ारों में कारोबार की चहल-पहल और शोर था। जहाँ-तहाँ निठल्ले लोग गोल बाँधे बातचीत भी कर रहे थे। जब-तब किवाड़ों के पीछे से स्त्रियाँ झाँक लेती थीं। उनकी आँखों में अभी नींद भरी थी, केश बिखरे हुए थे, सिंगार न कर पाने से उनके चेहरे पाउडर-सुर्खी के बिना बिलकुल पीले, मुरझाए हुए लग रहे थे।

मेइ च्येन छी को लग रहा था कि कोई बहुत बड़ी घटना घटने वाली है और लोग उत्सुकता और धैर्य से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मेइ कदम बढ़ाता चला जा रहा था कि एक बच्चा भागता हुआ उसके कपड़ों में छिपी तलवार की नोक से बाल-बाल बच गया। मेइ का शरीर पसीना-पसीना हो गया। महल के समीप उत्तर की ओर घूमा तो बाज़ार में लोगों की भीड़ दिखाई दी जो गर्दनें उठाकर-उठाकर सड़क की ओर निगाहें लगाए थी। भीड़ में स्त्रियों और बच्चों की चीख-पुकार सुनाई दे रही थी। मेइ भीड़ में जाने से कतरा रहा था कि कोई उसकी तलवार से न बिंध जाए, परंतु उसके पीछे से लोग धक्का देते बढ़ते चले आ रहे थे। मेइ बच-बच कर उन्हें रास्ता देता जा रहा था। उसके सामने लोगों की पीठें ही पीठें थीं। लोग उचक-उचक कर, गर्दनें उठा-उठाकर सड़क की ओर निगाहें लगाए थे।

मेइ ने देखा, उसके सामने खड़े लोग एक के बाद एक अपने घुटनों के बल बैठ गए हैं। सड़क पर दूर दिखाई दिया, दो घुड़सवार सरपट चले आ रहे हैं। घुड़सवारों के पीछे बर्छे, भाले, तलवारें और तीर-कमान लिए सिपाही झंडे उठाए आ रहे थे। सिपाहियों के कदमों से उड़ती धूल आकाश में चढ़ती जा रही थी। सिपाहियों के पीछे चार घोड़ों वाली बहुत बड़ी गाड़ी थी जिसमें बाजा बजाने वाले लोग थे जो घंटे-घड़ियाल, ढोल-नगाड़े, शहनाइयाँ और तुरहियाँ बजाते चल रहे थे। बाजे वालों के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीछे भड़कीले कपड़े पहने दरबारियों की सवारियाँ चली आ रही थीं। वे या तो बूढ़े थे या मोटी तोंद वाले लोग थे और उनके चेहरे पसीने से चमक रहे थे। दरबारियों के पीछे फिर नेज़ों, तलवारों और फरसों से लैस सवारों का दल था। अभिवादन के लिए झुके लोग धरती पर लेट-लेट कर दंडवत करने लगे तो मेइ च्येन छी ने देखा कि एक बहुत बड़ा रथ, पीले सायवान से ढका हुआ चला आ रहा था। रथ के बीचोंबीच चमचमाती पोशाक पहने एक मोटा आदमी बैठा था जिसका सिर छोटा था और मूँछों के बाल खिचड़ी थे। कमर में तलवार थी, ठीक वैसी ही जैसी मेइ अपने कपड़ों में पीठ पर छिपाए था।

मेइ का शरीर सिहरन से काँप उठा, फिर उसके हृदय में भयंकर ज्वाला भभक उठी। उसका हाथ कपड़ों में छिपी तलवार की मूठ पर चला गया और वह अभिवादन में झुके लोगों की भीड़ को चीर कर आगे बढ़ने लगा।

मेइ सड़क की ओर पाँच-छह कदम ही बढ़ पाया था कि किसी ने उसे लँगड़ी लगाकर गिरा दिया और वह एक कमज़ोर सिकुड़े से नौजवान के ऊपर गिर पड़ा। मेइ घबराकर उठने की कोशिश कर रहा था कि उसके नीचे दबने वाला नौजवान कहीं तलवार की नोक से छिद न गया हो, कि दो घूँसे उसकी पसलियों पर पड़े। चोटों की परवाह न कर मेइ ने फिर सड़क की ओर आँखें उठाईं। परंतु तब तक पीले सायवान वाला रथ और रथ के पीछे सवारों का दल आगे जा चुके थे।

सड़क के दोनों ओर दंडवत करते लोग उठकर खड़े हो गए थे। मेइ के नीचे दबने वाले दुबले, बीमार-से नौजवान ने मेइ का गिरेबान पकड़ लिया और छोड़ नहीं रहा था। वह चीख-चीख कर दुहाई दे रहा था कि उसके कँधे में जरब आ गई है और अस्सी बरस की उम्र से पहले अगर उसकी मृत्यु हो गई तो मेइ को हर्जाना देना होगा। निठल्ले लोगों ने उन्हें घेर लिया और खड़े तमाशा देख रहे थे और कुछ लोग चोट खाए नौजवान की हिमायत में मेइ को धमकाने और गालियाँ देने लगे। मेइ विचित्र परिस्थिति में उलझा समझ नहीं पा रहा था कि उनकी बातों पर हँस दे या जवाब में दो हाथ लगा दे। उनसे पिण्ड छुड़ाने का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। काफी देर तक यह सब चलता रहा। अब मेइ के लिए धीरज रखना संभव न रहा, परंतु तमाशाई उसे अब भी घेरे हुए थे।

मेइ को घेर पर खड़ी भीड़ में से रास्ता बनाकर एक साँवला-सा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमी आया, जिसकी दाढ़ी के बाल काले थे, वैसी काली आँखें और लोहे जैसा सुता शरीर था। वह बोले बिना मेइ की ओर देखकर ज़रा मुस्कराया और फिर उसने दुबले, बीमार-से नौजवान के जबड़े पर एक हल्का-सा प्रहार किया और उसकी आँखों में घूर कर देखा। नौजवान ने भी घूर कर देखा, पल भर आँखें मिलाए रहा, फिर उसने मेइ का गिरेबान छोड़ दिया और चुपचाप भीड़ से निकल कर भाग गया। साँवला आदमी भी उसके पीछे-पीछे चला गया तो भीड़ तमाशा समाप्त हो जाने से निराश हो बिखरने लगी। कुछ लोग मेइ से उसकी आयु और घरबार का पता पूछने लगे और यह भी पूछने लगे कि उसके घर में बहनें हैं कि नहीं। मेइ ने उनकी बातों पर कान नहीं दिया।

मेइ यह सोचकर दक्षिण की ओर चल पड़ा कि इतनी भीड़भाड़ और चहल-पहल में कोई आदमी उसकी तलवार से बिंध गया तो व्यर्थ में फँस जाएगा। बेहतर है कि वह नगर के दक्षिणी द्वार के बाहर राजा के लौटने की प्रतीक्षा करे। तभी पिता का बदला ले सकने का अवसर होगा। दक्षिणी द्वार के बाहर खुली जगह, भीड़भाड़ न होना मेइ के प्रयोजन के लिए उपयुक्त स्थान था। नगर में सभी ओर राजा की पर्वत-विहार यात्रा की चर्चा थी। लोग राजा की शान-शौकत ओर महाराज के दर्शन पाने के सौभाग्य की बात कर रहे थे। इस बात की होड़ थी कि महाराज के सम्मान में किसने कितना लंबा दंडवत् किया, कौन कितना अधिक राजभक्त और सभ्य नागरिक है। नगर इसी प्रकार के कोलाहल से गूँज रहा था। नगर के दक्षिणी द्वार पर ही कुछ शांति थी।

मेइ नगर से बाहर जाकर शहतूत के एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे उसने दो रोटियाँ खाईं। रोटी खा रहा था कि माँ की याद आ गई और उसका दिल भर आया। परंतु उसने अपने आप को सँभाल लिया। चारों ओर सन्नाटा बढ़ता जा रहा था। जिसमें मेइ को अपनी साँस की आवाज़ भी स्पष्ट सुनाई देने लगी।

सूर्यास्त हो गया तो मेइ की बेचैनी और बढ़ती गई। वह मार्ग पर दूर तक टकटकी बाँधे देख रहा था, परंतु राजा के लौटने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया। सांग-सब्ज़ी बेचने के लिए शहर आनेवाले देहाती लोग अपनी खाली टोकरियाँ लिए एक-एक कर लौटते दिखाई दे रहे थे।

जब गाँव के सब लोग लौट चुके, उसके काफी देर बाद वही साँवला-सा आदमी शहर से जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ आया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"भागो.... भागो, मेइ च्येन छी भागो। राजा तुम्हें पकड़ना चाहता है, तुम्हें खोज रहा है।" उसका स्वर वन में बोलते उल्लू की तरह था।

मेइ एड़ी से चोटी तक काँप उठा। फिर मानो जादू के प्रभाव में साँवले आदमी के पीछे-पीछे सरपट भागा मानो पंख लग गए हों। मेइ ज़रा दम लेने को रुका तो देखा कि दोनों देवदार का जंगल लाँघ आए हैं। पीछे दूर क्षितिज पर उदय होते चंद्रमा की सुनहरी किरणें फैल रही थीं, परंतु सामने मेइ को अपने साथी की छलावे जैसी चमकती आँखें ही दिखाई दे रही थीं।

"तुम मुझे कैसे जानते हो?" मेइ ने आशंका और विस्मय से पूछा।

"मैं तुम्हें हमेशा से जानता हूँ," साँवला आदमी हँस दिया। "यह भी मालूम है कि तुम अपने कपड़ों में नर-तलवार छिपाए हो और अपने पिता का बदला लेने आए हो। यह भी जानता हूँ कि तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। इतना ही नहीं, आज किसी ने तुम्हारा भेद राजा को दे दिया है। तुम्हारा शत्रु बहुत देर पहले ही पूर्वी द्वार से महल पहुँच गया है और राजा ने तुम्हें पकड़कर लाने का हुक्म दे दिया है।"

मेइ च्येन छी का दिल डूबने लगा।

"ओह! माँ ने इसीलिए ठंडी साँस ली थी।" मेइ के मुँह से निकल गया।

"तुम्हारी माँ सब बातें नहीं जानती। उसे क्या मालूम कि मैं तुम्हारा बदला लूँगा।"

"आप? आप मेरा बदला लेंगे? क्या आप दीनबंधु हैं?"

"नहीं, नहीं, ऐसा कहकर मेरा अपमान मत करो।"

"तो फिर आप अनाथों और विधवाओं से सहानुभूति से ऐसा करते हैं?"

"बेटा, इन निस्सार बना दिए गए शब्दों का प्रयोग मत करो।" साँवला आदमी कठोर स्वर में बोला: "न्याय, सहानुभूति जैसे शब्दों में अब कोई सार नहीं रहा। अब अन्याय और लूटमार करने वालों ने इन शब्दों को अपना लिया है। ऐसे शब्दों के लिए मेरे दिल में कोई जगह नहीं। मुझे तो तुम्हारा बदला लेना है।"

"कृपा है आपकी, पर यह कैसे कर पाएँगे?"

"तुम्हें दो चीज़ें देनी होंगी," साँवले आदमी की आवाज़ आँखों की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनगारियों के नीचे से निकल रही थी। "वे दो चीज़ें ये हैं, पहले तुम्हारी तलवार और दूसरे तुम्हारा सिर।"

मेइ को यह माँग कुछ अजीब-सी लगी। वह झिझका पर डरा नहीं। कुछ क्षण तक वह बोल नहीं पाया।

"यह मत समझना कि मैं तुम्हारी तलवार और तुम्हारे प्राण लेने के लिए तुम्हें धोखा दे रहा हूँ," अँधेरे में साँवले आदमी का कठोर स्वर सुनाई दिया। "तुम सोच-विचार लो। तुम्हें मेरा विश्वास हो तो मैं आगे बढ़ूँगा और विश्वास न हो तो रहने दो।"

"पर आप मेर बदला क्यों लेना चाहते हैं? क्या आप मेरे पिता को जानते थे?"

"तुम्हारे पिता को मैं शुरू से जानता था जैसे तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। परंतु कारण यह नहीं है। बेटा, तुम मेरी बदला लेने की शक्ति नहीं जानते। तुम्हारा सुख-दुख मेरा सुख-दुख है। मेरी आत्मा ने दूसरों से और स्वयं अपने आप से इतने दुख पाए हैं कि अब मैं अपने से घृणा करने लगा हूँ।"

घने जंगल के अंधकार में इन शब्दों की गूँज समाप्त होते ही मेइ च्येन छी का हाथ अपने कपड़ों में छिपी तलवार की मूठ पर चला गया। एक ही हाथ के झटके में मेइ का सिर कट कर उसके पाँव के समीप गिर पड़ा और तलवार लिए मेइ का हाथ साँवले आदमी की ओर बढ़ गया।

"ओह!" साँवले आदमी के मुख से निकल गया। उसने एक हाथ में तलवार ले ली और दूसरे हाथ से केश पकड़ कर मेइ का सिर धरती से उठा लिया। उसने मेइ के मृत गर्म होंठों को दो बार चूमा और ठंडे निर्मम स्वर में अट्टहास कर उठा।

उसके अट्टहास से पूरा वन गूँज उठा। तभी घने वन के घटाटोप अंधकार में अनेक आँखें अंगारों की भाँति चमक उठीं और इतनी समीप आ गईं कि भूखे भेड़ियों की गुर्राहट और फुँफकार सुनाई देने लगी। एक झपाटे में मेइ के शरीर पर से कपड़े उड़ गए, दूसरे ही क्षण उसका शरीर गायब हो गया और घास पर उसके रक्त का चिह्न भी नहीं रह गया। केवल दाँतों से हड्डियाँ चबाए जाने की धीमी-धीमी कुरकुराहट सुनाई दे रही थी।

भेड़ियों के झुण्ड का सरदार साँवले आदमी पर झपटा, परंतु नीली तलवार के एक ही वार में उसका सिर हरी घास पर उसके पैरों के पास

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिर पड़ा। दूसरे भेड़िये अपने सरदार के धराशायी शरीर पर टूट पड़े और उन्होंने पल भर में उसकी खाल उधेड़ दी। दूसरे पल में उसके शरीर की बोटी-बोटी चट कर गए और उसके खून की एक-एक बूँद घास पर से चाट डाली। केवल दाँतों से हड्डियाँ चबाने का कुरमुर-कुरमुर शब्द सुनाई देता रहा।

साँवले आदमी ने घास पर पड़ा नीला कोट उठा लिया और मेइ च्येन छी का सिर उसमें लपेट लिया। तलवार पीठ पर बाँध कर वह वन में व्याप्त घने अंधकार को चीरता हुआ राजधानी की ओर चल पड़ा।

भेड़िये स्तब्ध खड़े थे। वे लाल-लाल जीभें लटकाए हाँफ रहे थे। अँधेरे में चमकती उनकी हरी आँखें तेज़ी से जाते साँवले आदमी की ओर लगी हुई थीं।

साँवला आदमी अँधेरे में राजधानी की ओर चला जा रहा था। वह ऊँचे स्वर में गाने लगा:

गीत गाओ हैया हो, गीत गाओ हैया हो!
एक धनी तलवार का बाँका,
हँसते-हँसते सीस दे गया।
जो चलते हैं सदा अकेले
उनकी जग में नहीं कमी है।
आन खड्ग की निभा सकें जो,
एकाकी वे कभी न रहते।
बैरी के बदले बैरी, सिर के बदले सिर।
दो वीरों ने अपने हाथों भेंट किया अपना सिर।

(3)

महाराज को पर्वत-विहार में कोई रस न आया। समाचार मिल गया था कि एक हत्यारा उनकी घात में घूम रहा है। इसलिए खिन्न मन वे महल की ओर लौट पड़े। उस रात उन्हें कुछ भी नहीं सुहा रहा था। उन्हें शिकायत थी कि नौवीं रखैल के बाल भी कल की तरह काले और चमकीले नहीं रहे। सौभाग्य से रखैल चतुर थी। साहस से महाराज की जाँघ पर बैठ गई और सत्तर से भी अधिक भंगिमाएँ दिखाकर अंततः उसने महाराज को रिझा ही लिया। शनै-शनै महाराज के महिमामय मस्तक पर तनी हुई भौहें शिथिल हो गईं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरे दिन तीसरे पहर महाराज की नींद टूटी तो उनका चित्त और भी उद्विग्न था। भोजन कर चुकने पर उनकी खिन्नता और भी अधिक बढ़ गई।

महाराज बहुत ज़ोर से जम्हाई लेकर गरज उठे: "हमारा मन बहुत उचाट है।"

महाराज का रंग-ढंग देखकर महारानी से लेकर दरबार के विदूषक तक सभी काँप उठे। कुछ समय से महाराज का मन बहुत खिन्न था। उन्हें अपने बूढ़े मंत्रियों का परामर्श, गोल-मटोल बौनों का हास-परिहास कुछ भी नहीं सुहाता था। डोरी पर नृत्य, बाँस के खेल, जादू के चमत्कार, नटों की उछल-कूद, तलवार निगलने और मुख से आग की लपटें उगलने के कौतुक से भी उनका विनोद नहीं हो पाया। बात-बात पर क्रोध में आपे से बाहर हो जाते और बहुत मामूली-सी बात पर भी दस-पाँच के सिर काट लेने की ख्वाहिश में तलवार खींच लेते।

राजमहल के दो कंचुकी सैर-सपाटे के लिए नगर में निकल गए थे। वे लौटकर आए तो महल में चारों ओर छाये आतंक को देख समझ गए कि भारी विपदा आनेवाली है। एक कंचुकी तो भय के मारे पीला हो गया। परंतु दूसरा साहसी था और कोई चिंता या भय प्रकट किए बिना वह धैर्य से महाराज के सामने चला गया और दंडवत् कर निवेदन किया:

"अन्नदाता, दास निवेदन करना चाहता हे कि नगर में एक बहुत चमत्कारिक पुरुष आया है। अन्नदाता उसका कौशल देखकर प्रसन्न होंगे।"

"क्या?" महाराज शब्दों का अपव्यय करना नहीं जानते थे।

"वह एक साँवला दुबला-पतला आदमी है, भिखमंगा-सा लगता है। नीले कपड़े पहने है, पीठ पर नीले रंग की छोटी-सी गठरी लिए है और हरदम बेतुके-से गीत गाता रहता है। कहता है बहुत चमत्कारी जादू जानता है। दुनिया में उसके जोड़ का खेल कोई दूसरा नहीं दिखा सकता। कहता है कि जो उसका खेल देख लेगा ज़िंदगी में उसे कभी चिंता और उदासी नहीं सताएगी। खेल दिखाने की उसकी शर्त है: दो चीज़ें हों, एक सोने का ड्रैगन[1] और दूसरी सोने की बड़ी देग।..."

---

1. चीन के सम्राट अपना बड़प्पन दिखाने के लिए अक्सर अपने आप को सोने का ड्रैगन कहते थे। चीन की पौराणिक कथाओं में ड्रैगन को पवित्र माना जाता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"सोने का ड्रैगन तो हम स्वयँ हैं! और सोने की देग हमारे पास मौजूद है।"

"यही दास ने भी सोचा था।...."

"उसे लाया जाय।"

महाराज के मुख से आदेश सुनते ही चार सवार कंचुकी के साथ महल से दौड़ पड़े। महारानी से लेकर दरबार के विदूषक तक सभी की चिंता दूर हुई। सभी को आशा थी कि जादूगर महाराज की खिन्नता दूर कर संसार को निर्भय कर देगा। यदि जादूगर के चमत्कार से महाराज का मनोविनोद न भी हुआ तो दुबले-पतले भिखमंगे पर ही महाराज के क्रोध की बिजली गिरेगी। जादूगर के आने तक किसी तरह रक्षा हो जाय तो फिर चिंता नहीं।

अधिक समय नहीं लगा। दरबार में छह आदमी चले आते दिखाई दिए। सबसे आगे कंचुकी था, बीच में साँवले आदमी को लिए चारों सवार। समीप आ जाने पर दिखाई दिया कि साँवला आदमी नीले रंग का कोट पहने था, उसके सिर, भौहों और दाढ़ी के बाल काले थे। चेहरा बहुत दुबला, आँखें धँसी हुईं, गालों की हड्डियाँ निकली हुईं। उसने महाराज के सम्मुख साष्टाँग दंडवत् किया तो उसकी पीठ पर नीले रंग के कपड़े में बँधी गठरी दिखाई दे गई। गठरी के कपड़े पर लाल रंग का डिज़ाइन बना हुआ था।

"खेल दिखाओ।" महाराज ने उतावली में पुकारा। जादूगर के पास साज-सामान इतना मामूली था कि महाराज ने सोचा—वह क्या करतब दिखलाएगा।

"अन्नदाता, दास का नाम येन-ची-आओ-च है। वनवन गाँव से आया हूँ। दास अजान-अपढ़ आदमी है लेकिन जवानी में एक पहुँचे हुए साधु-महात्मा ने बच्चे की खोपड़ी का जादू मुझे सिखा दिया। यह अकेले नहीं हो सकता, जादू तब हो सकता है जब सोने का ड्रैगन सामने रहे और सोने की बड़ी देग में कोयले की आँच पर गरम किया स्वच्छ जल हो। जब बच्चे का सिर देग में डालकर उबाला जाएगा तो सिर पानी में नाच दिखाएगा, भाँति-भाँति से नृत्य करेगा। वह सुरीले स्वर में हँसेगा और गाएगा। जो यह करतब देखेगा और यह गाना-बजाना सुनेगा, उसकी सारी चिंता मिट जाएगी। दुनिया के लोग यह देखेंगे-सुनेंगे तो जहान में अमन-चैन हो जाएगा।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"शुरू करो।" महाराज ने कड़कती आवाज़ में हुक्म दिया।

पलक मारते ही सोने की एक बहुत देग सिंहासन के सामने आ गई, इतनी बड़ी कि उसमें भैंसा समा जाए। देग पानी से भर दी गई और देग के नीचे कोयले में आग दे दी गई। साँवला जादूगर देग के समीप खड़ा था। जब कोयला दहक उठा तो जादूगर ने अपनी गठरी खोली और एक बच्चे का सिर निकाला। बच्चे का सिर दोनों हाथों में लेकर उसने ऊपर उठाकर दिखाया। बच्चे के माथे पर महीन-महीन भौहें थीं, बड़ी-बड़ी आँखें, मोती-से सफेद दाँत, लाल-लाल होंठ और चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी। सिर पर भरे-सुनहरे घुँघराले केश। साँवले जादूगर ने बाँह ऊँची उठाकर चारों ओर बैठे लोगों को बच्चे का सिर दिखा दिया। उसने सिर को देग के ऊपर थामकर फुसफुसाकर कुछ कहा और छप्प से सिर को पानी में छोड़ दिया। देग के मुँह से पाँच फुट ऊँची फेन उठी और फिर पानी शांत हो गया।

बहुत देर तक कोई चमत्कार दिखाई नहीं दिया। महाराज प्रतीक्षा में ऊबने लगे। महारानी, महाराज की रखैलें, मंत्री और कंचुकी सब डरने लगे और गोल-मटोल बौने साँवले जादूगर की ओर देखकर तिरस्कार से मुस्कराने लगे। महाराज ने यह देखा तो उन्हें जादूगर की गुस्ताखी पर क्रोध आ गया। अंगरक्षकों को आदेश देना चाहते थे कि महाराज के सामने ऐसी घृष्टता करने वाले मूर्ख आदमी को उठाकर देग में डाल दिया जाए और उबाल कर मार दिया जाय।

उसी समय देग के पानी में बुलबुले फूटने लगे। देग के नीचे चटक-चटक कर दहकते कोयलों का लाल प्रकाश चारों ओर फैलने लगा जिससे समीप खड़ा साँवला जादूगर भी लोहे की ताज़ा ढली मूर्ति जैसा लगने लगा। महाराज की दृष्टि उस ओर गई। साँवले जादूगर ने दोनों बाहें उठाकर आकाश की ओर देखा और सहसा नाचते हुए ऊँचे स्वर में गाने लगा:

गाओ रे गाओ, प्रेम के गीत,
गाओ रे प्रेम के गीत!
हाय प्रेम की प्यास! हाय रक्त की प्यास!
किसे नहीं यह प्यास?
जन-गन भटके अँधियारे में, राजा करता अट्टहास।
दस हजार सिर यहाँ कट चुके, जग में फैला त्रास।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं फिरता हूँ एक सिर लिए,
लूँगा बदला खून बहाकर।
छूटने को खून के फव्वारे,
गाओ गाओ अरे मतवारे।

जब वह गा रहा था तो देग में उबलता पानी उभरी पहाड़ियों की तरह देग के अंदर ऊपर-नीचे उठता गिरता रहा। बच्चे का पानी में उबलता सिर पानी के उबालों में ऊपर-नीचे चक्कर काट रहा था, जैसे कलाबाजियाँ खा रहा हो। बच्चे के पानी में उबलते चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी। कुछ समय बाद अचानक सिर उबलते पानी की भँवरों और उबालों से उलटे चक्कर काटने लगा। उबलते पानी के छपाके और छींटें उड़-उड़कर दरबार में सब ओर फैलने लगे। एक बौना बड़ी ज़ोर से चीख़ उठा और अपनी नाक मलने लगा। चीख़ रोक लेना उसके बस का न रहा।

साँवले आदमी ने गीत बंद किया और उबलते पानी में नाचता सिर स्थिर हो गया और उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव आ गए। सिर कुछ पल तक बिलकुल स्थिर रहा, फिर शनै-शनै फिर पानी में तैर कर तरह-तरह के हाव-भाव दिखाकर नाचने लगा। सिर देग के किनारे-किनारे तीन बार तैरा और उसने तीन डुबकियाँ लगाईं। फिर वह पूरी खुली आँखों और कालीं-काली चमकती पुतलियों से गानें लगा:

सभी दिशा में दूर-दूर तक फैला नरपति राज,
सभी देश अब जीत लिए हैं रहा न बैरी आज।
चाँद टरै, सूरज टरै, टरै न उसका राज।
आज खुशी से आया हूँ मैं, बने सफल सब काज
खड्ग चमचमा उठी—मगर मुझको न भुलाना!
वैभव चारों ओर किंतु मैं दुखी अभागा।
गीत खुशी के गाओ वैभव गान सुनाओ।
चमकीले नीले प्रकाश में वापस आओ।

सिर उछल कर पानी के उबाल की चोटी पर बैठ गया। फिर और कलाबाजियाँ दिखाईं और नाचने लगा। नाचते-नाचते उसकी आँखें दाएँ-बाएँ मार्मिक कटाक्ष करतीं फिर गानें लगीं:

हाय रे हाय, एक प्यार की खातिर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिर काटा अपना, सिर कुर्बान किया।
एक शीश बस मैं चाहता हूँ, ज़्यादा की नहीं चाह
तुमने तो कितने सिरों का बलिदान लिया।

गीत की अंतिम पंक्ति के साथ ही सिर पानी में डूब गया, फिर ऊपर नहीं आया। इसलिए उसके गीत के शब्द समझ में नहीं आ रहे थे। शनै-शनै गीत का स्वर विलीन हो गया और उबलता पानी भी स्थिर हो गया। अब देग में दूर से कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था।

''और आगे?'' महाराज प्रतीक्षा से उकताकर बोले।

''महाराज,'' जादूगर ने एक घुटना टेक सिर झुकाकर विनती की। ''महाराज अब दास सिर को ऊपर नहीं बुला सकता। वह तले पर मिलन का बहुत चमत्कारी नृत्य कर रहा है। यह नाच समीप आकर ही देखा जा सकता है। मैं इसे ऊपर नहीं ला सकता क्योंकि इस नाच की मुद्रा तले पर ही पेश की जा सकती है।''

महाराज सिंहासन से उतर कर देग के समीप चले गए। धधकती आँच के ताप की परवाह न कर देग के ऊपर झुककर भीतर देखने लगे। देग के भीतर जल दर्पण की तरह शांत था। तले में बच्चे का सिर शांत भाव से पड़ा था, उसकी आँखें महाराज को घूर रही थीं। महाराज से आँखें चार होने पर कटे हुए सिर के चेहरे पर बहुत प्यारी मुस्कान आ गई। महाराज को लगा कि वह चेहरा परिचित है। आख़िर यह कौन हो सकता है? महाराज सोच ही रहे थे कि साँवले जादूगर ने अपनी पीठ से नीली तलवार खींची, बिजली सी चमकी और तलवार महाराज की गर्दन के पार हो गई। महाराज का सिर छप्प से देग में गिर पड़ा।

जब शत्रु मिलते हैं तो एक नज़र में ही पहचान जाते हैं और ख़ासकर तब जब दूरी अधिक न हो। राजा का सिर पानी में गिरते ही मेइ च्येन छी का सिर उछल कर ऊपर आ गया और उसने राजा का कान काट लिया। देग का पानी फिर उफन पड़ा, बहुत ज़ोर से मथने लगा। पानी में पड़े दोनों सिर बहुत ज़ोर से भिड़ गए। कोई बीस बार दोनों सिरों की टक्करें हुईं, जिनमें राजा के सिर को पाँच घाव लगे और मेइ के सिर को सात। राजा का सिर पैंतरे बदल कर असावधान मेइ के सिर के पीछे हो गया और उसने मेइ की गर्दन पर दाँत गड़ दिए। राजा ने मेइ की गर्दन छोड़ी नहीं, दाँतों को खूब गहरे गड़ाता चला गया। बच्चे की पीड़ाभरी चीत्कार देग के बाहर सुनाई देने लगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महारानी से लेकर विदूषक तक सब दरबारी जो अब तक भयभीत होकर मूर्तिवत स्तब्ध थे इस आवाज़ को सुन होश में आए। उन्हें लगा जैसे अंधकार ने सूरज को ग्रस लिया था। भय में भी उन्हें छिपी खुशी का अहसास हुआ। गोल आँखें करके वे प्रतीक्षा करने लगे।

साँवले आदमी के चेहरे पर भी कुछ विस्मय दिखाई दिया, पर वह विचलित नहीं हुआ। बिना प्रयास के उसने सूखे पेड़ की डाल की तरह अपनी बाँह उठाई जिसमें अदृश्य तलवार थी। वह आगे झुका मानो देग के भीतर झाँकना चाहता हो। सहसा उसकी बाँह गिरी और तलवार उसकी गर्दन पर पड़ी। जादूगर का सिर कट कर देग में गिर पड़ा और बर्फ-सी सफ़ेद फेन उड़-उड़कर चारों ओर फैलने लगी।

उसका सिर पानी में गिरते ही राजा के सिर पर झपटा और उसने राजा की नाक पर दाँत गड़ा दिए। राजा की नाक जड़ से कटते-कटते बची। राजा पीड़ा से चिल्ला उठा और मेइ की गर्दन उसके दाँतों से छूट गई और छूटते ही पैंतरा बदल कर उसने अपने दाँत राजा के जबड़े पर गड़ा दिए। साँवला जादूगर राजा की नाक पर दाँत गड़ाए उसे अपनी ओर खींच रहा था और मेइ राजा का जबड़ा अपने दाँतों से जकड़े अपनी ओर खींच रहा था। राजा के लिए मुँह बंद कर सकना संभव नहीं रहा। दोनों सिर राजा पर भयंकर वार करने लगे। राजा का सिर अब सब ओर से ज़ख़्मी होकर ऐसा लहुलुहान हो गया कि उसे पहचान लेना संभव नहीं था। कुछ देर तक वह सिर देग में इधर-उधर दौड़ता-भागता रहा। फिर थककर निश्चल हो गया और उसने दम तोड़ दिया।

साँवले जादूगर और मेइ के सिर ने अब प्रहार करना बंद कर दिया। दोनों सिर देग में चारों ओर तैरकर राजा के सिर को ध्यान से देखते रहे कि राजा का सिर धोखा देकर बच निकलने के लिए बहाना किए पड़ा है या सचमुच मर गया है। जब उन्हें विश्वास हो गया कि राजा सचमुच मर गया है तो दोनों की आँखें मिलीं और दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कराए। फिर दोनों ने आँखें मूँद आकाश की ओर देखा और फिर दोनों सिर डूबकर देग की तह में जा टिके।

(4)

देग के नीचे आग बुझ गई थी। अब पानी उबल नहीं रहा था। भयानक सन्नाटे के बाद सब लोग होश में आने लगे। कोई एक आदमी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिल्लाया, फिर सभी एक-दूसरे को भयभीत हो पुकारने लगे। एक आदमी सोने की देग की ओर बढ़ा तो सभी लोग देग के चारों ओर घिर आए। घेरे में पीछे खड़े लोग पंजों पर उचक-उचक कर आगे खड़े लोगों की गर्दनों के बीच से झाँककर देखने का यत्न कर रहे थे।

आग की ताप से अब भी लोगों के चेहरे झुलस रहे थे, परंतु देग में जल दर्पण की भाँति स्थिर हो गया था। जल के ऊपर चिकनाई की एक तह जम आई थी जिसमें लोगों को अपने चेहरे दिखाई दे रहे थे: महारानी, रखैलें, अंगरक्षक, बूढ़े मंत्री, बौने, कंचुकी, सबके चेहरे देग में दिखाई दे रहे थे।

"हाय राम! महाराज का सिर अभी देग में ही पड़ा है। दैया रे दैया!" राजा की छठी रखैल फफक कर रो पड़ी।

महारानी से लेकर विदूषक तक सभी किंकर्तव्यविमूढ़ थे। सब लोग घबराकर देग के चारों ओर चक्कर लगाते जा रहे थे। सबसे बूढ़ा और बुद्धिमान मंत्री आगे बढ़ा और उसने हाथ बढ़ाकर देग को छूकर देखा। उसकी पूरी देह काँप उठी, उसने हाथ पीछे खींच लिया और उँगलियों को छिटक-छिटक कर बार-बार फूँक मारने लगा।

अंत में सब अपने आपको सँभाल कर महल के द्वार के बाहर खड़े हो विचार करने लगे कि देग से राजा का सिर किस प्रकार बाहर निकाला जाए। पूरी तीन घड़ी तक यह विचार चलता रहा। आख़िर निर्णय हुआ कि महल के भंडारे से संड़ासियाँ, चिमटे मँगवाए जाएँ और महाराजा के अंरक्षक देग से उनका सिर निकालने का यत्न करें।

शीघ्र ही सब साधन प्रस्तुत हो गए: करछे, चिमटे, संड़ासियाँ और छलनियाँ, सोने के थाल और अँगोछे लाकर देग के समीप रख दिए गए। अंगरक्षकों ने अपनी आस्तीनें चढ़ा लीं। कुछ ने करछे उठाए, कुछ ने संड़ासियाँ और कुछ ने छलनियाँ थाम लीं और बहुत समादर और सावधानी से देग में महाराज का सिर खोजा जाने लगा। करछे-संड़ासियों के आपस में बजने की झनकार और देग से लगने की रगड़ सुनाई देती रही। देग में पानी भँवर की तरह घूम रहा था। कुछ समय बाद एक अंगरक्षक ने गंभीर चेहरा बना बहुत सावधानी से दोनों हाथों से संड़ासी को ऊपर उठाया। वह संड़ासी बर्फ की तरह सफेद एक खोपड़ी का कंकाल थामे हुए थी। खोपड़ी से मोतियों की भाँति जल की बूँदें टपक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थीं। लोगों के विस्मयभरे चीत्कार के बीच उसने खोपड़ी को एक सोने के थाल में रख दिया।

"दैया रे दैया! हाय रे महाराज!" महारानी, महाराज की रखैलें, मंत्री और कंचुकी सभी फूट-फूट कर रोने लगे। कुछ समय बाद अंगरक्षकों ने उसी जैसी एक और सफेद खोपड़ी देग से खोज कर निकाली तो वे चुप हो गए।

दरबारी आँसू भरी चकित आँखों से अंगरक्षकों को परिश्रम से खोपड़ी निकालते देग की ओर देख रहे थे। उनके शरीर पसीना-पसीना हो रहे थे। कुछ समय और प्रयत्न करने के बाद उन्होंने बालों का गुच्छा निकाला, जिसमें सफेद बाल भी थे और काले भी। कुछ छोटे-छोटे सफेद और काले बाल भी निकले, मूँछों के बाल जैसे। फिर एक और खोपड़ी निकली, फिर केशों में खोंसने वाली तीन सुइयाँ निकलीं।

जब देग में केवल जल ही जल रह गया तो उन्होंने खोज बंद कर दी। देग से निकाली गई सभी वस्तुओं को तीन सोने के थालों में रख दिया गया—एक थाल में खोपड़ियाँ, दूसरे थाल में बाल और तीसरे थाल में केशों की सुइयाँ।

"हमारे महाराज के तो एक ही सिर था। महाराज का सिर कौन-सा है?" महाराज की नवीं रखैल ने बड़ी व्यग्रता से पूछा।

"सच है, सच है....।" मंत्री लोग एक-दूसरे की ओर देखकर कातरता से बोल पड़े।

एक बौने ने आदर से सिर झुकाकर उत्तर दिया—"माँस और चमड़ी उबल कर पानी में न मिल गए होते तो दास ज़रूर पहचान लेता।"

सभी लोग बहुत धैर्य और सावधानी से खोपड़ियों की जाँच करने लगे लेकिन खोपड़ियों के आकार और रंग में कोई भेद दिखाई नहीं दे रहा था। बच्चे की खोपड़ी भी अलग पहचान लेना संभव नहीं था। रानी ने याद दिलाया—महाराज के माथे पर दायीं ओर चोट का निशान था जो, जब वे राजकुमार थे, तब एक बार गिरने से बना था। संभव है, खोपड़ी की हड्डी पर भी वह निशान मिल जाए। एक बौने ने खोपड़ी में माथे की दाईं ओर सचमुच एक चिह्न ढूँढ़ निकाला और सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए। तभी दूसरे बौने ने ज़रा पीले रंग की एक दूसरी खोपड़ी में भी ठीक उसी स्थान पर वैसा ही चिह्न दिखा दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मैं बताऊँ?'' महाराज की तीसरी रखैल बड़े विश्वास के साथ पुकार उठी। ''महाराज की नाक ज़्यादा ऊँची थी।''

कंचुकी तीनों खोपड़ियों की नाक बहुत सावधानी से नापने लगे। बहुत जाँच-पड़ताल के बाद पता लगा कि एक खोपड़ी में नाक कुछ ऊँची मानी जा सकती थी, लेकिन मामूली, परंतु कठिनाई यह थी कि इस खोपड़ी के माथे पर दाईं और चिह्न नहीं था।

''यह भी तो देखो,'' मंत्रियों ने कंचुकियों को सुझाया। ''इस खोपड़ी में पीछे की हड्डी बहुत उठी हुई है। महाराज का सिर क्या ऐसा था?''

''हमने महाराज के सिर के पिछले भाग को कभी देखा ही नहीं।....''

रानी और रखैलों में विवाद खड़ा हो गया। कोई कहती थी, महाराज का सिर पीछे से उठा हुआ था और कोई कहती थी नहीं, महाराज का सिर बिलकुल बराबर था। महाराज के केशों में कँघी करने वाले कंचुकी को पुकारकर पूछा गया तो उसने निश्चित उत्तर नहीं दिया।

संध्या समय मंत्रियों और राजकुमारों की सभा में विचार हुआ कि तीनों खोपड़ियों में से महाराज की खोपड़ी कैसे पहचानी जाए, परंतु जैसे दिन भर के विचार से कोई परिणाम नहीं निकल सका था, अब भी कुछ निर्णय नहीं हो पाया। वही समस्या देग से निकाले गए केशों और मूँछ के बालों के बारे में थी। यह तो निश्चित था कि श्वेत बाल महाराज के थे, परंतु महाराज के बाल आधे पक चुके थे इसलिए काले बालों के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। आधी रात तक विचार करने के बाद कुछ लाल बाल चुनकर निकाले गए। इस पर नवीं रखैल ने बहुत विरोध किया। उसने कसम खाकर कहा कि मैंने महाराज की मूँछों में भूरे बाल देखे थे, फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि एक भी बाल लाल न होगा। इसलिए फिर से सब बालों को मिला देना पड़ा और मामला अनिर्णीत रह गया।

सुबह होने वाली थी, परंतु सभा कुछ भी निर्णय नहीं कर पाई। बहस इतनी खिची कि सब लोग जम्हाइयाँ ले रहे थे कि मुर्गों ने दूसरी बाँगें दे रात्रि के अंत की सूचना दी। आख़िर एक बात पर सब लोग सहमत हो गए; तीनों ही खोपड़ियों को एक सोने के ताबूत में रखकर महाराज के शरीर के साथ मकबरे में दफ़ना दिया जाय।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सात दिन बाद महाराज की शवयात्रा निकली। राजधानी में बहुत चहल-पहल थी। राजधानी के और देश के दूर-दूर के भागों के लोग महाराज का अंतिम संस्कार देखने के लिए आए थे। उषाकाल से ही नर-नारी राजमार्ग के दोनों ओर इकट्ठे हो गए थे। भीड़ में स्थान-स्थान पर चौकियों पर पूजा और चढ़ावे की सामग्री सजी हुई थी। दोपहर से पहले सड़क खाली कराने के लिए कुछ घुड़सवार तैनात किए गए। कुछ समय बाद एक बहुत बड़ा जुलूस आया। लोग झंडे-झंडियाँ, नेजे-भाले, तीर-कमान, फरसे और तलवारें उठाए चल रहे थे। जुलूस के पीछे चार बड़ी-बड़ी गाड़ियों पर गाने-बजानेवाले थे। भीड़ के समुद्र में बहुत दूर पीला सायवान लगा रथ ऊँची-नीची भूमि पर जगमगाता हुआ दिखाई दिया। रथ पर बहुत बड़ा सोने का ताबूत रखा था जिसमें महाराज के शरीर के साथ तीन खोपड़ियाँ थीं।

राजमार्ग के दोनों ओर खड़ी प्रजा सम्मान में झुकी तो चढ़ावे के सामान से लदी हुई चौकियाँ दिखाई दीं। अनेक राजभक्त लोग आँसू रोककर गुस्से में सोच रहे थे कि महाराज के साथ दो राजहंताओं के प्रेत भी राजभक्तों की पूजा और चढ़ावे का भोग कर रहे हैं। परंतु इस समस्या का कोई हल नहीं हो सकता था। राजभक्तों को अपने क्रोध और दुख के आँसू चुपचाप निगल लेने पड़े।

महाराज के ताबूत के रथ के पीछे रानी और महाराज की रखैलों के रथ आ रहे थे। भीड़ कौतुक से उनकी ओर देख रही थी और वे निरंतर विलाप करती हुईं भीड़ की ओर देख रही थीं। उसके पश्चात् मंत्रियों, कंचुकियों और बौनों की सवारियाँ आने लगीं। सभी के चेहरों पर गंभीर विषाद की छाया थी, परंतु भीड़ को उनके प्रति कोई कौतुहल नहीं था। उसके बाद जुलूस भीड़ में मिल कर भीड़ का ही भाग बनता जा रहा था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरत की रात

मेरे पिछले अहाते की दीवार के पीछे आप दो पेड़ देख सकते हैं—एक खजूर का पेड़ है और दूसरा भी खजूर का पेड़ है।

उनके ऊपर रात्रि का आकाश बहुत विचित्र और ऊँचा है। मैंने कभी ऐसा विचित्र और ऊँचा आकाश नहीं देखा। लगता है वह मनुष्यों की इस दुनिया को छोड़ना चाहता है जिससे कि लोग जब ऊपर देखें तो उसे देख न पायें। फिलहाल यह एकदम नीला है लेकिन उसकी अनेकानेक घूरती आँखें ठंडी झपझपा रही हैं। उसके होंठों पर एक उड़ती-सी मुस्कान खेल रही है, मुस्कान जिसे वह काफी महत्त्वपूर्ण समझता है और वह मेरे अहाते के जंगली पौधों को गहरे कोहरे से ढक देता है।

मुझे नहीं मालूम इन पौधों को क्या कहते हैं, उन्हें सामान्यत: किन नामों से जाना जाता है। मुझे याद है, उनमें से एक पर छोटे गुलाबी फूल लगे थे और उसके फूल अभी तक खिले हैं, हालाँकि पहले से भी अधिक छोटे। ठंडी रात की हवा में ठिठुरते वे आने वाले बसंत का, पतझड़ आने का, स्वप्न देखते हैं। वे स्वप्न देखते हैं कि उनके अंतिम पत्तों पर एक कृशकाय कवि द्वारा आँसू पोंछने का, जो उन्हें बताता है कि शरत आएगी और शीत ऋतु आएगी, लेकिन फिर बसंत आएगा, जब तितलियाँ इधर-से-उधर नाचेंगी और सारी मधुमक्खियाँ बसंत का गीत गुनगुनाएँगी। तब छोटे गुलाबी फूल हँसेंगे, हालाँकि वे ठंड से कुछ उदास किरमिजी हो गए हैं और अभी भी काँप रहे हैं।

जहाँ तक खजूर के पेड़ों का सवाल है, उनके सारे पत्ते झड़ गए हैं। पहले एक या दो लड़के खजूर तोड़ने आते रहे जो दूसरे लोगों से बच गए थे। लेकिन अब एक भी खजूर नहीं बचा और पेड़ों के सब पत्ते भी झड़ गए। वे छोटे गुलाबी फूलों के शरत के बाद बसंत के स्वप्न के बारे में जानते हैं और वे बसंत के बाद पतझड़ में टूटे पत्तों के स्वप्न के बारे में भी जानते हैं। हालाँकि उनके सब पत्ते झड़ गए हैं और केवल तने बाकी हैं, लेकिन वे फलों और पत्तों के भार से रहित वैभव में तन गए हैं। कुछ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाखाएँ अभी भी झुकी हैं, खजूर तोड़नेवाली डंडियों से तने में हुए घाव को सहलाती हुईं, जबकि सबसे लंबी और सीधी शाखाएँ सलाख जैसी सख़्त चुपचाप विचित्र और ऊँचे आकाश को चीर रही हैं, आश्चर्य में पलक झपझपाते हुए। वे आकाश में पूर्ण चंद्रमा को भी भेद रही हैं, उसे पीला और परेशान बनाते हुए।

आश्चर्य में पलक झपझपाता आकाश अधिकाधिक नीला होता जा रहा है, अधिकाधिक परेशान होता जा रहा है, मानो मनुष्यों की दुनिया से भागने को उद्यत और खजूर के पेड़ों से बचता हुआ, चंद्रमा को पीछे छोड़कर। लेकिन चंद्रमा भी अपने को पूर्व दिशा में छिपा रहा है, जबकि अभी भी चुप और सलाखों जैसी सख़्त नंगी शाखाएँ विचित्र, ऊँचे आकाश को भेद रही हैं, उस पर घातक घाव दागने को, चाहे वह कितने ही रूपों में अपनी सारी जादुई आँखों को झपझपाए।

एक चीख़ के साथ एक तेज़ रात्रि पक्षी गुज़रता है।

अचानक मैं अर्द्ध-रात्रि की हँसी सुनता हूँ। उसकी आवाज़ अवगुंठित है मानो सोने वालों को न जगाना चाहती हुई, लेकिन चहुँ ओर हवा इस हँसी को प्रतिध्वनित करती है। आधी रात और दूसरा कोई नहीं। एकदम मैं महसूसता हूँ कि हँसने वाला मैं हूँ और एकदम यह हँसी मुझे अपने कमरे में ढकेलती है। एकदम मैं अपने लैंप की बत्ती ऊँची करता हूँ।

पिछली खिड़की के शीशे से पट-पट की आवाज़ आ रही है, जहाँ मच्छरों के झुंड शीशे से बेहताशा टकरा रहे हैं। कुछ खिड़की के काग़ज़ के सुराख के अंदर घुस आए हैं। अंदर आते ही वे लैंप के शीशे से पट-पट टकराते हैं। एक ऊपर से लैंप के शीशे के अंदर लौ पर गिरता है और मैं समझता हूँ वो वास्तविक है। काग़ज़ के ढक्कन पर दो या तीन दूसरे बैठते हैं, हाँफते हुए। पिछली रात के बाद यह नया काग़ज़ का ढक्कन है। उसके बर्फीले सफेद काग़ज़ में झालरें लगी हैं और वह एक किनारे से रक्तवर्णी लाल पाफर रंग से पुता है।

रक्तवर्णी लाल पाफर जब खिलेंगे, खजूर के पेड़ सुंदर पत्तों से झुकेंगे, तब वे छोटे गुलाब के फूलों के स्वप्न का एक बार फिर स्वप्न लेंगे.... और मैं एक बार फिर अर्द्ध-रात्रि की हँसी सुनूँगा। मैं ज़ल्दी से विचार के इस प्रवाह को तोड़ अभी भी काग़ज़ पर बैठे छोटे हरे कीटों को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखता हूँ। सूरजमुखी के बीजों की तरह अपने बड़े सिरों और छोटी पूछों से गेहूँ के दाने के आधे आकार वाले वे सब आकर्षक, दुखद हरे हैं।

मैं जमुहाई लेता हूँ, सिगरेट सुलगाता हूँ और धुआँ छोड़ता हूँ, लैंप के सामने इन हरे और संवेदनशील नायकों को मौन श्रद्धांजलि देता हुआ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुसाफिर

समय : कोई शाम।
स्थान : किसी जगह।
चरित्र :

बूढ़ा व्यक्ति – सत्तर के लगभग, सफेद दाढ़ी और बाल, एक काला चोगा।

लड़की – दस के लगभग, सुनहरे बाल, काली आँखें, सफेद के ऊपर काले चौखानों वाला चोगा।

मुसाफिर – तीस और चालीस के बीच, थका हुआ और चिड़चिड़ा, कोपभरी दृष्टि, काली मूँछें, अस्त-व्यस्त बाल, पुरानी काली जाकेट और पैंट, फटे जूतों में नंगे पैर। कँधे पर पोटली और अपने बराबर बाँस के डंडे पर झुका हुआ।

(पूर्व दिशा में कुछ पेड़ और खण्डहर, पश्चिम में एक परित्यक्त कब्रिस्तान, उनके बीच में एक धुँधली-सी पगडंडी। इस पगडंडी की तरफ मिट्टी के छोटे घर का दरवाज़ा खुला है। दरवाज़े की बग़ल में एक सूखे पेड़ का ठूँठ।)

(लड़की बूढ़े आदमी को ठूँठ से उठाने में मदद करने ही वाली है जिस पर वह बैठा है।)

बूढ़ा आदमी : अरे बच्ची। तुम रुक क्यों गईं?

लड़की : (पूर्व दिशा की ओर देखते हुए) कोई आ रहा है। देखो।

बूढ़ा आदमी : चिंता न करो। मुझे अंदर ले चलो। सूर्य छिप रहा है।

लड़की : एक बार देखना चाहती हूँ।

बूढ़ा आदमी : तुम कैसी लड़की हो। तुम रोज़ स्वर्ग, पृथ्वी और हवा देख सकती हो। क्या वह तुम्हारे लिए काफी नहीं है? इनके अलावा देखने के लिए है क्या? फिर भी तुम देखना चाहती हो कि कौन आ रहा है? कोई भी जो सूर्यास्त के समय आता है किसी काम का नहीं है.... चलो अंदर चलें।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़की : पर वह काफी नज़दीक आ चुका है। अरे, वह तो भिखारी है।

बूढ़ा आदमी : भिखारी? यह कैसे हो सकता है?

(मुसाफिर पूर्व की झाड़ियों से लँगड़ाता आता है और एक क्षण झिझकने के बाद बूढ़े आदमी के पास चला जाता है।)

मुसाफ़िर : नमस्कार श्रीमान।

बूढ़ा : धन्यवाद। नमस्कार।

मुसाफ़िर : श्रीमान क्या मैं एक प्याला पानी माँगने की घृष्टता कर सकता हूँ? मैं चलते-चलते काफी थक गया हूँ और यहाँ कहीं भी तालाब या कुआँ नहीं मिला।

बूढ़ा : ठीक है। कृपया बैठिए। (लड़की से) बच्ची, कुछ पानी लेकर आओ। देखना प्याला साफ हो।

(लड़की चुपचाप झौंपड़ी में जाती है।)

बूढ़ा : बैठिये अज़नबी। तुम्हारा नाम क्या है?

मुसाफ़िर : मेरा नाम? वह मैं नहीं जानता। जहाँ तक मैं याद कर सकता हूँ, मैं स्वनिर्भर ही रहा हूँ, इसलिए मुझे अपना असली नाम नहीं मालूम। जब मैं रास्ते में चलता हूँ तो लोग मुझे अपनी पसंद के इस या उस नाम से पुकारते हैं। मुझे यह भी याद नहीं और मुझे एक नाम से दो बार नहीं पुकारा गया।

बूढ़ा : हूँ। तुम कहाँ के रहने वाले हो?

मुसाफ़िर : (संकोच से) मुझे नहीं मालूम। जहाँ तक मुझे याद है मैं इसी प्रकार चलता रहा हूँ।

बूढ़ा : ज़रूर। ठीक है। क्या मैं पूछ सकता हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?

मुसाफ़िर : ज़रूर। मगर मैं यह भी नहीं जानता। जहाँ तक मुझे याद है, मैं इसी तरह चलता रहता हूँ, किसी अगले स्थान के लिए। मुझे बस इतना याद है कि मैंने काफी लंबा सफ़र तय कर लिया है और अब मैं यहाँ पहुँचा हूँ। इसके बाद मैं उस रास्ते (वह पश्चिमी की ओर संकेत करता है) पर बढ़ूँगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(लड़की सावधानी से लकड़ी के प्याले में पानी लाती है और उसे देती है।)

मुसाफ़िर : (प्याला लेते हुए) धन्यवाद लड़की। (वह दो घूँटों में पानी पीकर प्याला लौटाता है।) धन्यवाद लड़की। ऐसी दयालुता कम ही देखने को मिलती है। मैं कैसे आपका धन्यवाद करूँ?

बूढ़ा : इतना कृतज्ञ होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इससे तुम्हें क्या मिलेगा?

मुसाफ़िर : नहीं, इससे मुझे कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन अब मैं अच्छा महसूस कर रहा हूँ। अब मैं चलूँगा। श्रीमन्, आप यहाँ शायद काफी समय से रह रहे हैं। क्या आप जानते हैं आगे कैसा स्थान है?

बूढ़ा : आगे? आगे तो कब्रें हैं।

मुसाफ़िर : (अचंभे में) कब्रें?

लड़की : नहीं, नहीं, नहीं। वहाँ हमेशा इतने सारे जंगली गुलाब और लिली होते हैं। मैं अक्सर वहाँ खेलने और उन्हें देखने जाती हूँ।

मुसाफ़िर : (पश्चिम में देखते हुए, हँसता-सा) हाँ, वहाँ जंगली गुलाब और लिली के फूल हैं। मैं स्वयं कई बार उन्हें वहाँ देखकर आनंद लेने गया हूँ। लेकिन वे कब्रें हैं। (बूढ़े से) श्रीमन्, कब्रिस्तान के परे क्या है?

बूढ़ा : कब्रिस्तान के परे? वह मैं नहीं जानता। मैं कभी उसके पार नहीं गया।

मुसाफ़िर : तुम नहीं जानते?

लड़की : मैं भी नहीं जानती।

बूढ़ा : मैं केवल दक्षिण, उत्तर और पूर्व जहाँ से तुम आए हो, को जानता हूँ। मैं उन स्थानों को अच्छी तरह जानता हूँ और तुम जैसों के लिए वे सर्वोत्तम स्थान हो सकते हैं। मेरी बात का बुरा न मानना, लेकिन तुम पहले ही इतने अधिक थके हो कि मेरे विचार से वापस चले जाने में ही तुम्हारा हित है। यदि तुम इसी तरह आगे की तरफ चलते रहे तो तुम अपनी यात्रा के अंत तक नहीं पहुँच पाओगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुसाफ़िर : मैं अंत तक नहीं पहुँच सकता!.... (वह इस पर सोचता है, फिर बोलता है) असंभव। मुझे आगे जाना चाहिए। यदि मैं वापस जाऊँगा तो वहाँ सब जगह महान पुरुष हैं, सभी जगह भूस्वामी हैं, सभी जगह देशनिकाले और पिंजड़े हैं, सभी जगह बनावटी हँसी और दिखावे के आँसू हैं। मैं उनसे घृणा करता हूँ। मैं वापस नहीं जाऊँगा।

बूढ़ा : तुम गलत भी हो सकते हो। तुम्हें ऐसे आँसू भी मिल सकते हैं जो सीधे हृदय से निकलते हैं, कुछ सच्ची भावनाएँ भी हो सकती हैं।

मुसाफ़िर : नहीं। मुझे दिल से निकलने वाले आँसुओं को देखने की कोई इच्छा नहीं है। मुझे उनकी सच्ची भावनाएँ नहीं चाहिएँ।

बूढ़ा : उस हालत में (वह अपना सिर झटकता है) तुम्हें चलते रहना पड़ेगा।

मुसाफ़िर : हाँ, मुझे चलते रहना है। इसके साथ ही आगे एक आवाज़ है, जो मुझे बुलाती है और मैं विश्राम नहीं कर सकता। परेशानी यह है कि मेरे पैर चलने से कट और छिल गए हैं और उनसे काफी खून बह चुका है। (वह बूढ़े को दिखाने के लिए एक पैर उठाता है।) मुझमें पर्याप्त खून नहीं बचा है, इसलिए मेरे लिए कुछ पीना आवश्यक है। लेकिन वह मुझे कहाँ मिलेगा? साथ ही मैं किसी का भी खून पीना नहीं चाहता। इसलिए पूर्ति के लिए मुझे पानी पीना पड़ता है। रास्ते में हर जगह पानी मिल जाता है, इसकी कभी मुझे कमी नहीं हुई। लेकिन मेरी शक्ति क्षीण हो रही है क्योंकि मेरे खून में पानी की मात्रा बहुत अधिक हो गई है और आज यदि मैं कम दूर ही चल पाया तो उसका कारण है कि मुझे कहीं पानी नहीं मिला।

बूढ़ा : शायद यह कारण न हो। सूर्य अस्त हो गया है। मेरे विचार से मेरी तरह तुम भी थोड़ी देर आराम कर लो।

मुसाफ़िर : लेकिन आगे की आवाज़ मुझे चलने के लिए कह रही है।

बूढ़ा : मैं जानता हूँ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुसाफ़िर : तुम जानते हो? तुम उस आवाज़ को जानते हो?

बूढ़ा : हाँ। उसने किसी समय मुझे भी पुकारा था।

मुसाफ़िर : उसी आवाज़ में जो मुझे अब पुकार रही है?

बूढ़ा : यह मैं नहीं कह सकता। उसने मुझे कई बार पुकारा, लेकिन मैंने उसकी उपेक्षा की और फिर वह बंद हो गई। बस इतना ही मुझे याद है।

मुसाफ़िर : आह, तुमने उसकी उपेक्षा की.... (वह इस पर सोचता है, फिर चलने को तैयार होता है और सुनता है) नहीं। मुझे चलते रहना है। मैं विश्राम नहीं कर सकता। अफसोस की बात है कि मेरे पैरों की हालत अच्छी नहीं है। (वह जाने को उद्यत होता है।)

लड़की : यह लो। (वह उसे कपड़े का एक टुकड़ा देती है) अपने पैरों पर पट्टी बाँध लो।

मुसाफ़िर : धन्यवाद लड़की। (वह कपड़ा लेता है) वास्तव में—वास्तव में ही ऐसी दयालुता दुर्लभ है। इसके साथ मैं और आगे चल सकता हूँ। (वह एक कबाड़ के ढेर पर बैठकर टखनों पर पट्टी बाँधने को होता है) नहीं, इससे नहीं होगा। (वह ज़बरदस्ती पैरों पर खड़ा होता है) इसे वापस ले लो लड़की। यह पट्टी के लिए काफी नहीं है। फिर भी यह तुम्हारी बड़ी दयालुता है और मैं नहीं जानता कि तुम्हारा धन्यवाद कैसे करूँ।

बूढ़ा : उसे धन्यवाद देने की ज़रूरत नहीं है, इससे तुम्हें क्या मिलेगा?

मुसाफ़िर : नहीं, इससे मुझे कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन मेरे लिए यह सबसे बढ़कर दान है। देखो, क्या तुम्हें मेरे ऊपर इसकी तुलना की कोई वस्तु दिखाई पड़ती है?

बूढ़ा : इसे इतनी गंभीरता से न लो।

मुसाफ़िर : मैं जानता हूँ। लेकिन मजबूर हूँ। यही मेरा तरीका है। यदि मुझे भीख मिलती तो मैं उस गिद्ध की तरह हो जाता जो शव देखते ही उस पर मँडराने लगे, अपनी आँखों से उसका अंत देखने को उत्सुक। या मैं उसके सिवा हर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीज़ को नष्ट करना चाहता क्योंकि मैं उसका अधिकारी हूँ। लेकिन मैं अभी उसके लिए तैयार नहीं हूँ। यदि मैं होता भी तो मैं उसका यह अंत नहीं चाहता क्योंकि यह ऐसा अंत है, जिसे वे पसंद नहीं करते। मैं समझता हूँ यह तरीका सबसे अच्छा है (लड़की से) यह कपड़े का टुकड़ा एकदम सही है। बस कुछ छोटा है। इसलिए मैं तुम्हें वापस दे रहा हूँ।

लड़की : (डर से पीछे हटती हुई) मुझे नहीं चाहिए। इसे ले लो।

मुसाफ़िर : (हँसी की तरह की चीज़) आह.... क्योंकि मैंने उसे ले लिया है?

लड़की : (उसकी पोटली की ओर देखकर सिर हिलाती हुई) इसे मज़ाक के लिए ही उसके अंदर रखो।

मुसाफ़िर : (आश्चर्य से पीछे हटकर) लेकिन पीठ पर इसे लादकर मैं चलूँगा कैसे?

बूढ़ा : क्योंकि तुम विश्राम नहीं करते, इसलिए तुम कुछ भी नहीं ढो सकते। थोड़ा विश्राम करो तो तुम बिलकुल ठीक हो जाओगे।

मुसाफ़िर : यह ठीक है, विश्राम.... (वह चलने को होता है और सुनता है) नहीं, मैं विश्राम नहीं कर सकता। मुझे चले जाना चाहिए था।

बूढ़ा : तुम विश्राम करना नहीं चाहते?

मुसाफ़िर : मैं चाहता हूँ।

बूढ़ा : तब, कुछ देर आराम करो।

मुसाफ़िर : लेकिन मैं नहीं कर सकता....

बूढ़ा : तुम अब भी सोचते हो चलते रहने की।

मुसाफ़िर : हाँ, मुझे चलना चाहिए।

बूढ़ा : ठीक है, तब तुम जाओ।

मुसाफ़िर : (सीधा होते हुए) अच्छा, अब मैं विदा लेता हूँ। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ। (लड़की से) मैं यह तुम्हें वापस दूँगा। कृपया इसे वापस ले लो।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(डरी हुई लड़की अपना हाथ पीछे हटाती है और घर में छिप जाना चाहती है।)

बूढ़ा : इसे ले लो। यदि यह बहुत भारी है तो तुम किसी भी समय इसे कब्रिस्तान में फेंक सकते हो?

लड़की :

(आगे आकर) नहीं, यह नहीं होगा।

मुसाफ़िर : नहीं, यह नहीं होगा।

बूढ़ा : ठीक है, तब इसे किसी जंगली गुलाब या लिली पर टाँग देना।

लड़की :

(ताली बजाकर हँसती हुई) बहुत अच्छा।

मुसाफ़िर : आह....

(एक क्षण मौन रहता है।)

बूढ़ा : तब नमस्कार। शांति तुम्हारे साथ रहे। (वह खड़ा होकर लड़की की ओर घूमता है) बेटी, मुझे अंदर ले चलो। देखो सूर्य कब का अस्त हो गया। (वह दरवाज़े की ओर मुड़ता है।)

मुसाफ़िर : आप दोनों को धन्यवाद। शांति तुम दोनों के साथ रहे। (वह कुछ कदम बढ़ाता है, सोच में डूबा, फिर चलता है।)

मैं नहीं सकता। मुझे जाना चाहिए। मुझे चले जाना चाहिए था.... (सिर उठाकर वह पश्चिम की ओर निश्चयात्मक कदम उठाता है।)

(लड़की बूढ़े को झौंपड़ी के अंदर ले जाती है और दरवाज़ा बंद कर लेती है। मुसाफ़िर उजाड़ की ओर लँगड़ाता बढ़ता है और उसके पीछे रात घिर आती है।)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुझी आग

मैंने सपना देखा कि मैं बर्फ की पहाड़ी के साथ-साथ दौड़ रहा हूँ।

वह एक बड़ी, गगनचुंबी पहाड़ी थी, ऊपर बर्फीले आकाश को छूती हुई। और आकाश जमे हुए बादलों से भरा था, हर हिस्सा जैसे मछली का शल्क। पहाड़ी के तल में बर्फ का जंगल था चीड़ और सरू के पत्तों और शाखाओं जैसा। और सब कुछ बर्फीला ठंडा था विवर्ण की तरह पीत।

लेकिन अचानक मैं बर्फ की घाटी में गिर गया।

नीचे और ऊपर सब तरफ बर्फीली ठंड थी, विवर्ण की तरह पीत। फिर भी विवर्ण बर्फ के ऊपर अनगिनत लाल परछाइयाँ थीं मूंगे के जाले की तरह लहराती हुईं। अपने पैरों के नीचे मैंने देखा आग जल रही थी।

यह ठंडी आग थी। उसका आकार धधकता था पर वह बिलकुल निश्चल थी, पूरी तरह जमी हुई, मूँगे की शाखाओं की तरह जिनकी पोरों पर काला धुआँ जमा हो, जो ऐसे तपती लग रही थीं जैसे आग की भट्टी से निकली हों।

अहा!

बचपन में मुझे गुज़रते पानी के जहाज़ों से मथी जाती झाग को या जलती भट्टी से निकलती लपटों को देखने में आनंद आता था। मैं उन्हें देखना ही नहीं चाहता था, बल्कि स्पष्ट देखना चाहता था। दुख यह था कि वे हर समय बदलती रहती थीं और स्थिर नहीं रहती थीं। मैं कितना ही ध्यान से देखूँ, कोई स्पष्ट आकृति नहीं ग्रहण कर पाता था।

ठंडी आग, अंततः तुम मुझे मिल गईं।

मैंने जैसे ही ठंडी आग को समीप से देखने को उठाया उसकी ठंड ने मेरी उँगलियों को भेद दिया। लेकिन दर्द सहकर भी मैंने उसे अपनी जेब में रखा। सारी घाटी पीत विवर्ण में बदल गई। मुझे लगा कि मैं यह स्थान कैसे छोड़ूँ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे शरीर से लच्छेदार काला धुआँ उठा जैसे तारों का सर्प ऊपर उठा हो। तभी किरमिजी लपटें चारों ओर बहने लगीं, मुझे उस विशाल अग्निकांड में समेटती हुईं। मैंने देखा नीचे ठंडी आग फिर जल रही है, मेरे कपड़ों को जलाती हुई बर्फीली ज़मीन पर फैल रही है।

''ओह मित्र'' उसने कहा। ''तुमने अपनी गर्माई से मुझे जगा दिया।''

मैंने तुरंत उसका स्वागत करते हुए उसका नाम पूछा।

''मुझे बर्फ की घाटी में मनुष्य ने त्याग दिया था।'' उसने मेरे सवाल की उपेक्षा कर कहा। ''जिन्होंने मुझे त्यागा वे पहले ही नष्ट और समाप्त हो चुके हैं। और मैं इस बर्फ से यहाँ मृतप्रायः थी। अगर तुमने मुझे गरमाकर जलाया न होता तो मैं कब की मर गई होती।''

''मुझे खुशी है कि तुम जल उठीं। मैं सोच ही रहा था कि बर्फ की इस घाटी को कैसे छोड़ूँ। मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा जिससे कि तुम कभी जमो नहीं, हमेशा जलती रहो।''

''ओह नहीं। तब मैं जल कर बुझ जाऊँगी।''

''मुझे दुख होगा यदि तुम जल कर बुझ जाओगी। अच्छा हो मैं तुम्हें यहीं छोड़ दूँ।''

''ओह, नहीं, मैं ठंड से मर जाऊँगी।''

''तब क्या किया जाय?''

''तुम स्वयं क्या करना चाहोगे?'' उसने पूछा।

''मैंने तुम्हें बताया कि मैं बर्फ की इस घाटी से जाना चाहता हूँ।''

''तब यही अच्छा है कि मैं जलकर मरूँ।''

वह लाल पुच्छल तारे की तरह उछली और हम साथ-साथ घाटी से लौटे। अचानक एक पत्थर की बड़ी गाड़ी ऊपर चढ़ी और मैं उसके पहियों के नीचे कुचल कर मर गया, लेकिन यह देखने से पहले नहीं कि वह गाड़ी बर्फ की घाटी में गिर गई है।

''आह; तुम अब कभी ठंडी आग से नहीं मिल सकोगे।'' मैं बोलते समय हँस पड़ा। मानो यह सोच कर खुश हुआ कि यही ठीक है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अच्छा नरक जो खो गया

मैंने सपना देखा कि मैं नरक के पास के बीहड़ में बिस्तर पर सोया हूँ। लपटों के गर्जन के साथ मिली सारे भूतों की गंभीर पर तरतीबवार कराहें, तेल का उबाल और लौह शूलों की टकराहट एक मनमोहक विशाल लय में बदल गई है, तीनों लोकों को पाताल के यथार्थ की शांति का बोध कराती हुई।

मेरे सामने एक विशाल मानव खड़ा था, सुंदर और सौम्य, उसका सारा शरीर प्रकाश से चमकता हुआ। पर मैं जानता था वह राक्षस है।

"यह सब कुछ का अंत है। सब कुछ का अंत। कमबख़्त भूतों ने अपना अच्छा नरक खो दिया है।" उसने खीज और दुःख से कहा और फिर मुझे अपनी जाती कहानी सुनाने बैठ गया।

"यह तब की बात है जब स्वर्ग और पृथ्वी मधुरंगी थे कि राक्षस ने ईश्वर को जीत लिया और असीम शक्ति प्राप्त कर ली। स्वर्ग, पृथ्वी और नरक पर उसका अधिकार था। फिर वह स्वयं नरक में आया और उसके बीच में बैठा सारे भूतों पर तेज़ प्रकाश फेंकता हुआ।"

"नरक काफी समय से उपेक्षित था, नुकीले पेड़ों ने अपनी चमक खो दी थी, उबलते तेल का उबाल सुनाई नहीं पड़ा था, कभी-कभी तो धधकती लपटों से भी केवल नीला धुआँ निकलता था और दूर कहीं अब भी विशालमूल फूल खिलते थे, बेहद छोटे, पीत और अभागे। लेकिन यह कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि पृथ्वी बुझ चुकी थी और उसने अपनी उर्वरता खो दी थी।"

"ठंडे तेल और नरम लपटों के बीच उठकर, राक्षस के प्रकाश में भूतों ने देखा कि नरक के छोटे, पीत और अभागे फूल पूर्णतया सम्मोहित हैं। उन्हें अचानक मनुष्यों की दुनिया का स्मरण हुआ और न जाने कितने वर्षों को याद करते हुए उन्होंने मानव सभ्यता की ओर नरक की भर्त्सना की भीषण आवाज़ की।"

"मनुष्य प्रत्युत्तर में उठ खड़ा हुआ। न्याय का पक्ष ले वह राक्षस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के ख़िलाफ लड़ा। गर्जन से भी अधिक तेज़ संघर्ष ने तीनों लोकों को भर दिया और अंततः उसने साम-दाम-दंड-भेद से राक्षस को नरक से भगा दिया। इस अंतिम विजय के बाद नरक के द्वार पर मनुष्यता का झंडा फहराया गया।''

''जब मनुष्य का दूत नरक को पुनर्संगठित करने आया तो भूत तब भी खुशी मना रहे थे। वह नरक के बीच में बैठा, मनुष्य की गरिमा से भरपूर और उसने भूतों पर शासन किया।''

''जब भूतों ने नरक की भर्त्सना में दुबारा आवाज़ दी तो वे मनुष्य के विरुद्ध विद्रोही बन गए। इस अपराध के लिए शाश्वत सज़ा पाकर वे नुकीले पेड़ों पर खदेड़ दिए गए।''

''तब मनुष्य का नरक पर पूर्ण अधिकार हो गया और उसकी सत्ता राक्षस से भी अधिक शक्तिशाली थी। उसने व्यवस्था की पुनर्स्थापना की और भैंसे के सिर वाले दैत्य को सर्वोच्च पद दिया। उसने आग में और ईंधन डाला, वज्र तलवारों को और पैना किया और पिछले पतन को मिटाकर नरक का कायापलट कर दिया।''

''तुरंत ही शिखामूल फूल झड़ गए। तेल पहले की तरह उबलने लगा, तलवारें पहले जैसी पैनी हो गईं, आग पहले जैसी जलने लगी और भूत पहले की तरह कराहने लगे, जब तक कि उनमें से किसी के पास खोये हुए अच्छे नरक पर अफसोस करने का समय नहीं रहा।''

''यह मनुष्य की सफलता और भूतों का दुर्भाग्य था....''

''मित्र, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। तुम आदमी हो। मुझे जंगली जंतुओं और दैत्यों को ढूँढ़ने जाना है....।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा योद्धा

एक दिन ऐसा योद्धा होगा।

जो न तो चमकदार माउज़र ढोकर चलने वाले अफ्रीकी निवासियों जैसा अनभिज्ञ होगा, न ही स्वचालित पिस्तौल लेकर चलने वाली हरी पताका चीनी फौज जैसा निरुत्साही। जो बैल की खाल या रद्दी लोहे के हथियारों पर निर्भर नहीं करेगा। उसके पास अपने सिवा कुछ नहीं होगा और हथियार के नाम पर बर्बरों द्वारा फेंका जानेवाला भाला होगा।

वह न-कुछ की पंक्तियों में चलता है जहाँ उसमें मिलनेवाले सभी लोग उसी तरीके से अभिवादन करते हैं। वह जानता है कि यह अभिवादन शत्रु द्वारा प्रयोग किया जानेवाला हथियार है जो बिना रक्तपात के मारता है, जिससे कई योद्धा मारे जा चुके हैं। तोप के गोले की तरह वह बहादुरों की शक्ति को भी अप्रभावी बना देता है।

उनके सिरों के ऊपर अनेक प्रकार के झंडे और पताकाएँ झूम रही हैं, अनेकानेक शीर्षकों के साथ—लोकोपकारक, लेखक, विद्वान, बैरिस्टर, युवा, कलाप्रेमी, भद्रलोक.... नीचे अनेकानेक लबादे हैं, अनेक प्रकार के नामों से काढ़े गए—विद्वत्ता, नैतिकता, राष्ट्रीय संस्कृति, जनमत, तर्क, न्याय, प्राचीन सभ्यता....

लेकिन वह अपना भाला उठाता है।

मिलकर वे प्रतिज्ञा करते हैं कि अन्य पूर्वाग्रह युक्त प्राणियों के विपरीत उनके हृदय उनके बल के बीचों-बीच हैं। अपने कवचों से वे यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि उनके हृदय वक्ष के बीचों-बीच हैं।

लेकिन वह अपना भाला उठाता है।

वह हँसता है और अपना भाला एक ओर फेंकता है और यह उनके हृदय को भेदता है।

सभी ज़मीन पर गिर पड़ते हैं। एक लबादा छोड़कर जिसमें कुछ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी नहीं है। न-कुछ बच गई है और जीत गई है क्योंकि वह अपराधी बन गया है जिसने परोपकारी और अन्य को मारा है।

लेकिन वह अपना भाला उठाता है।

वह न-कुछ की कतारों के बीच लंबे डग भरकर चलता है और फिर से वही अभिवादन, वही पताकाएँ और लबादे देखता है।

लेकिन वह अपना भाला उठाता है।

अंततः वह बूढ़ा होकर न-कुछ की पंक्तियों में मर जाता है। वह कोई योद्धा नहीं है और न-कुछ की विजय होती है।

इस तरह के स्थान में कोई युद्ध-गर्जना सुनाई नहीं पड़ती, केवल शांति है।

शांति....

लेकिन वह अपना भाला उठाता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वू छांग या जीवन-नश्वर है

यदि मंदिर उत्सवों में प्रदर्शित देवताओं के पास जीवन और मृत्यु की शक्ति होती—या और ठीक से कहें तो चीन में सभी देवताओं के पास मनुष्य को मारने की क्षमता होती—यदि शहर के प्रमुख पुजारी या पूर्वी पर्वत के महाराज की तरह उनका काम मानव नियति का नियंत्रण होता तो आप उनके परिजनों में अनेक अस्वाभाविक आकृतियाँ पाएँगे—भुतहे संतरी, भुतहे राजा और वु छांग या जीवन-नश्वर है।

इन आत्माओं की जगह प्रायः तगड़े व्यक्ति या ग्रामीण लोग होते हैं। भुतहे संतरी और उनके राजा लाल और हरे वस्त्र पहनकर नंगे पैर चलते हैं और इनके नीचे चेहरों पर मछली के कांटे अंकित किए जाते हैं। ये कांटे ड्रैगन के हैं या और किसी जानवर के, मुझे ठीक से नहीं मालूम। ये भुतहे संतरी छल्लों वाले लोहे के त्रिशूल लेकर चलते हैं जो हिलाने पर टनटनाते हैं। भुतहा राजा एक शेर के सिर का छोटा मुखौटा लेकर चलता है। परंपरा के अनुसार राजा को एक पैर पर चलना चाहिए। लेकिन वह तो बेचारा ग्रामीण है और भले ही उसने अपने चेहरे पर मछली या किसी दूसरे जानवर का साँचा बना लिया हो, वह दो पैरों पर ही चलेगा। इसलिए दर्शक इन भूतों से कतई प्रभावित नहीं होते और उनकी ओर ध्यान नहीं देते। केवल कुछ समर्पित वृद्ध महिलाएँ और उनके नाती-पोते ही इन आत्माओं को उचित सम्मान देते हैं कि कहीं वे इनसे वंचित न रह जाएँ।

जहाँ तक बाकी लोगों की बात है, जिनमें स्वयं मैं और दूसरे सब हैं, वू छांग को देखना पसंद करते हैं। वह केवल जीवंत और हास्यपूर्ण ही नहीं है, बल्कि उसका झक्क सफेदी से भरपूर होना उसकी सबसे अलग पहचान बनाता है। उसकी ऊँची सफेद काग़ज़ी टोपी और नारियल-पत्तों का उसका चिथड़ा पंखा सबको मज़ा देता है।

सारी आत्माओं में वह मनुष्य के सबसे ज़्यादा नज़दीक है और उससे अक्सर मुलाकात होती है। उदाहरण के लिए शहर के मुख्य पुजारी के मंदिर में या पूर्वी पर्वत के राजा के यहाँ मुख्य हाल के पीछे एक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अँधेरा कमरा है जिसे नरक का दरबार कहा जाता है। वहाँ छाई उदासी के बीच से भूतों के आकार नज़र आते हैं—जो फाँसी पर लटक कर मरा, जो गिर कर मरा, जिसे बाघ ने मारा, जो परीक्षा कोठरी में मरा.... लेकिन घुसते ही जो लंबी सफेद आकृति आप देखते हैं, वह वू छांग की है। हालाँकि मैं भी एक बार नरक का दरबार देखने गया था, लेकिन मैं संकोचवश ठीक से देख नहीं पाया। मैंने सुना है कि वह एक हाथ में लोहे की जंजीर लिए है, क्योंकि वह मृत आत्माओं को बुलानेवाला है। किंवदंती है कि फान चिआंग[1] पूर्वी पर्वत के राजा के मंदिर में स्थित नरक के दरबार की रचना देहरी के ठीक अंदर एक गतिमान पटरे से अजीबोग़रीब रूप में की गई थी। जैसे ही आप प्रवेश कर पटरे के एक सिरे पर पैर रखेंगे, वैसे ही वू छांग दूसरे सिरे से अपनी लोहे की जंजीर आपके गले में डाल देगा और जब आदमी इससे बुरी तरह सहम जाता तो वे पटरे को नीचे कर देते थे। लेकिन मेरी युवावस्था: में ही यह हिलना बंद हो गया था।

यदि आप इसे ठीक से देखना चाते हैं तो आपको उसकी तस्वीर जेड कलैंडर के रिकार्डों में मिलेगी। संक्षिप्त संस्करणों में नहीं, बल्कि पूर्ण संस्करणों में। मातमी लिबास और फूस की चप्पलें पहने, कमर में मूँज की पेटी बाँधे और गले में काग़ज़ी नोटों की माला पहने है। वह नारियल पत्तों के फटे पंखे को एक हाथ में लिए और दूसरे में जंजीर और फलक, कँधे थोड़ा झुके हुए और बाल अस्त-व्यस्त, आँखें और भौंहें दोनों कोनों से ढकी हुईं। वह ऊँचा तिकोना टोप पहनता है जो उसकी संपूर्ण धज की संगति में है और लगभग दो फीट ऊँचा है। टोप के आगे जहाँ छिंग साम्राज्य के नए पुराने अवशेष अपने तरबूज़नुमा टोपों पर हीरा-मोती जड़ना पसंद करेंगे, वहाँ लिखा है—'तुम्हारा मंगल हो।' कुछ लोगों का मत है कि वहाँ लिखा है—'तो तुम भी यहाँ हो।' यह वही कथन है जो कभी-कभी जो पाओ की कचहरी पर पट्ट रूप में लिखा है।[2] ऊ छांग ने अपने टोप पर ये शब्द स्वयं लिखे या नरक के राजा ने लिखे मैं अपने शोधों से अभी ठीक से तय नहीं कर पाया हूँ।

जेड कैलेंडर में 'जीवन नश्वर है' का विरोधी रूप भी पाया जाता है। एक भूत वहाँ मिलता है जिसका नाम है 'मृत्यु सुनिश्चित है', वह भी

---

1. शाओशिंग के पूर्व में एक नगर।
2. चाओ छंग (999-1062) उत्तरी सुंग साम्राज्य में श्वाइ फंग का प्रशासक था। माना जाता है कि मृत्यु के बाद वह नरक के दस राजाओं में एक हो गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँदी उत्सवों में दिखाई देता है जहाँ गलती से उसे 'जीवन नश्वर है' समझ लिया जाता है। क्योंकि उसका चेहरा और कपड़े काले हैं, इसलिए कोई उसकी तरफ देखता नहीं। वह भी नरक की कचहरी में उपस्थित होता है जहाँ वह दीवार की ओर मुँह किए शवयात्रा जैसी मुद्रा में होता है—'दीवार से सिर टकराने'* का वास्तविक उदाहरण जैसे। वहाँ जो भी पूजा करने और अगरबत्ती जलाने आते हैं, वे उसकी पीठ रगड़ते हैं, जिसका अर्थ है दुर्भाग्य से मुक्ति। बचपन में मैंने भी उसकी पीठ रगड़ी थी, लेकिन दुर्भाग्य से मैं मुक्त नहीं हो पाया। या शायद अगर मैं पीठ न रगड़ता तो मेरी हालत और भी बदतर होती। मैं अपने शोधों से इसे भी ठीक से तय नहीं कर पाया हूँ।

मैंने, अभी तक बौद्ध धर्म की संहिताओं का ठीक से अध्ययन नहीं किया है, लेकिन मैंने सुना है कि भारतीय बौद्ध-कथाओं में एक यम देवता है और एक भैंसे के सिर वाला राक्षस है और ये दोनों नरक के स्वामी हैं। आत्माओं को बुलाने वाले श्रीमान नश्वर का जहाँ तक सवाल है, उसकी उत्पत्ति बहुत प्राचीन नहीं ठहरायी जा सकती। लेकिन 'जीवन नश्वर है' आम प्रचलित है। मैं समझता हूँ जैसे ही यह अवधारणा चीन पहुँची उसने आकार ग्रहण कर लिया। इस तरह वू छांग एक चीनी खोज है।

जब कहीं एक विद्वान या प्रसिद्ध व्यक्ति जन्म लेता है तो वह अपने कलम के जादू से ही उस स्थान को 'आदर्श देश' बना देता है।[1] हान साम्राज्य के अंत में य्वी फान[2] ने मेरे जन्मस्थान की प्रशंसा की थी। लेकिन यह शायद बहुत पहले की बात है क्योंकि बाद में यहाँ बहुत-से तुच्छ और 'शाओशिंग के चालबाज़'[3] पैदा हुए। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि पुराने और नए, स्त्री और पुरुष, सभी शाओशिंग में चालबाज़ ही हैं। हमारे पास उससे भी 'घटिया' कई हैं। और यदि आप इन घटिया लोगों से यह आशा नहीं कर सकते कि वे ऐसा खूबसूरत अनाप-शनाप लिखें—'हम एक संकीर्ण और ख़तरनाक रास्ते से गुज़र रहे

---

* 1925 में लू शुन ने 'दीवार से टकराकर' लेख लिखा जिसमें उसने कहा : ''चीन में हर जगह दीवारें हैं पर वे अदृश्य हैं, जैसे भूत दीवारें। आप उनसे हर समय टकरा सकते हैं।''

1. प्रोफेसर छन शीयिंग ने अपने नगर में वुशी को 'आदर्श देश' के रूप में वर्णित किया।
2. य्वी फान (164-233) बाद का हान विद्वान था जिसने शाओशिंग की प्रशंसा में लिखा है।
3. यामेन के मुकदमों को देखने वाले बहुत-से सचिव शाओशिंग से थे। छन शीयिंग ने यह कहकर लू शुन पर आक्रमण किया कि उसका स्वभाव चालबाज़ वकील का था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं, जिसके दायीं तरफ विस्तृत और असीम दलदल है और दाहिनी तरफ विस्तृत और असीम रेगिस्तान है, जबकि सामने हमारा लक्ष्य कोहरे के धुँधलके से ढँका है।[1] फिर भी वे किसी पूर्वानुमान से अँधेरे में लटके लक्ष्य को भी स्पष्ट रूप से देख लेते हैं—सगाई, विवाह; चहकते बच्चे और मृत्यु। मैं यहाँ अपने जन्म स्थान की ही बात कर रहा हूँ। आदर्श प्रांतों में स्थिति एकदम भिन्न होगी। उनमें से कई—मेरा अभिप्राय मेरे जैसे घटिया प्रांत से है—जीवित रहे और यातना सही, लंबे समय तक उन्हें लांछित किया गया और गुमराह किया गया कि वे जानते हैं कि मनुष्यों की इस दुनिया में केवल एक ही चीज़ न्यायपूर्ण है[2] और वह भी अंधकारमय है, इसलिए वे दूसरे प्रांतों की ओर देखते हैं। अधिकाँश लोग अपने को सताए समझते हैं। वास्तविक जीवन में 'खरे भद्रजन' किसी को मूर्ख नहीं बना सकते। और यदिआप नासमझ लोगों से पूछें तो वे बेझिझक आपको बतायेंगे—''सही निर्णय नरक में ही लिखे जाते हैं।''

यह सही है कि जब आप जीवन की खुशियों के बारे में सोचते हैं तो वह जीने लायक लगता है। लेकिन जब आप उसके विषादों के बारे में सोचते हैं तो वू छांग कोई अजूबा नहीं रहता। ऊँचे या नीचे, ग़रीब या अमीर,,सभी को नरक के राजा के सामने खाली हाथ जाना है जो सब कष्टों को ठीक कर देगा और गुनहगारों को सजा देगा। घटिया लोग भी कभी-कभी रुककर कहते हैं—''मैंने कैसा जीवन जिया? क्या मैं 'हवा के मझधार में' कूदा? क्या मैंने दूसरों की 'पीठ में छुरा घोंपा?' वू छांग के हाथ में एक फाल़ है और कोई भी झूठ काम नहीं आएगा। हम दूसरों के लिए अमिश्रित न्याय की माँग करते हैं, लेकिन दबे हुए क्षेत्रों में भी हम अपने लिए कुछ दया की आशा करते हैं। जब तक कुछ कहा जा चुका हो तो फिर नरक होता है। और तब चीनियों द्वारा अन्वेषित नरक का राजा, भैंसे के सिर वाला दैत्य और घोड़े के मुँह वाला दैत्य न्याय करते हैं, हालाँकि उन्होंने अख़बारों में कोई लेख नहीं छपवाया है। भूत बनने से पहले ईमानदार लोग भविष्य की सोचते हुए न्याय की पूर्णता में दया के अंश खोजते हैं और इनके लिए 'जीवन नश्वर है' एक प्रिय चीज़ बन

1. श्वी ची मो के नाम छन शीयिग के पत्र से उद्धरण।
2. शिक्षाकर्मियों के लिए न्याय की माँग करनेवाले संघ की ओर संकेत जिसे छन शीयिग और दूसरों ने 1925 में महिला नार्मल कॉलेज के छात्रों और अन्य प्रगतिशीलों को दबाने के लिए संगठित किया था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाती है। 'हरेक अधिकतम लाभ और कमसकम बुराई चुनता है।'[1] हमारे प्राचीन दार्शनिक मो त्ज़ी ने हमें यही सिखाया है।

आप मंदिर में मिट्टी की मूर्ति से या किताब में छपी तस्वीर से वू छांग की प्रसन्नता नहीं देख सकते हैं। उसके लिए ज़रूरी है कि आप उसे आपेरा में देखें। और साधारण आपेरा से बात नहीं बनेगी, बल्कि वह महान नाटक या मोदगाल्यायना नाटक[2] होना चाहिए। चांग ताई ने अपने संस्मरणों में दिखाया है कि दो या तीन दिनों तक खेला जानेवाला मौदगाल्यायन नाटक कितना भव्य होता है। मेरे बचपन में यह इतना भव्य नहीं रह गया था बल्कि एक साधारण नाटक जैसा ही होता था, शाम को शुरू होकर अगली सुबह समाप्त हो जाने वाला। इस तरह के नाटक देवताओं को प्रसन्न करने और विपत्तियों को टालने के लिए खेले जाते थे और हरेक में एक बुरा व्यक्ति होता था जिस का सुबह तक विनाश हो जाता था, जब उसके पापों का घड़ा भर जाता था और नरक का राजा उसकी गिरफ्तारी के वारंट जारी करता था। इस बिंदु पर वू छांग मंच पर आता था।

मुझे स्मरण है कि मैं एक बार इस तरह के मंच के नीचे एक नाव में बैठा था और दर्शक एक भिन्न मनःस्थिति में थे। साधारणतया जैसे-जैसे रात गहराती थी, दर्शकों की भीड़ भी बढ़ती जाती थी, लेकिन उस समय वे नई रुचि प्रदर्शित करते थे। मंच के एक कोने में टँगा वू छांग का काग़ज़ी टोप तब अंदर ले जाया जाता था और संगीतकार एक विशेष वाद्य को ज़ोर से बजाने लगते थे। यह वाद्य तुरही की तरह का था लंबा और पतला, सात-आठ फीट लंबा। शायद यह भूतों का प्रिय वाद्य था क्योंकि वह तभी बजाया जाता था जब मंच पर भूत होते थे। उसे बजाने पर उसमें से 'न्हातु, नहातु, न्हातुतुतु' की ध्वनि निकलती थी और हम उसे मौदगाल्यायन तुरही कहते थे।

जब भीड़ बुरे व्यक्ति के पतन की आतुर प्रतीक्षा करती होती तो वू छांग प्रवेश करता। उसकी वेशभूषा चित्रों से अधिक सादा थी और उसके हाथ में न तो जंजीर होती न फाल। वह सफेदी में एक गँवार-सा आदमी लगता—सफेद चेहरा, लाल भौंह, गुँथी हुई भौंहें, जिससे यह समझना मुश्किल होता कि वह हँस रहा है या रो रहा है। प्रवेश करते ही

1. मो त्ज़ी के शिष्य द्वारा संकलित मो जी (478-392 ई० पू०) मोहिस्त स्कूल के संस्थापक।
२. इसमें बौद्ध संत मौदगाल्यायन द्वारा अपनी माँ को बचाने के लिए नरक जाने का वर्णन है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह एक सौ आठ बार छींकता और परिचय देने से पहले एक सौ आठ बार साँस भरता। मुझे खेद है कि मुझे उसका कहा सब कुछ याद नहीं है, लेकिन एक कथन इस प्रकार था—

नरक के राजा ने वारंट जारी किया
और मुझे कहा पड़ोसी सिरफिरे को गिरफ्तार करने को
जब मैंने पूछा वह कौन है, तो पता लगा वह मेरे
भतीजे का लड़का था।
उसकी बीमारी? टायफाइड और पेचिश।
उसका डाक्टर? श्याफंग पुल या छन निआन ई का लड़का।
उसकी दवाई? एकोनाइट, हिस्सप और सिनामान।
पहली खुराक से ठंडा पसीना छूटा
दूसरी में उसकी टाँगें सीधी खिच गईं।
मैंने कहा—उसकी माँ करुण रुँदन कर रही है
उसे कुछ समय के लिए जीवन क्यों नहीं दे देते?
लेकिन राजा ने मुझ पर घूस लेने का आरोप लगाया,
उसने मुझे पकड़वाकर चालीस कोड़े मरवाये।....

शाओशिंग में छन, निआन ई एक प्रसिद्ध चिकित्सक था जिसे य्वी चुंगह्वा[1] के उपन्यास 'डाकुओं का दमन' में अमर बताया गया है। लेकिन उसका बेटा अपने कार्य में उतना कुशल नहीं है।

इस वर्णन में नरक के राजा की छवि कोई अच्छी नहीं है, क्योंकि वह वू छांग की ईमानदारी पर शक करता है। फिर भी यह रहस्योद्घाटन कि वू छांग का भतीजा 'कुछ समय के लिए जीवित हो उठा है' भी उसे न्यायपूर्ण और बुद्धिमान देवता होने से नीचे नहीं गिराता। लेकिन दिए गए दंड ने हमारे वू छांग को अन्याय के अमिट बोध से भर दिया। जब वह इसकी चर्चा करता तो वह अपनी भौहों को और अधिक गूँथता और अपने टूटे पंख को ज़ोर से पकड़कर, सिर को झुकाकर वह पानी में तैरती बत्तख के समान तृत्य नृत्य लगता।

न्हातु, न्हातु, न्हातु—न्हातु—न्हातु—न्हातुतुतु। मौदगाल्यायन तुरही भी इस अंतहीन अन्याय के विरुद्ध क्षोभ से बजती है। और वू छांग ने निर्णय ले लिया—

1. य्वी चुंगहवा (1794-1819) द्वारा लिखा एक प्रतिक्रियावादी उपन्यास, जिसमें सरकारी सेना द्वारा लिआंगशान के विद्रोही किसानों के दमन का वर्णन है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब मैं किसी आदमी को नहीं छोड़ूँगा,
चाहे वह ताँबे या लोहे की दीवार के पीछे ही क्यों न हो,
चाहे वह राजा का रिश्तेदार ही क्यों न हो।....

"हालाँकि उसके मन में क्षोभ है लेकिन वह इस अप्रत्याशित प्रहार को दोष नहीं देता।"[1] वह अब दया नहीं दिखाता। दिखाता भी है तो अपनी इच्छा के विरुद्ध नरक के राजा के आदेश के परिणामस्वरूप। सभी प्रेतों में वह अकेला है जिसमें कुछ मानवीय भावनाएँ हैं। यदि हम प्रेत नहीं बनते तो यह अच्छा है, लेकिन यदि बनना ही पड़े तो वही है जिसके साथ थोड़े संबंध बन सकते हैं।

मुझे अभी तक याद है, कैसे मेरे नगर में दूसरे 'घटिया लोगों' के साथ मैं इस भुतहे पर मानवीय, न्यायपूर्ण पर दयावान, धमकीभरे पर प्रिय वू छांग के प्रदर्शन का आनंद लेता था। हम उसके चेहरे के दुख और हँसी, वीरता और बुदबुदाहट का भी आनंद लेते थे।

मंदिरों का वू छांग रंगमंच के वू छांग से कुछ भिन्न था। वह कुछ क्रियाएँ करता था, लेकिन बोलता नहीं था, और एक मसखरे के पीछे लगा रहता था जिसके हाथ में खाने की थाली होती, जिसे वह खाना चाहता, लेकिन मसखरा खाने न देता। दो अतिरिक्त चरित्र भी होते जिन्हें 'खरे भद्र लोक', 'चूहा और संतान' कहते। सभी 'घटिया लोगों' में यह कमज़ोरी होती है कि वे दूसरों के साथ वैसा ही करना चाहते हैं जो उनके साथ किया गया। इसलिए वे एक प्रेत को भी अकेला नहीं होने देना चाहते, बल्कि सभी प्रेतों और पूज्यों के जोड़े बना देते हैं। वू छांग भी इसका अपवाद नहीं था। उसकी जोड़ी एक सुंदर पर देहाती महिला थी जिसे वू छांग भाभी के नाम से पुकारा जाता। इस संबोधन से स्पष्ट था कि वू छांग हमारी ही पीढ़ी का होना चाहिए। हमारी इसलिए कि उसमें कोई प्रोफेसरी अभिमान नहीं। फिर कुछ कम लंबे टोप और छोटे सफेद कपड़े वाला एक लड़का था। वह बच्चा ही था, लेकिन उसके कँधे अभी से कुछ झुके हुए थे और उसकी भौंहें कुछ झुकी हुई थीं। जाहिर है कि वह वू छांग का पुत्र था, लेकिन सभी उसे अलिग पुकारते और उसकी अवज्ञा करते। शायद इसलिए कि वह भाभी वू छांग का पहले पति से बेटा था। लेकिन उस स्थिति में उसकी शक्ल छांग से इतनी मिलती-जुलती क्यों थी? लेकिन भूतों और आत्माओं के तरीके समझना

1 च्वांग त्ज़ी से एक उद्धरण।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठिन हैं और हम इस मामले को यहीं छोड़ते हैं। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि वू छांग के अपने बच्चे क्यों नहीं थे, आज इसकी व्याख्या की जा सकती है। आत्माएँ भविष्य द्रष्टा होती हैं। उसे डर होगा कि यदि उसके अधिक बच्चे होंगे, तो कानाफूसी करनेवाले लोग धूर्त तरीके से यह सिद्ध करने की कोशिश करेंगे कि उसने रूसी रूबल की घूस ली थी। इसलिए वह परिवार नियोजन का अध्ययन ही नहीं करता, उस पर अमल भी करता है।

खाने वाले दृश्य को 'विदाई' कहा जाता है। क्योंकि वू छांग आत्माओं को बुलाने वाला है, इसलिए आने वाले के संबंधियों को उसे विदाई भोज देना होता है। जहाँ तक उसे खाना न खाने देने का सवाल है, वह सच बात नहीं है, केवल चाँदी उत्सवों में मजाक के लिए है। लेकिन हर कोई वू छांग के साथ मज़ाक करना चाहता है क्योंकि वह इतना खुला, बेबाक और मानवीय है। यदि आपको सच्चा दोस्त चाहिए तो उससे बेहतर कम ही मिलेंगे।

कुछ लोगों का कहना है कि वह आत्माओं की दुनिया में जाने वाला मनुष्य है। दूसरे शब्दों में एक मानव जिसकी आत्मा नींद में नरक में वास करती है। इसीलिए वह इतना मानवीय लगता है। मुझे एक ऐसे आदमी की याद है जो मेरे घर के पास ही एक झौंपड़े में रहता था जो अपने को 'चलता फिरता वू छांग' बताता था। उसके घर के बाहर अगरबत्तियाँ और मोमबत्तियाँ भी अक्सर जलती रहतीं। फिर भी मैंने ग़ौर किया कि उसके चेहरे पर असामान्य भुतहा भाव रहता। शायद ऐसा हो कि जब वह निचले क्षेत्रों में भूत बना रहा तो उसके हाव-भाव अधिक मानवीय हो गए हों? बहरहाल, भूतों और आत्माओं के तरीकों को समझना मुश्किल है और इसलिए हम इसे यहीं छोड़ते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सौ पौधों वाले बगीचे से तीन ज़ायकों वाले अध्ययन तक

हमारे घर के पिछवाड़े एक महान बाग़ था जिसे हमारे परिवार में सौ पौधों का बाग़ कहा जाता था। काफी समय पहले घर और बाग़ को चू शी* के वंशजों ने खरीद लिया और अंतिम बार मैंने उसे सात या आठ वर्ष पहले देखा। वहाँ अब केवल जंगली पौधे ही नज़र आए, लेकिन बचपन में वह मेरे लिए स्वर्ग था।

मैं यहाँ सब्ज़ियों के हरे खेतों, कुएँ के चारों ओर लगे फिसलने पत्थरों, ऊँचे शहद-मुच्छ पेड़ या बैंगनी शहतूत का वर्णन नहीं करना चाहता। न ही यहाँ मैं पत्तों के बीच होनेवाली लंबी सरसराहट, फूलों पर मँडराती मधुमक्खियों या सीधे घास से आकाश में उड़ जाने वाले भरल पक्षी के बारे में ही कुछ कहना चाहता हूँ। बाग़ की मिट्‌टी की नीची चारदीवारी तो हमेशा ही आकर्षण का केंद्र बनी रहती थी। यहाँ मैदानी झींगुर आराम करते थे जबकि घर के झींगुर शोर मचाते थे। यहाँ गुबरीले भी थे जिनकी पीठ पर आप उँगली रखें तो वे पिछले भाग से भाप निकालते थे। गूलर के पेड़ से बेलें लिपटी होतीं, जिसके फल कमल के पुटक की तरह थे जबकि बेल के कंद फूले हुए थे। लोगों का कहना था कि इनमें से कुछ की आकृति मनुष्य जैसी थी और यदि आप उन्हें खा लें तो आप अमर हो जाएँ। इसलिए मैं उन्हें तोड़ता रहता था। एक को उखाड़कर मैं उसके साथ वालों को खींचता और इस क्रिया में दीवार का काफी हिस्सा गिरा देता, लेकिन मुझे कभी मानव आकार का कंद नहीं मिला। यदि आप काँटों से न डरें तो कुछ झरबेरियाँ भी तोड़ सकते थे जो मूँगे के मनकों के गुच्छों की तरह थीं, मीठी और खट्‌टी, शहतूतों से अधिक सुंदर रंग और स्वाद भी।

मैंने कभी घनी घास में जाने का प्रयास नहीं किया क्योंकि कहा जाता है कि उसमें काला नाग रहता था।

---

* यहाँ लू शुन का अर्थ है कि ख़रीददारों का पारिवारिक नाम चू था। वे वास्तव में सुंग साम्राज्य के विद्वान चू शी के वंशज थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मा छांग ने मुझे एक कहानी सुनाई थी :–

एक समय की बात है कि एक विद्वान अध्ययन के लिए एक पुराने मंदिर में ठहरा हुआ था। एक शाम जब वह पिछवाड़े के बग़ीचे की ठंडी हवा का आनंद ले रहा था तो किसी ने उसका नाम पुकारा। उसने चारों तरफ देखा और देखा कि दीवार के ऊपर एक सुंदर महिला का सिर है। वह हँसी और फिर ओझल हो गई। वह बहुत खुश हुआ। तभी एक बूढ़े बौद्ध साधु ने, जो रोज़ शाम को उसके पास गप्पें लड़ाने आता था, यह सब जाना। उसके चेहरे पर बुराई की परछाई देखकर उसने घोषणा की कि उसने ज़रूर सुंदर स्त्री सर्प को देखा है जो मानव सिर और सर्प के शरीर वाला राक्षस है और जो आदमी का नाम पुकार सकता है। यदि वह बोला तो साँप रात में आयेगा और डस लेगा।

विद्वान का डर के मारे बुरा हाल था। लेकिन साधु ने उससे निश्चित होने को कहा और एक छोटा बक्सा दिया और कहा कि यदि वह उसे अपने तकिये के पास रखेगा तो वह निडर सो सकता है।

हालाँकि विद्वान ने बताए अनुसार सब किया, लेकिन फिर भी वह सो नहीं पाया। और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। ठीक आधी रात में वह राक्षस आया। दरवाज़े के बाहर हवा और बारिश के शोर जैसी सूँ-साँ, सें-सें हुई। वह डर के मारे काँप रहा था तो तकिये के पास एक सुनहरी किरण चमकी। उसके बाद दरवाज़े के बाहर सब कुछ शांत हो गया और सुनहरी किरण अपने बक्से में वापस आ गई।

और उसके बाद? उसके बाद बूढ़े साधु ने उसे बताया कि वह एक उड़नेवाला कनखजूरा है जो सर्प के मगज़ को खा सकता है और उसी ने सुंदर स्त्री सर्प को मारा है।

इसका सबक यह था–यदि कोई अनजान आवाज़ आपका नाम पुकारे तो किसी भी स्थिति में उसका उत्तर न दो।

इस कहानी ने मेरे लिए उन आपदाओं को स्पष्ट किया, जिससे मानव जीवन ग्रस्त है। मैं जब एक गर्मी की रात में बाहर बैठा था तो मैं भी दीवार की तरफ देखने में डर रहाथा और ऐसे बक्से की कामना कर रहा था जिसमें बूढ़े साधु जैसा उड़ने वाला कनखजूरा हो। जब मैं सौ पौधों वाले बाग़ की लंबी घास के किनारे पर चल रहा था तब भी यही सोच रहा था। आज तक मुझे वैसा बक्सा नहीं मिला। यह सही है कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ अनजान आवाज़ें मेरा नाम पुकारती हैं, लेकिन वे निश्चय ही सुंदर स्त्री सर्प की नहीं थीं।

शीत ऋतु में बाग़ कुछ खामोश सा रहता लेकिन बर्फ पड़ने के साथ ही फ़िज़ा बदल जाती। बर्फ पर लेटकर अपनी आकृति बनाना या बर्फ का बुद्ध बनाना दाद देने वाले दर्शकों की माँग करता था। लेकिन क्योंकि यह एक वीरान बाग़ था जहाँ कोई नहीं आता था, इसलिए इन खेलों का वहाँ कोई अर्थ नहीं होता। इसलिए मैं केवल पक्षी पकड़ता। इसके लिए मामूली बर्फ ही काफी नहीं थी, बल्कि दो-तीन दिन तक लगातार बर्फ से ज़मीन ढक जाय और कुछ समय के लिए पक्षी भूखे मरने लगें। आप बर्फ हटाकर थोड़ी जगह साफ कर लें और एक छोटी डंडी पर बाँस की बड़ी टोकरी टाँग कर उसके नीचे चावल के दाने बिखेर दें। इसके बाद डंडी से एक लंबी डोरी बाँध दें और दूर छिपकर रस्सी पकड़ कर बैठ जाएँ, पक्षियों के आने की प्रतीक्षा में। जब वे टोकरी के नीचे एकत्रित हो जाएँ तो आप डोरी खींचकर उन्हें फँसा लें। इस तरह ज़्यादातर गौरैया फँसतीं। लेकिन उनमें कुछ खंजन पक्षी भी होते जो इतने जंगली थे कि वे फँसने के एक दिन के अंदर ही मर जाते।

रून थू[1] के पिता ने मुझे यह तरतीब सिखाई थी, लेकिन मैं इसमें अभ्यस्त नहीं हो सका। यह ठीक है कि पक्षी मेरी टोकरी के नीचे जमा होते, लेकिन जब मैं डोरी खींचता और देखने वहाँ दौड़ता तो देखता कि वहाँ कुछ भी नहीं होता। लंबे प्रयास के बाद मैंने केवल तीन या चार पक्षी पकड़े। रून थू के पिता उससे आधे समय में ही दर्जनों पक्षी पकड़ लेते, जो उसके झोले में चिल्ल-पों और उछल-कूद मचाते रहते। एक शांत मुस्कान के साथ उसने कहा:–

"तुम बहुत अधीर हो। तुम उनके बीच में आने तक प्रतीक्षा नहीं करते।"

मुझे नहीं मालूम मेरे परिवार ने मुझे स्कूल में भेजने का निर्णय क्यों लिया और स्कूल भी ऐसा जो कड़ाई में सारे नगर में प्रसिद्ध था। यह शायद इस कारण था कि मैंने कच्ची दीवार काफी गिरा दी थी या शायद मैंने पड़ोसी लिआंग के आँगन में ईंटें फेंकी थीं या शायद इसलिए कि मैं कुएँ के आरपार कूदा था।.... मेरे पास जानने का कोई तरीका नहीं

1. रून थू जिसका वास्तविक नाम चांग युन श्वेइ था, लू शुन की कहानी 'मेरा पुराना घर' में आता है। वह एक किसान का पुत्र और लू शुन का बचपन का दोस्त था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। लेकिन मेरे लिए इसका कुल अर्थ यह था कि सौ पौधों के बाग़ में मेरा अक्सर घूमना बंद हो गया था। मेरे झींगुरो, विदाई! मेरी झरबेरियो, विदाई!

हमारे घर से कुछ सौ गज पूर्व में पुल के पार मेरा अध्यापक रहता था। आप काले रंग पुते बाँस के दरवाज़े से घुसते थे और तीसरा कमरा मेरी कक्षा था। बीच की दीवार पर यह शिलालेख टँगा था—'तीन स्वाद अध्ययन' और उसके नीचे एक पुराने वृक्ष के नीचे लेटे चितकबरे भूरे हिरन की तस्वीर टँगी थी। कन्फ्यूशियस की पट्टी के अभाव में हम शिलालेख और हिरन के सामने झुकते। प्रथम बार कन्फ्यूशियस के लिए और दूसरी बार अपने अध्यापक के लिए।

जब हम दूसरी बार झुकते तो हमारे अध्यापक कमरे के किनारे से गरिमापूर्व ढंग से पीछे झुक जाते। एक दुबला, लंबा, भूरी दाढ़ी वाला बूढ़ा जो बड़ा चश्मा पहनता था। यह सुनकर कि वह हमारे नगर का बेहद ख़रा, सम्मानजनक और पंडित आदमी है, मेरे मन में उसके लिए असीम श्रद्धा थी।

मुझे याद नहीं कि मैंने कहाँ सुना था कि तुंग फांग श्वो[1] नाम का एक दूसरा पंडित विद्वांन है जो ई यू ची नाम के कीड़े का नाम जानता था जो अन्याय से कत्ल किए किसी आदमी का भूत था और यदि आप उसे द्राक्षा में डुबो दें तो वह ग़ायब हो जाता था। मैं इस कहानी को विस्तार से जानना चाहता था लेकिन मा छांग ने इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला, क्योंकि वह कोई प्रकांड विद्वान नहीं थी। अब मुझे मौका मिला। मैं अपने अध्यापक से पूछ सकता था।

''श्रीमन्, यह ई यू ची कीड़ा क्या है?'' मैंने छुट्टी होने से पहले नए पाठ के अंत में जल्दी से पूछा।

''मुझे नहीं मालूम।'' वह प्रसन्न नहीं था, बल्कि थोड़ा नाराज दिखाई पड़ रहा था।

तब मुझे अहसास हुआ कि छात्रों को इस तरह प्रश्न नहीं पूछने चाहिएँ बल्कि अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इतने बड़े विद्वान होने के नाते ज़ाहिर है कि वे इसका उत्तर जानते होंगे। जब उन्होंने कहा कि मैं नहीं जानता तो इसका अर्थ था कि वे मुझे बताना

1. (154-93 ई०पू०) ह्वान वंश में 140 ;y 87 ई०पू० शासन करने वाले वू ती का दरबारी और सलाहकार।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं चाहते। अपने बहुत-से पुराने अनुभवों से मैं जानता था कि बड़े लोग अक्सर ऐसा ही व्यवहार करते थे।

इसलिए मैंने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया। दोपहर में मैं सुलेख का अभ्यास करता, शाम को छंद बनाता। पहले कुछ दिनों तक तो अध्यापक बहुत सख़्त रहा, लेकिन बाद में मेरे साथ उसका व्यवहार ठीक हो गया। लेकिन धीरे-धीरे उसने मेरा लिखित काम बढ़ा दिया तथा मेरे द्वारा लिखे जाने वाले छंदों में अक्षर तीन से पाँच और अंततः सात कर दिए।

तीन स्वाद अध्ययन के पिछवाड़े भी एक बाग़ था। हालाँकि यह छोटा था, लेकिन आप छज्जे पर चढ़कर शीतकालीन आलूबुखारे तोड़ सकते थे। सबसे अच्छा था चींटियों को खिलाने के लिए मक्खियाँ पकड़ना क्योंकि इसमें शोर नहीं मचता था। लेकिन एक ही समय में हममें से अधिक बच्चे बाहर बाग़ में नहीं जा सकते थे या अधिक देर तक बाहर नहीं रह सकते थे क्योंकि तब अध्यापक कक्षा से ही चिल्लाते :–

"सब लोग कहाँ चले गए?"

फिर एक-के-बाद-एक सब वापस आते क्योंकि सबके एक साथ आने का अर्थ कोई नहीं था। उसके पास एक छड़ी रहती जिसका प्रयोग वह शायद ही कभी करता। वह छात्रों को घुटनों के बल झुकाकर दंड देता, लेकिन इसका भी वह शायद ही प्रयोग करता। सामान्य रूप से वह थोड़ी देर चारों तरफ घूमता और चिल्लाता :–

"अपनी पढ़ाई में लगो।"

फिर हम गला फाड़कर पढ़ने लगते एक उफनते हुए कड़ाह की गर्जना के साथ।

हम भिन्न पाठ्य-पुस्तकों से पढ़ते :–

"क्या मानवता दूर है? मैं उसे जब चाहता हूँ, वह यहाँ है।"[1]

"बोडे आदमी पर हँसना, कहो–शिकारी कुत्ते का जबड़ा चौड़ा है।"[2]

"ऊंपरी नौवें पर अजदहा छिपकर ताक में बैठा है।"[3]

---

1. कन्फ्यूशियस के सूक्ति-संग्रह से।
2. बच्चों की पाठ्य-पुस्तक से।
3. 'परिवर्तन की किताब' से।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"उत्तम उत्पादन के साथ ख़राब चीज़ों की मिलावट का अच्छा उत्पादन करनेवाली बेचारी ज़मीन–उसका दाम, चराई, संतरे, चकोतरे।"[1]

अध्यापक भी ज़ोर से पढ़ते थे। बाद में हमारी आवाज़ें धीमी होती जातीं और शांत हो जातीं। केवल वे ही हमेशा की तरह ज़ोर से बोलते रहते :–

"उसके लौह राजदंड के घुमाने पर, सब दंग खड़े हैं.... सोने का चषक लबालब भरा है, लेकिन हज़ारों प्याले भी उसे नशा नहीं कर सकते....।"[2]

मैं इसे सर्वोत्तम साहित्य मानता था क्योंकि जब वे इस परिच्छेद पर पहुँचते तो वे हमेशा मुस्कराते, अपना सिर थोड़ा पीछे झटकते और अपना सिर और पीछे झुकाते जाते।

जब हमारे अध्यापक पूर्णतया अपने अध्ययन में डूबे होते तो वह हमारे लिए सबसे बढ़िया मौका होता। कुछ लड़के अपनी उँगलियों पर काग़ज़ी टोपी चढ़ाकर पुतली खेल का मंचन करते। मैं 'छंग श्वान काग़ज़' का प्रयोग करते हुए उस पर अनेक उपन्यासों पर आधारित चित्र बनाता, जैसे हम सुलेख लिखते थे। जितनी और किताबें मैं पढ़ता उतने ही चित्र मैं बनाता। मैं अच्छा छात्र तो नहीं बन पाया लेकिन कलाकार बनने की दिशा में मैंने काफी प्रगति की। मेरे द्वारा उतारे गए सर्वोत्तम दो खण्ड इन्हीं से भरे हैं। बाद में पैसे की तुरंत आवश्यकता होने पर मैंने इन्हें एक धनी सहपाठी को बेच दिया जिसके पिता अंत्येष्ठि क्रिया के लिए काम आनेवाले चमकीले सिक्कों की दुकान चलाते थे। मैंने सुना है कि वह अब दुकान के प्रबंधक हैं और शीघ्र ही उन की पदोन्नति स्थानीय भद्रलोक में होने वाली है। मेरे वे रेखांकन काफी काफी पहले नष्ट हो गए होंगे।

---

1. इतिहास की किताब से।

2. छिंग वंश की वर्णनातमक कविता से, जिसमें थांग वंश के युवराज ली खंग (856-908) द्वारा भोज में की गई बदतमीजी का वर्णन है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फन ओइ नुंग

टोकियो के अपने निवासों में हम सामान्यतया उठते ही अख़बार पढ़ते थे। अधिकाँश छात्र 'असाही शिम्बन' और 'योमिउरी शिम्बन' पढ़ते थे लेकिन गपशप में रुचि रखनेवाले 'निरोकू शिम्बन' पढ़ते थे। एक सुबह सबसे पहले हमारी आँखें जिस पर पड़ीं, वह था चीन से तार, जो इस प्रकार था :–

"अनर्मिग आनह्वेइ के राज्यपाल की हत्या चु शिकी तिन ने कर दी है। हत्यारे को पकड़ लिया गया है।"

प्राथमिक धक्के के बाद सब छात्र स्वस्थ हो गए और बातचीत करने लगे। वे यह भी अनुमान लगाने लगे कि हत्यारा कौन था और चु शिकी तिन के रूप में अनूदित तीन चीनी अक्षर क्या थे, लेकिन शाओशिग से आया हर कोई, जो पाठ्य-पुस्तक के अलावा कुछ भी पढ़ता था, इसे एकदम समझ गया। यह श्वी शीलिन[1] था जो अपनी पढ़ाई समाप्त कर चीन लौट कर आनह्वेइ का पुलिस कमिश्नर बन गया था और राज्यपाल की हत्या के लिए सही पद पर था।

सब लोगों ने भविष्यवाणी की कि उसे सर्वोपरि दंड मिलेगा और उसका पूरा परिवार फँसेगा। इसके कुछ दिनों बाद ही हम तक यह समाचार पहुँचा कि कुमारी छिउ चिन[2] को शाओशिग में मौत की सज़ा दी गई है और श्वी शीलिन का दिल निकाल कर अनर्मिग के अंगरक्षकों द्वारा भून कर खाया गया है। हम क्रोध से भर गए। हममें से कुछ ने रास्ते के किराए का पैसा एकत्र किया क्योंकि इसमें जापानी रोरिन मददगार हो सकता था। जब वह प्रसन्न होता तो वाइन के साथ समुद्री फेनी मछली उड़ाते हुए शु के परिवार को लेने निकलता था।

---

1. शाओशिग के निवासी (1873-1907) शु ने जापान में अध्ययन किया और क्रांतिकारी कार्य भी। 1906 में वह चीन वापस आया और छिउ चिन के साथ आनह्वेइ और च च्यांग में विद्रोह की योजना बनाई। 1907 की गर्मियों में उसने आनह्वेइ के राज्यपाल की हत्या कर दी।
2. छिउ चिन (1857-1907) भी शाओशिग से थी और जापान में पढ़ी थी। वह भी शु की गिरफ्तारी के बाद पकड़ी गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर बार की तरह हमने प्रांत के सहपाठियों की एक बैठक भी बुलाई जिसमें क्रांतिकारी शहीदों के लिए शोक मनाया गया और मांचू सरकार की भर्त्सना की गई। तब किसी ने सुझाव दिया कि मांचू सरकार की अमानवीयता के विरोध में पेइचिंग को तार भेजा जाए। बैठक एकदम दो खेमों में बँट गई–तार भेजने के पक्ष वाले और उसके विरोधी। मैं उसके पक्ष में था लेकिन जब मैंने अपनी राय समाप्त की तो एक गंभीर घरघराती आवाज़ ने घोषणा की :–

''जिन्होंने हत्या की वे मार दिए गए हैं, जो मरे हैं वे मर गए हैं–अब इस बेमतलब तार का क्या अर्थ है?''

वक्ता एक लंबा, तगड़ा व्यक्ति था, लंबे बाल, काली से अधिक सफेद आँखें, जो लोगों की तरफ हमेशा तिरस्कारपूर्ण भाव से देखता था। दरी पर बैठे हुए उसने मेरी हर बात का खंडन किया। हालाँकि पहले भी मुझे यह बात खली थी और मेरी नज़रें उस पर थीं, लेकिन आज मैंने पूछा :–

''वह अंतिम वक्ता कौन है जो इतना ठंडा था?''

किसी ने, जो उसे जानता था मुझे बताया–''वह फान ओइ नुंग है, श्वी शीलिन का एक छात्र।''

यह घोर अपमानजनक था, वह व्यक्ति तो मनुष्य ही नहीं। उसके गुरु की हत्या हुई और फिर भी वह तार भेजने का साहस नहीं रखता। उसके बाद मैंने तार भेजने का हठ ठान लिया और उससे वितर्क करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि जो लोग तार भेजने के पक्ष में थे, बहुमत में थे और उसको मानना पड़ा। दूसरा काम था किसी को तार लिखने का काम सौंपना।

''इस पर मत लेने की क्या ज़रूरत है?'' उसने कहा। ''यह काम वही करे जिसने इसका सुझाव दिया है।''

मुझे यकीन था कि यह टिप्पणी मुझे लक्ष्य थी, हालाँकि यह तर्कसंगत ही थी। फिर भी मैंने घोषणा की कि इस तरह की दुखद घटना पर लिखने का ज़िम्मा उसे दिया जाए जो शहीद के जीवन से परिचित हो क्योंकि दूसरों की अपेक्षा अपने घनिष्ट संबंधों के कारण वह अधिक शोकाकुल और क्रोधित महसूस करेगा और इससे उसका लिखना अधिक हृदयद्रावक एवं प्रभावशाली होगा। मैं फिर उससे बहस करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि हम दोनों में से किसी ने भी उसे नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखा। मुझे याद नहीं कि किसने लिखने के लिए हामी भरी। इसके बाद लिखने वाले के अलावा सब लोग चले गए और एक दो मददगार रह गए जो लिखे जाने के बाद उसे भेजेंगे।

उसके बाद मैंने फान ओइ नुंग को हमेशा असहज और घृणास्पद पाया। मैं पहले सोचता था कि दुनिया में सबसे अधिक घृणास्पद अगर कोई है तो मांचू है लेकिन अब मुझे महसूस हुआ कि वे तो दूसरे नंबर पर है, सबसे बड़ा अपराधी तो फान ओइ नुंग है। यदि चीन में क्रांति नहीं होती तो इस विषय में कुछ भी कहना ठीक नहीं होगा। लेकिन यदि क्रांति होती है तो पहली चीज़ होगी फान ओइ नुंग को खदेड़ना।

बाद में धीरे-धीरे इस विषय पर मेरे विचार लचीले हो गए और अंततः भूल ही गए और उसके बाद हम फिर नहीं मिले, कम-से-कम क्रांति के एक वर्ष पूर्व तक। उस समय मैं अपने नगर में शिक्षक था। बसंत के अंत में एक दिन मैंने अचानक एक व्यकित को अपने मित्र के घर में देखा जिसका चेहरा काफी जाना-पहचाना लगा। दो-तीन सैकड़ों तक एक-दूसरे को ग़ौर से देखने के बाद हम दोनों ने कहा :—

''क्यों, तुम फान ओइ नुंग हो न।'

''क्यों, तुम लू शुन हो न।''

पता नहीं क्यों, लेकिन हम दोनों इस पर एक साथ हँसे—हँसे अपने पर और बीते हुए उन दिनों पर। उसकी आँखें अभी भी वैसी ही थीं, लेकिन आश्चर्य था कि इन कुछ ही वर्षों में उसके कुछ बाल सफेद हो गए थे। हो सकता है वे पहले भी सफेद ही हों और मैंने तब ग़ौर न किया हो। एक पुरानी जाकिट और फटे कपड़े के जूते पहने वह बहुत ही बेतरतीब लग रहा था। अपने अनुभवों को सुनाते हुए उसने बताया कि धन के अभाव में वह पढ़ाई पूरी नहीं कर सका था और घर वापस आ गया। लौटने के बाद उसे अस्वीकार किया गया, घृणा से देखा गया और दंड भी दिया गया। उसके लिए सिर छिपाने को कोई स्थान नहीं रहा। अब वह गाँवों में शरण लेने आया है और कुछ छोटे बच्चों को पढ़ाकर किसी तरह गुज़ारा कर रहा है। लेकिन कभी-कभी वह इतना हताश अनुभव करता है कि नाव लेकर नगर आ जाता है।

उसने मुझे यह भी बताया कि अब वह पीना भी पसंद करता है। सो हमने शराब पी। उसके बाद वह जब भी नगर आता तो मेरे पास आता और इस तरह हम घनिष्ट हो गए। अपने प्यालों में हम कुछ ऐसी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेहूदा, अर्थहीन बातें कहते कि सुनकर मेरी माँ भी हँसे बिना न रहती। एक दिन मुझे टोकियो में अपने सहपाठियों की वह बैठक स्मरण हो आई।

"उस दिन तुमने कुछ न करके जानबूझकर मेरा विरोध क्यों किया?" मैंने उससे पूछा।

"तुम नहीं जानते? मैं तुम्हें हमेशा नापसंद करता था—मैं ही नहीं, हम सभी।"

"क्या तुम जानते थे कि उससे पहले मैं क्या था?"

"निश्चय ही। जब हम याकोहामा पहुँचे तो तुम छन पोफिग के साथ हमसे मिलने नहीं आये थे? तुमने हमारे प्रति तिरस्कार भाव से अपना सिर हिलाया था—तुम भूल गए क्या?"

हालाँकि यह बात सात या आठ साल पहले की है, लेकिन कुछ सोचने पर मुझे याद आ गया। य लिफिग मेरे पास आया और बोला कि हमें पढ़ने के लिए जापान आए कुछ प्रांतीय सहपाठियों से मिलने याकोहामा जाना चाहिए। जैसे ही हमारा स्टीमर पहुँचा तो मैंने एक दर्जन से अधिक लोगों को वहाँ पाया। तट पर पहुँचते ही वे अपना सामान कस्टम घर ले गए जहाँ उनके मामलों की छानबीन करते हुए कस्टम अधिकारी की नज़र अचानक बँधे पैरों वाली स्त्री के पहनने के कढ़ाई वाले चप्पलों पर पड़ी। उसने अपना काम छोड़ उन्हें उठाया और आश्चर्य से उन्हें देखने-परखने लगा। मुझे बड़ा क्रोध आया और सोचा—"ये मूर्ख इस तरह की चीज़ अपने साथ लाए ही क्यों?" अनजाने में ही मैंने अवज्ञा में अपना सिर झटका होगा। जाँच के बाद हम कुछ समय के लिए एक होटल में बैठे और फिर हमने रेलगाड़ी पकड़ी। मुझे आश्चर्य हुआ कि छात्रों का यह झुड रेल के डिब्बे में ही एक-दूसरे से विवाद करने लगा। अ चाहता था कि ब यह सीट ले और ब उसे स को देना चाहता था और जब वे इन औपचारिकताओं में उलझे ही हुए थे कि गाड़ी झटके से चल पड़ी, जिससे कि उनमें से तीन-चार गिर पड़े। मुझे फिर गुस्सा आया और मैंने सोचा—"रेलगाड़ी की सीटें भी पूर्वोदाहरण से बाँटना चाहते हैं...." और अनजाने में ही मैंने फिर से अवज्ञा से अपना सिर झटका होगा। आज सोचता हूँ कि उस विवादी गुट में एक फन ओइ नुंग रहा होगा। मैं शर्मिन्दा हूँ बताते हुए कि फन के अलावा उसमें छन पोफिग जैसा क्रांतिकारी शहीद, जो आनह्वेइ की लड़ाई में मारा गया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मा त्जुंगहान थे जिनकी हत्या की गई।[1] एक दो और भी थे जो अँधेरी काल-कोठरियों में डाल दिए गए और क्रांति से पहले रोशनी तक नहीं देख पाए, उनकी यातना के ज़ख़्म अभी भी हरे हैं। लेकिन मैं उन्हें नहीं जानता था इसलिए अपना सिर झटकते हुए मैंने उन सब को पानी के जहाज़ से टोकियो रवाना कर दिया। हालाँकि श्वी शीलिन ने भी उसी नौका में सफर किया, लेकिन वह इस रेलगाड़ी पर नहीं था, क्योंकि वह और उसकी पत्नी स्थल मार्ग से जाने के लिए कोबे में उतर गए थे।

मुझे याद है कि मैंने दो बार अपना सिर झटका था और नहीं जानता कि कौन-सी बार उन्होंने इसे देख लिया। जब वे एक दूसरे को सीट दे रहे थे तो चारों तरफ शोर-शराबा मचा था। लेकिन कस्टम की जाँच के समय पूरी शांति थी, इसलिए वहीं उन्होंने देखा होगा। जब मैंने ओइ नुंग से पूछा तो पता चला कि ऐसा ही था।

''मैं वास्तव में ही समझ नहीं सका कि तुम इस तरह की चीज़ अपने साथ क्यों लाए? वे किसकी थीं?''

''वे श्रीमती शु की थीं।'' उसने मुझे अपनी सफेद आँखों से घूरा।

''टोकियो में वह बड़े पैर होने का दिखावा कर सकती थीं। फिर उन्हें लेने की क्या ज़रूरत थी?''

''मुझे क्या मालूम? उन्हीं से पूछो।''

सर्दियाँ आने के साथ हम और कड़ियल होते गए लेकिन फिर भी हम पीते और मज़ाक करते रहे। तभी वू छांग[2] उभार शुरू हुआ और उसके बाद शाओशिंग मुक्त हो गया। उसके दूसरे दिन ओइ नुंग नगर में आया किसानों जैसी टोपी पहनकर। मैंने उसे पहले इतना खुशमिज़ाज़ नहीं देखा था।

''शुन आज हम पियेंगे नहीं। मैं आज मुक्त शाओशिंग देखना चाहता हूँ। आओ।''

और फिर हम गलियों में घूमे और सब जगह सफेद झंडे लहराते देखे। ऊपर-ऊपर से सब बदल गया था, लेकिन सतह के नीचे सब कुछ पूर्ववत् चल रहा था क्योंकि यह पुराने भद्रलोक द्वारा संगठित सैनिक सरकार थी। रेलवे कंपनी में मुख्य भागीदार प्रशासन का प्रमुख था,

1. छन पोफिंग (1882-1907) ओर मा त्जुंगहान (1884-1907) दोनों जापान में पढ़े थे और चीन लौटने पर श्वी शीलिन के विद्रोह में शामिल हो गए थे।
2 यह 10 अक्तूबर, 1911 को शुरू हुआ और 1911 की क्रांति की शुरुआत था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाजन शस्त्रागार का निदेशक था.... और यह सैनिक सरकार अधिक नहीं टिकी क्योंकि जैसे ही कुछ नौजवानों ने शोर मचाया, वांग चिन फ़ा[1] हांग चओ से अपनी सेनाओं को लेकर आ गया। वास्तव में, वह बिना शोरगुल के भी आता ही। आगमन के पश्चात्, निठल्लों की भीड़ और क्रांतिकारी पार्टी के नये सदस्यों की भीड़ ने उसे घेर लिया और सैनिक राज्यपाल वांग के रूप में सर्वोच्च शासक बन गया। दस दिन भी नहीं हुए थे कि उसके लोग जो सूती कपड़े पहनकर आए थे, अब गुदगुदे बालों वाले चोगे पहनने लगे हालाँकि अभी ठंड नहीं थी।

मुझे अब नार्मल स्कूल के प्रधानाचार्य का पद मिल गया था और राज्यपाल वांग ने स्कूल चलाने के लिए मुझे दो सौ डालर दिए थे। ओइ नुंग अध्यापन का निदेशक बना। वह अभी भी अपना सूती चोगा पहनता था लेकिन अधिक नहीं पीता था और बात करने के लिए तो उसके पास समय ही नहीं था। वह अपने प्रशासनिक कार्यों के अलावा क्योंकि कक्षाएँ भी लेता था, इसलिए वह खूब मेहनत से काम कर रहा था।

"वांग चिन फ़ा और उसके सहयोगी भी ठीक नहीं हैं।" एक आगंतुक, जो पिछले साल मेरा भाषण सुनने आया था, ने बड़ी तल्ख़ी से कहा। "हम उन पर निगरानी रखने के लिए एक अख़बार निकालना चाहते हैं। लेकिन श्रीमन्, हमें सलाहकारों के रूप में आपके नाम का प्रयोग करना होगा। दूसरे हैं श्री छन ची यिंग और एक अन्य हैं श्री सुन द छिग[2] हम जानते हैं क्योंकि यह समाज के हित में है, इसलिए आप इन्कार नहीं करेंगे।"

मैंने अपनी स्वीकृति दे दी। दो दिन बाद मैंने एक पर्चा देखा जिसमें इसके प्रकाशन की घोषणा थी और उसमें तीन सलाहकारों के नाम थे। पाँच दिन बाद अख़बार छप गया। उसने सैनिक सरकार और उसके सदस्यों की भर्त्सना से प्रारंभ किया और उसके बाद उसने राज्यपाल और उनके संबंधियों, सह-प्रांतीयों और रखैलों की भर्त्सना की....

दस दिनों से कुछ अधिक के गाली-गलौज के बाद मेरे घर संदेश आया कि क्योंकि हमने राज्यपाल से चालाकी से धन लेकर उसकी भर्त्सना की है, इसलिए वह हमें मारने एक बंदूकधारी को भेज रहा है।

---

1. च च्यांग में एक गुप्त सभा का नेता जिसने 1911 की क्रांति के दौरान क्यांग फु हुई के साथ मिलकर शाओशिग से सेनाएँ चढ़ाईं और स्वयं राज्यपाल बन गया।
२. एक बुद्धिमान भूस्वामी जो छिग-विरोधी क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गया था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी माँ के अलावा किसी ने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया। वह बड़ी चिंतित थी और मुझसे बाहर न जाने को कह रही थी। लेकिन मैं पहले की तरह ही बाहर गया और उसे समझा दिया कि वांग चिन फ़ा हमें मारने नहीं आ रहा है। हालाँकि वह डाकुओं के स्कूल में पढ़ा है, लेकिन वह बेबात लोगों को नहीं मारता। इसके अलावा जो धन मैंने उससे लिया, वह स्कूल चलाने के लिए था। उसे यह समझना चाहिए और उसका यह अर्थ नहीं था।

यह ठीक था कि कोई हमें मारने नहीं आया। जब मैंने अधिक धन के लिए लिखा तो मुझे और दो सौ डालर मिल गए। लेकिन राज्यपाल वांग को यह शायद बुरा लगा क्योंकि उसने मुझे सूचना दी कि "यह अंतिम बार है।"

ओइ नुंग से कुछ ताज़ा ख़बरें सुनीं जिससे मैं काफी बेचैन हुआ। धन ऐंठने का संदर्भ स्कूल के पैसों के बारे में नहीं, बल्कि अख़बार को दिए धन के बारे में था। जब अखबार कई दिनों तक गाली-गलौज करता रहा तो वांग चिन फ़ा ने वहाँ पाँच सौ डालर के तकाजे के लिए अपना आदमी भेजा। तब हमारे नौजवानों ने एक बैठक की।

पहला सवाल था—"क्या हम इसे स्वीकार करें या नहीं?"

निर्णय था—"स्वीकार करें।"

दूसरा सवाल था—"क्या हम इसे स्वीकार करके भी उसकी भर्त्सना करते रहें?"

निर्णय था—"हम करेंगे।"

तर्क था—"यदि एक बार हमने यह पैसा स्वीकार कर लिया तो वह हिस्सेदार बन गया। यदि एक हिस्सेदार बुरा व्यवहार करता है तो हमें उसकी भर्त्सना करनी चाहिए।"

मैं सीधे अख़बार के दफ्तर गया यह जानने के लिए कि क्या पैसे की यह बात सही थी। वह सही थी। मैंने दबे स्वर में राज्यपाल से पैसा लेने के लिए उन्हें फटकारा लेकिन कोषाधिकारी इससे नाराज़ हुआ।

"एक अख़बार हिस्सेदारी क्यों नहीं स्वीकार कर सकता?" उसने माँग की।

"ये हिस्से नहीं हैं...."

"यदि ये हिस्से नहीं हैं तो क्या हैं?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने अधिक कुछ नहीं कहा। इसके लिए मेरे पास काफी सांसारिक अनुभव था। यदि मैंने कहा होता कि इससे हम फँसते हैं तो वह मुझे गाली देता कि मैं अपनी बेकार की इस ज़िंदगी के लिए इतना चिंतित हूँ कि जनता की सेवा के लिए अपनी बलि देने को भी तैयार नहीं हूँ। या अगले दिन अख़बार में यह ख़बर छपती कि डर के मारे कैसे गिड़गिड़ा रहा था।

लेकिन तभी, भाग्य के संयोग से शु छि फू ने मेरे पास एक पत्र भेजा जिसमें मुझसे नान्चिंग जाने का अनुरोध किया गया था। ओइ नुंग इसके पूर्णतया पक्ष में था हालाँकि वह इससे बेहद दुखी भी था।

''चीज़ें फिर से इतनी बुरी हो गई हैं कि तुम यहाँ नहीं ठहर सकते।'' उसने कहा। ''तुम शीघ्र ही यहाँ से चले जाओ....।''

मैं इसका अनकहा समझ गया और नान्चिंग जाने का निर्णय ले लिया। पहले मैं राज्यपाल के दरबार में अपना त्यागपत्र देने गया, जिसे स्वीकार कर लिया गया और एक राज्यकर्मी को ज़िम्मेदारी सँभालने स्कूल भेजा गया। हिसाब-किताब उसे सौंपकर और नकद दस सेंट और दो कापेक देकर, मैं प्रधानाचार्य पद से मुक्त हुआ। मेरा उत्तराधिकारी फू ली छन था जो कन्फ्यूशियस लीग का प्रमुख था।

मैंने नान्चिंग पहुँचने के दो या तीन सप्ताह बाद अख़बार के मामले के अंत के बारे में सुना—सैनिकों ने उसके दफ्तर को तोड़ डाला था। क्योंकि छन ची यिग गाँवों में था, इसलिए सुरक्षित रहा, लेकिन सुन द छिग, जो नगर में श्रा, की जाँघ में बंदूक के छुरे का घाव लगा। वह गुस्से से आग-बबूला हो गया। और कोई उसे दोष भी नहीं दे सकता क्योंकि यह काफी पीड़ाजनक था। उसका गुस्सा जब शांत हुआ तो उसने अपने कपड़े उतारकर घाव की तस्वीरें खिचवाईं जो एक इंच गहरा था। उसने पूरी घटना का ब्यौरा भी लिखा और सैनिक सरकार के दमन का भंडाफोड़ करने के लिए उसे हर कहीं वितरित किया। मुझे संदेह है कि किसी ने वह तस्वीर रखी होगी। वह इतनी छोटी थी कि घाव दीखता ही नहीं था और बिना इसकी जानकारी के कोई भी उसे किसी सिरफिरे या रोमानी व्यक्ति की नग्न तस्वीर मान सकता था। वास्तव में ही यदि वह भूस्वामी सेनापति सुन छ्वान फांग की नज़र में आ जाती तो वह उसे प्रतिबंधित करा देता।

जब मैं नान्चिंग से पेइचिंग जाने लगा, उस समय तक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्फ्यूशियस लीग के प्रमुख नए प्रधानाचार्य ने ओइ नुंग को छल से अध्यापन के निदेशक पद से हटा दिया। वह पुनः क्रांति पूर्व का ओइ नुंग बन गया। मैं पेइचिंग में उसके लिए कोई मामूली नौकरी खोजना चाहता था, जिसके लिए वह तैयार था, लेकिन कोई स्थान नहीं मिल पाया। बाद में वह एक मित्र के पास चला गया और मैं उससे समाचार पाता रहा। वह अधिकाधिक ग़रीब होता गया और अधिकाधिक तिक्त होता गया। अंततः उस मित्र का घर भी छोड़ना पड़ा और वह इधर-उधर भटकने लगा। काफी पहले मैंने अपने प्रांत के एक व्यक्ति से सुना कि वह नदी में डूबकर मर गया है।

मुझे संदेह है कि उसने आत्महत्या की होगी क्योंकि वह एक बेहतर तैराक था और वह डूब नहीं सकता था।

रात में, छात्रावास में बैठकर पूर्ण हताशा में मुझे इस ख़बर के ठीक होने पर संदेह हुआ। हालाँकि मुझे अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला, लेकिन फिर भी इस पर भरोसा न करने का कोई कारण नहीं। मैं और तो कुछ नहीं कर सका, केवल चार कविताएँ लिखीं, जो बाद में एक अख़बार में छपीं। अब मैं उन्हें लगभग भूल गया हूँ। मुझे केवल एक कविता की छः पंक्तियाँ याद हैं। उनमें पहली चार थीं :—

मैंने कितनी बार द्राक्षा पीते अपने समय पर बात की
तुमने, जो थोड़ी पीते थे,
एक नशे में धुत्त दुनिया में
एक पियक्कड़ भी जिसमें डूब जाय....

बीच की पंक्तियाँ मुझे भूल गई हैं। लेकिन अंतिम दो इस प्रकार थीं :—

बिखरते बादलों की तरह मेरे मित्र चले गए
और मैं हवा में धूल के कण की तरह उड़ता हूँ।

बाद में जब मैं घर गया तो कहानी के कुछ विस्तृत ब्यौरे की जानकारी मिली। प्रथमतः तो ओइ नुंग कोई ढंग का काम नहीं खोज पाया क्योंकि सभी उसे नापसंद करते थे। वह बड़े अभाव में था, लेकिन फिर भी दोस्तों के बुलाने पर वह पीता रहा। इस समय तक उसका अन्य लोगों से कोई संबंध नहीं रह गया था और जिनसे वह अधिक मिलता था, वे कुछ युवा लोग थे जिनसे उसकी जान-पहचान बाद में हुई थी। लेकिन वे भी हर समय उसकी परेशानियों को सुनते रहना नहीं चाहते थे—वे उसके मज़ाक अधिक पसंद करते थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मुझे कल एक तार मिल सकता है''—वह कहता। ''मैं उसे जब खोलूँगा तो पाऊँगा कि लू शुन ने उसें मेरे लिए भेजा है।''

एक दिन, कुछ नये मित्रों ने उसे नाव से आपेरा देखने जाने का निमंत्रण दिया। आधी रात के बाद वे वापस लौटे तब तेज़ हवा के साथ बारिश हो रही थी। वह पिये हुए था, लेकिन फिर भी उसने किनारे पर खड़े होने की ज़िद की। जब उसके मित्रों ने इसका विरोध किया तो उसने उनकी नहीं सुनी। उसने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह गिरेगा नहीं। गिरा वह अवश्य और हालाँकि वह तैर सकता था लेकिन वह सतह पर नहीं आया।

दूसरे दिन उन्हें उसका शव मिला। उन्होंने उसे पानी की घास के बीच सीधे खड़ा पाया।

आज तक मैं यह नहीं जान पाया कि उसका संतुलन गड़बड़ाया था या उसने आत्महत्या की थी।

जब वह मरा तो उसके पास एक पैसा नहीं था। लेकिन उसके पीछे एक विधवा और युवा पुत्री बचीं। कुछ लोगों ने उसकी पुत्री के भविष्य के लिए धन-संग्रह शुरू करने की सोची, लेकिन जैसे ही यह सुझाव आया उसके गुट के लोगों में विवाद शुरू हो गया कि उस धन पर किसका नियंत्रण होगा—एकत्र होने से पहले ही। फिर हरेक इतना हताश हो गया कि वह योजना वहीं धरी रह गई।

मुझे नहीं मालूम उसकी पुत्री अब क्या कर रही है? यदि वह पढ़ रही है तो अब तक वह स्नातक हो गई होगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योद्धा और मक्खियाँ*

शापेनहावर ने कहा है कि मनुष्य की महानता का अनुमान लगाने में आत्मिक महत्ता और शारीरिक आकार को निर्धारित करने वाले नियम एक-दूसरे के विरोध में पड़ते हैं। वे हमसे जितना ही दूर होते हैं उतना ही मनुष्य का शरीर छोटा और उसकी आत्मा बड़ी दिखाई पड़ती है।

बहुत निकट से देखने पर वह वैसा नायक दिखाई नहीं पड़ता, क्योंकि उसके खरौंच और घाव साफ नज़र आते हैं। वहाँ से वह ईश्वर, अतिप्राकृतिक व्यक्ति या अज़नबी जातियों का प्राणी न दिखाई पड़कर, हममें से ही एक दिखता है। वह केवल एक मनुष्य होता है। लेकिन इसी में उसकी महानता निहित है।

जब युद्ध में योद्धा धराशायी होता है तो मक्खियों की नज़र सबसे पहले उसकी खरोंचों और घावों पर पड़ती है। वे उन्हें चूमती हैं, भिनभिनाती हुई, यह सोचकर प्रसन्न होती हैं कि वे धराशायी योद्धा से अधिक महान नायक हैं और क्योंकि योद्धा मर चुका है और उन्हें उड़ा नहीं पाता तो मक्खियाँ अधिक ज़ोर से भिनभिनाती हैं और कल्पना करती हैं कि वे अमर संगीत पैदा कर रही हैं तथा योद्धा से अधिक पूर्ण और सुगढ़ हैं।

यह सही है कि मक्खियों की खरोंचों और घावों पर कोई ध्यान नहीं देता।

लेकिन अपनी खरोंचों के बाद भी योद्धा आखिर एक योद्धा है जबकि सर्वाधिक पूर्ण और सुगढ़ होकर भी मक्खियाँ आख़िर मक्खियाँ ही हैं।

मक्खियों भिनभिनाओ! तुम्हारे पास पंख हैं और तुम गुनगुना सकती हो। लेकिन तुम एक योद्धा की कभी बराबरी नहीं कर सकतीं, कीड़ो।

---

* यहाँ योद्धाओं से तात्पर्य सुन यात-सेन और 1911 की क्रांति के अन्य शहीदों से है तथा मक्खियाँ प्रतिक्रियावादियों के भाड़ के टट्टुओं से।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पिता के रूप में हमसे आज क्या अपेक्षा की जाती है

यह लेख लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य परिवार को सुधारने के सवाल पर विचार करना है। और क्योंकि चीन मे माँ-बाप—खासकर पिता—की सत्ता ज़्यादा है, इसलिए मैं पिता और पुत्र के अति पवित्र सवाल पर अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। एक शब्द में, क्रांति पुराने आदमी को भी प्रभावित कर रही है। लेकिन मैं इस पर इतना बढ़-चढ़कर क्यों बात कर रहा हूँ! इसके दो कारण हैं।

पहला, चीन में दो चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें ऋषियों के शिष्य नहीं छू सकते थे। पहली का हमसे कोई ताल्लुक नहीं है इसलिए हम उस पर विचार नहीं करेंगे। दूसरी है 'मानव संबंध'* इस पर हमने जो लापरवाह टिप्पणियाँ की हैं उससे पहले ही हमारी काफी बदनामी हो गई है और हमें 'नैतिकता को भ्रष्ट करने वाले' या 'मानव रूप में भेड़िये' आदि कहा जा चुका है। पिता की सत्ता सर्वोपरि मानी गई है। वह जो भी कहता है सही है और पुत्र को मुँह खोलने से पहले ही गलत मान लिया जाता है। फिर भी, दादा, पिता, पुत्र और पौत्र मानव जीवन की सीढ़ी पर एक के बाद एक आते जाते हैं। आज का पुत्र कल पिता होगा और भविष्य में बाबा। मैं जानता हूँ कि मेरे समकालीन पाठक यदि अभी पिता नहीं हैं तो संभावित पिता ज़रूर हैं। सभी पूर्वज भी बनेंगे। बस कुछ समय की देर है। परेशानी से बचने के लिए ज़रूरी है कि हम औपचारिकता पर न जाएँ बल्कि स्वयं को उस स्थिति में मान लें और अपने और अपने बच्चों के बारे में पिता की गरिमा से बात करें। उससे जब हम पिता बनेंगे तो हमारा काम ही आसान नहीं होगा बल्कि जैसा कि चीन में इस तरह के पूर्वानुमानों की परंपरा है, 'ऋषियों के शिष्यों' को इससे डरने की ज़रूरत नहीं है। असल में यह एक तीर से दो शिकार करने जैसा है। इसीलिए मैं इस विषय पर बात कर रहा हूँ कि 'एक पिता के रूप में हमसे आज क्या अपेक्षा की जाती है।'

* पाँच मानव संबंध—राजा-प्रजा का, पिता-पुत्र का, पति-पत्नी का, भाइयों का और मित्रों का।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरे, जैसा कि मैंने पहले एक लेख में[1] भी परिवार की समस्याओं पर लिखते हुए कहा था कि हमारी पीढ़ी को आने वाली पीढ़ियों की मुक्ति के बारे में सोचना चाहिए। बच्चों की मुक्ति एक ऐसी स्वाभाविक इच्छा है जिस पर किसी बहस की गुंज़ाइश नहीं है। लेकिन चीन में पुरानी पीढ़ी पुराने रीति-रिवाजों और विचारों से इतनी विषाक्त हो चुकी है कि कभी ठीक से सोच नहीं सकती। उदाहरण के लिए अगर सुबह के समय कोई कौआ बोले[2] तो युवा लोग तो उसे कोई अहमियत नहीं देंगे पर पुराने अंधविश्वासी लोग घंटों इससे परेशान रहेंगे। हालाँकि यह बहुत ही बेहूदा बात है, पर इसका कुछ किया नहीं जा सकता। इसलिए एकमात्र रास्ता यही है कि जिनमें भी थोड़ी सद्बुद्धि जगी है वे अपने बच्चों की मुक्ति के लिए काम करें। परंपरा के भार से दबा हुआ आदमी भी अपने कंधों से अँधेरे के दरवाज़े खोल सकता है जिससे कि उसके बच्चे प्रकाश के खुले मैदान देख सकें और एक तर्कयुक्त प्राणी की तरह सुख से अपना जीवन जी सकें।

संयोग से मैंने एक बार कह दिया कि मैं कोई मौलिक चितक नहीं हूँ। इसके लिए शांघाई के एक पत्र ने मुझे खूब लताड़ा। लेकिन हमें दूसरी चीज़ों की जाँच करने से पहले अपने गरेबाँ में झाँक कर देखना चाहिए कि हम झूठी रंगीन उड़ानों से बच सकें। तभी हम स्वयं सही चीज़ें कह और कर सकते हैं तथा दूसरे भी उसका अनुसरण कर सकते हैं। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं कोई मौलिक चिंतक नहीं हूँ और न ही मैंने कोई नया सत्य ही खोजा है। मैं जो भी कहता या लिखता हूँ, वह वही है जो हम दैनंदिन जीवन में देखते और सुनते हैं और जो मुझे अनुभव होता है। जहाँ तक शाश्वत सत्य का सवाल है, मेरे पास उसे जानने का कोई ज़रिया नहीं है। न मैं पहले ही इस बात का पूर्वानुमान कर सकता-हूँ कि आज से कुछ साल बाद मनुष्य के सोच में कौन से परिवर्तन होंगे। मैं तो यही कह सकता हूँ कि वह बदलेगा और विकसित होगा। यही कारण है कि मैं 'एक पिता के रूप में हम से क्या अपेक्षा की जाती है' पर बात कर रहा हूँ।

फिलहाल मुझे जो चीज़ भा रही है वह बहुत ही साधारण है। अगर हम पशु जगत को देखें तो हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है जीवन को

1. 'बतरनीत्र विचार', संख्या 25, 40 और 49
2. चीन में प्रचलित अंधविश्वास।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बचाए रखना। दूसरा, उसे प्रसारित करना और तीसरा, उसे बेहतर बनाना (दूसरे शब्दों में प्रगति करना)। सभी जीवित प्राणी इसी तरह का आचरण करते हैं और पिता भी उसके अपवाद नहीं होने चाहिएँ।

जीवन का मूल्य या उसके विभिन्न पैमाने यहाँ हमारी चिंता का विषय नहीं हैं। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि जीवित प्राणियों में ज़िंदगी से बढ़कर कोई मूल्यवान चीज़ नहीं है। सभी प्राणी इसलिए हैं कि उनमें जीवन है। उसके बिना वे जीवित प्राणी नहीं रह सकते। और जीवन को बचाने के लिए पशुओं में कुछ सहज़ वृत्तियाँ होती हैं जिनमें सबसे स्पष्ट तो खाने की इच्छा है जो उन्हें पौष्टिक खाना खाने तथा अपने को स्वस्थ व जीवित बनाए रखने के लिए ज़रूरी है। और क्योंकि सभी पशुओं को बड़े होना है और मरना है इसलिए जीवन के प्रसार के लिए उनमें एक दूसरी सहज वृत्ति भी होती है—कामेच्छा। इससे प्रेरित हो वे काम की ओर जाते हैं और इस प्रकार जीवन का प्रसार करते हैं। इस प्रकार जहाँ खाद्य की इच्छा व्यक्ति जीवन को सुरक्षित रखती है, काम की इच्छा जीवन को प्रवहमान बनाती है। इसलिए न तो खाना और पीना ही पाप है, न काम ही। खाने और पीने से जीवन सुरक्षित रहता है और यह हम पर कोई अहसान नहीं है। काम से बच्चे पैदा होते हैं और वह बच्चों पर कोई अहसान नहीं है। एक-के-बाद-एक हम जीवन के लंबे रास्ते पर आगे बढ़ते जाते हैं। हममें फर्क केवल यही है कि कोई उस यात्रा में पहले आता है और कोई बाद में। लेकिन किसी को यह सोचने का अधिकार नहीं है कि वह दूसरे पर कृपा कर रहा है।

दुर्भाग्य से चीन का पुराना सोच इसके एकदम विपरीत है। विवाह 'पाँच संबंधों में तीसरा' माना गया है, हालाँकि इसे 'शुरुआत' भी कहा गया है। काम की इच्छा एक प्राकृतिक चीज़ है, फिर भी इसे गंदा समझा जाता है। जन्म भी एक प्राकृतिक चीज़ है, फिर भी इसे एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है। अधिकांश लोगों के मन में विवाह को लेकर अनेक ग्रंथियाँ हैं। मित्र और संबंधी विवाहितों के संबंध में अनेक भद्दे मज़ाक करते हैं इसलिए नव-दंपतियों को लगता है कि उन्होंने शायद कोई शर्मनाक काम कर डाला है। जब बच्चा होता है तो इसकी घोषणा करने के बजाय वे इधर-उधर की बातें करते रहते हैं। बच्चे के सामने वे कैसे शेखी बघारते हैं! लेकिन असल में वे इस तरह आचरण करते हैं जैसे चोरी करके कोई आदमी धनी हो गया हो। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य को पशुओं या बेशर्म बदमाशों की तरह स्वछंद संभोग

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करना चाहिए। मेरे कहने का अर्थ केवल यही है कि जिन्हें सद्बुद्धि प्राप्त हो गई है उन्हें पूर्वी देशों में प्रचलित कुंठाओं से मुक्त हो जाना चाहिए। पति और पत्नी साथी हैं, सहकर्मी हैं, नए जीवन के सर्जक हैं। पैदा होने वाले बच्चों पर नए जीवन का दायित्व है और उन्हें अपने माता-पिता की तरह इसे अपने बच्चों को सौंपना होगा। सभी को अपनी इस रोशनी को अपने बाद आने वाले लोगों को सौंपना होगा। इस दौड़ में कुछ पहले आते हैं और कुछ बाद में।

जीवन का प्रसार क्यों आवश्यक है! क्योंकि यह विकसित होकर प्रगति कर सके। सभी व्यक्ति मरणशील हैं। प्रगति पर कोई बंधन न लगे, इसलिए जीवन जारी रहना चाहिए और प्रगति के रास्ते पर बढ़ते रहना चाहिए। इसके लिए एक विशेष प्रकार की आंतरिक इच्छा का होना ज़रूरी है, एक अभिन्न कोशकीय इच्छा की तरह, जो उसे फैलने में सक्षम बनाती है। इसीलिए जीवन के बाद के रूप हमेशा अधिक महत्त्वपूर्ण और पूर्ण होते हैं और इस प्रकार अधिक वांछित और प्रिय होते हैं, जिनके लिए जीवन के पहले के रूपों का बलिदान किया जा सकता है।

दुर्भाग्य से चीन का पुराना सोच इसके एकदम विपरीत है। युवाओं को पहला स्थान लेना चाहिए लेकिन ले लेते हैं बूढ़े। ज़ोर भविष्य पर होना चाहिए लेकिन है अतीत पर। नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के लिए बलिदान कर दिया जाता है और फिर यह पीढ़ी चाहती है कि उसके बाद आने वाली नई पीढ़ी उसके लिए स्वयं का बलिदान करे। इस प्रकार वह अपने विकास की संभावनाओं को ही ख़त्म कर देती है। लेकिन जैसा कि मेरे विरोधी आरोप लगाते हैं, मेरा कहने का अर्थ यह नहीं कि प्रपौत्रों को हर समय अपने बाबा-दादाओं को पीटना चाहिए, कि पोतियों को अपनी दादियों को गाली देते रहना चाहिए। मैं यह कहना चाहता हूँ कि ज़िन्हें भी सद्बुद्धि प्राप्त हो गई है, उन्हें पूर्वी देशों में सदियों से चले आ रहे गलत विचारों से मुक्त होना चाहिए और अपने बच्चों के प्रति अधिक ज़िम्मेदार होना चाहिए तथा प्रतिष्ठा पाने के विचारों को त्याग कर ऐसी नैतिकता का निर्माण करना चाहिए जिसमें युवा लोगों को प्राथमिकता मिल सके। आज के युवा भी हमेशा प्रतिष्ठा की स्थिति में नहीं रहेंगे। उन्हें अपने बच्चों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करना होगा। सभी को अपनी रोशनी बाद में आने वालों को देनी होगी, फर्क यही है कि इस दौड़ में कुछ पहले आते हैं और कुछ बाद में।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह कथन कि 'पुत्र को अपने पिता का अहसानमंद होने की ज़रूरत नहीं है' 'ऋषियों के शिष्यों' का गुस्सा भड़काने के लिए काफी है। उनकी गलती का कारण है उनका स्वार्थ और यह विश्वास कि वृद्धों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। उनमें स्व-प्रतिष्ठा की भावना अधिक है, ज़िम्मेदारी की कम। उनके लिए पिता और पुत्र का संबंध इस कथन में है कि 'मेरे जीवन का श्रेय मेरे पिता को है' इसलिए युवाओं को पूर्णतया बुजुर्गों के प्रति समर्पित होना चाहिए। बदले में काफी कुछ पाने की आकांक्षा तो और भी पतनशील है क्योंकि इसमें यह भावना निहित है कि युवाओं को पूर्णतया बुजुर्गों के लिए बलिदान हो जाना चाहिए। जबकि दुनिया का नियम इसके ठीक उलटा है। लेकिन प्राचीन काल से ही हमने स्वर्ग की इच्छा का उल्लंघन किया है और इसीलिए आज हमारी जनता शक्तिहीन है और समाज अवरोध का शिकार है। फिर भी हम यह नहीं कह रहे कि हमारा विनाश होगा। इसका अर्थ यही है कि हम प्रगति की जगह अवगति की ओर जा रहे हैं।

प्राकृतिक व्यवस्था में खामियाँ हो सकती हैं लेकिन उसके बीच पुराने और नए के संबंध में कोई खामी नहीं है। और यह उसकी कोई कृपा नहीं है कि उसने पशुओं को 'प्यार' की अंत:प्रेरणा दी। केवल मछलियों जैसे जीवों को छोड़कर (जो बहुतायत में उत्पत्ति के कारण हरेक से प्यार नहीं कर सकतीं) सभी जीवित प्राणी अपने बच्चों के प्रति स्नेह रखते हैं। वे न केवल स्वार्थ से मुक्त हैं बल्कि वे अपनी संतानों के विकास के लिए अपना बलिदान भी कर सकते हैं।

मानव जाति भी इसका अपवाद नहीं है। यूरोपीय और अमरीकी परिवारों में युवा और कमज़ोरों को प्राथमिकता दी जाती है? और यह प्राकृतिक नियमों की पूर्ण संगति में है। चीन में भी जो लोग अभी तक 'ऋषियों के शिष्यों' द्वारा भ्रष्ट नहीं हुए और पवित्र हृदय हैं वे भी इसका सबूत पेश करते हैं। गाँव में बच्चे को अपना दूध पिलाने वाली औरत को यह आभास नहीं होता कि वह उस पर कृपा कर रही है। कोई भी किसान विवाह के प्रति वैसा अपराध भाव नहीं रखता। जब बच्चे पैदा होते हैं तो माता-पिता उन्हें अंत:प्रेरणा से प्यार करते हैं और चाहते हैं कि वे ज़िंदा रहें। इससे भी अधिक वे चाहते हैं कि उनके बच्चे उनसे भी ज़्यादा उन्नति करें। यही प्रगति है। यह प्यार किसी भी प्रतिदान या लाभ से रहित सच्चा प्यार है और यही मनुष्य को एक दूसरे से बाँधे रखता है। अगर हम पुरानी धारणा के आधीन प्यार को त्याग कर केवल 'कृपाओं'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और प्रतिदानों की बात सोचते हैं तो हम न केवल पिता और पुत्र के बीच सही संबंधों को नष्ट करते हैं बल्कि प्यार की जगह घृणा के बीज बोते हैं। एक आदमी ने एक कविता लिखी थी 'बच्चों में श्रद्धा को बढ़ावा देना' जो इस प्रकार है;

लड़के, तुम्हारी प्यारी माँ घर पर काम कर रही है
जब तुम अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाते हो
वह तुम्हारे लिए मीठा बदाम शोरबा बना रही है
क्या फिर भी तुम अश्रद्धावान पुत्र होगे?

यह लेखक अपने को 'नैतिकता का सच्चा प्रहरी' मानता है। लेकिन असल में प्यार में धनियों के मेवों और गरीबों के सस्ते दूध का एक-सा मूल्य होता है, और इस मूल्य के हकदार वही माता-पिता होते हैं जो इसका कोई प्रतिदान नहीं चाहते। अन्यथा तो सब कुछ व्यवसाय है और मेवा-बदाम उस दूध के समान है जो सूअरों को मोटा करने के लिए दिया जाता है। नैतिकता की दृष्टि से कहूँ तो यह एकदम व्यर्थ है।

इसलिए फिलहाल जो चीज़ मुझे सबसे ज़्यादा भा रही है वह है 'प्यार'। सभी देशों के लोग इससे सहमत होंगे कि आत्मप्रेम उचित है, यह आत्मरक्षा और जीवन के आत्मप्रसार का मुख्य कारक है। क्योंकि भविष्य का निश्चय वर्तमान में होता है इसलिए माता-पिता के दोष उनके बच्चों की मृत्यु का कारण बन सकते हैं और जीवन को ख़तरे में डाल सकते हैं। हालाँकि इब्सन के नाटक 'भूत' में मुख्य ज़ोर आदमी और औरत के संबंधों पर है लेकिन इस नाटक में हम जन्मजात रोगों की भयानकता भी देखते हैं। ओस्वाल्ड एक ऐसा कलाकार है जो ज़िंदा रहना चाहता है, पर अपने पिता के अनियमित जीवन की वजह से उसे एक ऐसा जन्मजात रोग लग गया है, जो उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। क्योंकि वह अपनी माँ के प्रति पूर्णतया समर्पित है और उसे अपनी देखभाल का कष्ट नहीं देना चहता, वह कुछ ज़हर चुरा लेता है और नौकरानी रेगिना से कहता है कि वह उसे यह ज़हर उस समय खिला दे जब उसकी बीमारी गंभीर हो जाए। लेकिन रेगिना घर छोड़ कर चली जाती है तो उसे अपनी माँ की सहायता लेनी पड़ती है,

ओस्वाल्ड: अच्छा माँ, अब तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी।
श्रीमती आल्विग: (ज़ोर की चीख के साथ) मैं!
ओस्वाल्ड: तुमसे अधिक और किसका अधिकार है?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीमती आल्विग: मैं! तुम्हारी माँ!
ओस्वाल्ड: इसीलिए तो।
श्रीमती आल्विग: मैं, जिसने तुम्हें जीवन दिया!
ओस्वाल्ड: मैंने तुमसे कभी जीवन माँगा नहीं! और यह जीवन कैसा था जो तुमने मुझे दिया? मुझे यह नहीं चाहिए! तुम इसे वापस लोगी!

इस प्रकरण से उन लोगों को सबक लेना चाहिए जो हममें से पिता हैं। भले ही इससे हम काँप उठें, पर हमें इसकी प्रशंसा करनी चाहिए। हमें अपनी अंतरात्मा को यह कह कर मारना नहीं चाहिए कि हमारे पुत्रों का यातना सहना ठीक है। इस तरह के बहुत से उदाहरण चीन में भी मिल जाएँगे। अस्पताल में काम करने वाले लोग इस तरह के यातनापूर्णदृश्य अक्सर देखते हैं कि बच्चे सिफलिस के रोग से पीड़ित हैं। माता-पिता ही इन बच्चों को अस्पताल में भर्ती कराते हैं। लेकिन सिफलिस ही एकमात्र भयंकर जन्मजात रोग नहीं है। इसके अलावा भी कितने ही शारीरिक और आत्मिक रोग हैं जो एक पीढ़ी दूसरी को देती है, जब तक कि कालाँतर में पूरा समाज ही उनसे पीड़ित न हो उठे। यहाँ मानवता की रक्षा का तर्क देने की ज़रूरत नहीं है। एक बच्चे के पक्ष से हम कह सकते हैं कि जिनमें आत्मप्रेम नहीं है उन्हें पिता बनने का कोई अधिकार नहीं है। अगर वे फिर भी पिता बनना चाहते हैं तो उन प्राचीन वस्तुओं की तरह हैं जिन्होंने स्वयं को राजा घोषित कर दिया था। उन्हें सच्चे उत्तराधिकार का कोई अधिकार नहीं है। भविष्य में जब विज्ञान अधिक विकसित हो जाएगा और समाज अधिक उन्नत तो उनके इन बचे हुए उत्तराधिकारियों को सुजनन वैज्ञानिक सँभालेंगे।

अगर आज के माता-पिता ने अपने बच्चों को कोई आत्मिक या शारीरिक रोग नहीं दिया है और कोई दुर्घटना नहीं हुई है तो ये लड़के और लडकियाँ निश्चय ही स्वस्थ्य होंगे और जीवन के प्रसार का उद्देश्य प्राप्त होगा। लेकिन माता-पिता की ज़िम्मेदारी यहीं ख़त्म नहीं हो जाती क्योंकि जब तक जीवन है, इसे आगे बढ़ाना है। नए जीवन को विकास का मार्ग दिखलाना होगा। उच्च श्रेणी के पशु न केवल अपने बच्चों को पालते-पोषते हैं बल्कि उन्हें जीवित रहने के लिए आवश्यक कौशल भी सिखलाते हैं। पक्षी अपने बच्चों को उड़ना सिखाते हैं, जंगली जानवर अपने बच्चों को हमला करना सिखाते हैं। क्योंकि मानव-प्राणी इन सबसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत आगे है इसलिए अपने बच्चों के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियाँ भी बड़ी हैं कि वे उनसे भी आगे बढ़ें। और यही प्यार है। हम पहले वर्तमान की बात कर रहे थे लेकिन इस प्यार का संबंध भविष्य से है। हर खुले दिमाग वाला आदमी चाहेगा कि उसके बच्चे शक्तिशाली हों, स्वस्थ हों, बुद्धिमान हों और उनसे भी ज़्यादा अच्छे और सुखी हों। वह चाहेगा कि वे उससे अधिक उन्नत हों, वे अतीत को पीछे छोड़ जाएँ। लेकिन ऐसा होने के लिए परिवर्तन ज़रूरी है—परवर्तियों को अपने पूर्वजों के तरीकों को बदलना होगा। 'श्रद्धावान पुत्र वह है जो तीन वर्षों के शोक के दौरान भी अपने पिता के तौर-तरीकों को नहीं बदल सकता* यह कथन एकदम बेहूदा है और हमारे पिछड़ेपन की जड़ है। अगर प्राचीन काल के अभिन्न कोशकीय प्राणियों ने इस नियम का पालन किया होता तो मानव जाति का विकास ही न हुआ होता और आज पृथ्वी पर कोई मनुष्य न होता।

यह हमारा सौभाग्य है कि ये कथन बहुतों का दिमाग खराब करने के बाद भी सभी मनुष्यों की प्राकृतिक भावनाओं को समाप्त नहीं कर पाए। हालाँकि जिन लोगों ने इन ऋषियों की रचनाओं को नहीं पढ़ा है उनकी अंत:प्रेरणा भी समय-समय पर कन्फ्यूशियस की नैतिकता की कुल्हाड़ी के नीचे से भी उमगती रहती है। यही कारण है कि चीनी लोग पतन की ओर जा रहे हैं, पर पूर्णतया समाप्त नहीं हो गए।

इसलिए, जिन लोगों ने भी प्रकाश पाया है उन्हें चाहिए कि वे इस प्राकृतिक प्रेम को फैलाएँ और दृढ़ करें और अपने बाद आने वाले लोगों के लिए यदि ज़रूरत पड़े तो अपनी चिंता किए बिना स्वयं को बलिदान करें। इसकी पूर्व शर्त है सही समझ का होना। पश्चिम में पहले जो गलती की गई वह थी बच्चों को बड़े होते हुओं के रूप में देखना। लेकिन चीन में गलती यह है कि हम उन्हें मनुष्य के छोटे रूप में देखते हैं। यह अभी हाल में हुई खोजों का सद्परिणाम है कि हमने यह जाना कि बच्चे की दुनिया एक पूर्ण विकसित मनुष्य की दुनिया से एकदम भिन्न है। अगर आप बच्चों को बिना समझे उनके ऊपर संवार हो जाते हैं तो आप उनके विकास में बाधक बनते हैं। इसलिए बच्चों को हर मायने में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। जापान में हाल में ही इसका अनुभव किया गया है और बच्चों का पूर्ण अध्ययन करके उनके लिए काफी कुछ किया गया है।

---

* कन्फ्यूशियस की सूक्तियों से एक उद्धरण।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसकी दूसरी, पूर्व शर्त है निर्देश। बदलते हालातों में जीवन का विकास ज़रूरी है। बाद के समय के लोगों का अपने पूर्ववर्तियों से मतभेद अवश्यंभावी है। उन्हें एक साँचे में ढालना गलत होगा। बड़ों को निर्देश और सलाह देनी चाहिए न कि आदेश। युवाओं से अपने लिए कुर्बानी देने की बजाय उन्हें अपनी संपूर्ण शक्ति उनके लिए समर्पित करनी चाहिए जिससे कि वे कठिनाइयों का मुकाबला करने के लिए शरीर से स्वस्थ हो सकें, अच्छे और सुंदर सिद्धांत अपना सकें, स्वतंत्र हो सकें, नए विचारों को ग्रहण कर सकें और जिज्ञासु बनें तथा किसी भी विपत्ति का सामना करने में समर्थ हो सकें।

तीसरी पूर्व शर्त है मुक्ति। बच्चे हमारा अंग होते हुए भी हमसे अलग मानवता का हिस्सा हैं। क्योंकि वे हमारा अंग हैं इसलिए हमें उन्हें शिक्षा देकर अपने पैरों पर खड़े होने का अपना कर्तव्य निबाहना चाहिए। क्योंकि वे हमसे अलग हैं इसलिए उनकी मुक्ति हमारा कर्तव्य होना चाहिए जिससे कि वे स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बन सकें।

इसलिए बच्चों के प्रति माता-पिता का कर्तव्य है उन्हें अच्छा स्वास्थ्य देना, सर्वोच्च शिक्षा देना और उनको मुक्त करना।

लेकिन कुछ लोगों को डर है कि भविष्य में माता-पिता के पास कुछ नहीं रह जाएगा और वे दुखी रह जाएँगे। अकेलेपन और ऊब का यह डर पुराने विचारों से पैदा होता है। लेकिन अगर हम जीव विज्ञान के नियमों को समझ लें तो इस डर का कोई कारण नहीं है। जो माता-पिता अपने बच्चों का कल्याण करना चाहते हैं उन्हें अपने अंदर कुछ योग्यता पैदा करनी होगी। तब आप अतीत से दूषित होकर भी स्वतंत्र विचार और कार्य की क्षमता बनाए रख सकते हैं और व्यापक रुचियों और परिष्कृत खुशियों का उपभोग कर सकते हैं। क्या आप सुखी होना चाहते हैं! आपका भावी जीवन भी तभी सुखी हो सकता है। क्या आप फिर से युवा होना चाहते हैं! आपके बच्चे ही आपकी दूसरी युवावस्था होंगे–बेहतर और स्वतंत्र। एक व्यस्क होने के नाते अपने कर्तव्य का पालन करने और जीवन में संतोष पाने का यही एकमात्र रास्ता है। लेकिन अगर आपका सोच और कार्य अतीत में ढले हैं और आप हमेशा अपने बड़प्पन की शेखी बघारते रहेंगे या रौब जमाते रहेंगे तो आप अकेलेपन और ऊब से बच नहीं सकते।

कुछ लोगों को डर हो सकता है बच्चों की मुक्ति से पिता और पुत्र

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाएगी। लेकिन जैसा कि सभी जानते हैं यूरोपीय और अमरीकी परिवारों में चीन जैसी तानाशाही नहीं है। हालाँकि पाश्चात्य लोगों की तुलना जंगली जानवरों से की गई है लेकिन 'नैतिकता का ठेकेदार' कन्फ्यूशियसवादी भी उनके पक्ष में बोलता नज़र आता है जब वह कहता है कि पश्चिम में 'कोई श्रद्धाहीन पुत्र और विद्रोही अनुज नहीं है।' यह इसलिए कि उनको मुक्त कर दिया गया है और वे एक-दूसश्रे से प्यार करते हैं। क्योंकि वहाँ बुजुर्ग युवाओं को नहीं दबाते इसलिए वहाँ दमन का विरोध करने वाले श्रद्धारहित पुत्र और विद्रोही अनुज नहीं हैं। अगर आप घूस देते हैं या बल प्रयोग करते हैं तो चाहे जो हो आप 'हमेशा सत्ता में नहीं रह सकते।' लेकिन हम दुबारा चीन का ही उदाहरण लें। हान तथा थांग साम्राज्यों में तथा चिंग साम्राज्य के अंत में ऐसी व्यवस्था थी कि श्रद्धावान पुत्र शासक हो सकते थे। इसलिए माता-पिता के उपदेश के साथ-साथ राज्य का प्रोत्साहन भी शामिल था। लेकिन फिर भी उनमें बहुत कम अंग-भंजक थे।[1] इससे यही सिद्ध होता है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक पुराने विचारों और तरीकों ने बहुत कम सफलता पाई है।

प्यार ही एकमात्र सच्चाई है। ल्यू सुइ ने एक बार खुंग रुंग[2] को उद्धृत करते हुए कहा था,

'एक पिता की अपने पुत्र के प्रति क्या भावनाएँ हैं? वह लालच की वजह से उसे पैदा करता है और एक पुत्र का अपनी माँ से संबंध उस वस्तु जैसा है जिसे एक बर्तन में रख दिया गया है और जो वहाँ से निकाले जाने पर उससे वैसे ही जुदा हो जाती है।' (हान साम्राज्य के अंत में खुंग परिवार में कुछ ऐसे लोग भी पैदा हुए जिनमें संतति की संभावनाएँ नहीं थीं। यह संभव है कि खुंग रुंग ने यह बात कही हो। लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि ल्यू सुइ और त्साओ-त्साओ[3] जैसे

---

1. सामंत युग में अगर को माता-पिता गंभीर रूप से बीमार हो जाता था तो उनके बच्चों के लिए यह धर्म का कर्म माना जाता था कि वे उनके अंगों से माँस काटकर अपंग को उबाल कर खाने के लिए पेश करें।

2. (सन् 153-208) हान साम्राज्य का लेखक और कवि जो कन्फ्यूशियस से अलग हो गया था। त्साओ-त्साओ जो उसे मरवाना चाहता था, वे अपने शिष्य ल्यू सुइ से कहा कि वह उसकी श्रद्धाहीनता सिद्ध करने के लिए इसकी रचनाओं से उदाहरण दे और उसे 'राजद्रोही प्रजा तथा श्रद्धाहीन पुत्र' करार दे। उसे मृत्युदंड दिया गया।

3. त्साओ-त्साओ (155-220) ने आदेश जारी किया था कि नैतिक चरित्र पर ध्यान देकर प्रतिभाशाली लोगों को आश्रय दिया जाए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों ने उस पर आक्रमण किया) पुराने विचारों पर एक तरह का प्रहार होने के बावजूद यह सही नहीं है। जब माँ-बाप बच्चे को जन्म देते हैं तो वे उसे इतना गहरा प्यार करते हैं जो कि सहज ही समाप्त नहीं होता। और क्योंकि हम विश्व भाईचारे के समय में अभी नहीं पहुँचे हैं, इसलिए प्यार के अनेक स्तर होते हैं और माता-पिता के प्रति बच्चे के प्रेम को सहज ही नष्ट नहीं किया जा सकता। इसलिए हमें ज़्यादा चिंतित होने की ज़रूरत नहीं। कुछ ऐसे असामान्य हो सकते हैं जो प्यार से प्रभावित ही न हों। लेकिन अगर उन पर प्यार का कोई असर न हो तो कोई भी 'अनुग्रह, सिद्धांत और नैतिकता' की बात क्यों करेगा।

कुछ लोगों को भय है कि मुक्ति का अर्थ बड़ों के लिए दुखदाई होता है। हम इस सवाल को दो तरह से देख सकते हैं। प्रथमतः, हम चीन में अपने सद्‌गुणों की बहुत डींग हाँकते हैं लेकिन वास्तव में हम परस्पर प्यार और सहायता के मामले में बेहद संकुचित हैं। 'पुत्रोचित श्रद्धा' और 'कौमार्य' जैसी नैतिक अवधारणाएँ भी युवाओं और कमज़ोरों से फायदा उठाने के निमित्त हैं। वास्तविकता यह है कि दूसरे केवल देखते रहते हैं, करते कुछ नहीं। इस तरह के समाज में न केवल पुराने लोगों के लिए जीना दूभर है बल्कि विमुक्त युवा भी जीवित नहीं रह सकते। दूसरे, अधिकाँश चीनी, चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियाँ, अपने समय से पूर्व ही वृद्ध हो जाते हैं। उनमें से कुछ तो अपनी जवानी में ही बूढ़े नज़र आने लगते हैं। जब वे कुछ और बड़े होते हैं तो उन्हें सहारे के लिए किसी दूसरे की ज़रूरत होती है। इसीलिए मैंने कहा कि जो माता-पिता अपने बच्चों की मुक्ति चाहते हैं उन्हें कुछ तैयारियाँ कर लेनी चाहिएँ। लेकिन असल चीज़ है समाज को बदलने की, जिससे कि हम तर्कशील प्राणियों की तरह रह सकें। जब बहुत से लोग ऐसे होंगे जो तैयारी करेंगे और परिवर्तन चाहेंगे तो हमारी आशाएँ निश्चय ही पूर्ण होंगी। दूसरे देशों के अनुभव पर ज़रा ध्यान दीजिए। हर्बर्ट स्पेंसर ने कभी शादी नहीं की लेकिन मैंने कभी नहीं सुना कि उसने कोई कुंठा या ऊब अनुभव की। जेम्सवाट के बच्चे जल्दी ही मर गए लेकिन 'वह शांतिपूर्वक अपने बिस्तर पर मरा।' और चीज़ें भविष्य में और बेहतर होंगी, खासकर उनके लिए जिनके बच्चे हैं।

कुछ लोगों को डर है कि विमुक्त करने का अर्थ बच्चों के लिए दुःखदायी होगा। इस सवाल पर भी दो तरीकों से विचार किया ज सकता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। जैसा कि हमने पहले कहा, एक स्थिति में हमें डर है कि वृद्ध लोगों के पास अपनी जीविका के कोई साधन नहीं रह जाएँगे। वहीं दूसरी में यह कि बच्चे किसी घटना से कैसे निपटेंगे। अगर ऐसा है, तो जिन्होंने भी रोशनी देखी है उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे समाज को बदलें। चीन में अनेक गलत परंपराएँ चली आ रही हैं। एक यह है कि बच्चों को अलग-अलग रखा जाना चाहिए जिससे कि वे समाज से दूर रहें और उसके दोषों से बचे रहें। दूसरी यह कि बच्चों को बुरी बातें सिखाओ जिससे कि वे दुनिया में अपनी जगह बना सकें। जहाँ तक इन तरीकों को इस्तेमाल करने वाले माता-पिताओं का सवाल है, वे जीवन को जारी रखने के लिए ही ऐसा करते हैं। लेकिन उनकी तर्क-पद्धति गलत है। एक दूसरा रास्ता बच्चे को कुछ गुर सिखाने का भी है जिससे कि वे लोगों के साथ कदम मिलाकर चल सके। यह कुछ साल पहले के उन व्यावहारिक लोगों की तरह है जो बाज़ार में नकली डालरों के आने पर, सभी कालेज के छात्रों को सिखाना चाहते थे कि अच्छे और बुरे पैसे में कैसे फर्क करें। जाहिर है कि कभी-कभी हमें पुराने रिवाज़ों के अनुसार कार्य करना चाहिए लेकिन इसे सामान्य नियम नहीं बना लेना चाहिए। क्योंकि जब तक समाज बुरा है और बुराई बढ़ती ही जा रही है, तब तक हम उसके तरीकों को अपनाकर नहीं चल सकते। अगर हम ऐसा करेंगे तो हमारा जीवन तर्क रहित और पुरातन पंथी होगा। इसलिए असल चीज़ है समाज को सुधारना।

वस्तुस्थिति यह है कि चीन में परिवार के रिश्तों और पिता-पुत्र संबंधों की जो आदर्श कल्पना है वे काफी पहले टूट चुके हैं। यह आज की सच्चाई नहीं है, ऐसा काफी पहले हो चुका है। यह तथ्य कि सदियों तक 'एक छत के नीचे पाँच पीढ़ियों' की बात का गुणगान किया गया, अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि व्यावहारिक रूप से एक साथ रहना बेहद कठिन था। यह श्रद्धावान पुत्र के उस बेहूदे उपदेश की तरह है जो सिद्ध करता है कि वास्तविक जीवन में श्रद्धावान पुत्र बिरले ही थे। यह इस कारण हुआ कि मनुष्य ने सच्ची भावनाओं को छोड़कर झूठी नैतिकता को पकड़ा। यदि हम बड़े परिवारों की वंशावलियाँ खोलकर देखें तो हम पाएँगे कि परिवार का संस्थापक प्रायः अकेला ही किसी ज़िले में आया और वहाँ बस गया। जब रिश्तेदार एकत्र हो गए और वंशावलियाँ छपीं तो परिवार तब तक टूटने लगा था। भविष्य में जब

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधविश्वास ख़त्म हो जाएँगे तो बाँसों के पास खड़े या बर्फ़ पर लेटे रोते पुत्र भी नहीं होंगे और जब चिकित्सा विज्ञान उन्नत हो जाएगा तो विष्ठा चखने या अपने अंगों से मांस काटने की ज़रूरत भी नहीं रहेगी।* तब आर्थिक कारणों से शादियाँ भी देर से होंगी और बच्चे भी देर से पैदा होंगे। जब तक बच्चे अपने पैरों पर खड़े होने लायक होंगे तब तक माता-पिता इतने बूढ़े हो चुके होंगे कि अधिक दिनों तक उन पर बोझ बनने के लिए जीवित नहीं रहेंगे। तब माता-पिता अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुके होंगे। आज दुनिया की हवा का रुख हमें इसी दिशा में चलने के लिए बाध्य कर रहा है और उस पर चलकर ही हम जीवित रह सकते हैं अन्यथा मौत निश्चित है। यदि अधिक लोग इस रोशनी को पाकर ज़्यादा प्रत्यन करें तो यह ख़तरा टल सकता है।

लेकिन 'ऋषियों के शिष्यों' की बकवास के विपरीत चीनी परिवार टूट चुके हैं तो फिर क्या कारण है कि हम उन्नति की दिशा में नहीं बढ़ पा रहे हैं? इसे समझना कठिन नहीं है। पहली बात तो यही है कि जिसे टूटना है वह तो टूट रहा है, और कठिनाई पैदा करने वाले कठिनाई पैदा कर रहे हैं और कानून बनाने वाले कानून बना रहे हैं। वे न तो इस बात के प्रति सचेत हैं और न ही अपने को बदलना चाहते हैं। इसलिए हर चीज़ ज्यों-की-त्यों चल रही है। दूसरे, पुराने परिवारों में हमेशा झगड़े रहते थे लेकिन नई शब्दवली में वे इन्हें क्रांति कहते है। वे वेश्या या जुए के लिए पैसों पर मारपीट कर रहे हैं लेकिन इनका उन चेतना संपन्न लोगों के सुधारों से कोई रिश्ता नहीं है। 'क्रांति' की बात करने वाले ये झगड़ालू नौजवान पुरानों का उपयुक्त उदाहरण हैं। जब उनके बच्चे होंगे तो वे उन्हें कभी मुक्त नहीं करेंगे। या तो वे उपेक्षा करेंगे या 'श्रद्धावान पुत्रों की किताब' खोजकर बच्चों को पढ़ाएँगे जिससे कि वे 'पुराने ऋषियों से शिक्षा लेकर' अपने को बलिदान करना सीखें। इसके लिए जीवविज्ञान के नियम नहीं पुरानी नैतिकता, पुराने रिवाज़ और पुराने तरीके ज़िम्मेदार हैं।

---

* 'पुत्रोचित श्रद्धा के चौबीस कर्म' की तीन कथाओं की ओर संकेत। अपनी माँ के खाने के लिए बाँस की कोंपल लेने गया मंग चुग तब तक जंगल में रोता रहा जब तक कि बाँस के पौधे ज़मीन से न निकलने शुरू हुए। जब वांग थ्यांग की सौतेली माँ ने कड़े जाड़े में ताज़ा मछली लाने के लिए कहा तो वह तब तक बर्फ पर लेटा रहा जब तक वह पिघल नहीं गई और उसने मछली न पकड़ ली। ऊ छ्यान ल्यू को डाक्टर ने बताया कि वह अपने पिता की विष्ठा चखकर ही उसकी बीमारी जा सकता है, उसने वैसा ही किया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई कह सकता है कि अगर जीवित चीज़ों का विकसित होना और जीवन का प्रसार ज़रूरी है तो पुरानी कहावत सही है कि 'गैर-पुत्रोचित कामों में सबसे बुरा है पुत्र को जन्म देना।'* तब फिर अनेक पत्नियाँ और रखैलें रखना क्या सही है? इसका उत्तर बहुत आसान् है। अपने जीवन को जारी रखने के गलत साधनों का उपयोग या दूसरों को दुख देना जीवन को जारी रखने के गलत साधनों का उपयोग यू दूसरों को दुख देना तो उससे भी अधिक बुरा है। आज समाज के लिए एक विवाह प्रथा सही है, बहु विवाह प्रथा मनुष्य को पतन की ओर ले जाएगी। और क्योंकि पतनशीलता पीछे की ओर ले जाती है इसलिए यह जीवन के प्रसार की विरोधी है। पुत्र न होना आपके अकेले का अंत है लेकिन पश्चगामिता तो दूसरों को भी नष्ट कर देगी। इसके साथ ही जब से जीवित प्राणी अस्तित्व में आए हैं वे परस्पर संबद्ध रहे हैं और शायद एक व्यक्ति का अन्य सभी के साथ रक्त का संबंध है—इसलिए वह पूरी तरह समाप्त भी नहीं होगा। इसलिए जीवविज्ञान के नियमों को बहुविवाह की दलील नहीं बनाया जा सकता।

संक्षेप में कहें तो जिन माता-पिताओं ने प्रकाश पा लिया है उन्हें ज़िम्मेदारी का परिचय देना चाहिए और दूसरों के लिए त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। चीन में यह कोई आसान चीज़ नहीं है। वृद्धों के प्रति दयालुता और छोटों की मुक्ति के साथ ही सचेत लोगों को नए रास्ते बनाने के साथ पुराने हिसाब-किताब भी चुकना करने चाहिएँ। जैसा कि हमने शुरू में कहा था 'परंपराओं से दबा होने के बावजूद मनुष्य अपने बच्चों को रोशनी में लाने, खुले मैदान में लाने और उसके बाद विवेकपूर्ण मानव जीवन की ज़िंदगी जीने के लिए अपने कँधों से अँधकार के दरवाज़े खोल सकता है।' यह एक महान और महत्त्वपूर्ण कार्य है और बेहद कठिन है।

यह सही है कि दुनिया में ऐसी पुरानी सोच के लोग हैं जो अपने बच्चों को मुक्त नहीं करेंगे और अपने बच्चों को भी मना करेंगे कि वे भी

---

* कन्फ्यूशियस के प्रमुख भाष्यकार मैन्शियस (372-289 ई०पू०) का कथन। तीन ग़ैर-पुत्रोचित कार्य थे—अपने माता-पिता के गलत कार्यों की मौन स्वीकृति; परिवार की दरिद्रता और माता-पिता के वृद्ध होने पर सरकारी नौकरी से इन्कार करना; शादी करने और पूर्वजों की नीति पर चलने वाले पुत्र पैदा करने से इन्कार करना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने बच्चों को मुक्त न करें। वे अपने उत्तराधिकारियों को बिना बात के लिए बलिदान करने के लिए बाध्य कर रहे हैं। यह एक वास्तविक समस्या है लेकिन क्योंकि मुझे शांति चाहिए इसलिए यहाँ मैं इस पर विचार नहीं कर सकता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'न्यायोचित व्यवहार' पर असहमति

1. विषय की रूपरेखा

'द टैटलर' के सतावनवें अंक में श्री लिन य्वी थांग 'न्यायोचित व्यवहार' का हवाला देते हुए कहते हैं कि क्योंकि चीन में इस भावना का नितांत अभाव है इसलिए हमें इसे प्रोत्साहन देने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। आगे वे 'न्यायोचित व्यवहार' के अर्थ को और स्पष्ट करते हुए जोड़ते हैं कि पानी में गिरे हुए कुत्ते को पीटना गलत है। क्योंकि मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता इसलिए इस कहावत का पूरा अर्थ मेरी समझ में नहीं आया। लेकिन 'न्यायोचित व्यवहार' की भावना का अर्थ है कि 'पानी में गिरे हुए कुत्ते को मारो मत' तो मैं उनसे असहमति प्रकट करना चाहता हूँ। मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि पानी में गिरे हुए कुत्ते को पीटा जा सकता है और उसे पीटा जाना चाहिए।

2. पानी में गिरे हुए कुत्तों के तीन प्रकार जिन्हें पीटा जाना चाहिए

आधुनिक आलोचक प्रायः 'मरे हुए शेर को पीटने' की तुलना 'पानी में गिरे हुए कुत्ते को पीटने' से करते हुए मानते हैं कि दोनों ही कायरतापूर्ण कार्य हैं। मरे हुए शेर को पीटने वाले बहादुरों का विचार मुझे अजीब लगता है लेकिन पानी में गिरे हुए कुत्ते को पीटना वैसा साधारण मामला नहीं है। आपको पहले यह देखना होगा कि कुत्ता किस तरह का है और वह पानी में कैसे गिरा। कुत्ते के पानी में गिरने के तीन प्रमुख कारण होते हैं:—

1. वह गलती से गिर सकता है।
2. किसी ने धक्का देकर उसे गिरा दिया हो।।
3. आपने स्वयं उसे पानी में धकेला हो।

ज़ाहिर है कि पहले दो मामलों में कुत्ते को पीटना अगर कायरता नहीं तो बेहूदा है। लेकिन अगर आप कुत्ते से लड़ रहे हों और उसे पानी में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धकेला हो तो उसे पानी में ही लाठी से अच्छी तरह पीटना गलत नहीं है। यह दूसरे दोनों मामलों से भिन्न है।

वे कहते हैं कि एक अच्छा योद्धा गिरे हुए विरोधी पर वार नहीं करता। इसे वे एक अच्छे उदाहरण के रूप में हमारे सामने पेश करते हैं। लेकिन मैं इससे एक ही शर्त पर सहमत हूँ कि आपका विरोधी वास्तव में ही एक बहादुर मुक्केबाज़ हो, क्योंकि तभी एक बार पिटने पर वह खड़ा होने में शर्माएगा और अगर वह लौटकर बदला लेने आता है तो मुझे कोई एतराज़ नहीं। लेकिन यह बात कुत्तों पर लागू नहीं होती क्योंकि वे इस श्रेणी में नहीं आते। वे चाहे जितने ज़ोर से भौंकें उनसे 'शिष्टता' की अपेक्षा नहीं की ज़ा सकती। इसके अलावा कुत्ता तैर सकता है और किनारे पर भी पहुँच सकता है। अगर आप सावधान नहीं हैं तो वह अपना पानी झाड़कर आपको भिगो देगा और टाँगों में पूँछ दबाकर भाग जाएगा। फिर दुबारा मौका मिला तो वह फिर वैसा ही करेगा। भोले लोग ही यह सोच सकते हैं कि पानी में गिरने का मतलब है कि उसका दीक्षा-संसकार हो गया है, यानि कि इसके बाद वह अपने पापों का प्रायश्चित्त करेगा और फिर किसी आदमी को नहीं काटेगा। इससे बढ़कर और भूल क्या हो सकती है?

इसलिए मैं समझता हूँ कि जो कुत्ते आदमी को काटते हैं उन्हें पीटा जाना चाहिए, वे ज़मीन पर हों या पानी में।

3. पग्स कुत्तों को विशेषकर पानी में धकेला जाना चाहिए और अच्छी तरह पीटा जाना चाहिए

दक्षिणी चीन में पग या पैक्स (पालतू कुत्तों की दो नस्लें) को पश्चिमी कुत्ते कहा जाता है, पर मेरे विचार में यह चीन की एक विशेष किस्म है। अंतर्राष्ट्रीय कुत्ता प्रदर्शनियों में वह अक्सर स्वर्ण पदक जीतते हैं और इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में कुत्तों के जो अनेक चित्र हैं वे हमारे चीनी पग्स के ही हैं। यह भी एक राष्ट्रीय गौरव हे। अब कुत्ते और बिल्ली तो एक-दूसरे के जानी दुश्मन हैं लेकिन हमारा यह पग्स कुत्ता होते हुए भी बिल्ली जैसा दिखाई पड़ता है। वह इतना विनीत, निष्पक्ष और सहनशील है और न्यायसंगत है जिससे ऐसा लगता है मानो वह कह रहा हो, बाकी सब अति के शिकार हैं पर मैं समन्वय के सिद्धांत पर चलता हूँ। शायद इसीलिए यह प्रभावशाली व्यक्तियों, हिजड़ों और धनी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों की बहू-बेटियों को इतना प्रिय है। और इसकी जाति लगातार चलती रहती है।

क्योंकि वह इतना सुंदर है इसलिए उच्च वर्ग के लोग उसे पालते हैं। उसका काम है जब चीनी और विदेशी भद्र महिलाएँ खरीद-फ़रोख़्त करने बाज़ार जाएँ तो यह एक छोटी जंजीर में बँधा उनके पीछे-पीछें पूँछ हिलाता जाए।

इन कुत्तों को पानी में धकेल कर अच्छी तरह पीटा जाना चाहिए। अगर वे ख़ुद ही पानी में गिर जाएँ तब भी उनकी पिटाई करने में कोई हर्ज़ नहीं है। अगर आप बहुत दयावान हैं तो आपको इन्हें पीटने की कोई ज़रूरत नहीं है पर उनके प्रति अफसोस ज़ाहिर करने की भी ज़रूरत नहीं है। अगर आप इन कुत्तों को माफ़ कर सकते हैं तो आप किसी भी और कुत्ते को नहीं पीट सकते। हालाँकि दूसरे कुत्ते भी अमीरों और ग़रीबों पर भौंकते हैं, पर वे कम-से-कम भेड़िये जैसे जंगली तो दिखाई पड़ते हैं, इनकी तरह तटस्थ या बिचौलिए तो नहीं। यह बात मैंने यूँ ही कही जिसका मुख्य विषय से अधिक संबंध नहीं है।

4. पानी में गिरे हुए कुत्ते को न पीटने से भावी पीढ़ियों को होने वाली हानि

पानी में गिरे किसी कुत्ते को पीटा जाना चाहिए या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किनारे पर आकर क्या व्यवहार करता है।

कुत्ते के लिए अपनी प्रकृति बदल पाना संभव नहीं है। संभव है कई हज़ार वर्ष बाद उसमें कोई बदलाव आए। लेकिन मैं आज की बात कर रहा हूँ। अगर हम सोचें कि पानी में गिरने पर वह इतना दयनीय दिखाई पड़ता है, तो ऐसे तो और दूसरे कीड़े भी दिखाई पड़ते हैं। हैजे के कीटाणु भी बहुत दयनीय दिखते हैं, पर वे बड़ी तेज़ी से फैलते हैं। डाक्टर उन पर बिलकुल दया नहीं करते।

आजकल के प्रशासक तथा चीनी और विदेशी भद्र लोग हर उस चीज़ को 'लाल' या 'बोल्शेविक' कह देते हैं जो उनके पक्ष में नहीं है। 1912 से पहले स्थिति थोड़ी भिन्न थी। जिन लोगों को वे पसंद नहीं करते थे उन्हें पहले तो वे खुंग यु श्वेइ के समर्थक क़रार देते थे, फिर क्रांतिकारी। वे उनकी जानकारी भी प्रशासकों को देते थे। इससे वे अपने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उच्च पदों को बनाए रखते थे। लेकिन आख़िरकार क्रांति हुई और इन उच्च और शक्तिशाली लोगों में भगदड़ मच गई, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय हो गई और ये लोग जिन क्रांतिकारियों से घृणा करते थे तब उनके उत्साह की सीमा नहीं थी। ये क्रांतिकारी इतने सभ्य थे कि उन्होंने कहा—"क्रांति सबके लिए है। हम पानी में गिरे हुए कुत्ते को नहीं पीटेंगे, इसे किनारे पर जाने दो।" और दूसरों ने वही किया। वे 1913 के उत्तरार्द्ध तक चुप्पी साधे रहे और फिर क्रांतिकारियों की हत्या के लिए य्वैन शिखाइ की मदद करने के लिए आगे आ गए और चीन की हालत दुबारा ख़राब हो गई। आज इन पुराने घाघों के साथ कुछ नए घाघ और मिल गए हैं। यह उन शहीद क्रांतिकारियों की दया का ही परिणाम है जिन्होंने घास में छिपे इन साँपों के प्रति दयालु बनकर उन्हें बढ़ने का मौका दिया। युवा लोगों को अँधेरे की इन शक्तियों से निपटने के लिए कठिन कार्य करने होंगे और कुर्बानियाँ देनी होंगी।

छ्यू चिन[1] को मुख़बिरों ने मार डाला। क्रांति के बाद उसे महान नेत्री कहा गया लेकिन आज यह कथन सुनाई नहीं पड़ता। जब क्रांति शुरू हुई तो एक सेनाध्यक्ष—जिसे आज हम 'सेनाध्यक्ष सामंत' कहेंगे, उसके ज़िले में आया। वह उसका साथी था जिसका नाम वांग चिन फ़ा था। उसने उसके हत्यारे को गिरफ़्तार किया और उसका बदला लेने के लिए हत्या के प्रमाण जुटाए। लेकिन अंत में उसने हत्यारे को छोड़ दिया, क्योंकि कहा गया कि अब क्योंकि गणतंत्र की स्थापना हो गई है इसलिए पुरानी बातों को भुला देना चाहिए। जब दूसरी क्रांति असफल हो गई तो य्वैन शिखाइ के गुंडों ने वांग को गोली मार दी और इसमें उस आदमी का बहुत बड़ा हाथ था जिसने क्रांतिकारी चिन की हत्या की थी और जिसे वांग ने बाद में पकड़कर छोड़ दिया था।

अब उस मुख़बिर की शांतिपूर्ण मृत्यु हो चुकी है। लेकिन अभी उस ज़िले में उसके जैसे बहुत से स्वामी हैं इसलिए छ्यू चिन का जन्म स्थान इतने सालों बाद भी वैसा ही पिछड़ा है। इस दृष्टि से भी कु. यांग यिन ऊ और प्रो. छेन य्वान बहुत भाग्यशाली हैं कि वे चीन के इसी 'आदर्श ज़िले' के हैं।[2]

---

1. एक स्त्री क्रांतिकारी जो चिंग विरोधी नेताओं में थी। 1907 में उसे पकड़कर शाओशिंग में उसकी हत्या कर दी गई।
2. छन य्वान ने हू शि को आदर्श ज़िला कहा था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. सत्ता से च्युत लोग पानी में गिरे कुत्तों के समान ही नहीं हैं

'धोखा खाने पर भी बदला न लेना' ही क्षमा है। 'आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत' न्याय संगत है। लेकिन चीन में चीज़ें काफी उल्टी-सीधी हैं कि पानी में गिरे कुत्ते को पीटने के बजाय हम उससे अपने को कटवाते हैं। भोले लोगों के लिए यही प्रतिदान उचित भी है।

एक कहावत के अनुसार 'दया मूर्खता का ही दूसरा नाम है।' हो सकता है ऐसा कहना अतिशयोक्ति हो। लेकिन अगर आप ध्यान से सोचें तो यह आदमी को गुमराह करने के लिए ही कही गई बात नहीं है बल्कि बहुत कटु अनुभवों के बाद प्राप्त किया गया निष्कर्ष है। इसलिए पानी में गिरे कुत्ते को न पीटने के पीछे दो कारण हो सकते हैं—या तो इसलिए कि हम उतने शक्तिशाली नहीं हैं या हमने गलत तुलना कर डाली है। हमें पहली संभावना के बारे में कुछ नहीं कहना। जहाँ तक दूसरी का सवाल है इसमें हमें दो गंभीर ख़ामियाँ दिखाई पड़ती हैं। पहली तो यही, कि हम पानी में गिरे कुत्तों को दुनिया में पैदा हुए व्यक्तियों जैसा मानने की गलती कर रहे हैं। दूसरे हम सत्ता से च्युत सभी लोगों को एक ही कोटि के मान रहे हैं और उनमें भले-बुरे का भेद नहीं कर रहे हैं। परिणाम यह होता है कि बुरे लोग साफ बच जाते हैं। आज की अस्थिर राजनीतिक स्थिति में लोगों का सत्ता में आना और गिरना जारी है। थोड़े दिन की सत्ता पाकर एक बुरा व्यक्ति इच्छा अनुसार अपराध कर सकता है और सत्ता च्युत होने पर दया की भीख भी माँग सकता है।तब उसके द्वारा सताए गए भोले लोग उसे पानी में गिरा कुत्ता समझ उसे पीटने की बजाय उस पर तरस खाएँगे। वे समझते हैं कि उसे तो पहले ही सज़ा मिल चुकी है, अब वे अपनी दयालुता क्यों न जताएँ। वे नहीं जानते कि कुत्ता पानी में नहीं है बल्कि उसने किलेबंदी कर ली है। कभी वह स्वयं को घायल दिखा सकता है, कभी सहानुभूति के लिए लँगड़ा कर चल सकता है, पर ये सब ढोंग हैं अपने ठिकाने पर सलामत पहुँचने के लिए। वह बाद में फिर बाहर आएगा और भोली आत्माओं को काटेगा और भयंकर अपराध करेगा और इसका दोष उन भोली आत्माओं पर होगा जिन्होंने पानी में गिरे हुए कुत्ते को नहीं मारा। इसलिए मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि ऐसा करके वे अपनी ही कब्र खोदते हैं, बाद में भाग्य को या अन्य लोगों को दोष देने का उन्हें अधिकार नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. हम अधिक न्यायसंगत होना ग़वारा नहीं कर सकते

मानवतावादी पूछ सकते हैं—तो क्या हम न्यायसंगत व्यवहार बिलकुल नहीं चाहते? मैं तुरंत इसका जवाब दूँगा—बेशक हम चाहते हैं, पर अभी नहीं। ऐसा करके मैं उन्हीं के तर्क का इस्तेमाल कर रहा हूँ। हालाँकि मानवतावादी शायद इसका प्रयोग न करना चाहें, पर मैं इसके लिए दलील दे सकता हूँ। क्या चीनी और विदेशी रंगत के भद्र लोग अक्सर नहीं कहते कि चीन के विशेष चरित्र के कारण स्वतंत्रता और समानता के विदेशी नारे हमारे लिए अनुचित हैं! मैं इसमें न्यायसंगत व्यवहार को भी शामिल करना चाहता हूँ। अन्यथा अगर अन्यायी व्यक्ति के प्रति आप न्यायसंगत होंगे तो अंत में आपको ही कष्ट भोगना पड़ेगा। न केवल आपको न्यायसंगत व्यवहार नहीं मिलेगा बल्कि आप उसके साथ वैसा ही अन्यायसंगत व्यवहार करने की स्थिति में भी नहीं रह जाएँगे। इसलिए न्यायसंगत होने से पहले आपको अपने विरोधी को जान लेना होगा। अगर वह न्यायसंगत व्यवहार का अधिकारी नहीं है तो आपको विनम्र होने की कोई ज़रूरत नहीं है। जब वह न्यायसंगत हो तभी आप उससे न्यायसंगतता की बात कर सकते हैं।

आपको शायद लगे कि यह तो दोहरी नैतिकता जैसा सुझाव है परंतु इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है। इसके बिना चीन का भविष्य अच्छा नहीं हो सकता। यहाँ दोहरी नैतिकता कई रूप धारण करती है—मालिकों और दासों, आदमी और औरतों के लिए अलग-अलग मानदंड हैं। पानी में गिरे हुए कुत्तों और पानी में गिरे हुए आदमियों को समान मानना तो अति पर पहुँचाना है। यह उन भद्र लोगों का तर्क है जो कहते हैं कि स्वतंत्रता और समानता अच्छी चीज़ें तो हैं पर चीन में अभी तक उन पर अमल नहीं किया जा सकता। इसलिए यदि कोई बिना भेद-भाव के न्यायसंगत व्यवहार करता है तो मैं कहूँगा कि इसके लिए वह तब तक इंतज़ार करें जब तक पानी में गिरे हुए कुत्ते अधिक मानवीय नहीं हो जाते। इसका यह अर्थ नहीं है कि आज न्यायसंगत व्यवहार एकदम संभव ही नहीं है। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा, असल चीज़ है यह जानना कि आपका विरोधी कौन है। इस आधार पर आपको कुछ भेद-भाव तो करना ही होगा। दूसरे शब्दों में आपकी न्यायसंगतता विरोधी पर निर्भर होगी। इस बात की चिंता करने की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़रूरत नहीं कि वह पानी में गिरा कैसे है। अगर वह एक आदमी है तो हमें उसकी मदद करनी चाहिए और कुत्ता है तो उसकी उपेक्षा करनी चाहिए और अगर बुरा कुत्ता है तो उसे पीटना चाहिए। संक्षेप में हमें अपने जैसों से दोस्ती करनी चाहिए और दुश्मनों पर आक्रमण करना चाहिए।

फिलहाल हमें भद्रजनों की उन सूक्तियों से परेशान होने की ज़रूरत नहीं है जिनके होठों पर न्याय और मन में स्वार्थ भरा होता है। ईमानदार लोग जिस न्याय की इतनी दुहाई देते हैं आज चीन में वह अच्छे लोगों की मदद के नहीं बुरे लोगों को बचाने के काम आता है। क्योंकि जब बुरे लोग सत्ता में होते हैं और अच्छों पर ज़ुल्म करते हैं तो चाहे कोई न्याय की कितनी ही दुहाई दे वे उसकी बात नहीं सुनेंगे। उसकी न्याय की यह बात केवल एक पुकार है और अच्छे लोगों पर ज़ुल्म जारी रहते हैं। लेकिन अगर कभी अच्छे लोग सत्ता में आ जाएँ और बुरे पानी में गिर जाएँ तो न्याय की पुकार लगाने वाले ईमानदार लोग भी चिल्लाएँगे.... प्रतिशोध मत लो.... उदार हृदय बनो.... बुराई से बुराई को मत मारो।' और इस बार उनकी पुकार अनसुनी नहीं रहती, उस पर अमल होता है क्योंकि अच्छे लोग उनकी बात मान लेते हैं और बुरे बच जाते हैं। बचने के बाद पछताने के बजाय वे अपने भाग्य के लिए अपनी पीठ थपथपाते हैं। साथ-ही-साथ पहले से ही तैयार किए गुप्त स्थानों में छिप कर दुबारा मौके की तलाश में रहते हैं और मौका मिलने पर शीघ्र ही उतने ही शक्तिशाली और क्रूर बन जाते हैं। ऐसा होने पर न्याय के पक्षधर अच्छे लोग फिर पुकार लगाते हैं परंतु उनकी आवाज़ कोई नहीं सुनता।

फिर भी यह सच है कि जब सुधारक बुराई के प्रति घृणा में अति कर दें तो वे अपने उद्देश्य में खुद ही असफल हो जाते हैं। उनकी इसी बात के लिए आलोचना भी की जाती है। लेकिन जब दूसरा पक्ष शत्रुओं की तरह अच्छे लोगों से घृणा करता है तो इसके लिए कोई उनकी भर्त्सना नहीं करता। यदि अंधकार और प्रकाश के बीच निर्णायक संघर्ष नहीं होता और भोली आत्माएँ क्षमादान के नाम पर बुराई को खुली छूट देने की गलती करती रहती हैं और बदमाशों को माफ़ किए जाती हैं तो चीन की वर्तमान अव्यवस्था कभी समाप्त नहीं हो सकती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. जैसे को तैसा व्यवहार

कुछ चीनी लोग परंपरागत चीनी औषधियों में विश्वास करते हैं और दूसरे पश्चिमी औषधियों में। रोगियों के लिए दोनों ही तरह के चिकित्सक भी बड़े शहरों में मिल जाते हैं। मैं इसे बिलकुल ठीक मानता हूँ। अगर इसे साधारणतया अमल में लाएँ तो मेरा ख़्याल है कि शिकायतें कम होंगी और हम शांति और सुख से रह सकते हैं। मसलन अब झुककर अभिवादन करने का चलन है लेकिन अगर कोई पसंद न करता हो तो वह दंडवत् करने के लिए स्वतंत्र है। नई दंड संहिता में तलवों पर बेंत लगाने का दंड नहीं है लेकिन अगर कोई शारीरिक दंड की हिमायत करता है तो कानून तोड़ने पर वह अपने चूतड़ों पर बेंत लगवा सका है। डोंगे, चापस्टिक और पका खाना आज चलन में है लेकिन अगर कोई पुराना तरीका पसंद करता है तो वह कच्चा मीट खा सकता है। आज भी जो भद्र चुन याओ और शुन[1] के युग के प्रशंसक हैं हम उनके लिए हज़ारों झौंपड़ियाँ बनाकर बड़े मकान से निकाल कर उनमें उन्हें बसा सकते हैं। जो लोग भौतिक सभ्यता के विरोधी हैं उन्हें कारों से यात्रा करने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा करने पर शिकायतें नहीं होंगी और हर आदमी संतुष्ट होगा तथा हम शांति से रह सकते हैं।

लेकिन अफसोस यही है कि ऐसा कोई करेगा नहीं। इसके बजाय वे अपनी पसंद से दूसरों के बारे में निर्णय लेंगे। इसीलिए दुनिया में इतने झंझट हैं। न्यायसंगत व्यवहार का भी यही हश्र होगा और बुराई की शक्तियों द्वारा भी उसका उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जब ल्यू पाइचाओ[2] ने महिला नार्मल कॉलेज की छात्राओं को पीटा और पकड़ा तो 'आधुनिक आलोचक' ने उस पर चूँ तक नहीं की। लेकिन जब भवनों पर कब्ज़ा कर लिया गया और प्रोफेसर छन युआन ने महिला विश्वविद्यालय की छात्राओं से शयन कक्षों में डटे रहने के लिए कहा तो इसी पत्र ने लिखा, ''मान लो वे न जाना चाहती हों! आप ज़बरदस्ती उनकी चीज़ें बाहर तो नहीं फेंक सकते! ल्यू पाइचाओ ने जब छात्राओं

---

1. प्राचीन काल के दो निजंधरी चीनी शासक जिनके बारे में प्राचीन पुस्तकों में लिखा है कि वे फूस की झौंपड़ी में रहते थे।

2. 1925 में चांग शिचाओ ने महिला नार्मल कॉलेज बंद करके ल्यू पाइचाओ के तहत उसी भवन में नया कॉलेज बनाया व दमन का सहारा लिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पीटा और उनकी चीज़ें उठाकर ले गए तो यह पत्र चुप रहा लेकिन क्या बात है कि इस बार वे ऐसा नहीं कर पाए। यह इसलिए कि उन्हें महिला नार्मल कॉलेज में न्यायोचित व्यवहार लगा। लेकिन यह न्यायोचित व्यवहार एक बुरी चीज़ बन चुका है क्योंकि इसका इस्तेमाल चांग शिचाओ के समर्थकों को बचाने के लिए किया गया था।

8. निष्कर्ष

पुराने और नए के बीच या अन्य मतामतों के बीच अपने तर्क द्वारा शत्रुता बढ़ाने और विवाद तेज़ करने के लिए मुझे दोषी ठहराया जा सकता है। लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग सुधार का विरोध करते हैं वे सुधारकों को हानि पहुँचाने से कभी नहीं चूकते। सुधारक ही हैं जो इन बातों से बेख़बर हैं और हमेशा इस कारण कष्ट उठाते हैं। इसीलिए चीन में कभी सुधार नहीं हुए। अब वक्त आ गया है कि हम अपनी दृष्टि और कार्यनीति को बदलें।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रांतिकारी काल का साहित्य

मेरी आज की संक्षिप्त वार्ता का विषय है 'क्रांतकारी काल का साहित्य।' मुझे इस कॉलेज से बहुत बार निमंत्रण मिला, लेकिन मैं उसे टालता रहा। क्यों? क्योंकि मैं समझता था कि आप मुझे कुछ कहानियों के लेखक के नाते बुला रहे हैं और मुझसे साहित्य पर कुछ सुनना चाहते हैं। वास्तव में न तो मैं लेखक हूँ और न ही उसके बारे में मेरी विशेष जानकारी है। मैंने जिस विषय को गंभीरतापूर्वक पढ़ा वह था खदानें। इसलिए साहित्य से अधिक मैं उस पर अधिक अच्छा भाषण कर सकता हूँ। यह सही है कि साहित्य में रुचि होने की वजह से मैंने उसका भी काफी अध्ययन किया है लेकिन इस अध्ययन से मैंने ऐसा कुछ भी नहीं सीखा जो आपके लिए उपयोगी हो। पिछले कुछ सालों में 'पेइचिंग' के अनुभवों के बाद उन पुराने साहित्य-सिद्धांतों में मेरी आस्था लगातार घटती गई है जिनमें मैं अभी तक विश्वास करता आया था। यह वह समय था जब छात्रों पर गोलियाँ चल रही थीं और कड़ी सेंसरशिप थी। उस वक्त केवल कमज़ोर और निठल्ले लोग ही साहित्य पर बात करते थे। जो मजबूत हैं वे बात नहीं करते, सीधे मार देते हैं। शोषितों का कुछ भी कह या लिख देना उनके मारे जाने के लिए काफी है। सौभाग्य से यदि वे बच गए तो भी अधिक-से-अधिक वे चिल्ला सकते हैं, शिकायत कर सकते हैं, विरोध कर सकते हैं जबकि ताकतवर उन्हें निरंतर दबाए रहते हैं, दुर्व्यवहार करते हैं, मारते जाते हैं और शोषित इसे रोकने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में साहित्य लोगों के किस काम आ सकता है?

यही हाल जानवरों की दुनिया का भी है। जब बाज़ किसी चिड़िया को पकड़ लेता है तो चिड़िया ही चिल्लाती है, बाज़ चुप रहता है। जब बिल्ली चूहा पकड़ती है तो चूहा ही चिल्लाता है, बिल्ली चुप रहती है। और जो केवल चिल्ला सकता है वह उसके द्वारा खा लिया जाता है, जो शांत है। अगर कोई लेखक भाग्यशाली है तो वह शायद कुछ लिखकर अपने जीवनकाल में नाम कमा ले या कुछ वर्षों के लिए उसे खाली प्रसिद्धि मिल जाए—जैसे किसी क्रांति के लिए शहीद हो जाने वाले के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृति समारोह में क्रांतिकारी के कार्यों की चर्चा न होकर मृत्यु पर लिखे गीतों के गुणों की चर्चा हो। यह बहुत ही सुरक्षित धंधा है।

फिर भी मैं समझता हूँ कि इस क्रांतिकारी जगह के लेखक यह मानते हैं कि साहित्य क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा क्रांति को तेज़ करने और संपन्न करने के लिए प्रचार, उत्साह, प्रेरणा का काम करता है। लेकिन मेरे विचार से इस तरह के लेखन में वैसी शक्ति नहीं आ पाई है। इस तरह का साहित्य केवल सोच से नहीं लिखा जा सकता, वह तो बिना परिणामों की चिंता किए हुए दिल से निकलता है। किसी बने-बनाए विषय पर लिखना तो 'बागू' निबंध* लिखने जैसा है जो साहित्यिक दृष्टि से तो बेकार होगा ही, पाठकों को उद्वेलित करने की शक्ति भी उसमें नहीं होगी।

क्रांति के लिए क्रांतिकारियों की ज़रूरत होती है, क्रांतिकारी साहित्य थोड़ा इंतज़ार भी कर सकता है। क्योंकि क्रांतिकारी जब स्वयं लिखना शुरू क़रेंगे तभी क्रांतिकारी साहित्य लिखा जा सकता है। इसलिए मेरे विचार से क्रांति साहित्य में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। क्रांतिकारी काल का साहित्य अन्य सामान्य कालों से भिन्न होगा क्योंकि क्रांति साहित्य को बदल देती है। लेकिन साहित्य में यह परिवर्तन छोटी-मोटी क्रांतियों से नहीं आता, महान क्रांतियों से आता है।

यहाँ पर हरेक 'क्रांति' शब्द सुनने का आदी हो चुका है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग अगर आप च्यांग शु या च च्यांग में कर दें तो या तो आप लोगों को डरा देंगे या फिर ख़ुद के लिए ख़तरा मोल ले लेंगे। वास्तव में क्रांति कोई अजूबी चीज़ नहीं है। हमारे सारे सामाजिक सुधार उसकी वजह से होते हैं। मानव-जाति उन्नति कर सकी, जीवाणु मनुष्य में परिवर्तित हुआ, बर्बरता सभ्यता में बदली, यह सब मानव-इतिहास में हो रही निरंतर क्रांतियों के कारण ही संभव हुआ। जीव-वैज्ञानिक बताते हैं कि "मनुष्य बंदर से ज़्यादा भिन्न नहीं है, बंदर और मानव सगे संबंधी हैं।" लेकिन ऐसा कैसे हुआ कि आदमी तो आदमी बन गया लेकिन बंदर बंदर ही रहा। शायद इसलिए कि बंदर अपने को नहीं बदल पाए, वे चार पैरों पर ही चलना चाहते हैं। हो सकता है किसी एक ने खड़े होकर दो टाँगों पर चलने का प्रयास भी किया हो लेकिन बाकी बहुतों ने इसके

* मिंग और चिंग साम्राज्य में राजशाही परीक्षाओं के लिए निर्धारित निबंध क एक रूप—वास्तविक कथ्य से रहित घिसा-पिटा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विरोध में कहा हो--"हमारे वंशज हमेशा चारों टाँगों पर ही चलते रहे हैं इसलिए तुम्हें भी खड़े नहीं होना है।" तब उन्होंने उसे काट-काट कर जान से ही मार दिया हो। रूढ़िवादी होने से न केवल खड़े ही न हो पाए बल्कि बोलना भी नहीं सीख पाए। परंतु मानव उनसे भिन्न है। वे खड़े ही नहीं हुए बल्कि उन्होंने बोलना भी सीखा और वही विजयी भी हुए। लेकिन यह प्रक्रिया अभी भी जारी है। इसलिए क्रांति कोई अजूबा नहीं है। जिंदा जातियाँ तो हर रोज़ विद्रोह करती हैं, यह अलग बात है कि उनके विद्रोह बहुत छोटे-मोटे क़िस्म के होते हैं।

महान क्रांतियों का साहित्य पर क्या असर होता है? इसको हम तीन भिन्न कालों में बाँट सकते हैं।

(1) किसी भी महान क्रांति से पहले के साहित्य में सामाजिक स्थितियों के प्रति असंतोष और गुस्सा व्यक्त होता है और वह पीड़ा और रोष को वाणी देता है। विश्व में इस तरह की कितनी ही रचनाएँ हैं। लेकिन पीड़ा और रोष की ऐसी अभिव्यक्तियों का क्रांति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि मात्र शिकायतों से क्या होता जाता है? आपको दबाने वाले उत्पीड़क उस पर ध्यान नहीं देते। चूहा चाहे जितना चिल्लाता रहे और अच्छा साहित्य भी लिख ले, लेकिन तब भी बिल्ली उसे बेरहमी से निगलेगी ही। इसलिए केवल शिकायती साहित्य वाले देश की स्थिति निराशाजनक ही है क्योंकि वह उससे आगे नहीं जाता। जैसे किसी मुक़दमे में जब हारी हुई पार्टी अपना रोना रोने लगती है तो विरोधी पार्टी समझ जाती है कि अब वह ज़्यादा नहीं टिक सकती और मुक़दमा जीता ही समझो। उसी तरह शिकायती साहित्य अपनी तकलीफों का बयान करके उत्पीड़कों में सुरक्षा की भावना को और मज़बूत कर देता है। शिकायतों की निरर्थकता को देख कुछ चुप हो जाते हैं और अधिकादिक पतन की ओर जाते हैं। उदाहरण के लिए मिश्र, अरब, पर्शिया, और भारत जैसे देशों के पास अपनी कोई आवाज़ ही नहीं है। लेकिन आंतरिक शक्ति वाले देश शिकायतों के निरर्थक सिद्ध हो जाने पर विद्रोह करते हैं और सच्चाई का सामना करते हुए अपने शोक काव्यों को क्रोध के गर्जन में बदल देते हैं। ऐसा साहित्य विद्रोह का अग्रदूत बनता है। क्योंकि लोग क्रुद्ध होते हैं इसलिए क्रांति से पूर्व के इस साहित्य में जनता का रोष, उनका प्रतिरोध का संकल्प और बदला लेने की भावनाएँ व्यक्त होती हैं। इसी प्रकार का साहित्य अक्तूबर क्रांति का भी अग्रदूत

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बना। लेकिन इसके कुछ अपवाद भी हैं। मसलन पोलैंड के साहित्य में प्रतिरोध के साहित्य की लंबी परंपरा रही लेकिन फिर भी उसकी मुक्ति का श्रेय यूरोप के महान युद्ध को ही जाता है।

(2) महान क्रांति के दौरान साहित्य लुप्त हो जाता है और चुप्पी छा जाती है। इसलिए कि लोग क्रांति के बहाव में बह रहे होते हैं तथा सभी क्रांति की आवाज़ उठा रहे होते हैं और किसी के पास भी साहित्य की चर्चा के लिए समय नहीं होता। साथ ही, यह वक्त ग़रीबी और भुखमरी का होता है और लोग दो जून की रोटी जुटाने के काम में इस तरह जुटे होते हैंकि साहित्यिक चर्चाओं में उनकी कोई रुचि नहीं रहती। रूढ़िवादी भी इस समय क्रांति की ऊँची लहरों से इतने क्षुब्ध और दंग होते हैं कि वे भी ऐसा कुछ गाने की स्थिति में नहीं रहते जिसे 'साहित्य' कहा जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि 'साहित्य ग़रीबी और पीड़ाओं से पैदा होता है, लेकिन यह एक भ्रम है। ग़रीब आदमी लिखता नहीं है। मेरे पास पेइचिंग में जब पैसे नहीं होते थे तो मैं पैसा जुटाने की उधेड़बुन में ही लगा रहता था और एक शब्द भी नहीं लिख पाता था। मैं तभी लिखने बैठ सका जब मुझे तनख़्वा मिल गई। व्यस्तता में भी लेखन नहीं होता। गट्ठर उठाने वाला और रिक्शा चलाने वाले व्यक्ति अपना बोझ उतार कर ही कुछ लिख सकते हैं। महान क्रांतियों का समय भी बहुत व्यस्तता और दरिद्रता का समय होता है जब एक गुट दूसरे से भिड़ा होता है और जबकि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बदलना सर्वप्रथम कार्य हो जाता है। तब किसी के पास भी लिखने का समय नहीं होता और न ही अभिरुचि। इसलिए महान क्रांतियों के दौरान लेखन का कुछ देर के लिए ख़ामोश हो जाना स्वाभाविक है।

(3) जब क्रांति सफल हो जाती है, सामाजिक तनाव कुछ कम होता है और लोगों की स्थिति कुछ बेहतर होने लगती है तो साहित्य लेखन फिर शुरू होता है। इस काल में दो तरह का साहित्य लिखा जाता है। एक क्रांति का स्वागत करते हुए उसका गुणगान करता है क्योंकि प्रगतिशील लेखक सामाजिक परिवर्तनों और प्रगति से, पुराने समाज के नष्ट होने और नए के उदय से काफी प्रभावित होते हैं। पुरानी संस्थाओं के विनाश से खुश होकर वे नई रचना की प्रशंसा में गीत गाते हैं। क्रांति के बाद उभरने वाला दूसरी तरह का लेखन वह होता है जो पुराने के विनाश पर शोक प्रकट करता है। कुछ लोग इसे 'क्रांति-विरोधी साहित्य' कहते हैं लेकिन मेरे विचार से इसके प्रति इतना कठोर होने की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़रूरत नहीं है। क्रांति के बाद भी पुरानी समाज व्यवस्था के कुछ ऐसे लोग होते हैं जो एक रात में ही नहीं बदल सकते। क्योंकि उनके दिमाग में पुराने विचार भरे होते हैं इसलिए स्थितियाँ बदलने से जब उनकी संपूर्ण जीवन पद्धति उलट-पुलट होने लगती है तो वे पुराने अच्छे दिनों की याद करते हुए पुराने समाज की ही कामना करते हैं। क्योंकि वे पुराने की ही याद में खोए रहते हैं इसलिए वे ऐसा साहित्य रचते हैं जिसमें पुराने विचार और दकियानूस भावनाएँ ही अभिव्यक्त होते हैं। इस तरह की रचनाएँ शोक-संतप्त होती हैं जिनमें लेखक की असुविधाओं का बयान होता है। नए समाज की सफलता और पुरानी संस्थाओं का विनाश उन्हें यह शोक गीत लिखने को बाध्य करते हैं। लेकिन अतीत के प्रति यह ललक और शोक गीतों का गाना भी इस बात का प्रमाण है कि क्रांति हो चुकी है। यदि क्रांति सफल न हुई होती तो पुराने लोग ही सत्ता में रहते और फिर शोक गीत लिखने की आवश्यकता न रहती।

चीन में आज इनमें से किसी प्रकार का लेखन नहीं है—न तो व्यतीत के लिए शोक गीत ही और न ही नए के लिए प्रशंसा का साहित्य ही। इसका कारण है कि चीन में अभी क्रांति पूरी नहीं हुई है, अभी यह संक्रांति काल है और क्रांतिकारी व्यस्त हैं। पुराने साहित्य की छाप बाकी है। अखबारों में तो सभी कुछ पुरानी शैली में ही लिखा जा रहा है। मेरे विचार से चीनी क्रांति ने हमारे समाज में बहुत परिवर्तन नहीं किए हैं और रूढ़िवादियों पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है इसलिए प्राचीनपंथी अभी भी बने हैं। क्वांग चू अखबारों में प्रकाशित लेखन में प्रचलित प्राचीन शैली इसी बात का प्रमाण है कि यहाँ का समाज क्रांति से अप्रभावित है। इसीलिए यहाँ न नए के लिए कोई प्रशंसा गान है और न पुराने के लिए कोई शोकगीत। क्वांग तांग प्रांत अभी भी वैसा ही है जैसा दस वर्ष पूर्व था। यही नहीं, यहाँ न कोई शिकायतें हैं और न कोई विद्रोह। हम देखते हैं कि मज़दूर यूनियनें सरकारी सहमति से ही प्रदर्शनों में भाग लेती हैं, वे दमन के विरुद्ध विद्रोह नहीं करतीं। यह तो सरकारी आदेश से लाई गई क्रांति लगती है। क्योंकि चीन बदला ही नहीं है, इसलिए न तो हमें पुराने के प्रति शोक गीत सुनाई पड़ते हैं न नए प्रयाण-गीत ही। लेकिन सोवियत रूस में दोनों तरह का साहित्य लिखा जा रहा है। वहाँ रूस से भागे लेखक तो मृतकों के लिए शोकगीत लिख रहे हैं और नया साहित्य प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है। हालाँकि वहाँ भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी कोई महान साहित्यिक कृतियाँ नहीं लिखी गई लेकिन काफी बड़ी संख्या में नई रचनाएँ सामने आ रही हैं और वह रोषपूर्ण साहित्य से गुजर कर प्रशंसा गीतों तक आ गया है। क्रांति पूर्ण होने के बाद ही निर्माण की प्रशंसा होती है। बाद में फिर क्या होगा, हम कह नहीं सकते। मेरे विचार से वह जन-साहित्य होगा क्योंकि क्रांति के बाद दुनिया जन-साधारण की हो जाती है।

चीन में अभी जन-साहित्य नहीं है और न अभी यह दुनिया में ही कहीं है। प्रायः सारा साहित्य, गीत और कविताएँ उच्च वर्गों के लिए ही हैं जो उन्हें भरे पेट अपने गद्दों पर लेटकर पढ़ते हैं। एक प्रतिभाशाली विद्वान घर छोड़ देता है और सुंदर लड़की से मिलता है। दोनों में प्यार हो जाता है। कोई प्रतिभाशून्य व्यक्ति रुकावट पैदा करता है। उन्हें काफी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं लेकिन अंत में सब कुछ ठीक-ठाक हो जाता है। ऐसी चीज़ें पढ़ना बड़ा ही आनंददायक है। पुस्तकों में या तो आकर्षक सुखी उच्च वर्गों का चित्रण होता है या हास्यास्पद निम्न वर्ग के लोगों का। कुछ वर्ष पूर्व 'नव युवा' पत्रिका ने ठंडे प्रदेश के अपराधियों के बारे में कुछ कहानियाँ छापीं थीं जो प्रोफेसरों को पसंद नहीं आईं। वे इस तरह के निम्न वर्ग के चरित्रों के बारे में पढ़ना पसंद नहीं करते। रिक्शे वाले पर लिखी गई कविता निम्न वर्गीय कविता है, कानून तोड़ने वालों पर लिखा गया नाटक निम्न वर्गीय नाटक है। उनके नाटकों में आपको प्रतिभाशाली विद्वानों और सुंदरियों के चरित्र मिलेंगे। एक प्रतिभाशाली विद्वान दरबारी परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता है और सुंदर लड़की उत्तम कोटि की महिला मान ली जाती है। इस प्रकार प्रतिभाशाली विद्वान और सुंदर स्त्री खुश हैं और इसे पढ़ने वाले प्रोफेसर भी खुश हैं और मेरे ख़याल से निम्न वर्ग के लोगों को तो उन्हीं की खुशी से खुश होना चाहिए।

आजकल कुछ लेखकों ने आम आदमी—मज़दूरों और किसानों—को अपने उपन्यासों और कविताओं की सामग्री बनाना शुरू कर दिया है और इसे भी जन-साहित्य कहा जाने लगा है। लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि जनता ने तो अभी अपना मुँह ही नहीं खोला। ये रचनाएँ वास्तव में दर्शक की भावनाओं को व्यक्त करती हैं जो जनता के मुँह से अपने शब्द बुलवाते हैं। हालाँकि हमारे आज के लेखकों में कुछ ग़रीब भी हैं लेकिन उनकी स्थिति किसानों और मज़दूरों की तुलना में काफी अच्छी है अन्यथा न तो उनके पास पढने के लिए पैसा होता और न ही वे लिख

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकते। ऐसा लग सकता है कि उनकी रचनाएँ जनता से ही आई हैं लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं। वे जनता की वास्तविक कहानियाँ नहीं हैं। अब कुछ लोगों ने जनता की प्रामाणिक आवाज़ उतारने के चक्कर में लोक गीतों की नकल करना शुरू कर दिया है। लेकिन हमारी जनता पर पुरानी किताबों का काफी अप्रत्यक्ष प्रभाव है। वह तीन हज़ार 'मु' ज़मीन वाले भद्र पुरुषों के प्रति गहरी प्रशंसा-भावना रखती हैं और अक्सर उन्हीं के विचारों को अपना मानकर अपना लेती हैं। ये भद्रजन अक्सर पाँच या छह शब्दों की पंक्ति की कविता सुनाते हैं इसलिए यही लोकगीतों का भी छंद बन गया। यह तो हुआ लोक गीतों के रूप के बारे में। और क्योंकि उनकी विषयवस्तु भी पतनशील होती है इसलिए उन्हें भी जनता का वास्तविक साहित्य नहीं कहा जा सकता। आज की चीनी कविता या कथा-साहित्य अन्य देशों की तुलना में काफी पीछे है। उसे साहित्य तो कहा जा सकता है लेकिन हम क्रांतिकाल के साहित्य की बात नहीं कर सकते, जनता के साहित्य की बात तो जाने दीजिए। आज हमारे सभी लेखक विद्वान हैं और जब तक हमारे किसान और मज़दूर स्वतंत्र नहीं हो जाते वे भी ऐसा ही सोचते रहेंगे। जब वे वास्तव में स्वतंत्र हो जाएँगे तभी सच्चा जन-साहित्य लिखा जाएगा। इसीलिए यह कहना गलत है कि 'हमारे पास ही जन-साहित्य मौजूद है।'

आप लोग वास्तविक योद्धा हैं—क्रांति के लिए लड़ने वाले, इसलिए आपको अभी से साहित्य के प्रशंसक नहीं बन जाना चाहिए। साहित्य के अध्ययन से युद्ध में कोई मदद नहीं मिलती—अधिक-से-अधिक आप एक युद्ध गीत लिख देंगे। अगर वह अच्छा है तो आप उसका आनंद युद्ध के बाद विश्रांति के क्षणों में ही उठा सकते हैं। अगर काव्यात्मक भाषा में कहें तो यह भिसा के पेड़ लगाने जैसा ही होगा। जब पेड़ बड़ा होकर छायादार होगा तो किसान दोपहर में काम के बाद उसकी छाया में बैठकर खाना खाए और आराम करे। आज चीन की स्थिति यह है कि उसमें केवल वास्तविक क्रांतिकारी युद्ध ही महत्त्वपूर्ण है। 'सुन छुवान फांग'* को एक कविता ने नहीं तोप के गोले ने डराकर भगाया था। मैं जानता हूँ कि कुछ लोगों के विचारों में साहित्य क्रांति पर बड़ा असर डालता है लेकिन मुझे इसमें संदेह है। आखिरकार तो साहित्य फुरसत के समय में लिखा जाता है और वह देश की संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है।

* सुन छुवान फांग (1884-1935) च्यांग सु च च्वांग में सक्रिय एक सेनाध्यक्ष सामंत। 1926 में वह उत्तरी अभियान सेना से च्यांगशी में पराजित हुआ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनुष्य अपने व्यवसाय से कभी संतुष्ट नहीं होता। मैं सिवाय कुछ एक निबंध लिखने के कभी कुछ नहीं कर पाया और उससे भी मैं थक गया हूँ। लकिन फिर भी राइफल लेकर चलने वाले आप लोग साहित्य के बारे में सुनना चाहते हैं। इसकी बजाय मैं तो स्वयं बंदूकों की गर्जना सुनना चाहूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि साहित्य की चर्चा सुनने से बंदूकों की गर्जना ज्यादा मधुर है। मुझे बस इतना ही कहना है। मेरी बातें सुनने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नए साहित्य के बारे में कुछ विचार

एक साल से ऊपर हो गया, मैंने लोगों से शायद ही बातचीत की हो। क्रांति के बाद हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं, उसमें बातचीत करने का मौका ही नहीं था। आपको उकसावेबाज़ या प्रतिक्रियावादी करार दिया जा सकता था और दोनों ही किसी के लिए अच्छी चीज़ें नहीं हैं। इस बार पेइचिंग लौटने पर कुछ पुराने दोस्तों ने मुझे यहाँ आकर कुछ शब्द कहने के लिए कहा। मैं उनकी बात टाल नहीं पाया और इसीलिए आपके बीच उपस्थित हूँ। लेकिन इस या उस कारण से मैं यह भी निश्चित नहीं कर पाया कि मुझे क्या कहना है, किस विषय पर बोलना है।

मैंने सोचा रास्ते में बस में विषय तय करूँगा। लेकिन सड़क इतनी ख़राब थी कि बस ज़मीन से ऊपर उछलती रही और मेरे लिए ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो गया। तभी मुझे यह ख़याल आया कि बाहर से केवल एक चीज़ ले लेना ही काफी नहीं है। अगर आप बस लेते हैं तो आपको अच्छी सड़कों की भी ज़रूरत होगी। हर चीज़ अपने आसपास से प्रभावित होगी ही और यह बात उस साहित्य के बारे में भी सच है जिसे चीन में नया साहित्य या क्रांतिकारी साहित्य कहा जाता है।

हम चाहे जितने देशभक्त क्यों हों, यह हमें स्वीकार करना ही होगा कि हमारी सभ्यता एक पिछड़ी सभ्यता है। हमने सभी नई चीज़ें बाहर से ग्रहण की हैं और हममें से अधिकतर नई शक्तियों से चकित भी हैं। हालाँकि पेइचिंग की अभी ऐसी हालत नहीं है, पर शांघाई में अंतर्राष्ट्रीय बंदोबस्त में आपको केंद्र में ऐसे दुभाषियों, जासूसों, पुलिस, 'लड़कों' आदि से घिरे विदेशी मिलेंगे, जो उनकी भाषा समझते हैं और विदेशी रियासतों के नियमों को जानते हैं। इस घेरे के बाहर आम जनता है।

जब आप लोग विदेशियों के संपर्क में आते हैं तो वे समझ नहीं पाते कि यह सब हो क्‍ रहा है। अगर कोई विदेशी कहे 'हाँ' तो उसका

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुभाषिया कहता है कि 'उसने मुझे कान ऐंठने के लिए कहा है।' अगर कोई विदेशी कहे 'न' तो उसका अनुवाद किया जाता है 'इसको गोली मार दी जाए।' इस तरह की फालतू परेशानियों से बचने के लिए आपको अधिक ज्ञान की ज़रूरत है। तभी आप इस घेरे को तोड़ सकते हैं।

साहित्य की दुनिया के बारे में भी यही सच है। हम बहुत कम जानते हैं और हमारे पास सीखने के लिए सामग्री की बेहद कमी है। ल्यांग शि छ्यू के पास अपना बैबिट है, श्वी ची मो के पास अपना टैगोर, हू शि के पास अपना डेवी और हाँ कैथरीन मैन्सफील्ड भी, जिसकी कब्र पर वह रोया था। इसी तरह सर्जना स्कूल (क्रीएशन स्कूल) का अपना क्रांतिकारी साहित्य भी इधर चलन में है। और हालाँकि इस सबको लेकर काफी लेखन हो रहा है, लेकिन पढ़ाई की बेहद कमी है। आज भी हकीकत यह है कि कुछ विषय ऐसे हैं जो प्रश्न बनाने वाले कुछ लोगों की निजी संपत्ति बने हुए हैं।

हालाँकि कला के पुजारी यह दावा करते हैं कि साहित्य दुनिया के हालात बदलने की शक्ति रखता है परंतु साहित्य परिस्थितियों के बीच आकृति ग्रहण करता है इसलिए यह एक सच्चाई है कि राजनीति पहले आती है, साहित्य उसी के अनुसार बदलता है। अगर आप इस मुग़ालते में हैं कि साहित्य परिस्थितियों को बदल सकता है तो आप आदर्शवादी हैं। घटनाएँ साहित्यकारों की इच्छा के अनुसार नहीं घटतीं। इसलिए महान क्रांति के पहले आने वाले रचनाकारों का हस्र बुरा है। जब क्रांति के नतीजे सामने आने लगते हैं और लोगों को आज़ादी से साँस लेने की फुर्सत मिलती है, तभी नए क्रांतिकारी लेखक पैदा होते हैं। यह इसलिए कि जब पुराना समाज ध्वस्त होने लगता है तो अक्सर ऐसा साहित्य सामने आता है जो क्रांतिकारी दिखाई तो पड़ता है पर वह सच्चा क्रांतिकारी साहित्य नहीं होता। मसलन एक आदमी पुराने समाज से घृणा कर सकता है परंतु वह केवल घृणा ही कर सकता है, उसके पास भविष्य का कोई नक़्शा नहीं होता। वह सामाजिक बदलाव की बात कर सकता है लेकिन यदि आप पूछें कि आप किस तरह का समाज चाहते हैं तो आप पाएँगे कि वह असंभव कल्पना जैसा कुछ होगा। या हो सकता है वह जीवन से ऊब चुका हो और अपनी इंद्रियों की उत्तेजना के लिए कोई परिवर्तन चाहता हो जैसे अच्छे भोजन और शराब से अफरा कोई आदमी अपच ठीक करने के लिए काली मिर्च या मसाला खाना चाहे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जनता द्वारा ठुकराए कुछ ऐसे पुराने घाघ भी हो सकते हैं जो नया साइन बोर्ड लटकाकर कुछ नई शक्तियों से उम्मीद बाँध लें कि वे उनको प्रतिष्ठित कर देंगी।

चीन में लेखकों के ऐसे उदाहरण भी मिल जाएँगे जो क्रांति चाहते रहे, पर क्रांति होने पर ख़ामोश हो गए। उदाहरण के रूप में चिंग साम्राज्य के अंत में दक्षिण क्लब के सदस्यों को लिया जा सकता है। इस साहित्यिक गुट ने क्रांति की बड़ी गुहार लगाई, हानों की यातनाओं पर बड़ी आहें भरीं और मांचुओं के अत्याचारों पर आक्रोश जाहिर करते हुए 'पुराने अच्छे दिनों' के वापस लौटने की कामना की। लेकिन गणतंत्र की स्थापना के बाद वे सब खामोश हो गए। मेरे विचार से उनका सपना यह था कि क्रांति के बाद 'पुराने मजे वापस लौट आएँगे'—अधिकारियों के ऊँचे टोप और चौड़ी पेटियाँ। लेकिन हुआ कुछ और ही। उन्हें यथार्थ बेहद अरुचिकर लगा और उनकी लिखने की प्रेरणा ही जाती रही। रूस में इसके और स्पष्ट उदाहरण मिल जाएँगे। अक्तूबर क्रांति के शुरू होने पर अनेक क्रांतिकारी लेखकों ने इस तूफ़ान का स्वागत किया और वे खुशी से झूम उठे। वे इस तूफ़ान को भेंटना चाहते थे। लेकिन बाद में कवि येसेनिन और उपन्यासकार सोपोली ने आत्महत्या कर ली। हाल ही में सुना है कि प्रख्यात लेखक ऐरेनबर्ग भी प्रतिक्रियावादी हो गया है। इसका कारण क्या है! ऐसा इसलिए हुआ कि वे जिसमें उड़ रहे थे या जिसे भेंटने को वे बेताब थे वह तूफ़ान नहीं था बल्कि एक वास्तविक, सच्ची और सर्वसमाहारी क्रांति थी। उनके सपने खंडित हो गए इसलिए वे ज़िंदा नहीं रह सके। यह उस पुराने विश्वास जैसी अच्छी बात नहीं है जिसके अनुसार मरने के बाद आत्मा स्वर्ग में जाती है और ईश्वर के साथ बैठकर केक खाती है। वे अपने लक्ष्य को पूरा करने से पहले ही मर गए।

उनका कहना है कि चीन में तो क्रांति हो चुकी है। लेकिन यह राजनीति की सच्चाई तो हो सकती है, कला की सच्चाई नहीं है। कुछ लोगों का कहना है—'पेटी बुर्जुआ साहित्य अब अपना सर उठा रहा है।' लेकिन वास्तव में ऐसा कोई साहित्य है ही नहीं। जब सर ही नहीं है तो उठाएगा क्या। जैसा कि मैंने पहले कहा कि साहित्य में न तो कोई परिवर्तन आया है और न ही कोई नव जागरण, वह न तो प्रगति को प्रतिबिंबित करता है, न क्रांति को। हो सकता है मेरी यह बात क्रांतिकारियों को अच्छी न लगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ तक अधिक प्रगतिशील क्रांतिकारी साहित्य का सवाल है (सर्जना समाज जिस सर्वहारा के साहित्य की वकालत करता है) वह फ़िज़ूल की बात है। वांग तू छिंग की जो कविता यहाँ-वहाँ सब जगह प्रतिबिंबित हुई वह शांघाई में अंतर्राष्ट्रीय बंदोबस्त में लिखी गई है, जिसमें वह क्रांतिकारी क्वांग छु की ओर देखते हैं। लेकिन उसकी बड़े-बड़े अक्षरों में छपी 'पोंग, पोंग, पोंग' शांघाई फिल्म इश्तहारों और सोया चटनी के विज्ञापनों के असर में लिखी गई मालूम पड़ती है। उसने ब्लॉक के 'बारह' की नकल करने की कोशिश की है लेकिन ब्लॉक जैसी शक्ति और प्रतिभा उसके पास नहींहै। कई लोग क्वो मोर्बो के 'हाथ' को एक अच्छी रचना बताते हैं जिसमें दिखाया गया है कि क्रांति के बाद एक क्रांतिकारी ने अपना हाथ कैसे गँवाया और बचे हाथ से उसने अपनी प्रेमिका का हाथ कैसे थामा। क्या ही सुभीते का नुकसान रहा! अगर आपको विभिन्न अंगों में से किसी को खोना हो तो निश्चय ही हाथ सबसे कीमती है। एक पाँव गँवाना असुविधाजनक होगा, सर उससे भी अधिक। और अगर आपको एक हाथ ही गँवाना हो तो इस काम के लिए कोई बड़े दुस्साहस की ज़रूरत नहीं। मुझे लगता है कि एक क्रांतिकारी को इससे भी बड़ी कुर्बानियों के लिए तैयार होना चाहिए। 'हाथ' एक गरीब विद्वान की वही घिसी-पिटी, पुरानी कहानी की तरह है जिसका अंत प्रायः राजपरीक्षाएँ पास करने और एक सुंदर लड़की से शादी करने में होता है।

वास्तव में यह आज के चीन की स्थितियों का एक प्रतिबिंब है। हाल ही में शांघाई में छपी एक क्रांतिकारी रचना के कवर पर 'वेदना के प्रतीक'* के कवर से लिया गया एक त्रिशूल दिखाया गया है जिसके मध्य काँटे में सोवियत झंडे का हथौड़ा दिया गया है। इस सान्निध्य का अर्थ यही है कि न तो आप त्रिशूल भोंक सकते हैं, न हथौड़े से वार कर सकते हैं। यह मात्र लेखक की मूर्खता का परिचायक है और इस तरह के सभी लेखकों के बारे में यही कहा जा सकता है।

एक वर्ग से दूसरे वर्ग में व्यक्तित्वांतरण संभव है। लेकिन सबसे अच्छी चीज़ है अपने विचारों को साफ कह देना जिससे कि लोग जान जाएँ कि आप उनके मित्र हैं या शत्रु। अपने मस्तिष्क में भरे पुराने गंद को छुपाकर नाटकीय तरीके से अपनी नाक दिखाकर यह बताने की

* लू शुन द्वारा जापानी भाषा से अनूदित आलोचना की एक पुस्तक।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोशिश नहीं करनी चाहिए कि 'मैं ही सच्चा सर्वहारा हूँ।' आज हमारी जनता इतनी अधिक संवेदनशील है कि 'रूस' शब्द मात्र से भूत उतर जाते हैं और शायद वे जल्दी ही होंठों को भी लाल नहीं होने देंगे। वे सभी प्रकार के प्रकाशनों के प्रति शंकालु हैं। और विदेशों के अधिक सिद्धांतों या किताबों से जनता को परिचित कराने के काम से बचकर हमारे क्रांतिकारी लेखक केवल अपने को सामने लाने की कोशिश करते हैं। वह दिन दूर नहीं जब अंततः वे चिंग साम्राज्य के अंत में लिखी गई 'शादी आदेश पर दंड' जैसी चीज़ देंगे जिसे कोई समझ नहीं पाएगा।

मैं आप लोगों को 'शाही आदेश पर दंड' का अर्थ बताना चाहता हूँ। जब कोई अधिकारी गलती करता था तो उसे किसी द्वार के सामने घुटनों पर झुकने की या राजा के हिजड़ों द्वारा फटकारे जाने की सजा दी जाती थी। अगर आप हिजड़ों की मुट्ठी गर्म कर दें तो वह जल्दी ही रुक जाएगा। अगर आप वैसा नहीं करते तो वह आपके पूर्वजों से लेकर आगे आने वालों तक सबको श्राप देगा। वह सब राजा के नाम पर ही होता था लेकिन अब राजा से कौन पूछे कि उसी ने यह कहलाया है! एक जापानी पत्रिका के अनुसार पिछले साल छंग फांग ऊ को नाटक का अध्ययन करने जर्मनी भेजने के लिए चीन के किसानों और मज़दूरों ने चुना था। लेकिन अब हमें कैसे पता चले कि उसे इस प्रकार ही चुना गया था या नहीं।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि अगर हमें अपनी समझ बढ़ानी है तो हमें अधिक विदेशी पुस्तकें पढ़नी चाहिएं। तभी हम घेरे को काटकर बाहर आ सकते हैं। यह आपके लिए बहुत मुश्किल नहीं है। हालाँकि नएं साहित्य पर अँग्रेज़ी में भी अधिक किताबें नहीं हैं और न ही उनके अधिक अनुवाद ही हैं लेकिन जितनी भी हैं, वे भरोसेमंद हैं। विदेशों की सैद्धांतिक और रचनात्मक साहित्य की पुस्तकें पढ़ने पर जब आप नया चीनी साहित्य पढ़ेंगे तो आप अधिक स्पष्ट होंगे। बेकार में लिखने से अनुवाद का कार्य अधिक कठिन है। इससे हमारे नए साहित्य के विकास में मदद मिलती है और यह हमारे लोगों के लिए उपयोगी है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अँधेरे चीन में कला की वर्तमान स्थिति

आज चीन में एकमात्र साहित्यिक आंदोलन सर्वहारा का क्रांतिकारी साहित्यिक आंदोलन है। हालाँकि यह अभी रेगिस्तान में एक छोटे-से पौधे की तरह ही है लेकिन इसके अलावा चीन में कोई आधुनिक साहित्य नहीं है। चीन के शासक-वर्गों से नाभिनाल बद्ध तथाकथित लेखक इतने भ्रष्ट हो चुके हैं कि वे 'कला कला के लिए' या 'पतनशील' रचनाएँ भी लिखने में समर्थ नहीं रहे। आजकल वामपंथी लेखकों पर उनके आक्रमण का तरीका लेखन नहीं बल्कि उन्हें बदनाम करने, सज़ा दिलवाने, गिरफ़्तार कराने और हत्या कराने का है। इस प्रकार वामपंथी लेखकों के एकमात्र विरोधी गुंडे, पुलिस के दलाल, जासूसी कुत्ते और हत्यारे हैं।

पिछले दो साल की घटनाओं ने इसे एकदम स्पष्ट कर दिया है। एक साल पहले जब प्लेखानोव और लूनाचार्स्की की साहित्य-सिद्धांत संबंधी पुस्तकों को पहले-पहल चीनी भाषा में अनूदित किया गया तो प्रो. इर्विंग बैबिट के चेले ल्यांग शि छ्यू ने एक 'विद्वान' के नाते इस पर अपना क्षोभ प्रकट किया। उसका विश्वास था कि सर्वहारा के पास कला जैसी चीज ही नहीं है। अगर सर्वहारा कला की रचना करना चाहता है या उसका आस्वादक बनना चाहता है तो पहले उसे परिश्रम से धन एकत्र करके बुर्जुआ वर्ग में मिलना होगा. वह फटे-पुराने कपड़ों में इस सुंदर बगीचे में प्रवेश नहीं कर सकता। इस महाशय ने यह भी अफ़वाह फैलाई कि जो चीन में सर्वहारा साहित्य की वकालत करते हैं उन्हें रूस से पैसा मिलता है और यह प्रचार काफी हद तक सफल भी हुआ क्योंकि शांघाई में अनेक संवाददाता इस तरह की कहानियाँ बनाते रहते हैं, यहाँ तक कि कई बार तो पैसों की संख्या भी बता देते हैं। लेकिन समझदार पाठक उनका विश्वास नहीं करते क्योंकि इन समाचारों से ज़्यादा सच साम्राज्यवाद द्वारा भेजी वे बंदूकें होती हैं जो हमारे श्रमिकों को मारने के लिए दी जाती हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस चीज़ को समझने में शासक वर्ग के अफसरों की गति हमारे वेद्वानों से कुछ धीमी है। उन्होंने उनके बाद शिकंजा कसना शुरू किया। उन्होंने पुस्तकों और पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगाना शुरू किया। इसमें उन्होंने उन पुस्तकों और पत्रिकाओं पर भी प्रतिबंध लगा दिया जिने कवर पर लाल अक्षर थे और जो कहीं से भी क्रांतिकारी नहीं थीं। सोवियत लेखकों की किताबें भी इस चपेट में आ गईं। ए. सेराफिमोविच, व्सेवोलोद इवानोव और एन. ओग्नेव की किताबें ही नहीं, चेखव और लियोनिद अंद्रेयेव की कुछ कहानियों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पुस्तकों की दुकानों पर केवल गणित की पाठ्य पुस्तकें तथा कुत्ते और बिल्ली की बातचीत वाली कहानियाँ ही बिकने के लिए रह गईं क्योंकि हेलेना जुर मूलेन की कथाओं तक पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसलिए केवल कुत्ते, बिल्ली की कहानियों की प्रशंसा का काम ही बच रहा। लेकिन सुना है एक सेनापति बड़े ख़फा हैं और कहते हैं कि जानवरों से बुलवाना और उन्हें 'श्रीमान' वगैरह कहना मनुष्यों का अपमान करना है।

लेकिन मात्र प्रतिबंध से समस्या की जड़ ख़त्म नहीं हो सकती इसलिए इस साल पाँच वामपंथी लेखक ग़ायब हो गए। जब उनके परिवार के लोगों ने पूछताछ की तो पता लगा कि उन्हें गुप्तचर पुलिस ने बंदी बना रखा है और उनसे मिला नहीं जा सकता। पंद्रह दिनों के बाद जब उन्होंने दुबारा पूछताछ की तो बताया गया कि वे 'निर्वाण' प्राप्त कर चुके हैं, जो हत्या के लिए व्यंग्य में वे कहते हैं। लेकिन इस पर चीनी या विदेशी भाषा के शांघाई के अख़बारों में एक शब्द भी नहीं छपा। उसके बाद उन दुकानों को एक-एक करके बंद कर दिया गया जो नई किताबें बेचती थीं। एक-एक दिन में पाँच-पाँच दुकानें बंद की गईं। लेकिन अब वे फिर से एक-एक करके खुल रही हैं। हमें नहीं मालूम अचानक क्या बात हो गई। लेकिन उनके विज्ञापनों से पता चलता है कि वे राबर्ट लुई, स्टीवेंशन और आस्कर वाइल्ड जैसे लेखकों की किताबें छापने की तैयारी कर रहे हैं जिनमें एक तरफ चीनी भाषा और दूसरी तरफ अंग्रेज़ी होगी।

लेकिन यह मानना होगा कि शासक-वर्गों ने साहित्य के संबंध में कुछ अच्छे कदम भी उठाए हैं। पुराने पुस्तक-विक्रेताओं और उनके सहयोगियों को भगाकर उन्होंने चुपके से अपने आज्ञाकारी लोगों को रख

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिया है। लेकिन यह प्रयास बुरी तरह असफल हुआ क्योंकि तमाम जासूसी कुत्तों ने वहाँ जी-हुजूरी का एक अशुभ वातावरण पैदा कर दिया और क्योंकि लोग सबसे अधिक इन जी-हुजूरियों से डरते और घृणा करते हैं इसलिए वहाँ कोई भी नहीं फटकता, केवल कुछ निठल्ले जासूसी कुत्ते वहाँ कभी-कभार टहलते दिखाई पड़ते हैं। इस कारण धंधा एकदम ठप्प हो गया। उसके बाद उन्होंने प्रतिबंधित वामपंथी प्रकाशनों के रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए लेख लिखे और पत्रिकाएँ निकालीं। अभी तक उन्होंने दस पत्रिकाएँ निकाली हैं। लेकिन यह प्रयास भी बुरी तरह असफल रहा। इसकी सबसे बड़ी खामी यह है कि इस 'साहित्य' के संरक्षक शांघाई नगर निगम परिषद के सदस्य और गुप्तचर पुलिस का एक इंस्पैक्टर है। इनकी प्रसिद्धि 'निर्वाणदाताओं' के रूप में अधिक है, लेखकों के रूप में कम। अगर ये हत्या के तरीकों या 'गुप्तचर कला' के बारे में लिखें तो उन्हें कुछ पाठक फिर भी मिल सकते सकते हैं, लेकिन इसके बजाय उन्हें चित्रकला और कविता रचनी पड़ रही है। यह वैसा ही है जैसे अमरीका में श्री हैनरी फोर्ड कारों के बारे में बात करना बंद करके संगीत रचना शुरू कर दें। इससे लोगों को हैरानी ही होगी।

क्योंकि इन सरकारी पुस्तकगृहों पर कोई नहीं जाता और न ही कोई उनकी पत्रिकाएँ पढ़ता, इसलिए वे इनकी बिक्री बढ़ाने के लिए उन लेखकों को इनमें लिखने के लिए बाध्य करते हैं जो घोषित वामपंथी नहीं हैं। इसमें एक-दो लेखक ही अभी फँसे हैं। अधिकाँश लेखकों ने उनके लिए कुछ भी नहीं लिखा है लेकिन वे इससे एकदम भाग भी नहीं पा रहे हैं।

उनके सबसे सम्मानित लेखक वे हैं जो साहित्य में वामपंथी आंदोलन के प्रारंभ के उस दौर में अपने को वामपंथी कहते थे जब युवा क्रांतिकारी इस आंदोलन का समर्थन कर रहे थे और उस पर कोई ख़तरा नहीं था। ऐसे कुछ लोग अब शासकों की तलवारों के भय से रेंगकर उनसे जा मिले हैं और अब वामपंथी लेखकों पर आक्रमण कर रहे हैं। ये इन लेखकों का सम्मान इसलिए करते हैं क्योंकि एक ज़माने में वामपंथी रह चुके इन लेखकों की पत्रिकाओं पर भी कुछ हद तक लाल अक्षर होते हैं। हालाँकि अब उनमें किसानों और मज़दूरों की तस्वीरों की जगह बीयर्डले की रोगी आकृतियों वाली तस्वीरें छपने लगी हैं।

इन हालात में जो पाठक डकैतों के बारे में पुराने ढंग की कहानियाँ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ना चाहते हैं या आधुनिक कामुक कहानियाँ पढ़ने के शौकीन है, वे बहुत खुश हैं। लेकिन प्रगतिशील युवा लोगों को पढ़ने के लिए कुछ नहीं मिलता। कुछ समय के लिए अपनी भूख मिटाने के लिए उन्हें वे सारहीन और बेकार किताबें पढ़नी पड़ती हैं, जिन पर रोक नहीं है। क्योंकि वे जानते हैं कि उबकाई पैदा करने वाली ज़हरीली सरकारी किताबें पढ़ने से बेहतर है इन अर्थहीन किताबों को पढ़ना, कम-से-कम इनसे कोई नुकसान तो नहीं होता। लेकिन इस सबके बावजूद हमारे क्रांतिकारी युवाओं का बहुमत आज भी वामपंथी कला और साहित्य को समर्थन देता हुआ उसी की माँग कर रहा है।

इसलिए अफसरों और उनके चेलों द्वारा निकाली जाने वाली पत्रिकाओं के साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि दूसरी पत्रिकाएँ यह कोशिश करें कि कम-से-कम कुछ प्रगतिशील लेख उनमें किसी तरह छप सकें। क्योंकि वे अधिक दिनों तक निरर्थक साहित्य के बल पर नहीं चल सकतीं। भविष्य वामपंथी साहित्य का है क्योंकि उसे बड़ी संख्या में क्रांतिकारी पाठकों का समर्थन प्राप्त है।

इसलिए वामपंथी साहित्य का निरंतर विकास भी हो रहा है। लेकिन जैसा कि हमने शुरू में ही कहा था, यह अभी रेगिस्तान में एक ऐसे छोटे पौधे के समान है जो असीम भार के नीचे दबा है। इसलिए विकास भी विचित्र तरीके से हो रहा है। खेद की बात यह है कि हमारे वामपंथी लेखकों में से कोई भी किसान या मजदूर वर्ग से नहीं आया है। इसका एक कारण यह है कि मजदूर-किसान इतने शोषित-पीड़ित रहे हैं कि उन्हें शिक्षा का अवसर ही नहीं मिला। दूसरे, चीनी भाव लिपि को समझना इतना मुश्किल है कि मज़दूर और किसान दस साल के अध्ययन के बाद भी अपने को ठीक से अभिव्यक्त करने के योग्य नहीं बन पाते। इससे सरकारी 'लेखकों' को बहुत खुशी होती है। वे समझते हैं कि एक लेख लिखने के लिए तुम्हें पेटी-बुर्जुआ तो होना ही चाहिए और एक पेटी-बुर्जुआ को अपनी छोटी पूँजी से चिपटे रहना चाहिए। अगर वह श्रमिक वर्गों के प्रति कोई सहानुभूति दर्शाता है तो वह बेईमानी है। केवल पेटी-बुर्जुआ लेखक ही 'ईमानदार' हैं जो सर्वहारा साहित्य पर आक्रमण करते हैं। क्योंकि 'ईमानदारी' 'बेईमानी' से अच्छी चीज़ है इसलिए वामपंथी लेखकों के ख़िलाफ प्रचार करना, उन्हें सज़ा देना, गिरफ़्तार कराना और हत्या करना ही उनकी श्रेष्ठ कला है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन तलवारों की यह 'श्रेष्ठ कला' यही ज़ाहिर करती है वि वामपंथी लेखक भी उसी दमन और आतंक के शिकार हैं जिसका मज़दूर। उनका भाग्य भी उनसे बँधा है। अगर आज वामपंथी लेखक मज़दूरों पर होने वाले आतंक और दमन के भागीदार हैं तो कल वे इनके विरुद्ध एकजुट होकर भी खड़े होंगे। आदमियों को मार देने में कोई कलाकारी नहीं है, ऐसा करके ये गुंडे अपना दिवालियापन ही प्रकट कर रहे हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भुलाने के लिए ही लिखा गया

मैं बहुत दिनों से कुछ युवा लेखकों की याद में कुछ शब्द लिखने की बात सोचता रहा हूँ। ऐसा करने का एकमात्र कारण यह है कि मैं उस दुःख और क्रोध से मुक्त होकर थोड़ा सहज होना चाहता हूँ जो पिछले दो सालों से मेरे मन में समाया हुआ है। और साफ कहूँ तो मैं किसी तरह उन्हें भुलाना चाहता हूँ।

दो साल पहले 1931 की 7 फ़रवरी की रात या 8 की सुबह कों हमारे पाँच युवा लेखकों की हत्या कर दी गई।[1] उस समय किसी शांघाई अख़बार की हिम्मत नहीं हुई कि इस ख़बर को छापे। हो सकता है वे इसे छापना ही न चाहते हों या उन्होंने उसे इस लायक न समझा हो। केवल 'साहित्यिक ख़बरें' पत्र में इस घटना पर कुछ लेख छपे। 11 नवंबर को श्री लिन मांग ने 'पाइ मांग की स्मृतियाँ' लिखीं[2] और कहा :—

'उसने काफी कविताएँ लिखी थीं और हंगारी कवि पेतोफी की कुछ कविताओं का अनुवाद किया था। जब 'टोरेंट' के तत्कालीन संपादक लू शुन को उसकी पांडुलिपि मिली तो उन्होंने उससे मिलने की इच्छा जाहिर की। लेकिन क्योंकि पाई मांग बड़ी हस्तियों से मुलाकात को महत्त्व नहीं देते थे इसलिए लू शुन स्वयं ही उनसे मिलने गए और उन्हें और अच्छा लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया। लेकिन इस युवा ने लिखने के लिए स्वयं को कमरे में बंद नहीं किया। वह फिर से अपने रास्ते पर आगे बढ़ता गया और उसे दुबारा गिरफ़्तार कर लिया गया....।'

इसमें अनेक तथ्यात्मक गलतियाँ हैं। बाई मांग इतना उद्दंड नहीं था। उससे मिलने की इच्छा ज़ाहिर करने के बग़ैर ही वह ख़ुद आकर मुझसे मिला था। मैं भी इतना सिरफिरा नहीं था कि जिस लेखक को मैं जानता नहीं उसे मिलने के लिए पत्र लिखूँगा। हमारा मिलना एक

---

1. इस दिन क्वोमिन्तांग प्रतिक्रियावादियों ने यिन फू, रोउ शि, ली वेइसन, हू ये फिन, फंग खंग नाम के पाँच युवा लेखकों की हत्या कर दी थी।
2. यिन फू का ही दूसरा नाम पाई मांग था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वाभाविक घटना थी। उसने पेतोफी के जीवन पर जर्मन भाषा से एक अनुवाद भेजा था और मैंने उसका मूल भेजने के लिए कहा था। बाद में यही कविता-संग्रह की भूमिका के रूप में छपा। उसने डाक से न भेजकर स्वयं आकर वह किताब मुझे दी। वह लगभग बीस वर्ष का साँवले रंग का नौजवान था। मुझे ठीक से याद नहीं कि उस अवसर पर हमने क्या बातें की थीं, सिवा इसके कि उसने मुझे बताया था कि उसका उपनाम शु है और वह श्यांग शान से आया है। मैंने जब उससे पूछा कि उसकी डाक लेने वाली स्त्री का नाम इतना अजीब क्यों है (मुझे अब यह भी याद नहीं कि उसमें अजीब बात क्या थी) तो उसने बताया कि रोमांटिक होने के कारण उसकी रुचियाँ विचित्र हैं। लेकिन वह हर बात में उससे सहमत नहीं है। मुझे बस इतना ही याद है।

उस रात मैंने मूल से उसका अनुवाद मिलाकर देखा और पाया कि एक-दो मामूली भूलों के अलावा उसने एक दूसरे फ़िकरे का अनुवाद जान-बूझकर गलत किया था। ज़ाहिर है कि उसे 'राष्ट्रीय कवि' शब्द अच्छा नहीं लगा और उसने हर जग उसका अनुवाद 'जनता का कवि' कर दिया था। अगले ही दिन मुझे उसका एक पत्र मिला जिसमें उसने हमारी इस मुलाकात के लिए क्षमा माँगते हुए लिखा था कि उसमें वही बोलता रहा और मैं चुप रहा। मेरे व्यवहार को उसने ठंडा बताया। मैंने उसे स्पष्ट करते हुए जवाब लिखा कि पहली मुलाकात में कम बोलना मानव का स्वभाव है और साथ ही यह भी कि उसे अपनी पसंद के अनुसार मूल को बदलना नहीं चाहिए था। क्योंकि वह अपनी किताब भी मेरे पास ही छोड़ गया था इसलिए मैंने अपने संग्रह से पेतोफी के दो खंड उसे यह कहते हुए भिजवाए कि वह हमारे पाठकों के लिए उसकी कुछ और कविताओं का अनुवाद करे। उसने वैसा ही किया और स्वयं अनुवाद लेकर आया। इस बार हमने विस्तार से बातें कीं। ये कविताएँ और जीवनी 'टोरेंट' के 5 नवंबर के दूसरे खंड में प्रकाशित हुएं, जो पत्रिका का आख़िरी अंक था।

हमारी तीसरी भेंट गर्मी के दिनों में हुई। मुझे याद है कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और खोलने पर मैंने पाया कि पाई मांग खड़ा था। वह एक मोटा रुई का चोगा पहने हुए था और पसीने से तर था। हम दोनों को इस पर बड़ी हँसी आई। तभी उसने मुझे बताया कि वह एक क्रांतिकारी है और अभी-अभी जेल से छूटा है और उसकी सारे किताबें और कपड़े जब्त हैं जिनमें मेरे द्वारा दिए गए दो खंड भी हैं। उसने यह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चोगा अपने एक दोस्त से माँगा है। दोस्त के पास कोई पतला कपड़ा नहीं था इसलिए उसे यह मोटा चोगा पहनना पड़ा है और गर्मी में यह मुसीबत झेलनी पड़ रही है। मेरे ख़याल से श्री लिन मांग ने 'दुबारा पकड़ा गया' में इसी की ओर संकेत किया है।

उसकी सूक्ति पर खुशी ज़ाहिर करते हुए मैंने तुरंत उसे उसके अनुवादों का पैसा दिया जिससे कि वह अपने लिए पतला चोगा ख़रीद सके। फिर भी मुझे इस बात का दुःख था कि मेरी किताबें भी पुलिस के हाथों पड़ गई हैं। किताबें कोई ख़ास नहीं थीं—एक गद्य और दूसरी पद्य की—जिन्हें जर्मन अनुवादक ने यह कहकर संकलित किया था कि ऐसा पूर्ण संकलन हंगरी में दूसरा नहीं मिलेगा। उन्हें कोई भी जर्मनी में एक डालर से भी कम में ख़रीद सकता था। लेकिन मेरे लिए तो वे खज़ाना थीं क्योंकि मैंने तीस साल पहले मेरुसन किताबघर* के माध्यम से जर्मनी से आदेश देकर उन्हें मँगाया था। उस समय मैं पेतोफी का बहुत प्रशंसक था। मुझे यही डर था कि इतनी सस्ती किताबों को दुकानदार भला क्यों मँगाएगा। कुछ दिनों तक तो मैं इन किताबों को साथ लिए घूमता था लेकिन समय के साथ रुचियाँ भी बदलती हैं और मैंने भी पेतोफी का अनुवाद करने का विचार छोड़ दिया। मैंने सोचा, इन किताबों का यही सौभाग्य होगा कि मैं इन्हें एक नौजवान दे दूँ जो पेतोफी का इतना प्रशंसक है। इसलिए मैंने इस भेंट को इतना गंभीरता से लिया था और अपनी ओर से इन्हें देने के लिए खुद रोउ शि को भेजा था। यह बहुत बुरा हुआ कि वे पुलिस के हाथों पड़ गईं।

यह शिष्टतावश ही नहीं था कि मैं पत्रिका में लिखने वालों से नहीं मिलता था बल्कि परेशानी में पड़ने से बचना भी इसका एक कारण था। मैं अपने लंबे अनुभव से जानता हूँ कि दस में से नौ युवा लेखक बेहद भावुक होते हैं और स्वयं को बहुत गंभीरता से लेते हैं। अगर आप बहुत सावधान न रहें तो गलतफ़हमियाँ पैदा हो सकती हैं। इसलिए मैं उनसे मिलने से बचता था। अगर कभी मिला भी तो मुझे उनसे कोई भी चीज़ लिखने के लिए कहने में बड़ी घबराहट होती थी। शांघाई में उन दिनों जिस युवा लेखक से मैं खुलकर बात कर सकता था और हँस सकता था और अज़ीबोग़रीब कार्य करा लेता था वह था रोउ शि, जिसे मैंने बाई मांग के पास पुस्तकें लेकर भेजा था।

---

* टोकियो में पश्चिमी किताबों की एक दुकान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे ठीक से याद नहीं कि मैं पहले-पहल रोउ शि से कब और कहाँ मिला। मुझे याद पड़ता है एक बार उसने बताया था कि आठ-नौ साल पहले पेइचिंग में उसने मेरा भाषण सुना था। मुझे यह भी याद नहीं कि हम शांघाई में इतने करीब कैसे आए। वह तब चिंग युनली में रह रहा था, जो मेरे घर से चार-पाँच घर छोड़ कर था। और इस तरह हम लोगों में दोस्ती हो गई। उसने एक बार मुझे अपना नाम छओ पिंगफू (शांतिपूर्ण वापसी) बताया था। लेकिन एक बार अपने स्थान के भद्र लोगों के बारे में बात करते हुए बताया कि एक स्थानीय प्रभु को उसका नाम बेहद पसंद आया और उसने इस नाम के प्रयोग से उसे मना किया क्योंकि वह अपने पुत्र का वही नाम रखना चाहता था। मुझे संदेह है कि उसके मूल नाम 'फू' का अर्थ 'वापसी' नहीं 'खुशी' होगा, तभी तो उस भद्रजन को वह इतना भा गया। आप उसके रूखे थाइच्वो तौर-तरीकों पर नज़र डालते ही बता सकते थे कि वह थाइच्वो के निंघाई स्थान से आया है। उसमें कुछ ऐसी अलगावप्रियता थी कि मुझे उसे देखकर फंग श्याओ रू[1] की याद आ जाती थी जो मेरे ख़याल में उसी के जैसा रहा होगा।

वह घर में बंद रहकर लेखन या अनुवाद का काम करता रहता था। लेकिन कई बार की मुलाकातों में जब हमने एक-दूसरे को काफी क़रीब पाया तो उसने समान विचार वाले कई अन्य युवकों को एकत्र किया जिनकी सहायता से हमने डॉन ब्लाजम्स प्रेस लगा ली। इसका उद्देश्य था उत्तरी यूरोप को पूरब के साहित्य से परिचित कराना और विदेशी ठप्पाचित्रों को मँगवाना क्योंकि हम समझते थे कि इस शक्तिशाली और सहज कला को हमें हर संभव समर्थन देना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमने 'डॉन ब्लाजम्स', 'सभी देशों की आधुनिक कहानियाँ' तथा 'द गार्डन आफ़ आर्ट' प्रकाशित किए। हमने शांघाई के दिखावटी कलाकारों को चिढ़ाने के लिए कोजी कुकीवा[2] की चित्रकला की एक पुस्तक भी प्रकाशित की।

रोउ शि के पास पैसा-धेला नहीं था। उसने छपाई शुरू करने के लिए दो सौ डालर उधार लिए। काग़ज़ ख़रीदने के अलावा वह संपादन

---

1. फंग श्याओ रू (1357-1402) रोउ शि के ज़िले से मिंग साम्राज्य का एक लेखक। राजा च्वेड़ ती की स्वामिभक्ति के कारण उसने युवराज की अवज्ञा की तो उसकी हत्या कर दी गई।

2. एक समकालीन जापानी कलाकार जिसकी कला को लिंग फग ने प्रचारित कि।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का काम भी करता था। साथ ही मुद्रकों के पास दौड़ना, ब्लाक बनवाना और प्रूफ पढ़ना आदि काम भी करता था। वह अक्सर निराश भी हो जाता था और जो हुआ है उसे अफ़सोस के साथ बयान करता था। उसकी प्रारंभिक रचनाओं में निराशा दिखाई पड़ती है हालाँकि उसका स्वभाव वैसा नहीं था। मानव की अच्छाई में उसका अटूट विश्वास था। मैं जब उसे छल-कपट या मित्रों के धोखे की बातें बताता तो उसके माथे पर पसीना आ जाता और वह मिची आँखों और अचम्भे से मुझे घूरता रहता।

''क्या यह सचमुच संभव है?'' और फिर खुद ही कहता ''कतई नहीं।''

लेकिन डॉन ब्लाजम्स प्रेस बंद करने की नौबत आने पर—यहाँ मैं उसके कारणों में नहीं जाऊँगा—रोउ शि ने पहली बार अपने आदर्शवादी मस्तक को दीवार पर पटका। उसकी सारी मेहनत बेकार हो गई। इसके अलावा कागज़ का भुगतान करने के लिए उसे सौ डालर और उधार लेने पड़े। उसके बाद यह कहने पर कि 'मनुष्य के दिल बुराई से भरे हैं' वह उतना रुष्ट नहीं होता था हालाँकि कभी-कभी वह फिर भी कहता था, ''क्या यह सचमुच संभव है?''

उसके बाद उसने कुछ पैसा इकट्ठा करने की उम्मीद से डॉन ब्लाजम्स प्रेस में पड़ा हुआ माल टुमारो बुक स्टोर और क्वांग हुआ बुकशाप को दे दिया। साथ ही कर्ज़ चुकाने के लिए वह दिन-रात अनुवाद का काम करता रहता था। उसने 'दानिश कहानियाँ' और गोर्की के उपन्यास 'द अर्तमानोव्ज बिजनस' के अनुवाद कमर्शियल प्रेस को बेच दिए। मेरा अनुमान है कि पिछले साल की लड़ाई और आगजनी में ये पांडुलिपियाँ शायद खो गई हैं।*

धीरे-धीरे उसकी अलगावप्रियता ग़ायब होती गई और उसने लड़कियों—जो उसकी मित्र थीं या उसके अपने शहर की थीं—के साथ घूमना शुरू कर दिया। वह उनसे तीन-चार कदम की दूरी पर ही चलता था, जो कि एक बड़ी ख़राब आदत थी। क्योंकि जब एक सुंदर स्त्री के साथ मैंने उसे एक गली में देखा तो मेरे लिए अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि वह उसकी दोस्त थी या नहीं। लेकिन जब वह मेरे साथ चलता तो

* 28 जनवरी, 1932 की उस लड़ाई का संकेत, जिसमें जापानी फ़ौजों ने शांघाई पर हमला किया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे सहारा देने के अंदाज़ में बिलकुल करीब चलता था, मानो किसी कार या ट्राम से मेरी टक्कर बचाने के लिए ऐसा कर रहा हो। उसके इस व्यवहार और अपनी लापरवाही से मैं इतना क्षुब्ध हो जाता था कि यह पूरा सफ़र हम दोनों के लिए यातनादायक बन जाता था इसीलिए मैं भरसक उसके साथ चलना पसंद नहीं करता था। साथ चलने पर उसके ऊपर जो तनाव रहता था उससे मैं भी तनाव में रहता था।

अब इसे पुरानी या नई नैतिकतावश कहिए या सोद्देश्य लेकिन वह दूसरों की सहायता के लिए अपने ऊपर नया बोझ लाद लेता था।

एक समय आया जब उसमें निर्णायक बदलाव हुआ। एक दिन उसने मुझे विस्तार से बताया कि भविष्य में वह भिन्न प्रकार के कथ्य और रूप की रचनाएँ लिखना चाहता है। मैंने कहा—यह उतना ही मुश्किल है जैसे चाकू का अभ्यस्त आदमी लाठी को अपनाए। तुम ऐसा कैसे कर पाओगे? उसने सहज उत्तर दिया—सीखा जा सकता है।

यह कोई शेखी की बात नहीं थी। उसने वाकई सीखना शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों वह अपनी एक मित्र कु० फंगरंग को मुझसे मिलाने लाया। उससे थोड़ी बात करके ही मुझे लगा कि हमारे बीच एक दीवार है। वह शीघ्र परिणाम चाहने वाली एक रोमांटिक थी। साथ ही मुझे स्वयं पर भी संदेह हुआ क्योंकि रोउ शि के दो टूक जवाब ने मुझे मेरे तर्क की कमज़ोरी दिखा दी जिसका अर्थ था कि मैं अनजाने ही उसके प्रति अपने विरोध के कारण वैसा कह रहा हूँ। उस समय मेरी हालत उन अति भावुक युवा लेखकों से बेहतर नहीं थी जिनसे मैं इसलिए मिलने से कतराता था कि वे अपने को कुछ ज़्यादा ही गंभीरता से लेते हैं।

वह लड़की सुंदर तो नहीं, नाज़ुक ज़रूर थी।

वामपंथी लेखक लीग के बाद ही मुझे पता चला कि मेरा परिचित पाई मांग ही यिन फू है जिसकी कविताएँ 'द पाइनियर' में छपी थीं। मैं उसकी जर्मन सुधारने के उद्देश्य से एक मुलाकात के समय एक अमरीकी पत्रकार की चीन यात्राओं का जर्मन अनुवाद साथ ले गया। लेकिन वह आया ही नहीं। इसलिए मुझे फिर से पुस्तक पहुँचाने के लिए रोउ शि की सहायता लेनी पड़ी।

इसके कुछ ही दिनों बाद वे दोनों गिरफ़्तार कर लिए गए और उन्हीं के साथ मेरी पुस्तक भी पुलिस के हाथों पड़ गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब टुमारो बुक स्टोर ने रोउ शि से एक पत्र संपादित करने के लिए कहा तो उसने स्वीकृति दे दी। प्रकाशक मेरे अनुवाद भी छापना चाहता था जिसके लिए रायल्टी तयं करने का काम भी उसे सौंपा। मैंने बेक्सिन प्रकाशन कंपनी का समझौता फार्म नकल करके उसे दे दिया। वह उसे अपनी जेब में ठूँस कर चला गया। यह 16 जनवरी, 1931 की शाम की बात है। उस समय मुझे क्या मालूम था कि यही हमारी आख़िरी मुलाकात होगी।

दूसरे दिन एक बैठक में उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। मैंने सुना प्रकाशक मुझसे मिलना चाह रहे हैं क्योंकि मेरे समझौता फार्म की कापी उसकी जेब से मिली थी। यह समझौता फार्म बहुत ही साफ़ और सटीक था लेकिन मेरी उसके बारे में बेमतलब जगहों पर जाकर सफाई देने की कोई इच्छा नहीं थी। मुझे युए फई* की जीवनी में दी गई एक भिक्षु की कहानी याद आ गई जिसने उसकी खोज में आने वाले कारिंदे के राज्य में घुसने से पहले ही प्राण त्याग दिए। उसने कविता की ये पंक्तियाँ लिखी :—

जैसे पूरब से कानून आता है,
मैं पश्चिम के स्वर्ग में शरण ढूँढ़ता हूँ।

शायद दासों को यातना से छुटकारा दिलाने वाला यही सबसे अच्छा तरीका था। जब 'न्याय का प्रतिनिधि' सामने न हो तो यही एक रास्ता बचाता है। मैं उस भिक्षु की तरह भी नहीं कि इच्छाशक्ति से ही निर्वाण प्राप्त कर लूँ। साथ ही मुझे ज़िंदगी भी बड़ी प्यारी है। इसलिए मैं भाग खड़ा हुआ।

उस रात मैंने अपने दोस्तों के सारे पत्र जला दिए और अपनी पत्नी और छोटे बच्चे के साथ एक होटल में चला गया। कुछ ही दिनों बाद अफ़वाह उड़ी कि मुझे या तो गिरफ़्तार कर लिया गया है या मार दिया गया है। लेकिन रोउ शि की कोई ख़बर नहीं थी। कुछ लोगों का कहना था कि यह पता लगाने के लिए कि वह संपादक था या नहीं, पुलिस उसे टुमारो बुकस्टोर ले गई थी। दूसरों ने कहा कि उसकी पहचान कराने के लिए पुलिस उसे बेक्सिन प्रकाशन कंपनी ले गई है, क्योंकि उसको हथकड़ियाँ लगी थीं इसलिए अवश्य ही उसका मामला गंभीर था।

---

* सुंग साम्राज्य के सेनाध्यक्ष युए फई (1103-1142) पर लिखा गया उपन्यास।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन कोई नहीं जानता था कि उस पर आरोप क्या हैं।

क़ैद के दौरान मैंने अपने प्रांत के साथियों के नाम लिखे उसके दो पत्र देखे। पहला इस प्रकार था:

24 जनवरी

मुझे 35 क़ैदियों के साथ (जिनमें सात महिलाएँ थीं) लुंग ह्वा लाया गया। पिछली रात हमें जंजीरे पहनाकर राजनीतिक क़ैदियों के लिए मिसाल कायम की गई। इसमें इतने अधिक लोग फँसे हैं कि मुझे जल्दी छूटने की उम्मीद नहीं है। अगर तुम बुकशॉप में मेरा काम सँभाल लो तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। बाकी सब ठीक है और मैं यिन फू से जर्मन भाषा सीख रहा हूँ। श्री चओ* से कहना कि मेरे बारे में चिंता न करें। हमें यहाँ कोई यातना नहीं दी जा रही। पुलिस और सुरक्षा अधिकारियों ने कई बार मुझसे उनका पता पूछा है। पर मुझे मालूम ही नहीं तो मैं कैसे बताऊँ। चिंता मत करना।

शुभकामनाओं सहित।

चाओ शाओ-श्युंग

यह पृष्ठ के सामने लिखा था।

उसके पीछे लिखा था:—

मुझे दो-तीन चावल के डिब्बे चाहिएँ। अगर वे तुम्हें मुझसे मिलने की इज़ाजत न दें तो उन चीज़ों को चाओ शाओ-श्युंग के नाम पर छोड़ देना।

वह बिलकुल नहीं बदला। वह जर्मन भाषा सीखना चाहता था और उसके लिए कड़ी मेहनत कर रहा था। वह मेरे बारे में उतना ही चिंतित था जितना साथ चलते समय हुआ करता था। हालाँकि उसके कुछ बयान ग़लत थे। वे पहले राजनीतिक बंदी नहीं थे जिन्हें जंजीरें पहनाई गई थीं। लेकिन वह प्रशासकों के बारे में बहुत अच्छी राय रखता था, जब तक कि उन्होंने उसे और उसके दोस्तों को यातनाएँ नहीं दीं। लेकिन बाद में उसकी राय काफी बदली हुई थी जो कि उसके दूसरे पत्र से साफ होता है। उसने बड़े आक्रोश के साथ लिखा कि कु. फंग का चेहरा सूज गया है। दुर्भाग्य से इस पत्र की प्रतिलिपि करना मैं भूल गया। तभी कुछ और अफवाहें भी सुनाई पड़ीं। कुछ ने कहा कि वह ज़मानत

* लू शुन का असली नाम।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर छूट सकता है। दूसरों ने कहा कि उसे पहले ही नानचिंग भेजा जा चुका है। कुछ भी निश्चिंत नहीं था। मेरा समाचार जानने के लिए ढेरों तार और पत्र आ रहे थे। पेइचिंग में चिंता से मेरी माँ भी बीमार पड़ गई और मुझे स्थिति स्पष्ट करने के लिए पत्र-पर-पत्र लिखने पड़े। तीन हफ्ते तक यही सब चलता रहा।

मौसम ठंडा हो गया था। पता नहीं रोउ शि को रज़ाई वगैरह मिली होगी या नहीं। हमारे पास रज़ाइयाँ थीं। क्या उसे डिब्बे मिल गए? ....लेकिन तभी हमें पक्की ख़बर मिली कि सात की रात या आठ फ़रवरी की सुबह को लुंग ह्वा सेना मुख्यालय में रोउ शि और 23 अन्य लोगों को गोली मार दी गई है। उसके शरीर में दस गोलियाँ मिलीं।

फिर.....!

देर रात मैं सामान से घिरा होटल के आँगन में खड़ा हूँ। सब सो रहे हैं, मेरी पत्नी और बच्चा भी। मुझे तीखा अहसास था कि मैंने अपना गहरा दोस्त खो दिया है और चीन ने एक इतना बेहतर इंसान खो दिया है। अपने प्रारंभिक दुःख के बाद मैं थोड़ा शांत हुआ और मैंने ये पंक्तियाँ लिखी :–

मैं बसंत की लंबी रातों का अभ्यस्त था
मैं जब अपनी पत्नी और बच्चे के साथ छुपा बैठा हूँ
मेरे बाल सफेद हो रहे हैं
मुझे सपने में रोती मेरी प्यारी माँ दिखी
शहर पर सरदारों के झंडे लगातार बदल रहे हैं[1]
अपने मित्रों को भूतों में बदले देखने की पीड़ा
गुस्से में मैं बंदूक की नोकों पर झुका ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ
क्या ये कभी प्रकाशित होंगी? मेरी त्यौरियाँ चढ़ी हैं
जबकि मेरे कोट पर तरल चाँदनी बिछी है।

आख़िरी दो पंक्तियाँ सच नहीं थीं क्योंकि अंत में मैंने कविता को उतारकर एक जापानी गायक को भेज दिया।

लेकिन चीन में उस समय हम इस कविता को नहीं छाप सकते थे। हम डिब्बों में बंद आदमी से भी ज़्यादा बुरी तरह घुट रहे थे। मुझे याद

---

1. उस समय सेनाध्यक्ष सामंतों की लगातार लड़ाइयों का संदर्भ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आया कि एक बार रोउ शि नए साल पर अपने घर ज़्यादा दिन बिता आया तो कई मित्रों ने उसे फटकारा था। उसने मुझे बेहद दुःख के साथ बताया था कि उसकी माँ की दोनों आँखों की रोशनी चली गई है और वह चाहती थी कि मैं कुछ दिन और उसके पास रहूँ, इसलिए मैं जल्दी नहीं आ सका। मैं अंधी माँ और रोउ शि की पीड़ा का अनुभव कर सकता हूँ। जब 'डिपर' पहली बार छपा तो मैं चाहकर भी रोउ शि के बारे में लिख नहीं पाया। मैंने केवल इतना ही किया कि 'बलिदान' नाम से कैथ कॉलविज का[1] ठप्पाचित्र छाँटकर दे दिया, जिसमें एक माँ द्वारा आत्मा की पीड़ा में अपने बच्चे को देना दिखाया गया है। केवल मैं ही जानता हूँ कि यह रोउ शि कीं याद में था।

जो अन्य चार युवा लेखक मारे गए उनमें से ली वेइसन से मेरी मुलाकात नहीं थी और हू येफिन को भी शांघाई में देखा भर था और दो-चार बातें की थीं। उनकी तुलना में पाई मांग या यिन फू को अच्छी तरह जानता था। उससे मेरा पत्र-व्यवहार भी हुआ था और उसने मेरी पत्रिका में लिखा भी था। लेकिन उसकी कोई चीज़ आज मेरे पास नहीं है। हो सकता है 17 तारीख़ की शाम को मैंने उसकी चीज़ें भी जला दी हों। हालाँकि यह मुझे बाद में पता चला कि वह भी पकड़ा गया है। उसकी पेतोफी की कविताएँ अभी भी मेरे पास हैं और इनमें से उसकी अनुवाद की हुई चार पंक्तियाँ हाशिए पर स्याही से लिखी मिली हैं :–

जीवन एक वरदान है
प्यार इससे भी ज़्यादा
लेकिन स्वतंत्रता पाने के लिए
मैं इन दोनों को भी फेंक सकता हूँ।

दूसरे पृष्ठ पर लिखा है श्वी फेइकन, जो मेरे ख़्याल से उसका असली नाम है।[2]

दो साल पहले, आज के ही दिन, मैं एक होटल में छिपा बैठा था जबकि उन्हें मैदान में गोली मारने के लिए ले जाया जा रहा था। एक साल पहले, आज के ही दिन, मैं तोपों की आग से बचकर अंतर्राष्ट्रीय बंदोबस्त में जा रहा था जबकि वे लोग न जाने किस जगह दफ़न होंगे। केवल इस साल, इस दिन मैं दुबारा घर पर बैठा हूँ, जबकि बाकी सब

1. जर्मनी की एक प्रगतिशील ठप्पाचित्र कलाकार।
2. श्वी फेइकन एक मांग का भाई था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सो रहे हैं—मेरी पत्नी और बच्चा भी। मुझे फिर से यह तीखा अहसास हो रहा है कि मैंने एक गहरा दोस्त खो दिया है और चीन ने इतना बेहतर युवा आदमी। दुःख से उबर कर मैं कुछ शांत हुआ हूँ और यह संस्मरण लिख रहा हूँ।

अगर मैं लिखता रहा, तो भी मैं आज के चीन में अपना लिखा नहीं छपवा सकता। जब मैं छोटा था और श्यांग त्ज़ छी के 'संस्मरण' पढ़ा करता था तो मैं कहता था कि उसने केवल कुछ पंक्तियाँ लिखकर ही यह अच्छा नहीं किया, अभी तो उसने शुरुआत ही की थी।* लेकिन अब मैं समझता हूँ कि उसने ऐसा क्यों किया।

हालत यह है कि आज युवा लोग बुजुर्गों की मृत्यु पर श्रद्धागीत नहीं लिख रहे बल्कि मैंने पिछले तीस सालों में अपनी आँखों से देखा है कि इतने युवा लोगों का खून बहाया गया है कि उसमें हम डूब गए हैं और साँस नहीं ले पा रहे हैं। मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा यही कर सकता हूँ कि कलम उठाकर कुछ लेख लिख दूँ, जिससे कि कुछ और बदकिस्मत साँस ले सकूँ। यह कैसी दुनिया है! रात इतनी लंबी है, रास्ता इतना लंबा है कि बेहतर यही है कि मैं ख़ामोश रहूँ। लेकिन अगर मैं आज ऐसा नहीं करता तो एक समय आएगा जब लोग उन्हें याद करेंगे और उनके बारे में बातें करेंगे।

* श्यांग त्ज़ छी, तीसरी शताब्दी का लेखक जिसने अपने प्रिय मित्र की मृत्यु पर दुःख में संस्मरण लिखे। यह 150 शब्दों की छोटी कविता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीन की दो या तीन चीज़ें

1. चीनी आग

हमने सुना है कि यूनानी लोगों ने जिस आग का उपयोग किया उसे पुराने ज़माने में प्रोमिथियस ने स्वर्ग से चुराया था। लेकिन चीनी आग दूसरी है। इसकी खोज या आविष्कार संत स्वेइ रन ने किया था। उसने उसे चुराया नहीं बल्कि वह पहाड़ की चोटी पर बँधकर अपना जिगर गिद्धों द्वारा खाए जाने की सज़ा से बच निकला था। लेकिन उसे न तो प्रोमिथियस जैसी प्रसिद्धि ही मिली और न ही उसकी कभी पूजा ही की गई।

पर चीन में भी एक अग्नि देवता है। वह स्वेइ रन नहीं बल्कि एक हास्यास्पद आगलगाऊ है। जब से स्वेइ रन ने आग की खोज या आविष्कार किया तभी से संभव हुआ कि हम स्वादिष्ट पका मीट खा सकें, लैंप जला सकें और रात को काम कर सकें। लेकिन जैसा कि एक प्राचीन दार्शनिक ने कहा है—"सुविधा के साथ असुविधा भी आती है' अतः अग्निकांड भी उसी समय शुरू हुए और ऐसे लोग भी पैदा हुए जिन्होंने संत ऊ छाँओ द्वारा बसाई बस्तियों को ही जलाकर नष्ट कर दिया।

संत स्वेइ रन का भुलाया जाना ही अच्छा है। क्योंकि शन नुंग* के प्रांत में अपच का रोग था इसलिए लोग उसे आज भी याद करते हैं। जहाँ तक विनाशकारी आग का सवाल है, हम ठीक से नहीं जानते कि किसने उसे खोजा। बस यही मान लेते हैं कि कोई अगुआ ज़रूर रहा होगा। उसके लिए एक ही रास्ता था कि अपना आदरपूर्ण भय दिखाने के लिए उसे अग्नि देवता का पद दे दिया जाए। तस्वीरों में उसका चेहरा और बाल लाल रंग के हैं लेकिन उसे भेंट चढ़ाते वक्त आपको लाल का नहीं हरी चीज़ों का प्रयोग करना होता है। वह शायद स्पेनी साँड की तरह है जो लाल रंग को देखते ही भड़क सकता है। इसलिए उसकी पूजा की जाती है। चीन में इस तरह की बहुत सारी दुरात्माएँ हैं।

* शन नुग औषधि का आविष्कारक माना गया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन इन्हीं के कारण दुनिया में चीज़ें जीवंत बनी रहती हैं। चीन में उत्सवों के दौरान केवल अग्नि देवता की पूजा की जाती है, स्वेइ रन की नहीं। अगर कहीं आग लग जाए तो उसके शिकार और बचे हुए पड़ोसी अपनी अनुकंपा प्रकट करने के लिए अग्नि देवता को भेंट चढ़ाते हैं। विपत्ति के लिए धन्यवाद देना आश्चर्य की बात लग सकती है पर वह कहते हैं कि अगर भेंट नहीं चढ़ाएँगे तो दुबारा आग लग सकती है, इसलिए धन्यवाद देने में ही उनकी भलाई है। और यह केवल अग्नि देवता के बारे में ही सच नहीं बल्कि कुछ व्यक्तियों के बारे में भी सच है। मेरे ख़्याल से यह शिष्टाचार का ही एक रूप है।

आगज़नी एक भयावह चीज़ है पर यह खाना बनाने से ज़्यादा उत्तेजक है। विदेशों का तो मुझे नहीं मालूम लेकिन चीन में स्थिति यह है कि आप कोई भी इतिहास देख जाइए आपको ख़ानसामाओं और लैंप जलाने वालों की जीवनी कहीं नहीं मिलेगी। कोई आदमी कितना अच्छा रसोइया या लैंप जलाने वाला क्यों न हो उसे दुनिया में ख्याति नहीं मिल सकती। लेकिन छिन शी ह्वांग अपने पुस्तक जलाने के कारनामों के कारण इतना प्रसिद्ध है कि हिटलर के पुस्तक जलाने के कार्य के लिए उसका उदाहरण दिया जाता है। अगर श्रीमती हिटलर को बत्तियाँ जलाने या डबल रोटी सेंकने में महारत हासिल होती और इसे इतिहास में खोजा जाता तो शायद उसका कोई उदाहरण न मिलता। इसलिए यह अच्छा ही है कि इस तरह के कामों का दुनिया में कोई महत्त्व नहीं है।

सुंग साम्राज्य के लेखे के अनुसार आगज़नी मंगोलों के साथ पैदा हुई क्योंकि टेंटों में रहने के कारण उन्हें घरों में रहने का तरीका नहीं आता था और वे जहाँ भी जाते थे अपनी इच्छानुसार आग जला लेते थे। यह झूठ है। लेकिन क्योंकि मंगोल हानों की भाषा नहीं पढ़ सकते थे इसलिए उन्होंने इसका कोई विरोध नहीं किया। तथ्य यह है कि चीन साम्राज्य के अंत में एक प्रसिद्ध आगलगाऊ है श्यांग ऊ। जैसे ही उसने आफांग राजभवन जलाया उसकी प्रसिद्धि सारे साम्राज्य में फैल गई। जैसा कि जापान में भी सब जानते हैं वह अभी भी रंगमंच पर आता है। लेकिन उनका नाम कौन जानता है जिन्होंने चिन राजभवन में जल जाने से पहले उसमें लैंप जलाए थे?

(आज हमने बम, गोले और हवाई जहाज़ बना लिए हैं जो कि एक प्रगतिशील कदम है। आज नाम कमाना पहले की तुलना में ज़्यादा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसान है। जो आदमी पहले से बड़ी आग लगाएगा उसका सम्मान उतना ही ज़्यादा होगा। दूर से देखने पर वह त्राता नज़र आएगा और लपटें उज्ज्वल प्रकाश।)

2. चीन का शाही तरीका

पिछले से पिछले साल मुझे नाकाजातो काइचान* की महान रचना 'चीन और चीनी जनता के नाम एक पत्र' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने लिखा कि छू और ह्वान साम्राज्य के शासक आक्रामक थे, फिर भी चीनी लोग उनकी प्रशंसा और सम्मान में गीत गाते हैं। वे य्वान और चिंग साम्राज्य के उन शासकों की भी प्रशंसा करते हैं जो उत्तर से आए थे। जब तक यह हमला देश को शांत और लोगों के जीवन को सुरक्षित रख सका चीनी लोगों की नज़रों में यह एक शाही तरीका था जिसके वे प्रशंसक थे। लेखक चीनियों की इस मूर्खता पर अपना आक्रोश प्रकट करता है।

यह 'पत्र' मंचूरिया की एक पत्रिका में अनुवाद होकर छपा। लेकिन क्योंकि चीन के अन्य भागों में इसका कभी वितरण नहीं हुआ इसलिए इसका कोई जवाब दिखाई नहीं दिया। यह सच है कि पिछले साल शांघाई के अख़बार में छपे डॉ. हू शि के भाषण में यह टिप्पणी थी–''चीन को जीतने का एक ही रास्ता है–सारे हमलों को पूरी तरह बंद करके चीनी लोगों के दिलों को जीतने की कोशिश करना।'' कहना न होगा कि यह मात्र एक संयोग ही था पर फिर भी यह उस पत्र का जवाब जैसा ही है।

डॉ. हू शि के अनुसार चीनी जनता के दिलों को जीतने की परिभाषा वह है जिसे चीन में शाही तरीके के नाम से जाना जाता है। लेकिन मुझे संदेह है कि वह अपने तर्कों में विश्वास करते हैं। 'इतिहास और शोध के प्रति आग्रही' डॉ. हू शि अच्छी तरह जानते होंगे कि चीन में कभी भी पूर्ण शाही तरीका नहीं रहा।

सच है कि चीन ने य्वान और चिंग साम्राज्यों की प्रशंसा में गीत गाए लेकिन वह तो अग्नि देवता की पूजा करने के समान ही था। उसका अर्थ यह तो नहीं कि उनके दिल जीत लिए गए हैं। अगर इसका संकेत दे दिया गया होता कि जब वे गीत नहीं गाएँगे उनके प्रति और भी

* एक जापानी उपन्यासकार।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुर्व्यवहार किया जाएगा तो बुरा व्यवहार होने पर भी कुछ फिर भी उनकी प्रशंसा के गीत गाते। चार या पाँच साल पहले जब मैंने स्वतंत्रता की माँग करने वाली सभा में प्रवेश किया तो शांघाई में शिक्षा कमिश्नर छन द चंग ने गुस्से में पूछा, ''क्या तुम जनता के तीन सिद्धांतों के शासन में संतुष्ट नहीं हो! ठीक है हम तुम लेखक लोगों को प्राप्त मामूली स्वतंत्रताओं को भी वापस ले लेंगे।'' और उन्होंने वैसा ही किया। जब भी मैं पहले की अपेक्षा मिली कम स्वतंत्रता के प्रति सचेत होता हूँ तो मैं श्री छंन के शाही तरीके के ज्ञान की प्रशंसा करता हूँ और कभी तो इच्छा होती है कि काश हमने जनता के तीन सिद्धांतों की प्रशंसा में गीत गाए होते। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है।

हालाँकि शाही चीन का तरीका तानाशाह तरीके का विपरीत मालूम पड़ता है लेकिन वास्तव में वे एक-दूसरे के पूरक हैं। देर-सवेर से तानाशाह भी आएगा। लोग इस उम्मीद में उसकी प्रशंसा के गीत भी गाएँगे कि तानाशाही कुछ कम होगी या उसे और नहीं बढ़ाया जाएगा।

इतिहासविदों के अनुसार हान साम्राज्य का पहला शासक राक्षस का पुत्र था। उसने एक उत्पीड़क के रूप में जीवन शुरू किया लेकिन उसे आक्रामक कहना सही नहीं है। जहाँ तक चाऊ के राजा ऊ का सवाल है उसने मध्यवर्ती राज्य में उसे जीतने की इच्छा से प्रवेश किया। वह शांगों से भिन्न जाति का था और आधुनिक अर्थों में उसे हम आक्रमणकारी कह सकते हैं। लेकिन हमारे पास यह जानने का कोई प्रमाण नहीं है कि लोग उस समय उसे क्या कहते थे। कन्फ्यूशियस और मंशियस ने शाही तरीके के पक्ष में पुरजोर दलीलें दीं। लेकिन वह चाऊ की प्रजा थे, जो राज्य-दर-राज्य घूमते थे और सक्रिय थे इसलिए उन्होंने शायद प्रशासक बनने के उद्देश्य से वैसा कहा हो। विनम्र शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि वह एक ऐसा तरीका लादना चाहते थे जो उनके प्रशासक बनने पर आसानी से लागू किया जा सकता और प्रशासक बनने का सबसे आसान रास्ता था चाऊ साम्राज्य की प्रशंसा करना। प्रमाणों के आधार पर हालाँकि चाऊ शासक शाही तरीके के संस्थापक और उसके प्रयोग में माहिर थे लेकिन जब राजा ऊ ने पहला हमला किया तो पो यी और शू ची ने उसका घोड़ा रोक लिया और तब तक विरोध करते रहे जब तक उन्हें बलपूर्वक हटा नहीं दिया गया। उसके बाद शांग की सेनाओं ने इतना कड़ा मुकाबला किया कि सारा मैदान

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके खून से रंग गया। उसी समय शांग की जनता ने विद्रोह कर दिया। हालाँकि उन्हें दुष्ट करार दिया गया और शाही तरीके के न्याय से ग़ैर कानूनी घोषित किया गया, फिर भी इसमें कुछ बेतुकापन दिखाई पड़ता है। एक दुष्ट जनता के विद्रोह ने संपूर्ण शाही तरीके को हास्यास्पद बना दिया।

कन्फ्यूशियसवादी और ताओवादी चीन की दो सम्माननीय देन हैं। ताओवादियों की सबसे बड़ी इच्छा अमरता की है और कन्फ्यूशियसवादियों की शाही तरीके की। लेकिन दुर्भाग्य सें चीन में इनमें से कोई भी इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकी। हमारे लंबे इतिहास के दौर के तथ्य गवाह हैं कि चीन में कभी भी शाही तरीका नहीं था और आज उसके अस्तित्व की बात करना तो बेहूदा है। मंशियस चाऊ साम्राज्य में रहा और वह तानाशाह तरीके की बात करके शर्मिंदा था। अगर वह आज ज़िंदा होता, जबकि मनुष्य का ज्ञान व्यापक हो गया है, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह शाही तरीके की बात करते हुए भी शर्मिंदा होता।

3. चीनी जेलें

मेरा विश्वास है कि मनुष्य अनुभव से ही सीखते हैं और इसीलिए मानव-गतिविधियों में परिवर्तन होते हैं। सुंग साम्राज्य से लगाकर छिंग साम्राज्य के अंत तक के लंबे काल में विद्वानों का चुनाव ऋषियों के विचारों का प्रतिपादन करने वाले लेख लिखने की योग्यता के आधार पर किया जाता था और फ्रांस[1] के हाथों चीन की पराजय तक इस पद्धति के दोष को समझा नहीं जा सका। उसके बाद इस स्थिति को ठीक करने के लिए चीनी छात्रों को अध्ययन के लिए पश्चिम में भेजा जाने लगा और गोला-बारूद के कारखाने लगाए गए। लेकिन जब जापान ने चीन को हराया[2] तो प्रशासकों ने महसूस किया कि केवल इतना ही काफी नहीं है और उन्होंने नए स्कूल खोलने शुरू किए। इससे हर साल उन्हें छात्रों की समस्याओं का सामना करना पड़ा। छिंग साम्राज्य के पतन के बाद जब क्वोमिनतांग ने सत्ता सँभाली तो उन्होंने समझ लिया कि यह भी एक गलती ही थी। लेकिन इस भूल सुधार का एकमात्र तरीका था नए कारावास बनाना।

1. चीनी फ्रांसीसी युद्ध में (1884-85)।
2. चीनी जापानी युद्ध में (1894)।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काफी पहले चीन में चीनी प्रकार के कारावास बहुतायत में थे। परंतु छिंग साम्राज्य की समाप्ति से पूर्व कुछेक पश्चिमी किस्म के आधुनिक कारावास बनाए गए। क्योंकि यह उस रास्ते में गुज़रने वाले विदेशियों को दिखाने के लिए ही थे इसलिए वे उन विद्यार्थियों की श्रेणी में ही आते थे जिन्हें आधुनिक तौर-तरीके सीखने के लिए विदेशों में भेजा जाता था जिससे कि वह विदेशियों से घुल-मिल सकें। इसी के चलते अपराधियों को बड़ा अच्छा बर्ताव मिला। उन्हें नहलाया जाता था और खाने को भी दिया जाता था। इसलिए यह वास्तव में ही बड़ी अच्छी जगहें थीं और दो या तीन सप्ताह पहले उदारता से शासन चलाने की इच्छा से सरकार ने कैदियों के खाने की कटौती के विरुद्ध एक आदेश जारी किया। तबसे यह स्थान और भी आनंददायक बन गए हैं।

जहाँ तक पुराने किस्म के कारावासों का सवाल है, वे बौद्धों के नरक के नमूने पर बनाए गए थे। इनमें क़ैदियों को बंद रखा जाता था और जेलर भी उन्हें यातनाएँ देते थे। वे अपने अधिकारों का कभी-कभी तो यहाँ तक दुरुपयोग करते थे कि क़ैदियों के रिश्तेदारों तक को मार-मार कर बेदम कर देते थे। लेकिन सब इसे उचित ही समझते थे। अगर किसी ने इसका विरोध किया तो उसे क़ैदी की वकालत समझा जाता था और उस पर किसी अशुभ पार्टी* से संबद्ध होने का संदेह किया जाता था। आधुनिक सभ्यता का इतनी तेज़ी से प्रसार हो रहा है कि पिछले ही साल एक पदाधिकारी ने किसी जगह यह सुझाव दिया था कि अपराधियों को अपनी कामवासना तृप्त करने के लिए साल में एक बार घर जाने का अवसर दिया जाना चाहिए। वास्तव में ही यह आदमी महान मानवतावादी है। असलियत यह है कि इस पदाधिकारी को अपराधी की कामेच्छा से कोई विशेष सहानुभूति नहीं। उसे पता था कि ऐसा कहने से कुछ होने-जाने वाला नहीं है इसीलिए ऐसा कहकर वह दुनिया के सामने अपना अस्तित्व सिद्ध करना चाहता था। लेकिन इससे लोगों के बीच चर्चा चल पड़ी। एक आलोचक ने घोषणा की कि अगर ऐसा किया गया तो लोगों के मन से जेल का भय ही ख़त्म हो जाएगा और वे खुशी-खुशी उसमें जाएँगे। उसने अफसोस के साथ कहा कि फिर नैतिकता कहाँ रह जाएगी! हम इस आदमी की सच्चाई और गंभीरता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते क्योंकि उसने वर्षों तक 'ऋषियों की

* चीन की कम्युनिस्ट पार्टी जिसे क्वोमिनतांग प्रतिक्रियावादी भद्दे नामों से पुकारते थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षाओं' से ज्ञान अर्जित किया है और वह उस पदाधिकारी की तुलना में कम धूर्त है। उसकी स्पष्ट राय है कि क़ैदियों के प्रति सख़्त व्यवहार ज़रूरी है।

दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो कारावास सुरक्षा चाहने वालों के लिए एक आदर्श शरणगाह है। न वहाँ आग लगती है, न चोरी होती है और न ही गुंडों के हमले। लड़ाई के समय भी कोई बमवर्षक जेलों को निशाना बनाने की बेवकूफी नहीं करेगा। क्रांति के समय भी क़ैदियों को मुक्त करने के उदाहरण तो देखे गए हैं, उन्हें मारने के नहीं। जब फ्यूचियन[1] ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया तो कहा जाता है कि अपराधियों को मुक्त; कर दिया गया था। यह भी सुना गया है कि जब वे छूटे तो उनके विरोधी ग़ायब हो गए। ऐसा उदाहरण अभूतपूर्व था। अतः कहना होगा कि जेल एक अच्छी जगह है। अगर लोगों को अपने परिवार भी साथ रखने की इज़ाज़त दे दी जाए तो अंदर जाने के लिए लोगों का ताँता ही लग जाएगा चाहे बाढ़, महामारी, लड़ाई या आतंक जैसी चीज़ें हों या न हों। इस स्थिति को रोकने के लिए ज़रूरी है कि जेलों में यातनाएँ दी जाएँ।

श्रीमान और श्रीमती नोलेंस को कम्युनिस्ट आंदोलनकारियों[2] के आरोप में जब नानचिंग जेल में डाला गया तो उन्होंने तीन-चार बार भूख-हड़तालें कीं। लोकिन उनका कोई असर नहीं हुआ। दरअसल वे चीनी जेलों की आत्मा को समझे ही नहीं। एक पदाधिकारी ने आश्चर्य से कहा—"अगर वे खाना नहीं चाहते तो इससे हमारा क्या ताल्लुक है!" इसका सरकार से क्या मतलब! और जेल के लिए थोड़े अनाज़ की बचत अच्छी बात है। अगर गाँधी ने अच्छी जगह न चुनी होती तो वह पूरी तरह असफल हुए होते।

लेकिन इन सुंदर जेलों में भी एक कमी है। इनमें क़ैदियों की विचारधारा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इस कमी को दूर करने के लिए विशेष प्रकार की नई बनाई जेलों को निर्देश दिए गए हैं कि उसे सुधारघर कहा जाए। मुझे अपने को सुधारने के लिए इनमें जाने का अभी मौका नहीं मिला है इसलिए मैं अधिक विस्तार से कुछ नहीं बता

1. 1933 नवंबर विद्रोह जब 19वीं रूट सेना ने च्यांग काई शेक के विरुद्ध विद्रोह कर क्रांतिकारी सरकार बनाई। शीघ्र ही वे पराजित हुए।
2. शांघाई में रह रहा एक प्रगतिशील विदेशी। 1931 में क्वोमिनतांग सरकार ने उसे सपत्नीक जेल में डाल दिया।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता। लेकिन मेरा अनुमान है कि वहाँ क़ैदियों को अपनी गलतियों का आभास कराने के लिए हर समय जनता के तीन सिद्धांत पढ़ाए जाते होंगे। मैंने सुना है कि आपको वहाँ कम्युनिज़्म के विरोध में शोध भी लिखना होता है। अगर आप ऐसा नहीं करें या कर सकते तो आपको इसके बारे में जीवन भर वहीं रहकर सोचना होगा। आजकल लोग इन जगहों में जाते हैं और लोग बाहर भी आते हैं। लेकिन जाने वालों की संख्या अधिक होगी इसीलिए इधर सुना है कि वे और अधिक 'सुधारघर' बना रहे हैं। कभी-कभार आप ऐसे अच्छे नागरिकों से मिलते हैं जिन्होंने वहाँ परीक्षा पास कर ली है और वे छूट गए हैं। लेकिन वे बुरे हाल में होते हैं। लगता है कि वे अपनी आत्मा की खोज करने या शोध लिखने में अपनी सारी शक्ति खो चुके हैं। उनका भविष्य निराशाजनक है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुराने रूपों को अपनाने के बारे में

मेरे विचार से अगर हम गहराई से इस सवाल पर विचार कर सकें तो 'पुराने रूपों को अपनाने' का सवाल आज भी महत्त्वपूर्ण है। लेकिन श्री ओइराइ ने इसे उठने से पहले ही ख़ारिज कर दिया है।[1] उसके अनुसार 'नए रूपों में प्रयोगों' के पिछले दस साल के परिणाम 'घुटना टेक' और 'अवसरवादी' सिद्ध हुए हैं। यह ऐसा ही है जैसे कोई अपने दुश्मन को पछाड़ने के लिए मंत्रोच्चारण करने लगे या उसे कीचड़ से लथपथ कर दे। लेकिन श्री ओइराइ एक ईमानदार आदमी हैं क्योंकि वे साथ ही 'कला की वस्तु और रूप'[2] का अनुवाद भी कर रहे हैं और उसका प्रकाशन उनके द्वारा लगाए गए तमाम तीखे आरोपों का जवाब होगा। लेकिन ऐसा नहीं है कि उनके द्वारा कहा गया हर शब्द गलत है। उसमें कुछ सही भी है। मसलन वह कहते हैं कि हमें नए रूपों में प्रयोग और पुराने रूपों को अपनाने में यांत्रिक रूप से भेद नहीं करना चाहिए, तो वे सही बात कह रहे हैं।

यह कहना कि कथ्य और रूप में यांत्रिक विभाजन नहीं किया जा सकता उसी तरह से आम तौर पर स्वीकृत बात है जैसे यह कि लेखन और जनता के बीच यांत्रिक विभाजन नहीं हो सकता। हम पुराने रूपों को 'अपनाते' हैं जबकि श्री ओइराइ उसे केवल 'संपूर्ण अतीत की कला की प्रशंसा' मानते हैं, केवल इस आधार पर कि हमें नए रूपों में प्रयोग करने चाहिएँ। किसी चीज़ के कुछ विशेष गुणों को अपनाना संपूर्ण की प्रशंसा नहीं है क्योंकि कोई भी प्रगतिशील कलाकार उन्हीं पुरानी अवधारणाओं (कथ्यों) का प्रयोग नहीं कर सकता। वह इसलिए कुछ विशेष गुणों को अपना सकता है क्योंकि वह जानता है कि लेखन को यांत्रिक रूप से जनता से अलग नहीं किया जा सकता। वह ज़माना गुज़र गया जब कला के बारे में यह धारणा प्रचलित थी कि वह कलाकार के

1.1 24 अप्रैल, 1934 के 'ट्रेंड्स' में छपे लेख की ओर संकेत।
2. जापानी लेखक कोरेतो कुरुहारा का एक निबंध।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'इलहाम' के क्षणों में उत्पन्न होती है जैसे छींक का अचानक आना नाक की खुजली से छुटकारा दिला देता है। आज के कलाकार आम जनता को सामने रखते हैं और उससे प्रतिबद्धता महसूस करते हैं। यह एक नई अवधारणा (कथ्य) है। इसीसे वे नए रूपों के प्रयोगों में प्रवृत्त होते हैं। इसके लिए पहला कदम है कुछ पुराने रूपों को अपनाना, जिससे वे नए की ओर बढ़ते हैं और पुराने को परिवर्तित करते हैं। मेरे विचार से न तो यह कथ्य और रूप का यांत्रिक विभाजन है और न ही इसे अवसरवादी कहकर कोसा जा सकता है। इसमें बहु-प्रचलित फिल्म 'दो बहनों'[1] की नकल जैसी भावना नहीं है।

पुराने रूपों को अपनाना या नए रूपों में प्रयोग करना कलाकार से कठिन परिश्रम की माँग करता है। लेकिन सिद्धांतकारों और आलोचकों की भी ज़िम्मेदारी है कि वे उनकी रचनाओं पर राय देकर उनका मार्गदर्शन करें और रचनाकारों से संवाद करें। दूसरों की केवल यह कहकर आलोचना करने से कि उसने स्पष्ट चित्रण किया, हम अपनी इस ज़िम्मेदारी से छुट्टी नहीं पा सकते। क्योंकि हमारी कला का एक इतिहास है और हम चीन में रहते हैं इसलिए ज़रूरी है कि हम चीनी कला के इतिहास को देखें। हम उसमें से क्या अपना सकते हैं? मुझे लगता है कि हालाँकि चांग से पूर्व अच्छी चित्रकला नहीं मिलती लेकिन फिर भी उनमें कथाओं को विषय बनाया गया है। यहाँ उनसे हमें एक सबक़ मिलता है। हम चांग कलाकृतियों से बौद्ध भित्तिचित्रों की गरिमा व रेखाओं की सरलता और स्पष्टता ले सकते हैं। उसी तरह हम शाही अकादमी के गीतचित्रों की प्रेमविह्वलता और स्त्रैणता को अस्वीकार कर उनकी सुस्पष्टता और अद्भुत परिष्कृति को अपना सकते हैं जबकि माइ फइ[2] स्कूल के प्रकृति चित्र हमारे लिए बिलकुल बेकार हैं। बाद के अभिव्यक्तिवादी चित्र (विद्वानों की कलाकृतियाँ) हमारे कितने उपयोगी हैं, मैं उस पर अभी कुछ कहने की स्थिति में नहीं हूँ। लेकिन उनमें भी कुछ उपयोगी गुण अवश्य ही मिल सकते हैं। कहना न होगा कि यह ग्रहण पुरावशेषों के कुछ हिस्सों का फुटकर प्रदर्शन नहीं बल्कि पुराने का नए में समोना है। यह मांस खाने जैसा है जिसमें हम खाल और गंद को फेंककर केवल पौष्टिक और उपयोगी को खाते हैं। मांस खाने मात्र से हम 'लगभग' बैल या भेड़ नहीं बन जाते।

1. शांघाई में बनी एक फिल्म।
2. सुंग साम्राज्य का एक चित्रकार (1015-1107)।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी हमने जिन उदाहरणों का हवाला दिया वे आज उपभोक्ताओं की उन कलाओं के रूप में दिखाई पड़ती हैं जो सत्ताधीशों की कृपादृष्टि के कारण बड़ी मात्रा में सुरक्षित रहीं। जहाँ उपभोक्ता होंगे वहाँ उत्पादक भी होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं की कला के साथ उत्पादकों की कला भी होगी। क्योंकि इस प्राचीन कला की किसी ने परवाह नहीं की इसलिए केवल कुछ प्राचीन रोमांसों के चित्रों में अलावा उसका अधिकाँश उपलब्ध नहीं है। आधुनिक काल में आज भी हम नए साल की रंगीन तस्वीरें और श्री मंग के[1] द्वारा बनाई गई चित्र पुस्तकें बाज़ार में देखते हैं। हालाँकि ये सच्चे उत्पादक कलाकारों की कृतियाँ नहीं हैं, फिर भी वे आरामपरस्त वर्गों की कला की विरोधी थीं। वे उपभोक्ताओं की कला से भी काफी हद तक प्रभावित हुईं। साहित्य में आज भी लोकगीत परंपरागत सात शब्दों की पद्धति पर लिखे जाते हैं। कलाओं में चित्रित विषय भद्र लोगों से संबंधित कहानियाँ थीं, लेकिन वे बहुत ही सुगठित और स्पष्ट रूप से ढली हैं। इस रूपांतर को सामान्यतः 'भ्रष्ट' माना जाता है। मैं समझता हूँ, जो कलाकार आम जनता से जुड़ा महसूस करता है उसके लिए इन्हें गंभीरता से लेने में कोई बुराई नहीं है। यह अलग से कहने की ज़रूरत नहीं है कि उन्हें इनमें सुधार भी करना होगा।

चीन में ये दोनों प्रकार की कलाएँ कभी-कभी एक जैसी लगती हैं जबकि वे अलग-अलग हैं। उदाहरण के लिए सारे बौद्ध चित्रों में चित्रित बादल और कुहासा एक सजावट से अधिक कुछ नहीं हैं जबकि नए साल के चित्रों में कागज़ की बचत के लिए हर इंच का उपयोग किया जाता है। थांग यिन[2] द्वारा चित्रित पतली कमर वाली और नाजुक उँगलियों वाली सुंदरियाँ उनके जैसे लोगों की खास पसंद थीं। लेकिन नए साल के चित्रों में उस तरह की सुंदरियाँ केवल एक सामाजिक प्रवृत्ति को दिखाने, हमारे ज्ञान को बढ़ाने या जिज्ञासा को शांत करने मात्र के लिए बनाई जाती हैं। जो कलाकार जनता के लिए चित्र बनाते हैं उन्हें इन विषयों से भी कन्नी काटने की ज़रूरत नहीं है।

यह बात सही है कि चित्र पुस्तकें चित्रकला का उसी तरह मात्र

1. अप्रैल 19, 1934 के 'ट्रेंड्स' में छपे एक लेख में।
2. मिंग साम्राज्य का एक प्रसिद्ध कलाकार।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक रूप हैं जिस तरह कविता, नाटक, कहानी और दूसरे अन्य रूप साहित्य का। विभिन्न रूपों का उदय सामाजिक स्थितियों से जुड़ा है क्योंकि हम देखते हैं कि एक काल में कविता फली-फूली, दूसरे में उपन्यासों की बाढ़ आ गई और कि कभी कहानियाँ अधिक लिखी गईं। हम जानते हैं कि इन रूपों का उदय उनके कथ्य से जुड़ा है। आज के समाज में चित्र पुस्तकों की लोकप्रियता यही सिद्ध करती है कि आज उनकी लोकप्रियता की स्थितियाँ और माँग मौजूद है। आज हर प्रगतिशील कलाकार का परम कर्त्तव्य है कि वह इस प्रवृत्ति को गंभीरता से समझे, उसे दिशा दे और कला को सामान्य जनता के लिए सहज बोधगम्य बनाए। पुराने कलारूपों को अपनाते समय कुछ चीज़ों को छोड़कर उसमें दूसरी चीज़ें जोड़कर उन्हें एक नए कलारूप में ढालना चाहिए। और यह काम इतना आसान नहीं है जितना तटस्थ लोग समझते हैं।

लेकिन नए कलारूपों की स्थापना के बाद भी हो सकता है वे उच्च स्तर की कला न बन सकें। कला की प्रगति के लिए दूसरे सांस्कृतिक कार्यों की सहायता की ज़रूरत होगी। यह बात बेमतलब होगी कि कोई एक सांस्कृतिक संगठन किसी एक विशेषज्ञ से स्तर को उठाने की माँग करे। ऐसा न कर पाने के लिए केवल कुछ व्यक्तियों पर सारा दोष मढ़ देना उतना ही बेतुका होगा जैसे सब चीज़ों के लिए परिस्थितियों को ज़िम्मेदार मान लेना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नया फ़ैशन चालू करना और परंपरा से चिपके रहना

ल्यू पा नुंग की मृत्यु के बाद पत्रिकाओं ने उस तरह हल्ला नहीं मचाया जिस तरह उन्होंने चू श्यांग और लू यिन को लेकर मचाया था।[1] कहा नहीं जा सकता ऐसा कितने दिनों तक चलेगा। लेकिन उसकी मृत्यु ने इन दोनों लेखकों से अधिक ग़हरा असर डाला है। उसे ऐसे महात्मा के रूप में पूजा जाने वाला है जो परंपरा से जुड़ा रहा। उसके पवित्र नाम को उन लोगों पर आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो 'फ़ैशन चालू'[2] करते हैं।

यह आक्रमण इसलिए शक्तिशाली होगा क्योंकि वह एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति था और उसने पहले आधुनिकों का साथ दिया था। आधुनिकों को आधुनिक का नाम लेकर पीटना ज़हर से ज़हर को मारने के समान है। यह जंग लगे पुराने हथियारों से ज़्यादा प्रभावशाली है। लेकिन यहीं एक मज़ाक भी सामने आता है। कैसा मज़ाक? ऐसा क्योंकर है कि ल्यू पा नुंग फ़ैशन चालू करने के बावजूद इतना प्रसिद्ध हो गया।

पिछली पीढ़ी के युवा लोग ल्यू पा नुंग को एक स्वर-वैज्ञानिक या एक घटिया कवि के रूप में नहीं बल्कि एक ऐसे आदमी के रूप में जानते थे जिसने 'मादा बत्तख़ और नर बत्तख़ और तितली' स्कूल[3] को त्यागा था, पांग चिग श्वान का पर्दाफ़ाश किया था और जो 'साहित्यिक क्रांति' की सेना का हिस्सा बनकर लड़ा था। उस समय इस फ़ैशन के प्रचलन

1. श्यांग (1904-33) कवि तथा आन हवेइ वि.वि. के अंग्रेज़ी के विभागाध्यक्ष थे। वे गरीबी से तंग आकर पानी में डूब गए थे। लू यिन (1898-1934) एक लेखिका, कड़े परिश्रम के बाद जिसकी मृत्यु हो गई थी।

2. जुलाई, 1934 में प्रगतिशीलता का मज़ाक उड़ाने के लिए लिन य्वी यांग ने इस फिकरे का प्रयोग किया था—'हालाँकि फ़ैशन चालू करना भी महत्त्वपूर्ण है लेकिन स्तर बनाए रखना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

3. शांघाई के नए 'प्रतिभाशाली विद्वानों और सुंदरियों' की उन कहानियों से अर्थ जो 1911 की क्रांति के बाद लिखी गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए उसकी निंदा की गई थी। लेकिन लगता है समय के साथ प्रगति भी होती है क्योंकि धीरे-धीरे उसके यह विशेषण भुला दिए गए और कुछ ऊपर चढ़ने पर और थोड़ा समझौता करके वह पूर्णतया सम्मानित महापुरुष मान लिया गया। लेकिन 'मनुष्य के लिए प्रसिद्धि उतनी ही ख़तरनाक है जितना सुअरों के लिए मोटा ताज़ापन।' अब उसे फ़ैशन कायम करने वाली बीमारी के प्रसार के विरुद्ध दवाई के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।

ऐसा नहीं कि अकेले ल्यू पा नुंग को ही यह दुर्भाग्य भुगतना पड़ा हो, उससे पहले भी कइयों के साथ ऐसा हुआ है। क्वांग छु में ऐसे अनेक विद्वान थे। यह और बात है कि उनमें से कोई भी खुंग यू वई जैसी ख्याति नहीं पा सका। इसका कारण था कि उसने अगुआ बनकर राजा को अभ्यर्थना भेजी और वह 1898 के सुधार में महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। इस प्रकार उसने फ़ैशन चलाया। इंग्लैंड जाकर पढ़ने वाले लोगों की कोई कमी नहीं थी फिर भी यान फू का नाम हमेशा याद किया जाएगा क्योंकि उसने अनेक विदेशी पुस्तकों के अनुवाद का गंभीर प्रयास किया। इस तरह उसने भी फ़ैशन चलाया। चिग वंश के अंत में केवल चांग थाइ येन ही एकमात्र ऐसा विद्वान नहीं था जिसने कन्फ्यूशियस धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया, फिर भी उसकी प्रसिद्धि सुन यीरांग को बहुत पीछे छोड़ गई। इसका कारण था कि उसने राष्ट्रीय क्रांति की वकालत करके एक नया फ़ैशन चलाया और न केवल फ़ैशन चलाया बल्कि उसके लिए 'विद्रोही' तक बन गया। अपनी-अपनी बारी के बाद ये लोग जीवित पुराणपंथी महात्माओं में बदल गए। लेकिन दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। खुंग यू वेइ[1] हमेशा राजतंत्र की पुनर्प्रतिष्ठा करने वाले संत के रूप में याद किया जाएगा। य्वैन शिखाई ने यान फु[2] से राजगद्दी पर अपने दावे का समर्थन चाहा था तथा मार्शल सुन च्वान फंग ने चांग थाइ येन सेथाउ हु[3] नामक पुरानी प्रथा को ज़िंदा करने के लिए कहा था। क्योंकि वे सभी अपनी मजबूत भुजाओं और टाँगों के बल गाड़ी को आगे

1. 1917 में खुंग यू वेइ ने उत्तर के सेनाध्यक्ष सामंत के साथ मिलकर चिंग साम्राज्य को बचाने के लिए कार्य किया।
2. प्रसिद्ध अनुवादक यान फू य्वैन शिखाई की राजशाही की इच्छाओं से सहानुभूति रखता था।
3. 1926 में सन छुवान फांग ने तो हू का पुराना खेल खेला जिसमें बर्तन में बाण मारे जाते थे, चांग थाई येन भी उसमें निमंत्रित था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खींच ले चलने वाले शक्तिशाली लोग सिद्ध हुए इसलिए उनसे अब दुबारा गाड़ी खींचने के लिए कहा गया है—इस बार आगे नहीं पीछे की ओर। हम अपनी ओर से कुछ न कहकर एक पुराने विलाप को उद्धृत करना चाहेंगे—काश! काश! तुम्हारी आत्मा उत्सर्ग के लिए आ सकती।[1]

मैं फ़ैशन प्रचलित करने के लिए ल्यू पा नुंग का मज़ाक नहीं उड़ा रहा हूँ क्योंकि मैं इस शब्द का प्रयोग उसके प्रचलित अर्थ 'पथ प्रदर्शक' के रूप में कर रहा हूँ। हालाँकि उसने स्वयं को 'रुग्ण' कहा है लेकिन वह कभी लड़ाका भी था। मैं उम्मीद करता हूँ कि जो लोग उसे प्यार करते हैं या उसका सम्मान करते हैं वे अपने मन माफ़िक उसके नाम को कीचड़ उछालने या विज्ञापन की तरह इस्तेमाल करने की जगह उसकी प्रसिद्धि के कारणों की गहरी पड़ताल करने की कोशिश करेंगे।

---

1. पुराने ज़माने में मरे हुओं की भेंट में दिए भाषण अंतिम वाक्य। यहाँ इसका अर्थ है कि ये लोग ख़त्म हो गए हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीनी साहित्य में भूत और प्रेत

जब क्वोमिनतांग ने कम्युनिस्टों से सहयोग ख़त्म करने का रास्ता अपनाया तो कहा गया कि क्वोमिनतांग तो पहले भी उनका इस्तेमाल कर रहा था, कि वह तो उत्तरी अभियान की समाप्ति के समय से ही उन्हें ख़त्म करने की योजना बना चुका था। मैं इस सब पर विश्वास नहीं करता। ऐसा नहीं था कि क्वोमिनतांग में कुछेक प्रभावशाली व्यक्ति ही कम्युनिज़्म के पक्ष में थे। इसका प्रमाण है उनके द्वारा शिक्षा के लिए अपने बच्चों का सोवियत संघ में भेजा जाना। मैं समझता हूँ कि चीन में माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के प्रति सजग हैं और वे उन्हें ऐसी जगह प्रशिक्षण के लिए कभी नहीं भेज सकते जहाँ उन्हें बरबाद किया जाता हो। लेकिन इन प्रभावशाली लोगों ने शायद गलती की। उन्होंने सोचा कि अगर चीन किसी दिन कम्युनिस्ट हो गया तो उनकी शक्ति, धन और रखैलों में बढ़ोतरी होगी या कम-से-कम वे पहले से बदतर स्थिति में तो नहीं ही होंगे।

हमारी एक पुरानी किंवदंती में कहा गया है कि दो हज़ार साल पहले एक श्री ल्यू को काफी तपस्या के बाद अमरता प्राप्त हो गई और वह अपनी पत्नी के साथ स्वर्ग उड़कर जा सकता था। लेकिन उसकी पत्नी अपना पुराना घर, मुर्गे और कुत्ते को नहीं छोड़ना चाहती थी, इसलिए उसने स्वर्ग जाने से मना कर दिया। श्री ल्यू ने देवताओं से प्रार्थना की कि वे उनके साथ पुराने घर, मुर्गों और कुत्ते को भी आने दें। उसके बाद वे सभी अमर हो गए। लेकिन यह इतना बड़ा परिवर्तन कोई परिवर्तन ही नहीं हुआ। अगर कम्युनिस्ट राज्य में भी लोग वही पुराना ठाटबाट बनाए रख सकें और वैसा ही भोग-विलास का जीवन बसर कर सकें, तो शायद वे उसे पसंद करेंगे। लेकिन बाद की घटनाओं ने सिद्ध किया कि कम्युनिज़्म देवताओं की तरह उदारमना नहीं है तो उन्होंने कम्युनिस्टों को नष्ट करने की ठान ली। हालाँकि उन्हें अपने बच्चों के भविष्य की बेहद चिंता है लेकिन उन्हें अपनी ज़िंदगी की चिंता उनसे भी ज़्यादा है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसलिए हर कहीं उन युवा लोगों को, जो कम्युनिस्ट हैं या जिन पर कम्युनिस्ट होने का संदेह है, जो वामपंथी हैं या जिन पर वैसा होने का संदेह है, अपनी और शक्ति-संपन्नों की गलतियों को अपने खून से साफ करना होगा। क्योंकि शक्तिशालियों ने गलतियाँ युवाओं के कारण कीं इसलिए सत्ताधीश भी स्वयं को युवाओं के खून से साफ करेंगे। लेकिन दूसरे अनेक युवा जो इससे बेखबर हैं, सोवियत संघ में अपनी शिक्षा पूरी कर मंगोलिया के रास्ते ऊँटों पर चढ़कर खुशी-खुशी वापस आते हैं। मुझे याद है एक विदेशी सैलानी को यह सब बेहद पीड़ाजनक लगा था। वे यह महसूस ही नहीं कर रहे कि उनके अपने देश में फाँसी के तख़्ते उनका इंतज़ार कर रहे हैं—जी हाँ, फाँसी के तख़्ते। लेकिन फाँसी के तख़्ते इतने बुरे नहीं हैं। केवल गले में रस्सी का फंदा लटका देना तो फिर भी अच्छा व्यवहार कहा जाएगा। हर कोई फाँसी के तख़्ते पर नहीं मरता। कुछ लोग उन मित्रों के पैरों को खींचकर बच जाते हैं जो फाँसी पर लटके हुए हैं। यह उनकी भूल सुधार का प्रमाण है और जो ऐसा कर सकते हैं वे महान आत्माएँ हैं।

उसके बाद से चीन में वे सभी कम्युनिस्ट, जो भूल सुधार करने के लिए तैयार नहीं हैं, ऐसे अपराधी मान लिए गए हैं जिनकी सज़ा है मृत्युदंड। और ये अपराधी दूसरों को अपार संभावनाएँ प्रदान कर रहे हैं। वे ऐसी वस्तु बन गए हैं जिन्हें बेचा जा सकता है, जो लोगों को नए पद और अवसर दिलाते हैं। स्कूल के झगड़ों में या प्रेम में जब एक पक्ष को कम्युनिस्ट अपराधी करार दे दिया जाता है तो समाधान बहुत ही आसान हो जाता है। अगर आप किसी धनी कवि से बहस शुरू कर दें तो उसका निष्कर्ष होगा—'कम्युनिस्ट पूँजीवादियों का विरोध करते हैं। क्योंकि मेरे पास धन है इसलिए वह मेरा विरोध करता है। इसलिए वह कम्युनिस्ट है।' इस प्रकार कलादेवी विजयी होकर सोने के रथ पर चढ़कर लौटती है।

लेकिन इन युवा क्रांतिकारियों के खून ने क्रांतिकारी साहित्य की जड़ों को सींचा है और उसे पहले से अधिक क्रांतिकारी बनाया है। क्योंकि सरकार के पास ऐसे कुछ युवा लोग हैं जिन्होंने विदेशों में ज्ञान प्राप्त किया है इसलिए वे यह सब जानते हैं। पहले उन्होंने प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने, लेखकों को सज़ा देने तथा अंततः उनकी हत्या के अनेक हथकंडे अपनाए। इसकी मिसाल कायम करने के लिए पाँच वामपंथी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखकों की हत्या कर दी गई।[1] इसकी खुलेआम घोषणा नहीं की गई क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसी चीज़ें कही नहीं जातीं, कर दी जाती हैं। जैसी कि पुरानी कहावत है—'आप घोडे की पीठ पर साम्राज्य जीत सकते हैं लेकिन घोड़े की पीठ से उस पर शासन नहीं कर सकते।' इसलिए क्रांतिकारी साहित्य को नष्ट करने के लिए उन्हें साहित्यिक हथियारों की ईजाद करनी पड़ी।

इस तरह का एक हथियार उन्होंने निकाला 'राष्ट्रवादी साहित्य' का।[2] इसके लेखकों ने विभिन्न लोगों के रंगों का अध्ययन करने के पश्चात् निर्णय लिया कि एक ही रंग के लोगों को साथ मिलकर कार्यवाही करनी चाहिए। पीली चमड़ी के सर्वहारा को पीली चमड़ी के पूँजीपति के विरुद्ध संघर्ष करने की बजाय सफेद चमड़ी के सर्वहारा के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। और उन्होंने चंगेज़ खान को अपना आदर्श मानकर कहा कि उसके पोते बातू खान ने किस तरह पीली सेना को रूसी सभ्यता के ध्वंश के लिए इस्तेमाल किया तथा किस तरह संभ्रांत और सामान्य लोगों को दास बनाया।

हालाँकि लड़ाई में एक मंगोल खान का अनुकरण करना चीनी जाति के लिए कोई गौरव की बात नहीं लेकिन रूस को नेस्तनाबूद करने के लिए यह ज़रूरी है। हमारे प्रशासक जानते हैं कि पुराना रूस आधुनिक रूस में परिवर्तित हो गया है जिसके सिद्धांत उनकी शक्ति, संपत्ति, और रखैलों को बढ़ने देने के विरुद्ध है। लेकिन हमारे समय का बातू खान कोन है?

सितंबर 1931 में जापान द्वारा हमारे उत्तर पूर्वी प्रांतों पर कब्ज़े ने दूसरों के अनुकरण पर चीन द्वारा सोवियत संघ को नष्ट करने का अवसर प्रदान किया और हमारे 'राष्ट्रवादी साहित्य' को इससे संतुष्ट होना चाहिए। लेकिन चीन के आम आदमी के लिए तीन उत्तर पूर्वी प्रांतों का खोना भविष्य में सोवियत संघ के नष्ट करने से ज़्यादा महत्त्व रखता है। इसलिए वह उत्तेजित हो गया। इसलिए 'राष्ट्रवादी साहित्य' के लेखकों को अपने पंखों को कतरना पड़ा और आह भरकर रह जाना

1. 17 जनवरी, 1931 को वामपंथी लेखक लीग के पाँच सदस्यों को क्वोमिनतांग प्रशासकों ने गिरफ़्तार कर 7 फ़रवरी को मार डाला।

2. क्वोमिनतांग द्वारा चीन पर जापानी आक्रमण के प्रति अपने नकारापन को छुपाने के लिए दिया गया नारा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ा। अनेक युवा उत्साही सशस्त्र विरोध की माँग के लिए प्रदर्शन करने नानचिंग गए। उन्हें कड़ी सज़ाएँ मिलीं। उन्हें कई दिनों तक खुले खेमों में पड़े रहने के बाद ही नानचिंग को जाने वाली रेलगाड़ियों में चढ़ने दिया गया। कई को तो पैदल ही यात्रा करनी पड़ी। इसके अलावा उन्हें नानचिंग में पहले से ही प्रशिक्षित 'सभ्य' लोगों की सेना का सामना करना पड़ा जो कोड़ों, पिस्तौलों से लैस थी। उन्होंने उन्हें बेरहमी से मारा। उनमें से कुछ लापता हो गए और अनेक पानी में डुबो दिए गए। अख़बारों की ख़बरों के अनुसार वे ही पानी में कूदे थे।

उसके बाद 'राष्ट्रवादी साहित्य' के लेखकों की चीख़ चिल्लाहट रुक गई और वे शवयात्रा में शोक मनाने का कार्य कर ग़ायब हो गए। यह शांघाई में शवयात्रा की तरह ही था। वे बाजे वालों और अन्य लोगों की उस भीड़ की तरह थे जो ऐसे आह भरते हैं मानो गाना ग़ा रहे हों। लेकिन उनका असली काम है शोक को दबा देना, जिससे कि उसे भुला दिया जाए। जब यह उद्देश्य हासिल कर लिया जाता है तो वे विसर्जित हो जाते हैं और कोई जुलूस नहीं रहता।

लेकिन इस सबके बावजूद क्रांतिक़ारी साहित्य में अवरोध उत्पन्न होने की बजाय उसका विकास और विस्तार हुआ है और उसमें पाठकों का विश्वास भी बढ़ा है। दूसरे पक्ष ने तथाकथित 'तीसरी श्रेणी' पैदा की। ये लोग वामपंथी तो नहीं थे, दक्षिणपंथी भी नहीं लगते थे। त्रिशंकु थे। उनके लिए साहित्य शाश्वत था जबकि राजनीतिक स्थितियाँ क्षणभंगुर। इसलिए साहित्य को राजनीति के साथ नहीं जोड़ा जा सकता। अगर जोड़ा गया तो साहित्य के स्थाई मूल्य समाप्त हो जाएँगे और चीन में अमर साहित्य समाप्त हो जाएगा। लेकिन साहित्य के प्रति पूर्णतया समर्पित ये 'तीसरी श्रेणी' के लोग भी कोई अमर रचना नहीं दे सके। क्यों? क्योंकि साहित्य की समझ से रहित सिरफिरे वामपंथी आलोचकों ने उनकी इतनी कटु और गलत आलोचना की कि वे लिख ही नहीं पाए। ये वामपंथी आलोचक चीनी साहित्य के हत्यारे हैं।

'तीसरी श्रेणी' के इन भद्रजनों ने न तो कुछ प्रकाशनों पर सरकारी प्रतिबंध पर ही कोई प्रतिक्रिया की, न लेखकों की हत्या पर ही। ये सवाल तो राजनीतिक थे और इनके बारे में बात करना उनकी रचनाओं के शाश्वत मूल्य को नष्ट कर देता। इसके साथ ही जिन लोगों ने 'चीनी साहित्य के हत्यारों' को सज़ा दी और मारा उन्होंने ही 'तीसरी श्रेणी' की महान और अमर रचनाओं को संरक्षण दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हालाँकि उन्होंने अपनी शिकायतों को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया लेकिन वे इतनी कमज़ोर थीं कि उससे क्रांतिकारी साहित्य का कुछ भी नहीं बिगड़ पाया। इसलिए जब 'राष्ट्रवादी साहित्य' अपनी मौत मर गया और 'तीसरी श्रेणी' का भी पराभव हो गया तो प्रशासकों को एक बार फिर से असली हथियारों की शरण लेनी पड़ी।

नवंबर 1933 में यिहुआ फिल्म कंपनी पर शांघाई में गुंड़ों ने हमला किया और उसे भारी नुकसान पहुँचाया। हमलावर पूरी तरह संगठित थे। एक सीटी बजी तो उन्होंने हमला शुरू किया और दूसरी सीटी बजते ही वे रुक गए और भाग गए। उन्होंने एक पर्चा भी छोड़ा, जिसमें इस हमले का कारण यह बताया गया कि कंपनी कम्युनिस्टों का प्रचार करती है। उनके ये हमले एक फिल्म कंपनी तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि पुस्तकों की दुकानों पर भी हुए। कुछ हमलों में तो गुंडों ने सब कुछ नष्ट कर डाला, कुछ में दुकान की खिड़कियों के कीमती शीशों को पत्थरों से तोड़ डाला गया। यहाँ भी कारण यही बताया गया कि ये दुकानें कम्युनिस्टों द्वारा इस्तेमाल की जा रही हैं। कीमती शीशों की इस असुरक्षा ने दुकान के मालिकों को बेहद दुःखी कर दिया। कुछ दिनों बाद कुछ 'लेखक' अपनी 'महान रचनाएँ' बेचने के लिए आए और यह जानते हुए भी उन्हें कोई नहीं पढ़ेगा, प्रकाशकों ने उनकी पांडुलिपियों को स्वीकृत किया क्योंकि उनका दाम खिड़की के शीशे से भी कम था और उन्हें खरीदकर वे दुबारा शीशे तुड़वाने से बच सकते थे और मरम्मत के झंझटों से मुक्त रह सकते थे।

इस प्रकार पुस्तक की दुकानों पर ये हमले कारगर कार्यनीति बन गए। लेकिन इसके लिए केवल पत्थर ही काफी नहीं थे। केंद्रीय प्रचार समिति ने 149 ख़तरनाक किताबों की एक लंबी सूची बनाई जिसमें अधिक बिक्री वाली लगभग सभी किताबों को शामिल कर लिया गया। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि चीन के वामपंथी लेखकों की अधिकाँश रचनाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया और अनुवाद भी इसकी सीमा में आ गए जिनमें गोर्की, लूनाचार्स्की, फेदिन, फेदेयेव, सेराफिमोविच तथा अप्टन सिक्लेयर, माएतरलिंक, सोलोगब और स्ट्रिंडबर्ग जैसे लेखकों के अनुवाद भी शामिल थे।

इसने प्रकाशकों को बड़ी परेशानी में डाल दिया। कुछ ने फौरन ही किताबें आग के हवाले करने के लिए दे दीं, दूसरों ने स्थिति से निपटने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए प्रशासकों से समझौते करके कुछ किताबें बचा लीं। भविष्य में प्रकाशन की परेशानियों से बचने के लिए प्रकाशकों और प्रशासकों की एक बैठक हुई तथा अच्छी रचनाओं और प्रकाशकों की पूँजी को बचाने के उद्देश्य से पत्रिकाओं के संपादकों के रूप में 'तीसरी श्रेणी' ने जापानी रास्ते को अपनाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि प्रकाशन से पहले पांडुलिपियों को प्रतिबंधकों से स्वीकृत करा लेना चाहिए जिससे कि दूसरे लेखकों की पुस्तकें वामपंथी होने के आरोप में प्रतिबंधित न हों और जिससे कि छपने के बाद प्रतिबंध लगने से प्रकाशकों की पूँजी न डूबे। सभी पक्षों ने सर्वसम्मति से इस सुझाव को स्वीकार किया। यह रास्ता बातू खान के पुराने तरीके से भिन्न था।

इसे तुरंत अमल में लाया गया। इस जुलाई में शांघाई में पुस्तकों और पत्रिकाओं को सेंसर करने के लिए एक समिति बनाई गई, जिससे कि अनेक लेखकों को बेरोज़गारी से बचाया जा सके। सेंसर समिति की कई कुर्सियों पर तो 'सुधरे हुए' क्रांतिकारी लेखक बैठे तथा दूसरी 'तीसरी श्रेणी' के उन लेखकों ने भरीं जो साहित्य और राजनीति में किसी भी संबंध का विरोध करते हैं। ये लोग साहित्य से पूरी तरह परिचित हैं तथा नौकरशाहों से अधिक साफ दिमाग़ रखते हैं और यह बात ज़्यादा अच्छी तरह समझते हैं कि किसी व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति या टिप्पणी का क्या अर्थ है। जो भी हो, एक लेखक के लिए कलाकारी रचनात्मक कार्य से आसान चीज़ है और हमने सुना है कि इसके बड़े अच्छे परिणाम निकले हैं।

फिर भी कहना होगा कि जापान का उदाहरण देकर उन्होंने गलती की। यह सही है कि जापान में वर्ग-संघर्ष की बात करने की मनाही है लेकिन वे इस हद तक नहीं जाते कि इस बात को ही अनदेखा कर दें कि दुनिया में वर्ग-संघर्ष है। लेकिन चीन में ये लोग वर्ग-संघर्ष के अस्तित्व से ही इन्कार करते हैं और इसे कार्ल मार्क्स की मनगढ़ंत बात कहकर सच्चाई के हक़ में इस पर प्रतिबंध लगाने की वकालत करते हैं। यह सही है कि जापान में भी पुस्तकों और पत्रिकाओं को सेंसर किया जाता है लेकिन वहाँ कटे हुए स्थानों को खाली छोड़ दिया जाता है जिससे कि पाठक देख सकें कि उसे सेंसर किया गया है। लेकिन चीन में खाली स्थान छोड़े बिना ही ऐसा किया जाता है। पाठक समझते हैं कि लेख पूर्ण है और लेखक बेसिरपैर की बक़वास कर रहा है। फ्रिशे, लूनाचार्स्की आदि को भी इससे नहीं बख़्शा गया है और चीनी पाठकों को उनकी रचनाएँ भी असंबद्ध बक़वास लगने लगती हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब प्रकाशकों की पूँजी सुरक्षित है और 'तीसरी श्रेणी' का भी विसर्जन हो गया है। शायद अब वे सूली पर टँगे दूसरे लेखकों की टाँगें खींचने के गुप्त कार्य में लगे हैं और अब उनका प्रतिनिधित्व करने वाली रचनाएँ भी दिखाई नहीं पड़तीं क्योंकि वे तो जीवन मरण का फैसला करने वाली सेंसर की कलम और शक्ति के कामों में व्यस्त हो गए हैं। सभी पाठक देख रहे हैं कि पत्रिकाएँ अत्यंत घटिया हो गई हैं, उनके लेखकों का स्तर गिर रहा है और दूसरे देशों के प्रगतिशील लेखक अचानक मूर्खों में बदल गए हैं।

लेकिन साहित्यिक मोर्चे पर विभाजन पहले की अपेक्षा अधिक तेज़ हो गया है। कोई भी विभ्रम अधिक दिनों तक नहीं चल सकता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यंग्य पर

पूर्वाग्रहों से पूर्णतया मुक्त रह पाना मुश्किल है। जब हम कोई व्यंग्य देखते हैं तो हम उसे अच्छा साहित्य मानने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि हमें शुरू से ही सिखाया गया है कि व्यंग्य कोई अच्छी चीज़ नहीं है। लेकिन आप किसी भी सामाजिक समारोह में चले जाइए आपको इस तरह के दृश्य दिखाई पड़ जाएँगे। दो मोटे भद्र पुरुष हाथ बाँधे, कमर झुकाए चमकदार चेहरों से इस तरह का औपचारिक वार्तालाप करते मिलेंगे :–

"आपका शुभ नाम?"

"मेरा अकिंचन नाम छ्येन है।"

"बहुत खूब। मैं काफी दिनों से आपसे मिलना चाह रहा था। मैंने अभी आपका सम्माननीय उपनाम तो पूछा ही नहीं?"

"मेरा विनम्र उपनाम क्वोथिग है।"

"सुंदर! बहुत सुंदर! और आपके शहर का नाम?"

"शांघाई।"

"वाह! बहुत खूब!! वास्तव में ही!"

किसी को भी इस पर आश्चर्य नहीं होता। लेकिन अगर आप इसे एक कहानी में लिख दें तो लोग इसे दूसरी तरह लेंगे और इसे व्यंग्य मान लेंगे। इस प्रकार वे लेखक जो इस तरह की सच्चाई का वर्णन करते हैं उन्हें भद्रजन अधिकारिक तौर से व्यंग्य लेखक करार देते हैं। अब पता नहीं ऐसा वे प्रशंसा में कहते हैं या निंदा में। यही चीज़ हमें चीन में चिंग फिंग मेइ में मिलती है जब सेंसर थ्साइ शी मन छिंग की प्रशंसा करते कहता है–"मैं तो वांग आन शि के बराबर नहीं हूँ लेकिन श्रीमन आपमें तो वांग शीची के सारे गुण विद्यमान हैं।" और 'विद्वान'[1] में हम फान चिन को हाथी दाँत के चीनी काँटों के उपयोग से मना करते देखते हैं

1. चिंग काल में लिखा गया ऊ चिंग त्ज़ का उपन्यास जिसमें परीक्षा-पद्धति का मज़ाक उड़ाया गया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि वह शोक सतंप्त है। लेकिन वही चिड़ियों के घोंसले से एक बड़ा मछली का पकौड़ा उठाकर अपने मुँह में डाल लेता है। आज भी इस तरह की बातें देखने को मिल जाती है। जहाँ तक विदेशी रचनाओं का सवाल है, इधर चीन के पाठक गोगोल की रचनाओं में काफी रुचि ले रहे हैं जिसके 'ओवर कोट' में (जिसका अनुवाद वेइ सुय्वान ने किया है) में बड़े और छोटे अफसर हैं तथा 'द नोज़' में (जिसका अनुवाद श्वी श्या[1] ने किया है) भद्रजन, डॉक्टर और निकम्मे लोग हैं। इस तरह के पात्र आज भी चीन में मिल जाएँगे। ये वास्तविक लोग हैं और बहुत ही सामान्य हैं लेकिन फिर भी हम उसे व्यंग्य कहते हैं।

कुछ लोग प्रसिद्धि के पीछे पड़े रहते हैं। वे अपने ही जीवन काल में अपनी जीविनियाँ लिखते हैं और सोचते हैं कि उनके मरने के बाद लोग उन पर श्रद्धांजलियाँ लिखेंगे या उनके लिए प्रशंसागीत लिखेंगे या शायद 'राष्ट्रीय इतिहास ब्यूरो को उनकी जीवनी लिखने के ही आदेश दे देंगे।' यह तो नहीं कहा जा सकता कि सभी लोग अपने अवगुणों के प्रति अंधे हैं, लेकिन फिर भी वे इन्हें छोड़ना नहीं चाहते और उम्मीद बाँधे रहते हैं कि वे बिना निशान छोड़े ही ख़त्म हो जाएँगे और अपने पीछे रसोई के उन गुणों को छोड़ जाएँगे जिन्हें उन्होंने भूखों के लिए खोला था। लेकिन उनका व्यवहार इससे मेल नहीं खाता। वे जानते हैं कि 'प्रशंसनीय-प्रशंसनीय' भावुकता का बहाव है। उनका विश्वास है कि ये शब्द बोलने के बाद भुला दिए जाएँगे और उनकी जीवनियों में स्थान नहीं पा सकेंगे। इसलिए वे बड़ी बेशर्मी से उनका हवाला देते हैं। और यदि कोई उसकी उपेक्षा करने की बज़ाय उसे ही लिख दे तो वे बेहद नाराज़ हो जाते हैं। वे बहुत सोचकर अपनी सच्चाई छिपाने के लिए उन पर आक्रमण करते हैं और उस लेखक पर कीचड़ उछालते हैं कि यह तो 'व्यंग्य' है और बिना सोचे-समझे मान जाते हैं कि हाँ यह तो व्यंग्य है। हम झाँसे में आ जाते हैं।

यह बात 'गालियाँ देने' के बारे में भी सच है। अगर आप शांघाई के चौथे एवेन्यू पर एक वेश्या को किसी आदमी का दिल बहलाव करते देखें और कहें कि "देखो वेश्या ग्राहक पटा रही है" तो वह आपको गाली देगी कि आप उसे 'गाली दे रहे हैं' और 'गाली देना' एक बुरी चीज़ है। और क्योंकि आपको बुरा करार दिया गया इसलिए दूसरा अच्छा होना ही

1. लू शुन का ही नाम।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहिए। जहाँ तक असलियत का सवाल है, यह सच था कि 'वेश्या ग्राहक पटा रही थी', लेकिन यह आपको कहना नहीं चाहिए था। अगर आपको कहने के लिए मज़बूर होना ही पड़े तो केवल इतना कहिए—''युवा स्त्री अपने कार्य में व्यस्त है।'' इसी तरह उन लोगों के बारे में भी जो हाथ बाँधे कमर तक झुकते हैं, आपको बस यही कहना चाहिए कि ''वे अपने व्यवहार में कितने सभ्य और निश्छल हैं।'' तभी आप लोगों को 'गाली देने' से बच सकते हैं और व्यंग्यात्मक होने से बरी हो सकते हैं।

सच तो यह है कि अधिकांश तथाकथित आधुनिक व्यंग्यों में सच्चाई होती है। अगर आप सच्चाई नहीं लिखते तो वह 'व्यंग्य' नहीं हो सकता। झूठा व्यंग्य—अगर कोई ऐसी चीज़ होती है तो—मात्र अफ़वाह या कीचड़ उछालना ही होगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यंग्य क्या है?

मैं समझता हूँ कि जब एक लेखक लोगों के किसी गुट के विभिन्न पक्षों की सच्चाई को बताने के लिए सटीक या अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का प्रयोग करता है तो वे लोग, जिनके बारे में उसने लिखा है, इसे 'व्यंग्य' कहते हैं।

इसलिए सच्चाई व्यंग्य की ज़िंदगी है। यह सच्चाई ज़रूरी नहीं है कि यथार्थ घटनाओं पर ही आधारित हो बल्कि संभावित पर भी आधारित हो सकती है। इसलिए व्यंग्य न तो 'मनगढ़ंत' होते हैं, न 'निंदा', न 'गुप्त• बातों का उद्घाटन', न मात्र 'सनसनीखेज़ ख़बरें' और 'अज़ीबोग़रीब वाक़ये'। उनमें वर्णित घटनाएँ सार्वजनिक रूप से और अक्सर घटती रहती हैं लेकिन उन्हें सामान्य मानकर छोड़ दिया जाता है। हालाँकि ये घटनाएँ तर्कहीन, हास्यास्पद, बेहूदा और असहनीय होती हैं लेकिन क्योंकि लोग उनके अभ्यस्त हो चुके हैं इसलिए उन पर जनता को कोई अचंभा नहीं होता। फिर भी यदि उन्हें ठीक तरह से रेखांकित करके पेश कर दिया जाए तो काफी सनसनी पैदा कर सकती हैं। मसलन यह एक आम बात है कि एक युवा व्यक्ति पश्चिमी पोशाक पहन बुद्ध की पूजा करे या कोई नैतिकतावादी आपे से बाहर हो जाए। यह चीज़ें कुछ मिनटों में घटित होकर फिर हमेशा के लिए ग़ायब हो जाती हैं। लेकिन अगर व्यंग्य इसी मौक़े पर हवा में उठे युवा आदमी के नितम्बों और गुस्से में लाल-पीले नैतिकतावादी की तस्वीर खींच ले तो यह न केवल देखने वाले की आँखों को बुरी मालूम पड़ेंगी बल्कि उन लोगों को भी, जिनकी यह हैं। अगर इन तस्वीरों को वितरित कर दिया जाए तो वे इन लोगों द्वारा विज्ञान की बड़ी योजनाओं की वकालत या कन्फ्यूशियन नैतिकता की कलई खोल देंगी। यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह तस्वीर वास्तविक नहीं है क्योंकि हर आदमी उसे पहचानता है और जानता है कि ऐसी चीज़ें होती हैं। लेकिन संबंधित लोग इन्हें कभी स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि इससे उनकी बदनामी होती है। इसलिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चालाकी से वे इन्हें 'व्यंग्य' करार देते हैं। दूसरे शब्दों में इनका लिखा जाना बेकार है क्योंकि यह जानबूझकर ऐसे मामलों को उठाती हैं।

लेकिन व्यंग्य की कला इसी में है कि वह जानबूझ कर ऐसे ही मामलों को सामने लाए और उनकी असलियत खोले, भले ही इसमें अतिशयोक्ति का सहारा लेना पड़े। अगर इसी घटना को लापरवाही से और कलाशून्य तरीके से लिखा जाए तो वह व्यंग्य नहीं होगा, वह किसी को प्रभावित भी नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए मुझे इस साल की दो ख़बरें याद पड़ती हैं। एक का संबंध उस युवा से है जो अपने को सेना का अफसर कहकर लोगों को ठगता था। जब उसका भंडाफोड़ हुआ तो उसने यह स्वीकारोक्ति लिखी कि उसने और किसी कारण से नहीं बल्कि जीविकोपार्जन के लिए ऐसा किया। दूसरी का संबंध एक चोर से है जिसने कुछ शिष्यों को चोरी करने की कला सिखाई। जब माँ बापों को यह पता चला और उन्होंने अपने लड़कों को घरों में बंद कर दिया तो चोर उन्हें धमकी देने गया। अख़बार अक्सर महत्त्व के मामलों पर विशेष टिप्पणियाँ प्रकाशित करते हैं लेकिन इन घटनाओं पर उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं की। शायद उन्होंने मान लिया कि ये तो बहुत मामूली बातें हैं जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि अगर यह मसाला स्विफ्ट या गोगोल के हाथ पड़ गया होता तो यह एक सुंदर व्यंग्य में बदल जाता। कुछ समाजों में कोई घटना जितनी आम और बहुतायत में होगी उतनी ही वह व्यंग्य के लिए माकूल होगी।

हालाँकि व्यंग्य के केंद्र बने लोग सामान्तया व्यंग्यकार से घृणा करते हैं पर उसके इरादे प्रायः अच्छे ही होते हैं। वह उन लोगों को डुबाने के लिए नहीं लिखता बल्कि इस उम्मीद से लिखता है कि उनमें बेहतर परिवर्तन हो सके। जब कोई व्यंग्यकार किसी गुट में जाता है तो वह गुट पहले से ही डूब चुका होता है। ज़ाहिर है कि उसे लेखन से बचाया नहीं जा सकता। अतः उसके प्रयास आम तौर पर निरर्थक होते हैं या उनका उल्टा प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि जब वह मात्र उनकी ख़ामियों या विसंगतियों का उद्घाटन करता है तो उसका उपयोग विरोधी गुट द्वारा किया जाता है। मैं समझता हूँ, इस दूसरे गुट को व्यंग्य का केंद्र बने लोगों से भिन्न मानकर इन मामलों को देखना चाहिए और 'इसे व्यंग्य' मानने की बजाय 'भंडाफोड़' मानना चाहिए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगर कोई रचना व्यंग्यात्मक होते हुए भी किसी सकारात्मक उद्देश्य और गंभीर भावना से रहित है या वह पाठकों पर यह प्रभाव डालती है कि दुनिया में कोई चीज़ अच्छी नहीं है, तो वह व्यंग्य न होकर 'सर्वनकारवाद' कही जाएगी।

व्यंग्य के लिए सकारात्मक होना अनिवार्य ||

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu